बघेली–हिन्दी
शब्दकोश

डॉ. श्रीनिवास शुक्ल 'सरस'

बघेली–हिन्दी
शब्दकोश

डॉ. श्रीनिवास शुक्ल 'सरस'

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

प्रकाशक
संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल

प्रकाशक – संचालक, संस्कृति संचालनालय
माध्यमिक शिक्षा मण्डल परिसर, शिवाजी नगर, भोपाल–462011
फोन नंः 0755–2574458, 2441829 फैक्स : 0755–2558399
www.mpculture.in

प्रकाशन – 2009 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – संचालक, संस्कृति संचालनालय, भोपाल

सहयोग – आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण – शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल

मूल्य – 200 रूपये

■ पुस्तक से संबंधित सभी विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।
■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

मध्यप्रदेश की लोक बोलियों के शब्द संकलन और कोश निर्माण की एक योजना संस्कृति संचालनालय की ओर से पिछले लगभग दो दशकों से क्रियान्वित की जा रही है, जिसके अन्तर्गत निमाड़ी–हिन्दी कोश तथा बुन्देली–हिन्दी कोश संचालनालय की ओर से पूर्व में प्रकाशित किये गये हैं।

बोलियाँ जनपदों के लोक जीवन में सम्प्रेषण और वाचिक रचना का आधार हैं। संस्कृति रचना और उसकी विशिष्टता के केन्द्र में मूलतः भाषाएँ होती हैं। बुन्देली, बघेली, निमाड़ी, मालवी आदि केवल बोलियाँ नहीं हैं, वे समृद्ध संस्कृतियाँ भी हैं।

जीवन की सुदीर्घ लोकयात्रा में विपुल शब्द सम्पदा का निर्माण होता है– भाषाओं की तुलना में अपनी जीवन्तता और त्वरा, अनुभव और अभिव्यक्ति में बोली अधिक नमनीय, लचीली, शब्द बहुल और सटीक होती है, क्योंकि उसके पीछे समूह चित्त और सामुदायिक परम्पराएँ सक्रिय होती हैं। लोक वास्तव में व्यवहार और आचरण में होता है– जीवन की व्यापक गतिविधि और कर्म के बीच अनुभव की ज्ञान परम्परा से बोलियों का दायरा विस्तृत होता है, सहज और प्रामाणिक, अनायास और प्रयत्नहीन कितने–कितने शब्द इस भाषिक सम्पदा में शामिल हो जाते हैं। वे लोगों के व्यवहार और सम्प्रेषण, रचना और अभिव्यक्तियों में अपने को प्रकट करते हैं, वे शब्द केन्द्रित रचना परम्पराओं से होते हुए हजारों कौशलों और सांस्कृतिक परम्पराओं, अनुष्ठानों और पवित्र देवधारणाओं तक फैल जाते हैं। मनुष्य की सांस्कृतिक धरोहरों में यह एक अनूठी विरासत है– इस शब्द सृष्टि का बड़ा मूल्य है। भाषाएँ जब–जब इन वाचिकताओं के निकट आतीं हैं– अन्तर्क्रिया करतीं हैं, उनकी शक्ति का संसार विस्तारित हो जाता है, वे अधिक जीवन्त और अर्थ बहुल हो जाती हैं। उन्हें सम्प्रेषण और अभिव्यक्ति की नई व्यंजनाएँ और भंगिमाएँ मिल जाती हैं।

इस वर्ष बोलियों के शब्द संकलन और कोश प्रकाशन की श्रृँखला में निमाड़ी–हिन्दी शब्दकोश, व्याकरण और अलंकार तथा बघेली–हिन्दी शब्दकोश प्रकाशित किये जा रहे हैं। उम्मीद है संचालनालय के इस प्रयास पर आपकी प्रतिक्रिया हमें प्राप्त होगी।

–प्रकाशक

अपनी–बात

अक्षर की अराधना और शब्दों की साधना एक वांग्मय तप है। भाषा साहित्य पर नये ढंग से नया कार्य करना एक जोखिम भरा कार्य है, उनमें भी शब्द– कोश जैसा महत्त्वपूर्ण लेखन करना भाषा–विद, भाषा विज्ञान के पुरोधा पण्डितों के हिस्से का दायित्व है। पुनश्च 'लगन के पाँव थकते नहीं है' के आधार पर मैं इस दुरुह कार्य में जुट गया। आज ये कार्य इस रूप में बन पड़ा है, जो मेरी 12 वर्षीय कठिन तपस्या का प्रतिफल है। चूँकि अभी तक बघेली शब्द–कोश का न तो कोई शोध–कार्य ही हुआ है, और न किसी प्रकार का लेखन–प्रकाशन। इस नाते अनेकानेक कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ा है। बघेलखण्ड के जिले रीवा+सतना, सीधी, शहडोल, सिंगरौली, उमरिया, अनूपपुर के नगरीय स्थानों से हटकर वन्यारण्य गाँव में, आदिवासियों की बस्तियों में तथा उत्सवों में सम्मिलित होना पड़ा है, तब कहीं जाकर बघेली बोली के शब्दों का समग्र अध्ययन इस कृति में सिमट सका है।

मैंने बिना किसी सजावट एवं बनावट के बघेली के प्रचलित शब्द सम्पदा को ज्यों का त्यों मैंने इस कोश में रखने का प्रयास किया है। बघेलखण्डांचल के विविध गाँवों का भ्रमण एवं सर्वेक्षण करने के कारण एक बात यहाँ स्पष्ट करना समीचीन होगा कि बघेली बोली की ध्वन्यमयता और बघेली शब्दों के लोच–लहजे में विविधता है।

शब्द–विविधता का प्रमुख कारण यह है कि बघेलखण्ड़ के पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों में भोजपुरी मिश्रित बघेली और पश्चिम दिशा की सीमा में बुंदेली मिश्रित बघेली बोली जाती है। इसी प्रकार उत्तरी सीमा के क्षेत्रों में बँदही और अवधी मिश्रित बोली का प्रभाव है, तथा बघेलखण्ड़ के दक्षिणी सीमा में सरगुजही और छत्तीसगढ़ी मिश्रित बघेली बोली प्रचलित है। फलतः बघेलखण्ड के बीचो–बीच का तीन चौथाई क्षेत्र ठेंठ बघेली के आधिपत्य में आता है। अतएव शब्द–कोश तैयार करते समय इस विविधतापूर्ण वैशिष्ट्य का पूर्ण ध्यान रखा गया है, बघेली के सम्पूर्ण शब्द इस कोश में सिमट पाये हैं, इसका दावा करना बघेली विभाषा के प्रति घोर अन्याय होगा। मैं स्वयं नहीं मानता कि मेरा यह प्रयास पूर्ण है, किन्तु एक नया प्रयोग तो है ही।

बघेली लोकगीत, लोककथायें, बघेली पहेलियाँ एवं लोकोक्तियों में प्रयुक्त हुये बघेली के दुर्लभ शब्दों को इस कोश में प्रतिष्ठित किया गया है। बघेली के शताधिक रचनाकारों एवं कवियों की काव्य–कृतियों में प्रयुक्त हुये बघेली की शब्दावलियों को आधार रूप में अंगीकार किया गया है। बघेली शब्द, बघेली जन–मानस के आत्मा की भाषा है, इस नाते बघेली साहित्य, संस्कृति, परम्परा, रीति–रिवाज, रहन–सहन, तिथि–त्यौहार, उत्सव–आयोजन, खान–पान से भी शब्द–कोश को सम्बल मिला है।

सीमावर्ती सहेलियों से प्रभावित होते हुये भी बघेली शब्द सम्पत्ति की अपनी स्वयं की पहचान है। विशेषता, अर्थवत्ता एवं गुणवत्ता के साथ ही पृथक अस्तित्व भी है। फलतः अपनी क्षमता एवं सामर्थ्य के अनुसार बघेली के सार्थक शब्दो से परिभाषित एवं विवेचित करके बघेली शब्दों को प्रस्तुत किया गया है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी बघेली शब्दों का चयन, बघेली शब्दों का संचयन, अति मनोवैज्ञानिक है। फलतः शब्दों को व्याकरणिक ढाँचे में विशेष रूप से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय, स्त्रीलिंग, पुलिंग, बघेली मुहावरा, सहायक क्रिया, योजक आदि के विवेचन के साथ प्रस्तुत किया गया है।

मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगा आदिवासी लोक कला अकादमी भोपाल के निदेशक डॉ. कपिल तिवारी एवं अशोक मिश्र का जिन्होंने इसे प्रकाशित करने का संकल्प लिया है। अन्त में मै समस्त प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष व्यक्तियों के प्रति आभार ज्ञापित करना चाहूँगा, क्योंकि किसी न किसी रूप में सबका सहयोग समाहित है–इस शब्द–कोश में! विश्वास है कि यह पुस्तक भाषा विदों, साहित्यकारों, शोधार्थियों, महाविद्यालयीन प्राध्यापकों, वाचनालयों, शैक्षणिक संस्थाओं, मिशनों और सुधी पाठकों के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

मार्च, 2009 **डॉ. श्रीनिवास शुक्ल 'सरस'**
सीधी, (म.प्र.)

संकेत

संज्ञा	–	(सं.)
सर्वनाम	–	(सर्व.)
क्रिया	–	(क्रि.)
विशेषण	–	(वि.)
अव्यय	–	(अव्य.)
क्रिया विशेषण	–	(क्रि.वि.)
योजक	–	(यो.)
सहायक क्रिया	–	(स.क्रि.)
पुलिंग	–	(पुं.)
स्त्रीलिंग	–	(स्त्री.)
बघेली मुहावरा	–	(ब.मु.)

अ

अइसन – (अव्य) इस प्रकार, इस प्रकार से, इस प्रकार का, ऐसा।

अइसा – (अव्य) ऐसा, इस प्रकार ।

अइसै – (अव्य) यों ही, ऐसे ही, बिना उद्देश्य विशेष के।

अइँचड़ – (विशे.) दबंग, शक्ति सम्पन्न, जोरदार, समर्थवान।

अइँडाब – (क्रिया) अकारण अकड़ना, लड़ने–झगड़े को उद्धृत होना, शरीर तोड़ना।

अइढ़ब – (क्रि.वि.) इधर कहने पर उधर जाना, टाल–मटोल कर चमकते हुए चल देना।

अइना – (संज्ञा) आयना, दर्पण, शीशा।

अइहेय – (क्रि.भवि.) आओगे, क्या आयेंगें।

अइहैं – (क्रिया) आयेंगे। फिर आयेंगे ?

अइहौं – (क्रि.भवि.) आऊँगा, आऊँगी।

अइहीं – (क्रि.भवि.) आयेंगी, आयेगा, सुनिश्चिता बोधक।

अइठब – (क्रि.वि.) झटका मारकर लूटना, धोका देकर ले लेना।

अइँठी – (सं.स्त्री.) एक प्रकार की घुमावदार स्प्रिंग की तरह की वनस्पति।

अइर – (क्रिया) फसल कटने पर पशुओं का स्वतंत्र विचरण, स्वच्छन्द।

अइरहा – (सं.पु.) आवारा पशु, ऐसा पशु जिसके मालिक का पता न हो।

अइलाब – (क्रिया) कुम्हला जाना, मुरझाना।

अइलान – (विशे.) कुम्हलाई हुई, कुछ सूखा हुआ।

अइली – (सं.सी) एक वनौषधि पौध।

अइन–अइन – (विशे.) अच्छा – अच्छा, सुन्दर–सुन्दर, पुष्ट – पुष्ट, उपयोगी – उपयोगी।

अई – (क्रिया) आयेगा, आइए, आगमन हो, अईराम की जयी लगोदा, बघेली मुहावरा।

अइसनै – (अव्य.) ऐसे ही, यों ही, बिना प्रयोजन, सहजतः, ऐसा ही।

अइरी–गइरी– (अव्य) टाल–मटोल, आना–कानी, बहानेबाजी।

अइरा–गइरा– (अव्य) ऐसा–वैसा, अस्तित्व विहीन, बघेली मुहावरा।

अइसा–ओइसा–(अव्य) ऐसा–वैसा, गया– गुजरा, यों–त्यों।

अइहू – (क्रि.भवि.) आओगी, आओगी तो, क्या आओगी ?

अइँचब – (क्रिया) निकाल लेना, खींचना, अपनी ओर कर लेना।

अइरौ–मइरौ – (अव्य.) यों ही, अकारण, बिना उद्देश्य के, ऐसे ही!

अउचट – (विशे.) जोरदार, बहुत तेज, आवश्यकता से ज्यादा।

अउ – (अव्य) और, और कुछ।

अउरब – (क्रिया) कार्य के लिए विवेक, जागृत होना, त्वरित उपाय सूझना।

अउर – (अव्य) और, और अधिक, अन्य या अलग।

अउसर – (सं.पु.) उत्सव, मांगलिक कार्य, आयोजन।

अउसरहा – (विशे.) जिस घर में उत्सव हो रहा हो, कार्यक्रम वाला घर।

अउसेर – (सं.पु.) विलम्ब, समय बीत जाना, समय सीमा निकल जाना।

अउँजब – (क्रिया) घड़ा झुकाकर पात्र में पानी गिराना।

अउँछाब – (क्रिया) निद्रा आना, सोने की स्थिति बनना, आँखों का अलसाना।

अउँखब – (क्रिया) बिना गाँठ लगाये खूटें में रस्सी बाँधना, सरफंदी लगाकर बाँधना।

अउझड़ी – (विशे.) मूड़ी व्यक्ति, झक्की किस्म का, जो सुर आये वही करने वाला।

अउटब – (क्रिया) ओटना, मर्दन करना, तरल को पकाकर गाढ़ा करना।

अउटबाई – (क्रिया) औटने के बदले प्राप्त लाभांश, पारिश्रमिक या परितोषिक।

अउटबाउब – (क्रिया) औटवाना, औटने में सहयोग करना।

अउरेब – (विशे.) कमी, कमजोरी, दुर्गुण, कमियाँ।

अउँघहटा – (विशे.) सोते हुए, अर्द्ध निद्रा में ग्रसित व्यक्ति।

अउलट – (विशे.) आँखों से दूर, अदृश्य, आँख के ओट में।

अउना – (सं.पु.) मिट्टी के पात्र या बखार में रखा गया निचला क्षिद्र।

अउनब – (क्रिया) कपड़े से बन्द बखार के क्षिद्र को खोलना।

अउँध – (विशे.) जमीन पर रखी अधोमुख वस्तु, मुँह के बल।

अउँधाउब – (क्रि.वि.) जमीन पर वस्तु को मुख के बल रखना।

अउरी – (सं.पु.) समय निकल जाना, अवधि बीत जाना, मौक चूक जाना।

अउचड़ – (विशे.) बहुत तेज, आवश्यकता से अधिक, जोरदार।

अउँठा – (सं.पु.) हाथ या पैर का अँगूठा, स्त्री.लिंग 'अउँठी'।

अउटा – (सं.पु.) दीवाल से सटा ऊँचा अमठ, आँगन के समानान्तर का दीवाल से जुड़ा अमठ।

अउटी – (सं.स्त्री.) दूध हल्दी गुड़ से पका हुआ काढ़ा, सर्दी की औषधि।

अउन–पउन – (क्रिया) जुगाड़ बनाना, इधर का उधर करना, आपस में भिड़ा देना, कानाफूसी करना।

अउब – (क्रि.भवि.) आउँगा, आउँगी।

अउबै – (क्रि.भवि.) आयेंगे ? आओगे ?

अउबैकरब – (क्रिया) आऊँगा ही, आऊँगी ही, निश्चय बोधक।

अउतै रहेन – (क्रिया) आता ही था, आ ही रहा था।

अउतै हैन – (क्रिया) आता ही हूँ आती ही हूँ।

अउँखा – (सं.पु.) कामर का एक पहलू, कामर का एक हिस्सा।

अउतै रहिगें – (क्रिया) आते ही रह गये, आते ही रहे, आना लगा ही रहा।

अउतै रहिगै – (क्रिया) आती ही रही, आती ही रह गयी, आना लगा ही रहा।

अउतै आवत – (अव्य) आते ही आते, जैसे ही आये वैसे ही।

अउता – (अव्य) और तो, नहीं तो

अऊ – (विशे.) और अधिक, कुछ और मात्रा और आगे।

अकरास – (सं.पु.) आहार से अधिक खा लेने पर उत्पन्न बेचैनी, कष्ट, तकलीफ, खहाल।

अकरासब – (क्रिया) बेचैनी होना, तकलीफ होना, कष्ट होना, खल जाना।

अकबकाबा – (क्रिया) अटपटा लगना, बेचैनी होना, प्राण छटपटाना, घबड़ाना।

अकारथ – (विशे.) जो किसी काम लायक न हो, जो अनुपयोगी हो, व्यर्थ की वस्तु।

अकना – (सं.पु.) दाने रहित मक्के के बीच का डंठल।

अकताब – (क्रिया) कार्य के लिए आतुर होना, जल्दी बाजी मचाना, कार्य के लिए छटपटाना।

अकताई – (विशे.) आतुरता, तत्परता, चौकन्ना, छटपटाहट।

अँकड़ी – (सं.स्त्री.) गेहूँ चना की फसल के साथ उगने वाली एक घास विशेष।

अँकड़ा – (सं.पु.) बन्दरों के समूह का मुखिया।

अँकुरब – (क्रिया) अंकुरित होना, प्रस्फुटित होना, ऊपर उगना।

अकहुर – (विशे.) दोनों पहलुओं का असमान वजन, छोटा–बड़ा की स्थिति।

अकहुरब – (क्रि.वि.) कामर का भार कम अधिक के कारण इधर–उधर झुकना।

अकबकाई – (विशे.) बेचैनी की अनुभूति, घबड़ाहट लगना, व्याकुलता, छटपटाहट।

अकनइया – (सं.स्त्री.) मक्का के फल का दाना रहित डंठल।

अकबार – (स.पु.) दोवाह के बीच की जगह, अकबार लेना व. मु.।

अक्तिआर – (सं.पु.) अधिकार या साहस, हिम्मत और दायित्व।

अकोर – (सं.पु.) घूँस, लाँच, अनुचित साधन से कमाया गया धन।

अकोरी – (विशे.) लोभी–लालची, घूँस लेने की प्रवृत्ति वाला, बिना लिये कार्य न करने वाला।

अखम्भ – (विशे.) बहुत मेहनती, जो थके नहीं, खंभे की भाँति खड़ा रहने वाला।

अखइनी – (सं.स्त्री.) बाँस की हुकदार कृषि कार्य की लकड़ी।

अखरब – (क्रिया) खल जाना या खलना, हृदय में घाव हो जाना।

अखुँआ – (सं.पु.) बाँस या गन्ना के तना की गाँठ से स्त्री.लिंग 'अंखिया'। पौधे में अंकुरित आँख।

अखरा – (सं.पु.) अक्षर, आवाज, वाणी, बोल।

अँखमुंद – (क्रि.वि.) आँख मींचकर, सिर नीचे किये हुए, आँख मुदी गति।

अखइबर – (विशे.) जो कभी न मरे, जो कभी न हटे, अजर–अमर, अखइबर होना, बघेली मुहावरा।

अगता – (विशे.) आगे से, समय से पहले, पूर्व से ही।

अगउढ़ी – (विशे.) कार्य के पूर्व लिया गया अग्रिम अनाज, अनुबंध अग्रिम।

अगुयै – (विशे.) पहले ही, आगे से ही, समय से पूर्व ही।

अगॉकर – (सं.स्त्री.) आग के मन्द आँच से पकाई गई रोटी।

अगाध – (सं.पु.) उलाहना, गाली, दोषारोपण।

अगहर – (विशे.) अग्र सोची, आगे से, समय रहते, समय से पूर्व।

अगरासन – (विशे.) भोजन करने से पहले निकाला गया अंश, अग्र–राशन।

अगिया बइताल– (सं.पु.) बात–बात पर आग उगलने वाला, लड़ाकू एवं झगड़ालू प्रवृत्ति वाला, ब.मु.।

अगिया कोइलिया–(विशे.) आगी की लपट की तरह लड़ने वाली, अति जहरीली, बघेली मुहावरा।

अगिलब – (क्रिया) आगे की ओर चलना, चलकर आगे ले जाना।

अगोछब – (क्रिया) जाते हुए को दौड़कर आगे से रोकना, पहले से रास्ता अवरूद्ध करना, आगे होकर रोक देना।

अँगुरी – (क्रि.सं.स्त्री..) उँगुली, अंगुल।

अगुँरिआउब – (क्रिया) उँगुली से संकेत करना, इशारा करना।

अगरिया – (सं.पु.) आदिवासी की एक प्रजाति, लोहे का औजार बनाने वाली जाति।

अगउँछी – (सं.स्त्री.) बड़ी साफी, दो मीटर लम्बी रूमाल, तौलिया, टावल, पुलिंग 'अंगउछा'।

अगीठी – (सं.स्त्री.) आग जलाने हेतु निर्मित मिट्‌टी की थाल विशेष।

अँगरा – (सं.पु.) आग का अंगार, आग के टुकड़े, स्त्री.लिंग 'अँगरिया'।

अगड़ान – (विशे.) दूध दुहने योग्य अकड़े हुए थन, दूध उतरा हुआ थन।

अगड़ाउब – (क्रिया) दुधारू पशुओं के थन या बाल को दुहने लायक बनाना।

अगहनी – (विशे.) अगहन या रवी की ऋतु, अगहन की फसलें।

अगधर – (विशे.) पहले या आगे से ही, निर्धारित समय से पूर्व।

अगोछा – (क्रिया) भागते हुए व्यक्ति को दौड़कर उसे आगे होकर घेरना।

अगोछबाउब – (क्रिया) किसी को दौड़कर बढते हुए कदमों को रोकवा देना।

अगत्ति – (विशे.) गयी–गुजरी, जीर्ण–शीर्ण, जो किसी काम लायक न रह गई हो वह।

अगमदहार – (विशे.) बहुत गहरा, इतना गहरा कि थाह न मिले।

अगुआ – (सं.पु.) आगे होकर कार्य करने वाला, कार्य का सबसे पहले दायित्व सम्हानले वाला।

अगेला – (क्रिया) आगे की ओर गतिमान होना, सीधे सामने चलना।

अगाह – (सं.पु.) चेतावनी, संकेत, सावधान, सूचित।

अगुआनी – (सं.स्त्री.) अगुवानी, स्वागत के साथ किसी को लेना।

अगनई – (सं.पु.) आँगन का भीतरी प्रक्षेत्र, आँगन की तरफ की जगह (अव्य)

अगीत – (अव्य.) आगे का भाग, आन्तरिक पहलू, द्वार के ओर का भाग।

अगरिया – (सं.पु.) लोहे का कार्य करने वाली जाति, लुहार ग्रुप की जाति।

अगनइया – (सं.स्त्री.) छोटा आँगन, आँगन का प्रक्षेत्र।

अगीहा – (सं./वि.) वह व्यक्ति जो अग्निदाह किया हो, दाह संस्कार करने वाला।

अगरधत्ता – (स.पु.) बिना जड़, पत्ता की एक लता।

अघान – (विशे.) जिसका पेट भरा हो, भोजन से संतुष्ट।

अघाब – (क्रि.वि.) पेट भर जाना, भूख मिट जाना।

अघबाउब – (क्रिया) खिलाकर पेट भरवाना, मारने के लिए लाक्षणिकता।

अघबा – (विशे.) मवाद भरा हुआ घाव, पका हुआ फोड़ा।

अघट्ट – (सं.पु.) असत्य या अघटित, सरासर झूँठ।
अँचउब – (क्रिया) खाना खाने के पश्चात् हाथ–मुँह धोना।
अचबाउब – (क्रिया) जूठा हाथ–मुँह धुलवाना, धुलाने में मदद करना।
अचरब – (क्रिया) न्यायोचित होना, शोभा देना, उचित प्रतीत होना।
अँचरा – (सं.पु.) आँचल, साड़ी का एक पल्लू।
अचकन – (सं.पु.) कमर में बाँधने वाला राजसी परंपरा का अंगौछा।
अँचउबेय – (क्रिया) क्या जूठा हाथ मुँह अब धोओगे, आचमन करोगे ?
अचरज – (अव्य) आश्चर्य, अकाल्पनिक, असंभावित।
अजनास – (विशे.) आलसी एवं लापरवाह, लुंज–पुंज, ढीला–ढाला एवं अकर्मण्य।
अजिआउर – (सं.स्त्री.) दादी का मायका, दादी की जन्मभूमि।
अजमाइन – (सं.स्त्री.) एक मसाले का पौध, ग्राम्य–औषधि फल।
अजलेम – (विशे.) असत्य, सरासर झूठ, निराधार एवं मिथ्या।
अजार – (विशे.) अशुभ गाली, दैवी प्रकोप की अशुभ कामना, दरिद्र, ब.मु.।
अजीरन – (ब.मु.) अजीर्ण, अपच, अजीरन हो, बघेली मुहावरा।
अजुयै – (अव्य) आज ही।
अँजुरी – (सं.स्त्री.) अँजुरी, वर–वधू के विवाह के समय संयुक्त अंजुली में भरा जाने वाला परम्परागत भुना अन्न, एक वैवाहिक लोकगीत।
अजुरिहाई – (सं.स्त्री.) दुरागमन के समय धारित साड़ी विशेष।
अजिगर – (सं.पु.) एक लम्बा–मोटा सर्प, अजिगर साही ब.मु.।
अँजोर – (सं.पु.) प्रकाश, उजाला।
अँजोरी – (विशे.) उजियाला, अँजोर, शुक्ल पक्ष।
अँजबाउब – (क्रिया) आँख में काजल लगवाना, काजल लगवाने को तैयार होना।
अँजमाउब – (क्रिया) अदांज करना, परीक्षण करना, थाह लेना, मन टटोलना।
अँजान – (सं.स्त्री.) एक धान विशेष।
अँटकर – (क्रिया) अंदाज करना, अवगत होना, जायजा लेना।
अटकरपंचे – (विशे.) अन्दाजवश, अनुमान से, अनुभव से, अटकर पंचे वीसा सौ, बघेली मुहावरा।
अटहर – (विशे.) अड़चन युक्त, असाधारण व्यवस्था, जटिल व्यवस्था।
अट्टाटोर – (विशे.) एकदम नया, बहुत मजबूत, टिकाऊ।
अट्टाचढ़ी – (क्रि.वि.) नहला पर दहला मारना, बढ़कर बोली लगाना, प्रतियोगिता पूर्ण बढ़ाव होना, बघेली मुहावरा।
अटरिया – (सं.स्त्री.) अटारी, अटा, अटाल।
अटम्मर – (विशे.) बहुत अधिक, बहुत ऊँचा, पर्याप्त, भरापूरा।
अटब – (क्रिया) अड़जाना, रूक जाना, ऊपर ही टंगे रहना, समा जाना।
अँटकब – (क्रिया) बीच में रूक जाना, ऊपर ही टंगे रहना, समा जाना।
अँटकाउब – (क्रिया) उलझा देना, लफड़ा में फँसाना, गिल्ली अटकाउब, ब. मु.।

अटइढ़ब – (क्रिया) अकड़ना, आवेशित होना, लड़ने को उद्धत होना, शरीर दिखाना।

अट्टढ़ब – (क्रिया) आक्रोशवस मुकर जाना, अकड़ जाना, कथन को अनसुनी करके अनुचित करार करना।

अटाला – (सं.पु.) घर–गृहस्थी में संग्रहीत सामग्री, भार, धन–वैभव।

अटर्र – (विशे.) मिश्रित, अशुद्ध, दागयुक्त, परिवर्तित, गुणवत्ता युक्त।

अटपट – (विशे.) बहुत तेज, द्रुतगति, विलक्षण, अजीब।

अट्ठासी – (विशे.) अकाल व अभाव, बहुत अधिक कमी, अट्ठासी पड़ब, बघेली मुहा.।

अठन्नी – (विशे.) आठ आने, रूपया का आधा, आधा।

अठमाइन – (सं.स्त्री.) अष्टमी तिथि को देवी को समर्पित व्यंजन–प्रसाद।

अठरही – (विशे.) उन्नीस, अनाज नापते समय की शुभ गिनती।

अडारन – (विशे.) अस्तित्व विहीन, मूल्य विहीन, अनुपयोगी, बेकार।

अढ़बा – (सं.पु.) आदेशित कार्य, किसी द्वारा कहा गया, पर कथन या कार्य।

अढ़उब – (क्रिया) कार्य करने के लिए आदेशित करना या कहना।

अढुकब – (क्रिया) रूक जाना, ठहरना, थम जाना, रूकावट होना।

अढ़बइया – (सं.पु.) काम के लिए कहने वाला, निर्देशक या आदेशकर्ता।

अढ़मल्ल – (विशे.) जो किसी की न सुनता हो, जो किसी का कहना न मानता हो, अडिग प्रवृत्ति किन्तु घमण्ड वश।

अढ़इया – (सं.पु.) ढाई दिन तक रहने वाला बुखार, ढाई का पहाड़ा।

अढ़ाई – (विशे.) ढाई, दो और आधा, दो दसमलव पाँच।

अढ़हरिया – (सं.पु.) अरहर के घने पौधों से आच्छादित खेत।

अड़उसा – (सं.पु.) गिरती वस्तु को रोकने वाली वस्तु, साहस या शहादत।

अड़ाब – (क्रिया) जमीन पर गिरना, वर्तन से तरल का जमीन पर गिरना।

अड़ाउब – (क्रिया) गिराना, ओट लगाना, रोकना, किसी के सहारे टिकाना, हाथ रोपना।

अड़भक्का – (विशे.) अचानक, अनायास, बिना सूचना के, अप्रत्याशित।

अड़पेंचा – (क्रि.वि.) पेंचीदा रूकावट, अड़चन आना, दबाव पड़ना, अवरोध उत्पन्न होना।

अड़इया – (स.पु.) आड़ने वाला, रोपने वाला, गिराने वाला।

अडुआ – (विशे.) बिना मर्दन अण्डकोश वाला वयस्क बैल, अवरोधक तथ्य।

अतरहन – (अव्य) इतना सुंदर, इस प्रकार का, इतना अच्छा।

अँतरा – (सं.पु.) अन्तर, दो वस्तुओं के बीच का गैप, वस्तु के नीचे की पोलाई।

अँतरी – (सं.स्त्री.) दो घर के बीच की पतली गैल, एक दिन के अन्तर में आने वाली बुखार।

अँतर – (सं.पु.) इत्र, सुगन्धित तेल।

अँतरहाई – (सं.स्त्री.) इत्रदान, इत्र रखने वाला बैग।

अँतर–अँतर – (अव्य) छोड़–छोड़कर, अंतर दे देकर, गैप दे–देकर।
अथाई – (विशे.) पलथी मारकर स्थिर रूप से आशन लगाकर बैठा हुआ।
अथैय – (अव्य) दोपहर और शाम के मध्य का समय, अपरान्ह।
अदराब – (क्रिया) मन होने के बाद भी भरपूर अनुरोध करा लेना फिर तैयार होना।
अदरब – (क्रिया) खाने के लिए व्यंग्य, ढीले खूँटे को न हिलने लायक करना।
अदहन – (सं.पु.) चावल या दाल पकाने के लिए प्रयुक्त गर्म पानी।
अदहरा – (सं.पु.) कण्डे का अग्नि समूह, पृथक से की गई भोजन व्यवस्था।
अदरउटा – (क्रिया.) इच्छा होते हुए भी कार्य न करने का प्रदर्शन करना।
अधमरा – (विशे.) अति दुर्बल, मरणासन्न, आधा मरा सा स्त्री.लिंग अधमरी।
अधबाउर – (विशे.) कम चतुर–चालाक, अर्द्धपागल, बघेली मुहावरा।
अधबइकल – (विशे.) आधा पागल, अर्द्ध विक्षिप्त, कुछ कम होशियार।
अधभेसड़ – (विशे.) न होशियार न मूर्ख, मन्द बुद्धिवाला।
अधवाई – (सं.स्त्री.) कच्चे घर में लगने वाली आड़ी लकड़ी।
अधकपारी – (सं.स्त्री.) आधे सिर में दर्दवाला एक रोग।
अधारी – (सं.स्त्री.) भिखारी की दो पहलू वाली झोली।
अधिअरहा – (सं.पु.) हिस्सेदार, साझीदार, बराबर का हिस्सेदार।
अँधिया – (सं.पु.) आधे की साझेदारी, बराबर का मालिकाना हक।
अँधिअरा – (विशे.) आधे का हिस्सेदार, बराबर का मालिक।
अधीहा – (सं.पु.) आधे का मालिक, आधे का हिस्सेदार।
अधमाधूह – (विशे.) बहुत अधिक फसल की उपज, बहुत मोटा–तगड़ा।
अधबा – (विशे.) मवाद भरा पका घाव या फोड़े, बहता हुआ घाव।
अधरम – (विशे.) अधर्म, धर्म के विरूद्ध क्रियाकलाप।
अधविलोरा – (विशे.) आधे–अधूरे में, अपरिपक्व व अपूर्ण, न इधर का न उधर का।
अँधरिआब – (क्रिया) अंधा हो जाना, देखकर आँखें मिच जाना, दीवाना हो जाना।
अँधियार – (सं.पु.) अंधकार, अंधेरा, असंभव, उपाय न सूझना।
अधबेरिया – (अव्य) दोपहर, मध्यावकाश, लन्च का समय।
अधिआउब – (क्रिया) आधा करना, हिस्साबांट देना, अलग कर देना।
अधमधाउब – (क्रिया) जोर–जोर से पीटना, जोर की वर्षा का होना।
अँधरझटका – (क्रि.वि.) आँख मूँदकर कर डालना, अन्दाजवश कार्य करना।
अनवनित – (विशे.) बेडौल, विकृत संरचना, बिगड़ा हुआ आकार, असुंदर, अनगढ़।
अनहट – (क्रिया) अनायास झगड़ा, आश्चर्य युक्त लड़ाई, अप्रिय घटना।
अनकब – (क्रिया) कान लगाकर गौर से आवाज व आहट को सुनना।

अनसोहित – (विशे.) अशोभनीय, अनुचित, अच्छा न लगने वाला।

अनटागुड़गुड़– (क्रि.वि.) किसी वस्तु का लुढ़क–लुढ़क करके गिरना, बना कार्य बिगड़ जाना, बघेली मुहावरा।

अनटीमारब – (क्रिया) बीच में टाँग अड़ाकर काम बिगाड़ देना, भ्रमित करके मतभेद उत्पन्न कर देना, अंटी मारब, बघेली मुहावरा।

अन्नियाव – (क्रिया) अन्याय, अनुचित व्यवहार, अभद्र क्रियाकलाप।

अनमिल – (विशे.) अशोभनीय, तर्क रहित, अलग–थलग, मेल न खाना।

अनभल – (विशे.) बुरा कार्य, नुकसान पहुँचाना, अशुभ मानना।

अनगँइया – (विशे.) जो कभी आया–गया न हो, एकदम नया अपरचित।

अनबुझझ – (विशे.) जिसके पास सही गलत समझने की समझ न हो।

अनोय – (विशे.) बाधा रहित, झंझट विहीन, सुख–शांति युक्त।

अनियार – (विशे.) जिसकी आँख नयी हो, विशिष्ट दृष्टि।

अनमासब – (क्रिया) नई वस्तु को प्रयोग में लेना, कार्य में उपयोग हेतु प्रयोग करना।

अन्तस – (सं.पु.) ह्रदय, आत्मा, दिल, भीतर से।

अन्तरा – (सं.पु.) गीत का मुखड़ा, दोहराने वाली प्रमुख पंक्तियाँ।

अनबँइता – (विशे.) विकलांग, चाल चलते समय पाँव का तितिर–बितर पड़ना।

अनमन – (विशे.) हताश एवं निराश, गिरा हुआ मन, अप्रसन्न।

अनझब – (क्रिया) अन्तराल होना, गैप होना, एक दिन न बीतने पाना।

अनूठ – (विशे.) अच्छा, एकदम नया, जूठा रहित।

अनुहारब – (विशे.) किसी के रूप की किसी से तुलना, अनुरूपता का आकलन करना।

अनुहार – (विशे.) बनावट, समतुल्य, उनकी तरह या जैसा अनुरूप।

अन्न – (सं.पु.) अनाज, अन्न–दाना।

अनारब – (क्रिया) अन्याय, गलत कार्य, नुकशानदायी गतिविधि।

अनखाब – (क्रिया) गलत कार्य से नाराज होना, डाँटना–फटकारना व रोकना।

अनचिन्हार – (विशे.) अपरिचित, अज्ञात, जिससे जान–पहिचान न हो।

अनहोनी – (क्रिया) अप्रत्याशित घटना, दैवी विपत्ति, अपूर्णनीय क्षति।

अनजब्बू – (विशे.) वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ एवं अपरचित, अनजान व अबूझ।

अनूतर – (क्रि.वि.) गाली–गलौज, दुर्वचन, बुरा–भला, उलाहना।

अनजान – (विशे.) नादान व अबोध, ज्ञान रहित, जिसे अच्छे–बुरे की समझ न हो।

अनरीत – (क्रिया) अन्याय व अत्याचार, नीति के प्रतिकूल कार्य, रीति–नीति एवं परम्परा के विरूद्ध काम।

अपकिआब – (क्रिया) प्राण भड़भड़ाना, बेचैनी लगना, घुटन होना।

अपजस – (विशे.) अपयश, दोषारोपण, कलंक।

अपरोजिक – (विशे.) आलसी एवं कामचोर, अकर्मण्य एवं अकर्ता, सुस्त।

अपनपौ – (सं.पु.) अपनापन, अगाध लगाव एवं झुकाव, अपनत्वता।

अपरस – (सं.पु.) गदेली या तलवे में होने वाला एक चर्मरोग।

अपनाउब – (क्रिया) स्वीकार करना, अपना बना लेना, ग्रहण करना।

अपना – (सर्व) आप, तुम।

अपनौ – (सर्व) आप भी, तुम भी।

अपना पचे – (सर्व) आप लोग, आप सब।

अपन–तुपन – (अव्य) आप और हम, हम–तुम, हम दोनों।

अफॅदिआब – (क्रि.वि.) अन्दर ही अन्दर अकुलाहट होना, आंतरिक छटपटाहट होना।

अफरब – (क्रि.वि.) खाने से पेट भर जाना, पूर्ण संतुष्ट होना।

अबहिनै – (अव्य) अभी, अभी–अभी, इसी वक्त

अबइया – (सं.पु.) मेहमान, अतिथि, आने वाले लोग।

अबा – (अव्य) अभी, अभी ही।

अबेर – (अन्य) विलम्ब, देर, मौका बीते।

अबड़–दबड़ – (क्रि.वि.)वक्त–वेवक्त, अब्बे–तब्बे, दर–दापट।

अवाई – (क्रिया) आगवन, पदार्पण होना।

अभ्यामन – (विशे.) भयावह, रूप का कुरूप, आश्चर्यनुमा स्वरूप।

अभाबट – (ब.मु.) आश्चर्यनुमा अजूबा, अभावट होइगा, ब.मु.।

अभिरब – (क्रिया) भिड़ना, लड़ने के लिए लिपट पड़ना।

अभिराउब – (क्रिया) किसी को किसी से लड़ा देना।

अभुआब – (क्रिया) लटछोर कर कूदना– फँदना, सवारी आने पर थिरकना।

अभरन – (सं.पु.) अमूल्य वस्तु, अमृत तुल्य पदार्थ, बहुमूल्य प्रतीक।

अभिटब – (क्रिया) टकराकर फिसल जाना, भिड़कर गिर पड़ना।

अमल्लक – (विशे.) पूर्णतः या बिल्कुल, निर्दाग एवं निर्विवाद, एकदम।

अमावट – (सं.पु.) पूड़ी की तरह सुखाया गया आम्ररस, मामा खाय अमावट, बघेली मुहावरा।

अमिलहा – (सं.पु.) खट्टापन खाद्य पदार्थ, मशालेदार खट्टी तरकारी।

अमलास – (सं.पु.) नशा की तलब, व्यसन की आवश्यकता, नशा करने का मन बनना।

अमलिआब – (क्रिया) नशा करने का मन होना, नशा के बिना व्याकुल होना।

अमचोहिल – (विशे.) आम का खट्टा–मीठा स्वाद।

अमचुर – (सं.पु.) आम का चूर्ण, अमचुर कस खाये, ब.मु.।

अमकोरिया – (सं.स्त्री.) बिना जाली के आम्रफल की सूखी टुकड़ियाँ।

अमिली – (सं.पु.) इमली, बीड़ी पीने का शौकीन व आदी व्यक्ति।

अमिसब – (क्रिया) मिलावट करना, सम्मिलित करना, दो की बात में तीसरी बात साजना, सहभागिता निभाना।

अमाबस – (सं.स्त्री.) अमावस्या की तिथि, कालिमा या अंधेरा।

अमरा – (सं.पु.) आँवला, औषधि फल।

अमारख – (विशे.) बहुत अधिक, सीमा से ज्यादा, बहुत जोर।

अमरउती – (सं.स्त्री.) जो अमरता प्रदान करे, जो अजर–अमर बनाये, जो अमृत पिला दे।

अमिरती – (सं.स्त्री.) एक विशेष प्रकार की जलेबी।

अमठ – (सं.पु.) बर्तन का मुखौटा, बर्तन का किनारा, घाट, नदी का तट।

अमान – (सं.पु.) ऐतिहासिक राजा का नाम, उजड़ा हुआ खेत, पशुओं का फसल कटनें पर विचरण।

अमानी – (सं.पु.) ठेका का कार्य, दैनिक मजदूरी वाला काम।

अमारी – (सं.स्त्री.) एक पौध जिसके छिलके से रस्सी बनायी जाती है।

अमरइया – (सं.पु.) अमराई, आम के पौधों का समूह स्थल।

अमसइया – (सं.पु.) मिश्रित करने वाला व्यक्ति, मिलावट में सहभागी।

अमिस–खमिस– (अव्य) एक दूसरे से मिलाना–जुलाना या मिश्रित करना।

अये – (क्रिया) आना, आइएगा।

अरगासन – (सं.पु.) अग्रासन, अनूठा भोजन जो गाय के लिए खाने से पूर्व निकाला जाता है।

अरहरिया – (सं.पु.वि.) अरहर के पौध का खेत, जहाँ सघन अरहर लगी हो।

अरगासी – (सं.स्त्री.) चन्द्रमा उगने के पूर्व आकाशीय पूर्वाभाष।

अरगासब – (क्रिया) चन्द्रमा निकलने की स्थिति का दिखना।

अरगसनी – (सं.स्त्री.) झूले की तरह छप्पर से लटकायी गई बाँस की वह लकड़ी जिसमें घरेलू कपड़ें टाँगें जाते है।

अरौ – (क्रिया) लड़ाई–झगड़ा, लड़ाई करने लायक कार्य, अरौ ब.मु.।

अरछाउब – (क्रिया) बर्तन में भरे तरल पदार्थ के ऊपरी हिस्से को अलग कर लेने की क्रिया।

अरबा – (सं.पु.) दीवाल पर रखने के लिए बनाया गया स्थान, स्त्री.लिंग अरिया।

अरोरब – (क्रिया) अच्छा एवं बड़ा बड़ा छॉटना, रूपया, पैसा समेटना।

अर्रा – (क्रिया) अकारण लड़ाई रोपना, विवाद के लिए स्थिति निर्मित करना।

अरझुराब – (क्रिया) अड़चन में फॅस जाना, किसी वस्तु का लिपट जाना।

अरारा – (अव्य) आश्चर्य बोधक चीख, वेदना युक्त स्वर।

अर्राब – (क्रिया) वेदनात्मक चीख भरना, हारी मान लेना, विवशता की कराह।

अरझब – (क्रिया) किसी से लिपट जाना, जिद करना, कपड़े पर झाड़ी का लिपट जाना।

अरथिती – (सं.पु.) विश्वसनीय, जवावदार, जिम्मेदार।

अरई – (सं.स्त्री.) हलवाह की लाठी में लगी हुई नुकीली कील, अरई गड़ाउब ब.मु।

अरसी – (सं.स्त्री.) अलसी तिलहन।

अरहरा – (सं.पु.) अरहर का डंठल, बड़ी दाने वाली अरहर।

अरी – (सं.स्त्री.) ग्रामीण चक्की पर प्रयुक्त होने वाली काष्ठ का उपकरण।

अरचन – (विशे.) अड़चन, दिक्कत, कठिनाई।
अरी–जोती – (सं.स्त्री.) पत्थर की ग्रामीण चक्की में प्रयुक्त होने वाली पतली रस्सी एवं छोटी सी नल लकड़ी।
अरथुत – (विशे.) आवश्यक रूप से, निश्चित हो।
अरूआ – (सं.पु.) एक कौए की विशेष किस्म, अरूआकस ब.मु.।
अरा – (अव्य) आश्चर्य बोधक आह, ओह।
अलबुद्दा – (विशे.) पर्याप्त मात्रा, भरा–पूरा, आवश्यकता से अधिक।
अलफी – (सं.स्त्री.) पुराने शैली की हाफ कमीज।
अलबी तलबी– (ब.मु.) अलवी–तलवी मारना, बघेली मुहावरा।
अलसेट – (क्रिया) आलस्य, विलम्ब, लेट–लपेट, हीला हवाला।
अलहन – (ब.मु.) दऊ के अलहन, बघेली मुहावरा, आश्चर्य चकित।
अलाटप्पू – (विशे.) बिना योजना व रूपरेखा, बिना अनुभव, बिना सूचना, बिना सोचे–विचारे, अन्दाज बस।
अलथकलथ – (क्रि.वि.) उलट–पुलट, बार–बार, घूम–फिरकर, वही–वही कार्य।
अलहदे – (विशे.) बिल्कुल अलग, बिना दबाव व अंकुश से।
अल्होरब – (क्रिया) सूप के सहारे अनाज के दाने छाँटने की क्रिया।
अलमजार – (सं.पु.) कूड़ा–कर्कट व घास–फूस का ढेर, सूखी लताएँ।
अलियार – (सं.पु.) कूड़ा कर्कट एवं सूखी लताओं का ढेर।
अलगा – (सं.पु.) कंधे पर वक्ष स्थल ढककर रखा गया साड़ी का एक पल्लू।
अलोन – (विशे.) बिना नमक का खाद्य पदार्थ, आवश्यकता से कम नमक पड़ा हुआ स्वाद।
अलबार – (सं.पु.) शिशुओं का चोचाल, माता–पिता के प्रति शिशुओं का प्रेम।
असकहा – (विशे.) अकस्मात, अचानक, ऐसा लगा कि।
अस – (अव्य) ऐसा, इधर, इस ओर, समतुल्य।
असरफी – (सं.नंपु) आभूषण या सोना, बहुमूल्य धातु, दुर्लभ व वस्तु।
असढ़िया – (सं.पु.) लम्बा मोटा सर्प, एक सर्प विशेष का नाम।
असाख – (सं.पु.वि.) असत्य बोलना, सरासर झूठ बोलना।
असन्ती – (विशे.) जिसका खाने से पेट ही न भरता हो, जिसको कभी संतुष्टि न होती हो।
असाढ़ी – (अव्य) अषाढ़ महीने का कार्य, अषाढ़ में बोयी जाने वाली फसलें।
असमै – (अव्य) इसी वर्ष, इसी सत्र में।
असमौं – (अव्य) इस वर्ष भी, इस सत्र में भी।
असील – (विशे.) असल, असली, सही–सही का, असली बाय का, ब.मु.।
अस ओस – (ब.मु.) इधर की उधर, उधर की इधर, इस ओर भी उस ओर भी।
अहटोटब – (क्रिया) मन लेना, मनोदशा जानना, तलाश करना, ठौर–ठिकाना की खोज, तथ्य की जानकारी लेना।

अहॅदब – (क्रिया) किसी को पैरों से कुचलना, मारने–पीटने का प्रतीक, खाना–खाने के लिए व्यंग्य।

अँहणा – (सं.पु.) एक बर्तन के नाप का दूसरा बर्तन, उसी तौल या माप का बनाया गया अस्थायी नपना या बाट।

अँहड़ब – (क्रिया) किसी बाट की तौल का कृत्रिम बाट बनाना।

अहिना – (अव्य) इस प्रकार, ऐसा, इस भाँति, इस तरह का।

अहिबाती – (सं.सी.वि) सौभाग्यवती नारी, ऐसी नारी जिसका पति जीवित हो।

अहिरान – (सं.पु.) अहीरों का मुहल्ला, अहीरों की बस्ती विशेष।

अँहदोरब – (क्रिया) जी मिचलाना, अन्दर से उलटी का लगना, जी घूमना।

अहिमक – (विशे.) बहुत अधिक, जोरदार, तेज–तर्राट, बहुत मात्रा।

अहरा – (सं.पु.) रोटी बनाने के लिए लगी कण्डे की आग।

अहरी – (सं.स्त्री.) घर से दूर सहायक घर, मवेशियों के रखने का घर।

अहा – (अव्य) ओह! कितना बढ़िया, कितना अच्छा।

अहेर – (क्रिया) हाँका खेलना, शिकार करना, वन्य प्राणियों पर निशाना साधना।

अहुरा–बहुरी – (क्रि.वि.) जाना और तुरन्त लौटना, बहुत जल्दी, वापसी डॉक।

अहारब – (क्रिया) मन मुताबिक मारना, मनचाहा उलाहना सुनाना।

आ

आउब – (क्रिया) आयेंगें ? आऊँगा, आऊँगी।

आकर – (विशे.) असमान वजन, असंतुलित ऊँचाई, छोटा–बड़ा, ऊँची–नीची स्थिति।

आकर दोहर – (अन्य) एक के ऊपर दूसरा, आगे–पीछे, नीचे–ऊपर।

आँकुर – (विशे.) कड़ुबा या अरूचिकर, जहरीला स्वाद, आकुर लागै, बघेली मुहावरा।

आँकब – (क्रिया) किसी की कीमत अंदाज से बोलना, मूल्य निर्धारण करना।

आँक – (स.पु.) एक निश्चित मूल्यांक, कीमत या मूल्य।

आकरन – (सं.पु.) मर्यादा एवं सीमा, सम्मानयुक्त संकोच।

आँखा – (सं.पु.) कामर का एक पहलू, दोनों हाथ से उठाई गई फसल, डंठल।

आखत – (सं.पु.) अक्षत, शिशु जन्म के समय आशीषयुक्त अन्नांश, ब.मु.

आखर – (विशे.) एकदम नयी वस्तु, जो बिल्कुल प्रयोग में न लाई गई हो।

आगा – (सं.पु.) गन्ना के अग्रभाग का कोमल भाग।

आँगुर – (सं.पु.) अंगुल, एक अंगुल का प्रक्षेत्र या दूरी।

आगू–पाछू – (अव्य) आगे–पीछे, एक के बाद दूसरा, आगू–पाछू बागब, ब.मु.।

आगी के पुंज – (ब.मु.) अति लड़ाकू, अति नाराज होने वाला, बघेली मुहावरा।

आगी – (सं.स्त्री.) आग, अग्नि।
आँच – (सं.पु.) आग की ऊष्मा, क्षति, कुप्रभाव, दुष्परिणाम।
आँजब – (क्रिया) अंजन लगाना, सजाना–संवारना।
आजै – (अव्य) आज ही, आज के दिन ही।
आजी – (सं.स्त्री.) दादी, दाई, पुलिंग 'आजा'।
आँटी – (सं.स्त्री.) गिल्ली– डंडा, एक ग्रामीण खेल।
आँटब – (क्रिया) प्रहार को रोकना, आड़ लेना, रोकना।
आँठी – (सं.स्त्री.) तरल पदार्थ के जमने से एक टुकड़ा का नाम।
आड़र – (विशे.) बिना धुला, एकदम नया कपड़ा, अनूठा वस्त्र।
आड़ – (अव्य) बहाना, ओट, बहाना का माध्यम।
आँड़ा – (सं.पु.) अण्डाणु, बेंड़ा स्थिति, रोको या रोकिये, एक नग या मात्रा (विशे.)
आँड़ब – (क्रिया) बचाव करना, गिरते को थांहना, हाथ लगाकर रोक लेना।
आड़े – (विशे.) किसी के बहाने, कारण का कारक।
आँतर बाँह – (अव्य) बिरल ढंग से हुई खेत की जुताई, दो कुड़ों के बीच छूटी हुई भूमि।
आँती – (सं.स्त्री.) आँत, हिम्मत या क्षमता, साहस।
आती कोंइया– (सं.स्त्री.) आँत का ऑत से जुड़ा पेट का प्रकोष्ठ, आती कोइया मुरूरै, बघेली मुहावरा।
आद – (सं.पु.) अदरक, एक औषधीय कन्दमूल आदि, बघेली मुहावरा।
आँधर – (विशे.) अंधा, लाभ–हानि न समझने वाला।
आन – (विशे.) दूसरा, पराया, अन्य आदमी, वंश परिवार से भिन्न, बाहरी।
आने कइत – (अव्य) दूसरे तरफ, विपरीत दिशा में, अन्यत्र।
आनतरा – (अव्य) दूसरे प्रकार का नहीं, परायापन, असंभव नहीं।
आपरूभ – (सर्व.) अपने आप, बिना कारण के, बिना घटना के।
आपुन – (सर्व.) स्वयं, आप, खुद, पत्नी द्वारा पति के लिए संकेत।
आपुसमां – (सर्व.) आपस में, मित्र–मण्डली में।
आबा – (क्रिया) आइए, आओ, मिट्टी का बर्तन पकाने वाली भट्ठी।
आबा हो – (क्रिया) आओ, आइए, आ जाओ।
आबा–जाही – (क्रि.वि.) आना–जाना, जीना–मरना, आमदनी– खर्च।
आमा गोही – (विशे.) किसी वस्तु का मध्य मोटा और दोनों किनारे ढालदार।
आमर – (सं.स्त्री.) प्रजनन पश्चात् गर्भाशय से उत्सर्जित माँस की रस्सी एवं तरल पदार्थ।
आमछे–आमछे– (अव्य) कबड्डी के खिलाड़ी द्वारा प्रयुक्त श्वांस साधक शब्द।
आमिल – (विशे.) खट्टा स्वाद, खटाई से परिपूर्ण, आमिल–गुरूतुल करना', बघेली मुहावरा।

आँय – (योज.) हैं, है, पुनर्श्रवण का तकिया कलाम, हाँ।

आये – (क्रिया) आ गये, आ चुके।

आये–वाये – (अव्य) ऐसा–वैसा व्यक्ति, बेडौल व्यक्ति, ऐरा–गैरा।

आय तो – (क्रि.वि.) ठीक कहते हो, ऐसा ही है, सही तो है।

आये ता – (क्रि.वि.) आये तो, आ तो गये, आना तो हुआ।

आये–गये – (अव्य) आने–जाने से, परिचय बढ़ाने से, व्यवहार बनने पर।

आर – (सं.पु.) दो खेतों की सीमा रेखा, स्त्री लिंग आरि।

आलन – (सं.पु.) व्यंजन में पड़ने वाला अतिरिक्त मशाला।

आलाविक्ख – (विशे.) बहुत कड़वा, एकदम जहरीला, आलाविक्ख, बघेली मुहावरा।

आलर – (विशे.) मुलायम या कोमल, ढीली चूड़ी।

आलगुलूगुल – (ब.मु.) अस्पष्ट, अनाप–सनाप, अस्पष्ट, बघेली मुहावरा।

आँव – (स.पु.) पेचिस, पतला दस्त, टट्टी के साथ लाल–सफेद मवाद।

आसँउ – (अव्य) वर्तमान वर्ष, इस साल, इस ऋतु या मौसम में।

आसरा – (स.पु.) सहारायुक्त भरोसा, आशा व आकांक्षा।

आँसब – (क्रिया) आस जाना, खल जाना, खटकना, कष्ट महसूस होना।

आहीं – (स.क्रि.) हैं, हाँ, यही हैं।

आहे – (स.क्रि.) हो, हाँ, ।

इ

इआ – (सर्व.) यह, ये, अमुक।

इआ मेर – (अव्य) इस प्रकार का, इस भाँति का, ऐसा ।

इड्ड – (सं.स्त्री.) जिद, संकल्प, प्रतिज्ञा, हठ, इड्ड करब' बघेली मुहावरा।

इड्डिआब – (क्रिया) जिद करना, अपनी बात में अड़ जाना, हठ कर देना।

इड्डी – (विशे.) जिद्दी प्रवृत्ति का व्यक्ति, हठधर्मी।

इचँउआ – (क्रि.वि.) एकदम खींचतें हुए शैली में।

इतराज – (सं.पु.) नाराजगी, आपत्ति, असहमति, अप्रसन्नता।

इत्त – (विशे.) अति, सीमा लांघा हुआ, असहनीय।

इतिनिया – (विशे.) इतनी कम, इतनी सी, इतनी ही।

इँदरहर – (सं.स्त्री.) बेसन से निर्मित ग्राम्य व्यंजन।

इदँरामन – (सं.स्त्री.) एक पीले रंग का सुंदर किन्तु जहरीला फल।

इनखा – (सर्व) इनको, इसको, इसे।

इनहीं – (पर्व) इन्हें, इनको, इसको, इसे।

इनहित – (सर्व.) यही, इन्होंने ही, इन्हीं के।

इन्तकाल – (क्रिया) स्वर्गवास या देहान्त।

इन्तहान – (सं.स्त्री.) परीक्षा, इम्तहान, कसौटी, परीक्षण।

इनमहा – (सं.पु.) ईनाम से पाई हुई वस्तु, पुरस्कार वाली चीज।

इरखा – (विशे.) इर्ष्या, द्वेष, देखकर जलन होने का गुण।

इलिम – (सं.स्त्री.) प्रक्रिया या विधि, दावपेंच, उपाय, तौर–तरीका।

इलिलविलिल– (क्रि.वि.) अब्बे–तव्वे, आना–कानी, टाल–मटोल।

इस्सर – (सं.पु.) ईश्वर, भगवान, अल्ला, परमेश्वर।

इस्कूल – (सं.स्त्री.) विद्यालय, मदरसा, शाला, स्कूल।

इसाब – (क्रिया) ईष्या करना, पराई प्रगति न देख सकना।

इहैं – (अव्य) यहीं पर, यही ही, यहाँ ही।

इहाँ – (अव्य) यहाँ, यहाँ पर, इस जगह में।

इहैं – (सर्व) यही, यह ही।

ई

ई – (सर्व.) यें यह, अमुक (आदर सूचक)

ई – (सर्व) यह, अमुक (अनादर सूचक)

ई–ऊँ – (सर्व) ये और वो, यह और वह, ये औ वो।

ईचब – (क्रिया) खींचना, निकालना, अन्दर से बाहर करना, डूबते को पानी से खींच लेना।

ईछब – (क्रिया) फल का छिलका अलग करना, कंघी करना।

ई पचे – (सर्व) ये लोग, ये सब, लोग–बाग।

ई आँय – (सर्व) यह है, ये हैं, अमुक व्यक्ति।

ईस – (सं.पु.) ईर्ष्या, जलन, द्वेष–विद्वेष।

उ

उआ – (सर्व) वह, वो, अनादर सूचक सर्वनाम।

उइँ – (सर्व) वह, वो, आदरसूचक सर्वनाम।

उक्खान – (सं.पु.) उप आख्यान, कहावत या मुहावरे, लोकोक्ति।

उक्साउब – (क्रिया) उत्प्रेरित करना, पानी चढ़ाना, कार्य के लिए खोदना।

उक्सुर–पुक्सुर– (ब.मु.) करवट बदलना, अनिद्रा से बिस्तर में इधर–उधर हरकत।

उकरीध – (सं.पु.) मन का ऊब जाना, कष्ट की अनुभूति, अरूचिकर।

उँकेलब – (क्रिया) मष्तक, पशु की चमड़ी छीलना, मारना–पीटना, चिपकी वस्तु को अलग करना।

उकरूँ – (अव्य) दोनों घुटने मोड़कर तलबे के बल बैठने का ढंग।

उकॉव – (स.पु.) अनाज की संचित राशि, डंठल का ऊंचा ढेर

उकठा – (विशे.) जिसका मौलिक रंग उड़ गया हो, फीका रंग वाला।

उकसब – (क्रिया) व्यवस्थित को अस्त–व्यस्त करना, छप्पर की लकड़ी खपड़ा निकालना, रस्सी या धागे की लड़ी अलग– अलग करना।

उकबीत – (विशे.) गर्मी के कारण पशीने से उत्पन्न बेचैनी।

उकिठब – (क्रि.वि.) रंग का उड़ जाना, रंग–बेदरंग होना, मन्द रंग हो जाना।

उखरब – (क्रिया) उखड़ जाना, अपने आप नष्ट होना, जड़ से अलग होगा।

उखारब – (क्रिया) उखाड़ना, गड़ी को बाहर करना, जड़ समेत निकाल लेना।

उखरबइया – (सं.पु.) उखाड़ने वाला व्यक्ति।

उखेखब – (क्रिया) दबाव देकर किसी कार्य के लिए कहना, कार्य के लिए जोर लगाना।

उखार – (सं.पु.) प्रगति, उपलब्धि, कमाई, उखार करना, बघेली मुहावरा।

उखरबाउब – (क्रि.) दूसरे से उखड़वाना, उखाड़ने में सहयोग करना।

उखिआरब – (क्रिया) गड़ी या दबी वस्तु को उखाड़ना, पुरानी बात को उछालना।

उखिल – (विशे.) गिरवी वस्तु कब्जे में वापस आना, बिना बच्चे की गाय–भैंस, खेत का पानी से खुला हुआ भाग।

उगहता – (सं.पु.) उगाहने का कार्य करने वाला, उधारी वसूलने वाला।

उगहबइया – (सं.पु.) उधारी वसूलने का कार्य करने वाला।

उगाहब – (क्रि.) उगाही करना, उधारी वसूलना, माँगकर संचित करना।

उगहबाउब – (क्रि.) इकठ्ठा करवाना, वसूलने में सहभागिता निभाना।

उगिलब – (क्रि.) उगलना, पेट में न पचना, मुख से बाहर करना, रहस्य या भेद खोलना।

उगिलन – (सं.पु.) खाकर मुँह से उगला हुआ पदार्थ विशेष।

उगिलबाउब – (क्रिया) मुँह के अंदर से बाहर कराना, भीतर की बात का बयान करा लेना, उगलवाने में योगदान करना।

उगिलबइया – (क्रिया) उगलने वाला, रहस्य या भेद खोलने वाला।

उघरब – (क्रिया) खुलना, पर्दा का हट जाना, पोल खुल जाना।

उघरबाउब – (क्रिया) खुलवाना, खोलने में सहयोग करना, नंगा कर देना।

उघारब – (क्रिया) बन्द वस्तु को खोलना, पोल–पट्टी खुलना, नग्न करना।

उघँरबइया – (सं.पु.) खोलने वाला, बेइज्जत करने वाला।

उघन्नी – (सं.स्त्री.) चाभी, ताला खोलने वाला उपक्रम।

उघाँर – (विशे.) बिना वस्त्र या पर्दा की, नग्न वदन, एकदम खुली।

उँचहन – (विशे.) मोटी जमीन का खेत, वन–बगार की भूमि, जल्दी पकने वाली फसल।

उचट्टा – (विशे.) कूदते–फाँदते हुए, गतिमान होने की विधि, तेज चाल।

उचिटब – (क्रिया) कूदना, मन का ऊब जाना, बिगड़ जाना, उछलना।

उचक्का – (सं.पु.) अभद्र या उदण्ड पुरूष, बड़ बोला, स्त्री.लिंग उचक्की।

उचाउब – (क्रिया) उठाना, भार वाहन करना, ऊपर उठाना।

उचिटाउब – (क्रिया) वस्तु को उछलवाना, कुदवाना।

ऊ

ऊचबासे – (विशे.) ऊँचे स्थान पर, बहुत उँचाई में, पहुँच से ऊपर।

उछलब – (क्रिया) बर्तन के ऊपर से पानी का उछल जाना, अधिक पानी का बहना।

उछाल – (सं.पु.) खेत में अधिक पानी निकलने के लिए बनाई गई नाली।

उछिन्न – (विशे.) सीमा से परे, अग्राह्य व्यवहार, रीति–नीति विरूद्ध कार्य।

उज्जर – (विशे.) सफेद, साफ सुथरा, धुला हुआ, पवित्र, उज्जवल।

उजरइती – (विशे.) वेतपना, बड़प्पननुमा।

उजिआर – (विशे.) उजाला या प्रकाश, सुबह, अँजोर, अंधकार रहित।

उजिआरी – (विशे.) उजाला पाख, अजोरी वाली।

उज्जरई – (विशे.) उजलापन, बड़पन्ननुमा प्रदर्शन।

उजबुक – (सं.पु.) झक्की मिजाज का, अर्धपागल, अस्थिर मानसिकता का।

उजरन्त – (सं.पु.) उजार का समूह, अनुपयोगी घास की टुकड़ियाँ।

उजार – (सं.पु.) सूखे घास के तिनके, नुकसान या हानि।

उजारब – (क्रिया) उजाड़ना, सार्वजनिक करना, नुकशान पहुँचाना, घर–द्वार बरबाद करना।

उजरबाउब – (क्रिया) उजड़वाना, उजाड़ने में मदद करना।

उटक्कर – (विशे.) सुस्पष्ट, एकदम अलग, सुवाच्य सुलेख।

उटन्ग – (विशे.) सिले कपड़े का छोटा पड़ जाना, अंग से ओछा वस्त्र।

उटपटाँग – (विशे.) औचित्यहीन कार्य, जिसका कोई महत्व न हो, तथ्यहीन।

उटपटाँगी – (स.पु.) हमेशा बुरी हरकत करने वाली प्रवृत्ति का व्यक्ति।

उटनी – (सं.स्त्री.) मादा ऊँट, नारी के लिए एक गाली।

उटकटार – (सं.स्त्री.) काँटेदार छोटे कद की कटीली झाड़ियाँ या फल।

उठब – (क्रिया) उठना, खड़े होना, सोकर जगना, गाय का ऋतुमती होना।

उठाउब – (क्रिया) सोते को जगाना, ऊपर उठाना, पड़ी वस्तु को ले लेना।

उठबाउब – (क्रिया) उठाने में सहयोग करना, उठवाना।

उठबइया – (सं.पु.) उठाने वाला, ले लेने वाला, जगाने वाला।

उठाई गीर – (वि.स.पु.) जो अमानत से खयानत करता हो, धरोहर को भी खर्च कर देने वाला व्यक्ति।

उठाउठउहल– (ब.मु.) सभा विसर्जन, चला–चली, बघेली मुहावरा।

उठबेय – (क्रि.भवि.) उठोगे, उठोगी, खड़े होओगे।

उठइहेय – (क्रि.भवि.) उठाओगे, उठायेंगे ?

उढ़री – (सं.स्त्री.) रखैल औरत, बिना व्याही बीबी, एक गाली।

उढ़रब – (क्रिया) व्याहा पति छोड़कर दूसरा पति कर लेना।

उड़न्की – (सं.स्त्री.) अफवाह, बदनाम करने की हवा, कृत्रिम दोष।

उड़िला – (सं.पु.) गर्मी के दिनों में पशुओं का स्वच्छन्द विचरण, उड़िला होना, बघेली मुहावरा।

उड़िलाउब – (क्रिया) कुत्ते को काटने हेतु उत्प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना।

उड़ासब – (क्रिया) बिछा बिस्तर उठाना, बिछौना निकालना, सभा विसर्जन।

उड़ाउब – (क्रिया) उड़ाना, भूसा से अनाज अलग करना।

उड़ेलब – (क्रिया) मोटी धार से पानी गिराना, एक बारगी पानी डालना।

उड़िलाब – (क्रिया) स्वच्छन्द होना, सार्वजनिक होना, आवारा हो जाना।

उड़बाई – (सं.पु.) भूसा से अनाज अलग करने का मेहनताना, मजदूरी।

उतर – (क्रिया) नीचे उतरो, जमीन पर आओ, उतरो।

उतरब – (क्रिया) ऊपर से नीचे होना, पार उतरना।

उतारब – (क्रिया) पहना हुआ वस्त्र शरीर से निकालना, उतारना।

उतरबाउब – (क्रिया) उतरवा लेना, पहनी हुई वस्तु को ले लेना।

उतरवाई – (सं.पु.) पार उतारने के बदले प्राप्त पारिश्रमिक, मेहनताना।

उत्तरायन – (विशे.) उत्तर दिशा में सूर्य या चन्द्र का होना, उत्तर दिशा की ओर।

उतजोग – (अव्य) उपाय या उक्ति, प्रक्रिया एवं विधि।

उतरबइया – (सं.पु.) पार लगाने वाला, जो वस्त्र तन से निकलवा लिया हो।

उतारा – (सं.पु.) नये घर के प्रवेश पूर्व का पूजा–पाठ, रीति एवं परम्परा।

उतारन – (विशे.) पहना हुआ या पहनकर फेंका गया जूठन वस्त्र।

उतान – (अव्य) घमण्डी, सीना उभारकर चलना, पीठ के बल जमीन पर लेटा हुआ।

उतन्ना – (सं.पु.) कान के ऊपर हिस्से में धारित वाला।

उतराब – (क्रिया) पानी के ऊपर तैरना, ऊपर–ऊपर रहना।

उतरूआ – (विशे.) समाज या परिवार से तिरस्कृत व्यक्ति।

उत्तरहा – (विशे.) उत्तर दिशा का निवासी।

उतिनब – (क्रिया) सजावट को उखाड़ना, बने घर की सामग्री अलग करना।

उतिनबाउब – (क्रिया) घर की लकड़ी–खप्पड़ सब निकलवाना व सहयोग करना।

उतिनइया – (स.पु.) घर की ईमारती लकड़ी छप्पर खोलने वाला।

उतुहब – (क्रि.वि.) गर्भवती गाय–भैंस का गर्भपात हो जाना।

उत्तू – (ब.मु.) खुल जाना उत्तू होइ जई, बघेली मुहावरा।

उताउब – (क्रिया)मिट्टी से बन्द पात्र को पुनः खोलना।

उदकब – (क्रि.वि.) उछलकर ऊपर होना, ऊपर की ओर उठना।

उदकाउब – (क्रिया) ऊपर की ओर उछालना।

उदुआ – (सं.पु.) जल का सूखा पड़ना, गाँव के जलाशयों का सूख जाना।

उदुआब – (क्रिया) जलाशय का पानी सूख जाना।

उदुआन – (विशे.) बिना पानी का नदी– तालाब व कुँआ, सूखा जलाशय।

उदई – (सं.पु.) बिल्कुल मूर्ख, मूर्खता का एक प्रतीक।

उदन्त – (विशे.) ऐसा बैल जिसके सभी दाँत टूट चुके हों।

उदिरब – (क्रिया) खोलना, किवाड़ खोलवाना, खोलवाने में मदद करना।

उदिरबइया – (सं.पु.) किबाड़ा खोलने वाला।

उद्दियान – (ब.मु.) अकर्ण प्रिय लगना, देखने–सुनने में अच्छा न लगना।

उधराब – (क्रिया) आँख मींचकर रूचिपूर्वक कार्य हेतु उद्धत होना।

उधराउब – (क्रिया) काटने के लिए कुत्ते को उत्प्रेरित करना।

उधिन – (क्रि.वि.) शरीर में असहनीय पीड़ा उठना, हाथ–पाँव में फाटन होना।

उधिना – (अव्य) उस दिन, उस तारीख को।

उधाब – (क्रिया) पीछे पड़ जाना, कार्य के लिए मन बना लेना।

उधिरा – (विशे.) खरोंच लगा हुआ, चमड़ी का छिला हुआ।

उधिरब – (क्रि.) चमड़ी का छिल जाना, चमड़ी में खरोंच लगना।

उधेरब – (क्रिया) माँस से चमड़ी छीलना, किसी को पीटना।

उधेरबाउब – (क्रिया) चमड़ी या छिलका अलग करवाना।

उधेरबइया – (सं.पु.) उधेड़ने वाला, मारने–पीटने वाला।

उधिरबाई – (सं.पु.) चमड़ी निकलने का मेहनताना या मजदूरी।

उधुँआ – (सं.पु.) अनुमान व अंदाज बस, अचानक बिना योजना के

उधरहा – (सं.पु.) उधार में दी गई या ली गई वस्तु।

उधुम – (क्रिया) अत्याचार, झगड़ा–फसाद।

उधिनै – (सर्व.) उसी दिन, उस दिन ही, उसी रोज।

उनहिन – (सर्व.) वही, उन्हीं, वे ही

उनहूँ – (सर्व.) उनको भी, उन्हें भी, वो भी।

उनहीं – (सर्व.) उनको, उसको

उन्हारी – (सं.स्त्री.) रबी की फसलें

उनरब – (क्रिया) मुँह खुलना, परत हटना, फटना।

उनसे – (सर्व.) उससे, उस व्यक्ति से।

उनखे – (सर्व) उनके यहाँ, उस व्यक्ति के

उनखा – (सर्व.) उनको, उसको।

उपहकाज – (सं.पु.) मनगढ़त, अपने मन से अनुमान बस।

उपराजिल – (विशे.) उपजाऊ, क्षमता युक्त।

उपराज – (सं.पु.) उपज, होती, पैदा हुआ अनाज।

उपराजब – (क्रि.सक.) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्माना, निर्माण करना।

उपन्ना – (सं.पु.) पीले रंग का एक गमछा।

उपटब – (क्रिया) उभर आना, चिन्ह बन जाना, स्पष्ट दिखना।

उपटाउब – (क्रि.) उभारना, चिन्ह बनाना, सुपष्ट करना।

उपरँहगा – (सं.पु.) ओढ़ने वाला वस्त्र, ऊपर का पहलू, रजाई–गद्दे की खोली।

उपरउझा – (क्रिया) किसी का पक्ष कहना, तरफदारी करना।

उपरेहित – (सं.पु.) परम्परागत संस्कार कराने वाले पुरोहित।

उपरचढ़ी – (सं.स्त्री.) बढ़ चढ़कर, अधिक बोली लगाना, प्रतिस्पर्धा।

उपरी – (सं.स्त्री.) गोबर की गोल उप्पली या उप्पल।

उपड़उरा – (सं.पु.) उप्पल का ढेर लगाने वाली जगह विशेष।

उपरफट्ट – (अव्य) दिखावटी या बनावटी, औपचारिक, ऊपर ही ऊपर।

उपरचुपर – (अव्य) लेपननुमा व्यवहार, दिखावटी एवं बनावटी व्यवहार।

उपचीर – (क्रि.वि.) मन को खिन्न कर देने वाली वार्ता, खराब कार्य ।

उपासब – (क्रिया) उपवास करना या व्रत रहना, फलाहारी होना।

उपासन – (विशे.) जिसके मुँह में बीमारी के कारण दाना–पानी न गया हो।

उपास – (क्रिया) व्रत या उपवास, अन्न त्याग संकल्प।

उपसहा – (विशे.) उपवास रहने वाला व्यक्ति, बहुत दिनों से बीमार।

उप्प–उप्प – (अव्य) बन्दरों के बोलने की एक विशेष आवाज।

उपखर – (क्रिया) वर्षा के पश्चात् आकाश का खुलना, हल्की धूप का निकलना।

उफिनब – (क्रिया) रस्सी का फंदा बिना गाँठ खोले घड़े के गले से निकालना।

उफनाब – (क्रिया) उफान आना, आवेशित एवं आक्रोशित होना।

उबाब – (क्रिया) किसी की याद सताना, याद में उदास होना, स्मरण आना।

उबांत – (सं.स्त्री.) कय, बमन, उलटी होना, जी मिचलाना।

उबाउब – (क्रिया) किसी को मारने के लिए हाथ उमाहना, मारने को हाथ भर उठाना।

उबेने – (विशे.) नंगे पाव, बिना कपड़ा पहने हुये।

उबिठब – (क्रिया) खाते–खाते हिच जाना, अरूचि हो जाना, मन से ऊब जाना।

उबजियाब – (क्रिया) मन ऊब जाना, मन भर जाने से अरूचि हो जाना।

उमहब – (क्रिया) कार्य करने का मन बनाना, मानसिकता का बनना, खुलना या सामने आना।

उमाहब – (क्रिया) किसी को पीटने के लिए हाथ ऊपर उठाना।

उमिर – (सं.स्त्री.) उम्र, आयु, पन, जीवन का चरण।

उरझेटब – (क्रिया) सींग से वस्तु को तितर–बितर कर देना।

उरिन – (क्रिया) उऋण, ऋण मुक्त होना, कर्ज या भार से छुटकारा मिलना।

उरदा – (सं.पु.) उड़द, एक खरीफ की फसल या दलहन।

उरदहा – (विशे.) उड़द की फसल बोया हुआ खेत विशेष।

उरई – (सं.स्त्री.) कास समूह का एक विशेष छाँस।

उराव – (सं.पु.) शौक, उत्साह, मन का बनना, दिल हो आना।

उरायल – (सं.पु.) शौक या उत्साहपूर्ण करने के लिए भाव–विभोर, उत्साहित,

उरेहब – (क्रिया) श्यामपट पर अक्षर की आकृति बनाना, लकीर खींचना, चाक से लिखना।

उलहब – (क्रिया) प्रस्फुटित होना, विकसित होना, पुनर्रपल्लवित होना।

उल्ली – (सं.पु.) खिझाने वाला एक शब्द, हँसी–मजाक उड़ाने का प्रतीक।

उलर – (विशे.) कच्ची उम्र, असमान्य स्थिति, तुलना में छोटा दिखना।

उलिचब – (क्रिया) चुल्लू से पानी फेंकना, अंजुली से पानी हटाना।

उललाउब – (क्रिया) किसी की मजाक उड़ाना, हँसी करके तिरस्कृत करना।

उलेला – (क्रि.वि.) पानी की बहुत छोटी धार, एकदम पानी सिमटकर बहना।

उलउब – (क्रिया) वंश या परिवार को रेखांकित करके बुरा–भला कहना, पूरे परिवार को चुनौती देना।

उलटी – (क्रिया) कय होना, पेट का भोजन मुख द्वार से निकल आना।

उलटब – (क्रिया) सिर के बल पलटी मारना, मवेशी का गर्भ न ठहरना।

उलटाउब – (क्रिया) पलटवाना या पलटाना, पलटने में सहयोग करना।

उलटमाँसी – (सं.स्त्री.) विपरीतार्थी, वक्रोक्ति युक्त कथ्य, व्यग्यात्मक अभिव्यक्ति।

उलटा पल्ला – (क्रि.वि.) साड़ी का पल्लू कंधे व वक्ष से घुमाकर सिर पर रखना।

उलटा पुलटा – (अव्य) गलत–सलत, जैसा चाहिए उसका ठीक उल्टा।

उलट–पलट – (अव्य) पुनरावृत्ति, बार–बार, सघन रूप से निरीक्षण।

उलझारब – (क्रिया) घड़े में भरे पदार्थ को हिलाना–डुलाना, हिलाकर ऊपर नीचे करने की क्रिया।

उलटहाबव – (क्रिया) प्रतिउत्तर, सवाल का जवाब, प्रश्न का तुरंत जवाब।

उसलब – (क्रिया) उखड़ना, बैठे पशु का खड़ा होना, घर उजाड़कर चले जाना।

उसिना – (सं.पु.) उबाला हुआ खाद्य पदार्थ, दाल की पीठी का ग्रामीण व्यंजन।

उसिनब – (क्रिया) भाप से उबालना, भाप के सहारे पकाना।

उसाँसी – (क्रिया) प्रोत्साहन, हाथ लगाना, ऊपर उठने के लिए सम्बल देना।

उसुआब – (क्रिया) सूखे घाव का पुनः आना, घाव में मवाद भरने से सूज आना।

उसुआन – (विशे.) घाव का पका हुआ, पके घाव में आया हुआ सूजन।

उसलूहुड़ – (विशे.) बर्तन के मुहाड़े के ऊपर का भरा पदार्थ, एकदम भरा हुआ।

उसनीद – (विशे.) अनिद्रा, नींद लगने की अनुभूति, जागरण।

उसट्ट – (क्रिया) कार्यक्रम का स्थगन होना, निरस्त होना, पक्का कार्य निरस्त हो जाना, लगा विवाह बदल जाना।

उसढ़ढल – (विशे.) अपरिपक्व व अनिश्चित, ढीला कार्य, परिवर्तनीय एवं स्थगन योग्य।

उसरहा – (सं.पु.) ऊसर मिट्टी वाला बाँध या खेत का नाम।
उसालब – (क्रिया) जड़ से उखाड़ना, किसी का घर उजाड़ना, पैर आगे बढाना, रोमा उसालब, बघेली मुहावरा।
उहाँ – (अव्य) वहाँ, वहाँ पर, उस जगह।
उहै – (सर्व.) वही, वह ही।
उहौ – (सर्व.) वह भी, वो भी।

ऊ

ऊन्ख – (सं.स्त्री.) गन्ना, गन्ना का पौधा।
ऊँद – (विशे.) निर्बल क्षमता वाला, जल्दी निर्णय न ले सकने वाला।
ऊप–ऊप – (अव्य) बन्दरों के बोलनें की आवाज।
ऊब – (सं.स्त्री.) किसी की याद आना, किसी के देखने या मिलने की मनःस्थिति।
ऊबट – (सं.पु.) ऊँचा–नीचा, अनुभव से, अनुमानवश, अंदाज से।
ऊम – (सं.पु.) अनुमान, स्मरण, समाधान की सूझ।
ऊमर – (सं.पु.) एक वनस्पति वृक्ष, ऊमर केर फूल, बघेली मुहावरा।
ऊर – (विशे.) जो अपूर्ण हो, रूढ़ संख्या।
ऊरधरे – (स.पु.) कुत्ते को गतिमान करने का एक विशेष शब्द।
ऊरा – (सं.पु.) बिच्छू का डंक, नुकीली चीज, व्यंग्य वाणी।
ऊसर – (सं.पु.) लावण्य मिश्रित अनुपजाऊ जमीन।
ऊल्लादच्ची – (क्रिया) किसी का झूठा संदेश बताकर ठग लेना, झूठ व पाखण्ड का सहारा लेकर अपना कार्य सिद्ध कर लेना, ऊलादच्ची मारना, ब.मु.।
ऊलाडाबर – (सं.स्त्री.) ऊँचा–खाली स्थान, ऊबड़–खाबड़ सतह, असमतल गढ्ढानुमा।
ऊलिहे – (अव्यय) कुत्ते को उत्तेजित करने वाला विशेष शब्द।

ए/ऐ

ए!ऐ! – (सम्बो.) सम्बोधन एवं चेतावनी सूचक शब्द।
एइन – (सर्व.) यही, यही हो, यही ही।
एई – (सर्व.) यही, ये ही।
एऊँ – (सर्व.) यह भी, ये भी।
एकठा – (विशे.) अकेले एक, अखण्डित, एकहरा।
एकसर – (विशे.) दुबले–पतले शरीर का, जिसका एकहरी बनावट हो।
एक रंग – (विशे.) एक ही रंग का, समान गुण का, एक ही प्रकार।
एक्का–दुक्का – (विशे.) एक–दो, छुटपुट, विरलरूप, भूले–भटके।
एकठउरा – (विशे.) एक ही नग, एक ही स्थान में, संयुक्त रूप से।
एकाध – (विशे.) नाममात्र का, गिने चुने, एक या एक से भी कम।
एकड्डी – (विशे.) एक रटवाला, नितान्त जिद्दी, दृढ़ संकल्पी।
एकुयै – (विशे.) एक ही, अभिन्न, समान गुण–धर्म वाले।
एकैठे – (विशे.) मात्र एक ही नग, एक ही, सिर्फ एक।

एकर – (सर्व.) इसका, इसकी, अनादर सूचक।

एकैमेर – (विशे.) एक ही प्रकार का, एक ही गुण–रूप का।

एकैकइत – (अव्य) एक ही दिशा में, एक ही ओर, एक तरफा।

एक्का – (सं.पु.) एक घोड़े वाली गाड़ी, एक्का कस घोड़, बघेली मुहावरा, एक बिन्दी वाली तास की पत्ती।

एकंगी – (विशे.) एकांगी, एक दिशा विशेष में झुका हुआ।

एकबेरी – (विशे.) एकबार, एक दौर, एक चरण, मात्र एक बार।

एकधान – (विशे.) एक बार में पीसी जाने वाली वस्तु या अनाज की मात्रा।

एकझने – (विशे.) कोई एक व्यक्ति, एक ही व्यक्ति।

एकटक्क – (विशे.) अपलक, सघन दृष्टि।

एकबले – (अव्य) एक ओर, एक ही तरफ, एक ही दिशा में।

एखर – (सर्व.) इसका, इसकी, अनादर सूचक।

एखा – (सर्व.) इसे, इसको, अनादर सूचक।

एगर – (अव्य.) पास में, गाँठ में, नजदीक, अंग में।

एगसिया – (सं.स्त्री.) एकादशी को जन्मीं नारी का नाम।

एगास – (सं.स्त्री.) एकादशी की तिथि।

एँध्धा – (अव्य) इस ओर, इस दिशा में इस जगह में।

एँघरी – (अव्य) इस समय, इस अवधि में इस अवसर पर।

एँड़ा – (सं.पु.) घुटने की गाँठ, एड़ा लगाना, बघेली मुहावरा।

एड़िआउब – (क्रि.) एड़ा लगाकर किसी को दबाना या मारना।

एँड़बेड़ – (विशे.) अला–भला, तिरछा–आड़ा, बेडौल, बलखाया हुआ, काम चलाऊ, एड़–बेड़, ब.मु.।

एतना – (विशे.) इतना, इतना अधिक, स्त्री.लिंग एतनिया एवं एतनी।

एत्ता – (विशे.) इतना, इतना ज्यादा, स्त्री.लिंग एन्ती।

एतू – (विशे.) इतनी, इतनी ही, इतना ही।

एत्तै – (विशे.) इतना ही, स्त्री.लिंग 'एत्तिन'।

एत्तीदार – (अव्य) इतनी देर, इतने समय बाद, इस समय में।

एतान – (अव्य) इस प्रकार, इस विधि से, इस भाँति।

एत्ते का – (अव्य) इतने के लिए, इतने भर को।

एदा – (यो.) यह, ये, यहाँ।

एदॉर – (अव्य) इस बार, इस दौर में, अवकीवार, स्त्री.लिंग एदॉरी।

एनका – (सर्व.) इनको, इन्हें, आदर सूचक।

एनहिन – (सर्व.) यही, यही ही, इन्हीं।

एनठे – (अव्य) यहाँ पर, इस जगह में, इस स्थान में।

एँपर – (अव्य) इस पर, इसके ऊपर, इसमें।

एँपल्ला – (अव्य) इस पार, इस तरफ, यह भाग, इस ओर।

एँपलाट – (अव्य) इस हिस्से, इस भाग, इस तरफ।

एँबेर – (अव्य) इस बार, इस दौर में, स्त्री.लिंग एँवेरी।

एँबेरा – (अव्य) इस समय, इतनी देर।

एँबले – (अव्य) इस तरफ, इस पहलू, इस दिशा।

एँमा – (सर्व) इस पर, इसमें, इसके ऊपर, इस जगह में।

एँय–एँय – (अव्य) बच्चों के रोने की ध्वनि विशेष।

एरी – (अव्य) ऐ री! ए जी, ऐ जी! सम्बोधन सूचक।

ए रे – (सम्बो.) छोटे के लिए स्नेहित सम्बोधन, बड़ों के लिए अनादर सूचक।

एँलटा – (अव्य) इस दिशा को, इधर को, इस तरफ, इस हिस्सा में।

एसे – (अव्य) इस कारण से, इसलिए, इससे, इस व्यक्ति से।

एँसता – (अव्य) इस समय, इन दिनों, इस मौके पर।

ए ही – (सर्व) इसे, इसको, यही, इसे ही।

एँहसे – (अव्य) इसलिए, इस वजह से, इस विचार से।

एहीं से – (अव्य) इसीलिए, इसी उद्देश्य से, इसी नियत से।

एँह – (अव्य) अहा, अरे, वक्रोक्ति सूचक, पश्चाताप सूचक।

एहदे – (अव्य) यह देखो, ये देखो, ये है, यहाँ पर है।

एहूका – (सर्व.) इसको भी, इनको भी, इसे भी।

ऐह–ऐह – (अव्य) गाय या बछड़े को बुलाने वाला विशेष शब्द।

ऐहा – (अव्य) दूध दुहने के लिए गाय को प्रसन्न करने हेतु विशेष शब्द।

ओ

ओइन – (सर्व.) वही, वह ही, वे ही, वो ही!

ओइरा – (सं.पु.) खेत में अनाज बोने हेतु हल में प्रयुक्त काष्ठ पात्र विशेष।

ओइरब – (क्रिया) घूँस में पैसा देना, चक्की में अन्न डालना।

ओइसे – (अव्य) यो हीं, यों तो, मेरी मर्जी।

ओइसै – (अव्य) वैसे ही, यों हीं, बिना उद्देश्य या प्रयोजन के।

ओइसन – (अव्य) वैसे, वैसे तो।

ओइझा – (अव्य) उधर, उस तरफ, उस ओर!

ओई – (सर्व.) वहीं, वह ही,

ओंऊँ – (सर्व.) वो भी, वह भी, वे भी।

ओकलाई – (क्रि.वि.) उलटी आना, कय की अनुभूति।

ओकब – (क्रिया) कय करना, उलटी होने की क्रिया।

ओकरब – (क्रिया) करना, क्रिया विशेष, मैथुन करना।

ओका – (सर्व.) उसको, उसे, उस वस्तु को, उस व्यक्ति को।

ओके – (सर्व.) उसके, उसके यहाँ, उस व्यक्ति के।

ओकी – (सं.स्त्री.) उलटी कय, उलटी हेतु घृणा।

ओकरबाउब – (क्रि.) कार्य करवाना, करवाने में सहयोग करना, मैथुन करवाना।

ओखर – (सर्व.) उसका, उस व्यक्ति का।

ओखा – (सर्व.) उस व्यक्ति को, उसे, उसको।

ओगरब – (क्रिया) अपने आप पैदा होना, जल का निकलते रहना, निःसक्त होना।

ओगार – (विशे.) एकदम ठोस, पूर्ण परिपक्व, मोटी लकड़ी के बीच का पका अंश।

ओघ्घा – (अव्य) उस तरफ, उस दिशा में।

ओछरब – (क्रिया) कय वमन करना, अन्दर का उगल देना।

ओछराई – (क्रि.वि.) उलटी या कय लगने की अनुभूति।

ओछराउब – (क्रिया) उलटी करवाना, अन्दर का निकलवा लेना।

ओछरन – (विशे.) उल्टी या कय में गिरा हुआ पदार्थ या अन्नांश।

ओछबढ़ – (विशे.) छोटा–बड़ा होना, एक छोर बड़ा दूसरा छोटा, असामान्य।

ओछाहिल – (विशे.) समय से पूर्व जन्मा अपरिपक्व शिशु।

ओछात – (विशे.) अस्पष्ट व आंशिक रूप से, अकस्मात् जरा सा दिख जाना।

ओछ – (विशे.) कपड़े का छोटा पड़ जाना, संकीर्ण सोच व मानसिकता।

ओछीकानी – (विशे.) गाय या बछड़े का वयस्क होने का एक दाँतीय संकेत।

ओक्ष्क्षा – (सं.पु.) सवारी चढ़ने पर मुख से निकला शब्द या दुहाई।

ओछ्छाब – (क्रि.वि.) पण्डे का सवारी आने पर कूदना–फाँदना।

ओझरि – (सं.स्त्री.) आँत, आँत प्रक्षेत्र की माँस पेशी, उदर।

ओठर – (सं.पु.) बहाना, कामचोरी, जी चुराना।

ओठरिहा – (सं.पु.) बहानेबाज, वह जो बहाना बनाये हुए हो।

ओठी – (सं.पु.) हल में संलग्न दाहिना बैल का प्रतीक।

ओढ़ना – (सं.पु.) वस्त्र, कपड़ा, रजाई या चादर, ओढ़ने वाला कपड़ा।

ओढ़ब – (क्रिया) ढकना, ओढ़ना।

ओढ़बाउब – (क्रिया) स्वयं न ढककर दूसरे से ढकवाना, ओढ़वाना।

ओढ़कब – (क्रिया) सहारा लेकर टिकना।

ओढ़काउब – (क्रिया) किसी वस्तु के सहारे दूसरी वस्तु टिकाना, दूसरे के सिर पर मढ़ना।

ओढ़निया – (सं.स्त्री.) सिर ढकने वाला वस्त्र, घूँघट का कपड़ा।

ओंड़ब – (क्रिया) घुटने से दबाना, एड़ा लगाकर मर्दन करना।

ओड़चब – (क्रिया) ताकत लगा–लगाकर मर्दन करना, मैथुन करना।

ओड़िआउब – (क्रिया) जमीन पर पटककर एड़ा से दबाना।

ओड़चबाउब – (क्रिया) किसी से मर्दन करवाना, मैथुन क्रिया करवाना।

ओत – (विशे.) दवा खाने पर आराम लगना, आलस्य या देर, छूट मिलना,सस्ता।

ओती – (सं.पु.) आलसी, देर दराज, प्रवृत्ति का।

ओताब – (क्रिया) विलम्ब करना, आलस्य करना।

ओंतान – (अव्य) उस प्रकार, उस तरीके से।

ओत्ता – (विशे.) उतना, उतना ज्यादा, स्त्री.लिंग 'ओत्ती'।
ओद – (विशे.) गीला, अशुष्क, आर्द्र।
ओदी – (सं.स्त्री.) गीलापन, नमीयुक्त।
ओदिआउब – (क्रिया) गीला करना, पानी से नम बनाना।
ओदार – (विशे.) उदार, दानी, देनदार प्रवृत्ति।
ओदार – (अव्य) उस बार, उस दौर में, दूसरे चरण में, स्त्री.लिंग ओंदारी।
ओदरब – (क्रिया) चिटक जाना, फट जाना, धराशायी हो जाना।
ओदारब – (क्रिया) गिराना, फाड़ना, खण्डवत करना।
ओदरबाउब – (क्रिया) किसी से फड़वाना, गिराने में सहयोग करना।
ओधा – (अव्य) ओट, आड़, अदृश्य।
ओधसब – (क्रिया) धराशायी होना, किसी पर किसी का गिरना, टकराकर भिड़ना।
ओधासब – (क्रिया) गिराना, नष्ट करना।
ओधउटे – (विशे.) ओट में, आड़ में, छाया में।
ओन्हा – (सं.पु.) कपड़ा, वस्त्र।
ओनउब – (क्रिया) गाय–भैंस के प्रजनन के पूर्व का विशेष दृश्य।
ओनामासी – (सं.स्त्री.) श्रीगणेश, पढ़ाई के प्रारंभ का शुभ संकेत।
ओनइस – (विशे.) उन्नीस, एक कम बीस की संख्या, बघेली मुहावरा।
ओनखा – (सर्व.) उनको, उन्हें।
ओनहनें – (सर्व.) वही लोग, वे लोग ही, वही सब।
ओनहिनका – (सर्व) उन्हीं को, उन्हीं लोगों को।
ओपलझा – (अव्य) उस ओर, उस पहलू, उस तरफ।
ओमां – (अव्यय) उस पर, उसमें, उस स्थान में।
ओय – (सं.पु.) वही, पति के लिए प्रतीक, पुकारने पर हाँ स्वीकारोक्ति।
ओय–ओय – (अव्य) रोते बच्चों को पुचकारने का विशेष शब्द।
ओंय–ओंय – (अव्य) भैंस के मुख की ध्वनि विशेष।
ओयन – (सं.पु.) गाय का दुग्ध प्रक्षेत्र का सूजा हुआ संकेत।
ओर – (सं.पु.) बर्फ, वर्षा के रूप में गिरा ओला, एकदम ठंड।
ओरा – (विशे.) छूट, सस्ता, आराम, लाभ, सहूलियत।
ओराब – (क्रि.वि.) काम का कुछ कम होना, उपसंहार की ओर पहुँचना।
ओरगब – (क्रि.) रूकना या ठहरना, प्रतीक्षा करना।
ओरमाउब – (क्रिया) आश्रित होना, मुँह लटकाना।
ओरगा – (सं.पु.) किसानों एवं (बढ़ई, लुहार, नाई) प्रजा के बीच की संविदा।
ओरहन – (सं.पु.) शिकायत, उलाहना, दोषारोपण।
ओरगहरू – (सं.पु.) जो सेवक विशेष ही सेवा के लिए निर्धारित हो।
ओरचामन – (सं.स्त्री.) चारपाई के बिनाव को कसने वाली पतली रस्सी।
ओरी – (सं.स्त्री.) छप्पर का अग्रभाग, आँगन की ओर वाला छप्पर।

ओरमानी – (सं.स्त्री.) दीवाल से आगे निकला हुआ छप्पर का अग्रभाग।

ओरिआउब – (क्रिया) शिशु जन्म की सूचना बतौर गाँव के आँगनों में चौखुट गोबर का चित्र बनाने की परम्परा।

ओलब – (क्रिया) ठंड लगने पर आग से शिशु को सेंकना, देशी औषधि का लेपन।

ओलबाउब – (क्रिया) लेपन लगवाना, ताप से सेंकवाना।

ओलिआउब – (क्रिया) घुसेड़ देना, ओली बना लेना, नीचे की धोती ऊपर मोड़ लेना।

ओला – (सं.पु.) बर्फ, पाला, ओस कण।

ओली ओली – (अव्य) पशुओं को घर के अन्दर होने के निर्देश शब्द।

ओलिया – (सं.स्त्री.) ओली, घोती को ऊपर की ओर झोलीदार बनाकर मोड़ाव।

ओलियाब – (क्रिया.) घुस जाना, अन्दर होना, किसी के घर में घुस पड़ना।

ओसहा – (सं.पु.) देशी औषधि, घरेलू जड़ी–बूटी की चिकित्सा।

ओसबाउब – (क्रिया) किसी से भूसा उड़वाकर अनाज के दाने अलग करवाना।

ओसाउब – (क्रिया) भूसे से अनाज के दाने अलग करने की क्रिया।

ओस – (अव्य) उधर, उस ओर, उस तरफ को।

ओसटब – (क्रिया) बूड़े के पानी का कम होना, नदी के बाढ़ के पानी का कम होना।

ओसइली – (सं.स्त्री.) भूरे रंग की तिल विशेष।

ओसरी – (अव्य) बारी, बारी, क्रम।

ओसरी पहरा– (अव्य) एक के बाद एक, क्रम–क्रम से, बारी–बारी।

ओसारी – (सं.स्त्री.) घर के सामने का बरामदा, पुलिंग 'ओसार'।

ओसर – (सं.स्त्री.) पहली बार प्रजनित भैंस, गर्भधारण योग्य भैंस की बच्ची।

ओंसता – (अव्य) उस समय, उस समय पर, उस वक्त में, उन दिनों।

ओहटी – (सं.स्त्री.) किसी कार्य का एक चरण, एक पारी विशेष।

ओहदा – (सं.पु.) पद, औकात, धारित पदवी, श्रेणी।

ओहार – (विशे.) निकली हुई चेचक का कम होना या ठीक होना।

ओहब – (क्रिया) मवेशी के सामने आवश्यकता से अधिक घास डालना।

ओही – (सर्व) उसे, उसको, उस व्यक्ति को।

ओहमओह – (विशे.) उदार मन से, पर्याप्त, बहुत–बहुत मात्रा।

ओहिनबेर – (अव्य.) उसी बार, उसी दौर में, उस समय ही।

क

कइअक – (विशे.) कई, बहुत, अनेक, विभिन्न।

कइठे – (विशे.) कितने, कितनी संख्या, कितना।

कइझन – (विशे.) कितने लोग, कितनी संख्या।

कइतिआब – (क्रिया) किनारा काटना, अलग होना, रास्ता छोड़ना।

कइत – (अव्य.) एक तरफ, एकान्त, दूर, पृथक, किनारे।

कइथा – (सं.पु.) कैथा, एक प्रकार का फल।
कइली – (सं.स्त्री..) गले पर चित्ती पड़ी सर्पणी।
कइसनौ – किसी भी प्रकार की, ऐन–केन –प्रकारणेन।
कउखन – (विशे.) कितना जल्दी, शीघ्रता, किस प्रकार से।
कँउस – (सं.) शरीर में पसीना चलना, गर्मी लगना।
कउड़िआरा – (सं.पु.) एक प्रकार का सर्प जिसके पीठ पर कौड़ी हो।
कउन – (अव्य.) कौन, कौन सा।
कउनौ – (अव्य.) कोई भी, कोई।
कउआब – (क्रिया) बेचैन होना, छटपटाना, यादबस आतुर होना।
कउँफब – (क्रिया) आवेशित होना, क्रोधबस बुरा भला कहना।
कउलब – (क्रिया) अन्दाज लगाना, मन लेना, मन ही मन तौलना।
कउरा – (सं.पु.) टुकड़ा, रोटी की टुकड़ी, रोटी की भीख।
कउरहा – (सं.पु.) कंकड़ की गोट से खेला जाने वाला खेल, भिखारी प्रवृत्ति का, रोटी के टुकड़ों पर आश्रित, निर्लज्ज, लोभी।
कउर – (सं.पु.) निवाला, कौर।
कउआ – (सं.पु.) कौआ, मुण्डन में रखी गई चोटी।
कउआ टोंटी – (सं.पु.) कंकड़ की गोट से खेला जाने वाला खेल।
कउड़ी – (सं.स्त्री..) सिंघाड़े का सूखा फल, खेली जाने वाली कौड़ी।
कउड़ा – (सं.पु.) अलाव, तापने वाली आग।
कउहरी – (सं.स्त्री..) एक प्रकार का औषधीय वन–फल।
कउहट – (क्रि.वि.) शोरगुल, हलचल, झंझट, उलझन।
कउरी – (सं.स्त्री..) कामर, दो पहलू वाली सेहरी।
कका – (सं.पु.) चाचा, पिताजी के छोटे भाई।
ककनिया – (सं.स्त्री..) गुड़ और आटे का बना बतासा, कुँए के अन्दर लगी ईंट, नारियों के हाथ का गहना।
ककिया – (सं.स्त्री..) चचेरी।
कँकरिया – (विशे.) ठंड के कारण दाँतों में कम्पन।
कक्कू – (सं.पु.) चाचा, पिताजी के रिश्ते का भाई।
ककई – (सं.स्त्री..) काठ की कंघी, कंघी पुलिंग ककबा।
कँकरी – (सं.स्त्री..) ककड़ी, छोटी कंकड़ी।
कँखरब – (क्रिया) कराहना, कराह का होना।
कखउरी – (सं.स्त्री..) काँख की फुंसी, पुलिंग कखरेखा।
कँखरिआउब – (क्रिया) काँख से दबाना।
कँखरी – (सं.स्त्री..) कंधा एवं बाँह के जोड़ के नीचे का भाग, काँख।
कँखना – (क्रि.वि.) हमेशा कराहते रहने का एक रोग।
कगर – (अव्य.) एक किनारे, एकान्त, अलग, एक ओर।
कगरिआउब – (क्रिया) किनारे करना, अलग करना, बाँट देना।
कगरिआब – (क्रिया) किनारे होना, किनारा काट लेना।
कगदहाई – (सं.स्त्री..) कागजात रखने वाला बस्ता विशेष।

कचकचाब — (क्रिया) आवेशित होकर बुरा—भला बकना,शोर—शराबा।
कचकचायके — (क्रि.वि.) पूरी ताकत के साथ दबाना, पूर्ण सामर्थ्य से।
कचाइध — (विशे.) अधकच्चा की स्थिति की अनुभूति होना।
कचेनिया — (सं.स्त्री..) चूड़ी पहिचानने वाली, कचेर की पत्नी।
कच्चकच्च — (क्रि.वि.) दीवाल पर सिर पटकने से उत्पन्न ध्वनि।
कचउँधी — (विशे.) अपच के कारण खट्टी डकार।
कचेरब — (क्रिया) उठाकर पटक देना, दीवाल पर सिर पटकना।
कचक — (सं.पु.) दबाव के कारण खून जम जाना, अपच।
कचरपचर — (अव्य.) शोर—गुल, अशांति, कोलाहल पूर्ण वातावरण।
कचरब — (क्रिया) कुचलना, पैरों तले दबाना, पैरों से मारना।
कचराउब — (क्रिया) स्वेच्छा से पैर से दबवाना, किसी को पिटवाना।
कच्चा बच्चा — (सं.पु.) शिशु एवं माँ, ब. मु.।
कचकुचहिली — (विशे.) अनाज के दाने के मध्य का कच्चा कण।
कचरबइया — (सं.पु.) कुचलने वाला, पाँव से पाँव दबाने वाला।
कचोटब — (क्रिया) देने में पछताना, पश्चाताप करना।
कछिया — (सं.पु.) कुशवाहा, बागवान, स्त्री. कछिनिया।
कछिअउरा — (सं.पु.) सब्जी—भाजी की बगिया।
कछोटा — (सं.पु.) काँछ लगाकर साड़ी का पहनावा।
कछनी — (सं.स्त्री..) धोती या साड़ी की कच्छ, कछनी।
कछलम्पट — (सं.स्त्री..) बदचलन नारी, एक गाली।
कजरउटी — (सं.स्त्री..) काजलदानी, काजल वाली डिब्बी, पुलिंग कजरउटा।
कजबाइक — (सं.पु.) विवाह खोजने वाला, ब्याह का पहलकर्ता।
कजहा — (विशे.) कन्यापक्ष से शादी हेतु आये लोग, शादी होने वाले लड़के के लिये विशेषण विशेष।
कजही नाउन — (बघे.मुहा.) बार—बार अनावश्यक आना—जाना।
कजानी — (अव्य.) शादी के लिये आतुर, शायद, क्या जानूँ, संभवतः नहीं मालूम।
कजात — (अव्य.) शायद, सम्भवतः, या कि, हो सकता है।
कजरिया — (विशे.) जिसकी आँखों में काजल सा लगा हो।
कटइया — (विशे.) फसल काटने वाले, सुकोमल शिशु, ककड़ी।
कटराब — (क्रिया) पके व्यंजन खीर का बर्तन में लिपटकर सूख जाना।
कटिया — (सं.स्त्री..) मवेशी को खिलाने वाला कटा आहार, खीरा।
कटाँइध — (विशे.) कशैली स्वाद, हल्का कड़वा।
कटुक — (विशे.) हलका कड़वा, कसैला स्वाद।
कटँउही — (विशे.) फसल काटने के बदले प्राप्त मजदूरी।
कटबा — (सं.पु.) नारियों के गले का एक आभूषण।
कटेरुआ — (सं.पु.) दूध पीते पशु के बच्चों की टट्टी।

कट्टहा – (सं.पु.) महापात्र, महाब्राम्हण, एक गाली।
कटकटउहन – (विशे.) दाँत पीसकर पूरी ताकत से काटना।
कटनबार – (सं.पु.) चौकोर गीली मिट्टी काटने का काष्ठ औजार।
कटघोड़वा – (सं.पु.) काठ का बना घोड़ा, बच्चों का खिलौना।
कटमटाब – (क्रिया) वनस्पति के रोये लगाने से शरीर पर खुजली होना।
कटहरि – (संस्त्री..) एक सब्जी का फल, हल मे लगने वाली लोहे की मुदरी।
कटइली – (विशे.) कटकर रहने वाली, तिरस्कृत नारी, आधा कटा हुआ फल।
कठँगरा – (सं.पु.) काष्ठ से निर्मित अंगारा।
कठमेहर – (सं.पु.) औरतों के बीच में बैठने वाला पुरूष।
कठउती – (सं.स्त्री..) पत्थर या काष्ठ की बनी टोकनी का पात्र, पुलिंग कठउता।
कठबा – (सं.पु.) काठ, काठ की भाँति जड़ आदमी।
कठेस – (विशे.) अधपका फल, जो अभी कुछ ठोस हो।
कठुला – (सं.पु.) कण्ठ का एक आभूषण, दुर्लभ वस्तु।
कठखोलनी – (सं.स्त्री..) चोंच से काठ को खोलने वाली चिड़िया।
कठबइठा – (विशे.) मनोविनोदी या लाड़ प्यार की गाली, स्त्री.लिंग कठबइठी।
कठूमर – (सं.पु.) ऊमर से छोटी, ऊमर का फल या वृक्ष।
कठँगरी – (सं.स्त्री.) मोटी लकड़ी से टूटे प्रज्जवलित अंगार।
कढ़ब – (क्रिया) भीतर से बाहर निकलना।
कढ़ी – (सं.स्त्री..) मठा एवं बेसन से बना काढ़ा, ग्राम्य व्यंजन।
कढ़बाउब – (क्रिया) निकलवाना, भीतर से बाहर करवाना।
कढाउब – (क्रिया) सुरक्षित निकालकर किसी को राह पकड़वाना, निकलवाना।
कढीहा – (विशे.) कढ़ी खाने के विशेष चर्चित व मशहूर।
कड़ँबा – (सं.पु.) छोटे कद का आम्रवृक्ष, कलमी आम।
कड़िया – (सं.स्त्री..) बाँस की टहनियाँ, बारी का रूधन।
कड़बार – (सं.स्त्री..) खेत की बारी रुधन हेतु प्रयुक्त सूखी झाड़ियाँ।
कडुला – (सं.पु.) छापक फलदार वृक्ष, कलमी पौध।
कड़बाउब – (क्रिया) दूसरे से अन्न कुटवाना, किसी से किसी को पिटवाना।
कँड़रब – (क्रिया) स्वयं पिट जाना, किसी द्वारा पीटा जाना।
कतनी – (विशे.) कितनी, कितने नग, कितनी मात्रा।
कतकीदार – (अव्य.) किस समय, कितनी देर।
कतका – (विशे.) कितना, कितनी मात्रा।
कताहुर – (सं.पु.) सूखा कूड़ा कर्कट, धूल मिश्रित कचरा।
कतरा – (सं.पु.) जमाये गये दूध का ठोस टुकड़ा, काची व्यंजन।
कतन्नी – (संस्त्री.) कैंची, इसका पुलिंग कतन्ना।
कतरी – (सं.स्त्री..) कोल्हू की वह पटरी जिस पर बैठकर कोल्हू चलाता है।
कतरब – (क्रिया) टुकड़े–टुकड़े करना, टुकड़े में काटना, अनाज से कंकड़ अलग करना।

कतेक – (विशे.) कितने, कितने लोग, कितना, कई लोग।

कथरिआउब – (क्रिया) कथरी को हाथ से सिलाई करना।

कथरी – (सं.स्त्री..) फटे पुराने कपड़ों से निर्मित गद्दा।

कँदुआ – (सं.पु.) हलवाई, मिठाई बनाने वाला।

कँदरी – (सं.स्त्री..) पाँव की उँगुलियों के बीच सड़न का रोग।

कँदरिआब – (क्रिया) जी मिचलाना, उलटी सी लगना।

कँदिआउब – (क्रिया) चिकनी–चुपड़ी करके मिलाना–पटाना।

कँउही – (सं.स्त्री..) काँदौ–कीच से सनी हुई, कीचड़युक्त।

कँधइया – (सं.पु.) कृष्ण, कन्धा, कन्धे में किसी को उठाना।

कँधेला – (सं.पु.) साड़ी के एक छोर से वक्षस्थल ढकना एवं सिर खुला करना।

कनटाइन – (विशे.) कशैला, कड़वा, कटु स्वाद।

कनटोप – (सं.पु.) कान ढकने वाला ऊनी टोपा।

कनकनाब – (क्रिया) आवेशित होकर कर्कश वाणी में बड़–बड़ाना।

कनिखा – (सं.पु.) पेड़ की शाखाओं की टहनियाँ, उपशाखायें।

कनबहिरी – (विशे.) अनसुनी करना, कान से बहरा होना।

कनझान – (विशे.) अंगार को बुझाकर मन्द हुई स्थिति।

कनइल – (सं.पु.) कनैल का पौध, एक विशेष फूल।

कन्डा – (सं.पु.) गोबर का उप्पल, सूखी हुई उपली, ईंधन।

कना – (सं.पु.) चावल के वाह्य पर्त का चूर्ण कण।

कनेबा – (सं.पु.) कोल्हू का जुँआ और लाठ से जुड़ी लकड़ी।

कनुआब – (क्रिया) निरर्थक अकड़ना, लड़ने को उद्धत होना।

कनेमन – (सं.पु.) अचार का सूखा मशाला, मशाला का चूर्ण।

कनिगा – (सं.स्त्री..) लाल चावल वाली एक धान विशेष।

कनिहा – (सं.स्त्री..) कमर, कमर के बल शिशु को उठाना।

कनकटिया – (विशे.) जिसका थोड़ा सा कान कटा हो।

कनछेदन – (सं.पु.) बच्चों का कर्ण भेदन संस्कार।

कनउब – (क्रिया) मिलाना–पटाना, खुश करके पक्ष में करना।

कनहरी – (सं.स्त्री..) गर्भाशय एवं शिशु की नाभि से जुड़ा माँस का नाड़ा।

कन्छई – (सं.स्त्री..) कान के अन्दर की फोड़िया– फुंसी।

कनफोरबा – (सं.पु.) कान भरने वाला, दोनों का मन फोड़ने वाला।

कनकउआ – (सं.पु.) एक प्रकार की घास, सब्जी, वनस्पति।

कनई – (सं.स्त्री..) बाँस की पतली–पतली टहनिया।

कनछरियाब – (क्रिया) कट–छंटकर रहना, तिरछी नजर रखना।

कन्डाब – (क्रिया) भूखे–प्यासे, सूखी स्थिति, भूँख से ब्याकुल होना।

कनगजीर – (सं.स्त्री..) पतले चावल वाली एक धान।

कन्डान – (विशे.) भूखे–प्यासे की स्थिति, अस्तित्व विहीन।

कन्नी – (सं.स्त्री..) दीवाल जोड़ने का एक औजार, गोंद।

कन्हीहा – (विशे.) जो हमेशा गोद मे रहने का आदी हो चुका हो।

कन्डम – (विशे.) घटिया, खराब, जीर्ण–शीर्ण, अनुपयोगी।

कनसुर – (विशे.) ऊँचा सुनाई देना, ऊँचा–नीचा सुनना, अमेल एवं अप्रिय सुर।

कनेखा – (सं.पु.) व्यंग्य बाण, बात का बतंगड़ बनाना।

कनस्टर – (सं.पु.) खाली पुराना घी–तेल का टीना।

कपरकपर – (अव्य.) कर्णकटुवार्ता, जल्दी–जल्दी बोलना।

कपटब – (क्रिया) टुकड़े–टुकड़े काटना, सिर उतार लेना।

कपार – (सं.पु.) सिर, खोपड़ी, मस्तिष्क, ब्रम्हाण्ड।

कपड़छन – (सं.पु.) कपड़े से छानना, पतले कपड़े से आटा झोलना।

कपच्छई – (सं.) एक प्रकार का रोग, उल्टी–दस्त का रोग।

कपसा – (सं.स्त्री.) एकदम सफेद, गौर वर्ण, कपास या रुई।

कपिला – (विशे.) एक गाय विशेष, निर्दाग, दूध का धुला।

कबउ–कबउ – (अव्य.) कभी भी, यदा–कदा।

कबहूँ – (अव्य.) कभी–कभी नहीं, किसी सूरत में।

कबार – (सं.पु.) दिन–रात, खेत–बगार में कार्य, लोहे या काँच के टुकड़े।

कबेलबा – (सं.पु.) तुरन्त का जन्मा कौए का बच्चा।

कबरिया – (विशे.) दो रंगों वाली, सफेद चित्ती वाली, भदरंगी/पुलिंग कबरबा।

कबै – (योजक) कब, किसदिन, किस समय।

कमरी – (सं.स्त्री.) कामरि।

कमरेड़ा – (सं.स्त्री..) कामर लटकाने वाला बाँस का लठ्ठा।

कमटी – (सं.स्त्री..) बॉस की लम्बवत फाड़ी गयी टुकड़ियाँ।

कमिया – (सं.पु.) काम करने वाला, मेहनत कश।

कमरिहा – (विशे.सं.) कामरि ढोने वाला – व्यक्ति विशेष।

कमरिया – (सं.स्त्री..) छोटा सा कम्बल, कामरिनुमा खिलौना, पुलिंग कमरा।

कम्मल – (सं.स्त्री..) मवेशियों के गले की झूलदार चमड़ी।

कमरा – (सं.पु.) रोयेंदार काले रंग का कीड़ा, कम्बल।

करकस – (विशे.) कटुवाणी, अप्रिय, खराब लगना।

करकसा – (सं.स्त्री..) कर्कश वाणी बोलने वाली, कटुभाषी।

करबी – (सं.स्त्री.) ज्वार का डंठल टुकड़ों में काटना।

करबर – (विशे.) रबेदार, खुरदुरा, चिकनाहट रहित।

करासन – (सं.पु.) दो पहाड़ियों के बीच का प्रक्षेत्र, पहाड़ का ऊपरी शिखर।

करमोउब – (क्रिया) भात को थोड़े से दूध से नाम मात्र का मोवन करना।

करूआ – (विशे./सं.) काले रंग की चूड़ी, करुआदेव का नाम।

करू – (विशे.) कड़वा, कशैला, जहरीला, कड़वी।

करेंगवा – (सं.पु.) काले सर्प का सपोला, हाथी का शिशु, बच्चा।

करोउब – (क्रिया) खरोचना, नाखून से गीली मिट्टी निकालना।

करंज – (सं.पु.) कंजी का एक वृक्ष।

करिआरी – (सं.स्त्री.) घोड़े के मुँह में लगायी जाने वाली लोहे की साँकली।

करधन – (सं.स्त्री..) कमर की साँकल, कमर में धारित धागा।

करमबली – (विशे.) सौभाग्यशाली, प्रखर कर्म वाला।

करतूति – (विशे.) पुरूषार्थ, कार्य का प्रतिफल।

करइली – (सं.स्त्री..) छोटे आकार का करेला, पशु के पूँछ का मांशल भाग, कलेजा या दिल।

करहिया – (सं.स्त्री..) छोटे आकार की कड़ाही, पुलिंग कराहा।

करी – (सं.स्त्री..) भगाकर लायी हुई स्त्री. मोटी–मोटी नमकीन, गाटर की तरह, ईमारती लकड़ी।

करोनी – (सं.स्त्री..) खुरचन, करोचन, खुरचने का पात्र।

करई – (सं.स्त्री..) लोटे की आकृति का मिट्टी का पात्र।

करहुला – (सं.पु.) कम उम्र की हाथी का बच्चा।

करेजा – (सं.पु.) कलेजा, हिम्मत, प्राण–मित्र।

कराइँध – (विशे.) पककर अत्याधिक सूखी स्थिति, खर हुआ डंठल।

कर्रा – (विशे.) कड़ा, कठोर, सख्त, कसा हुआ, बहुत जोर से।

कर्र–कर्र – (क्रि.वि.) ककड़ी या फल खाने पर उत्पन्न ध्वनि।

करब–कथब – (ब.मुहा.) मरने पर कर्म क्रिया, कार्य की व्यवस्था।

करँउटा – (सं.स्त्री..) करवट, पाला बदलना।

करेनिया – (विशे.) काले रंग वाली वस्तु।

करिहौं – (क्रि.भवि.) करुँगा, करुँगी, करना है।

करबै करब – (क्रि.भवि.) करुँगा ही, करना ही करना है।

करत रहेन – (क्रिया) करता था, करता रहा, करता रहा था।

करिस – (क्रिया) किया, किया गया।

करइहौं – (क्रि.भवि.) कराऊँगा, कराऊँगी।

करेउँतै – (क्रि.भू.) किया था, की थी, किया तो था।

करबइया – (विशे.) कार्य करने वाला।

करबाउब – (क्रिया) कार्य करवाना, काम कराना।

कलछर – (विशे.) हल्की काली, हल्का काला रंग।

कलपबास – (सं.पु.) तीर्थ–प्रवास, तीर्थ स्थान में तपस्या।

कल्हरब – (क्रिया) चीखना, पीड़ा के कारण कराहना।

कलमस – (विशे.) खोट, मिलावट, मिश्रित व अशुद्ध, दाल में काला।

कलथब – (क्रिया) पलटना, बदल जाना, एक पात्र से दूसरे में करना।

कलबलाब – (क्रि.वि.) जीभ में खुजलाहट, जीभ में बेचैनी।

कलेबा – (सं.पु.) नाश्ता, सुबह का जल–पान।
कल्लाब – (क्रिया) बाल उखाड़ने से पीड़ा होना, घर्षण से दर्द होना।
कलउब – (क्रि.) फल को हल्का उबालना, वाष्पित करना।
कलँउ–कलँउ – (अव्य.) भूख से याकुल, खाने की आतुरता।
कल्ला – (सं.पु.) हरे बाँस का टुकड़ा, प्रस्फुटित नवोदित बाँस।
कलकुतिया – (विशे.) अत्याधिक लालशा, मिलने की प्रबल पिपाशा,
कलट्टर – (सं.पु.) जिलाधीश, कलेक्टर।
कलभुँजरा – (विशे.) काला, चितकबरा, घृणित काला रंग।
कलपाउब – (क्रिया) तरसाना, दुःखी करना, रुलाना।
कलौं–कलौं – (अव्य.) भूख के कारण कराहना, अति भूख की ध्वनि।
कलपडाह – (विशे.) तड़पनयुक्त दयनीय दशा, कष्टप्रद परिद भय।
कलोर – (विशे.) जवान बछिया, बिना व्यायी गाय।
कलऊ – (अव्य.) कलयुग, कलऊ लग गया बघेली मुहावरा।
कलकरा – (क्रिया) धैर्य धारण करो, इंतजार कीजिए।
कलबली – (क्रि.वि.) खुजली होना, कामुक स्थिति होना।
कलेउहा – (सं. / वि.) कलेवा करने योग्य शिशु विशेष।
कलम – (सं.पु.) लकड़ी की लेखनी, दाढ़ी वाले कान के बगल के बाल, पौधे से पौध तैयार करना।
कलमुही – (विशे.) जिसका मुँह काला हो, एक गाली विशेष।
कसत – (अव्य.) किस प्रकार, कैसे, कैसा, किधर।
कसाई – (सं.पु.) बकरा काटने वाला, निर्दयी व्यक्ति, एक जाति।
कन्सरा – (सं.पु.) तेल का खाली टीना।
कसनी – (सं.स्त्री.) अनाज का डंठल या घास बाँधने वाली रस्सी।
कसान – (विशे.) कशैलापन का स्वाद, आम्लीयता रहित।
कसनहट – (सं.स्त्री..) पशुओं के गले में बाँधी जाने वाली कलात्मक रस्सी, हल–जुआ का मोटा रस्सा।
कँसब – (क्रिया) खरा–खोटा का परीक्षण करना, कसौटी में फसना, जमकर बाँधना, मानक पैमाने में तौलना।
कसकुट – (सं.पु.) कई धातुओं के मिश्रण से बनी धातु का नाम।
कसाँइध – (विशे.) कसौलापन की गंध, कसैला बर्तन का स्वाद।
कसन – (सं.स्त्री..) हल एवं जुआ को कसने वाला मोटा रस्सा।
कसिके – (सं.पु.) कैसे, किस प्रकार से, जकड़कर बाँधना।
कसाला – (सं.पु.) मन में मलाल, कमी, खाम्ही, गड़बड़ी।
कसमसाब – (क्रिया) भीतर ही भीतर आक्रोश से जलना, अंदरूनी भीतर ही भीतर गुस्से से, आक्रोश एवं वेदना सहकर चुप रहना।
कसकब – (क्रिया) रह–रहकर घाव का काटना, दिन में चुभना।
कसरि – (विशे.) कोर कसर, कमी रह जाना, कमजोरी करना।

कस – (अव्य.) कहाँ, किधर, किस ओर, किधर को, किस प्रकार।
कसो – (सं.पु.) कहो, हुँकारी भराने का एक शब्द।
कहल – (सं.पु.) गरमी की उमस, तापयुक्त कष्ट।
कहलब – (क्रिया) गरमी लगना, पसीना–पसीना होना।
कहनूति – (संस्त्री.) कहावत, कही गई उक्ति, वादा।
कहुलब – (क्रिया) कड़ाह में अनाज के दाने भूनना, मारना–पीटना।
कहँउ – (अव्य.) कहीं, कहीं भी, कहीं पर, कह दूँ, कहें।
कहा – (क्रिया) कथनानुसार किया गया कार्य, कहिए या कहो, निर्देश पालन।
कहूँ – (अव्य.) किसी जगह, कहीं, कहीं भी, कहीं पर।
कहिया – (अव्य.) कब, किस दिन, किस समय।
कही – (क्रिया) कहिए, कह दीजिए।
कहिदेई – (क्रिया) कह दें? कह दीजिए, कह दो।
कहा–सुनी – (क्रि.वि.) बातचीत, मशविरा, सल्लाह, गाली–गलौज।
कहब – (क्रिया) कहना, कहेंगे, कहूँगा।
कहबाउब – (क्रिया) बुरा–भला सुनना, किसी से संदेश कहना, दूसरे के मुख से कहलवाना, मुख से कहलवाना।
कहिहौं – (क्रि.वि.) कहूँगा, कह दूँगा, कहेंगे, कहूँगी।
कहियौ – (अव्य.) कभी भी, किसी दिन, किसी भी समय।
कहिना – (अव्य.) कब, किस दिन, क्यों, कैसा, किस समय।
कही कहा – (क्रि.वि.) वाद–विवाद, आपसी शर्तनुमा संविदा, पक्की बात हो जाना।
कहा करब – (क्रिया) किसी का कहना मानकर कार्य करना।
कहे–कहे – (अव्य.) कहने–कहने पर, किसी की प्रेरणा से।
कहबइया – (विशे.) कहने वाला, कह बताकर कार्य करने वाला।
कहिस – (क्रि.भू.) कहा था, कहा गया।
कहिनतै – (क्रि.भू.) कहा था, कहे थे, कहा गया था।
कहत रहेन – (क्रिया) कहता था, कह रहा था, बताया था।
कही ता – (क्रिया) कहिये तो, कहकर देखिए, कहें तो।
कहत रहें – (क्रिया) कह रहे थे, कहते थे, कहता था।
कहबै करब – (क्रिया) कहेंगे ही, कहूँगा ही।
कहेन – (क्रि.सं.) कहा आपने? एक सम्बोधन एवं तकिया कलाम।
कहि–कहि – (अव्य.) कह–कह करके, कहकर कोई कार्य, स्मरण में लाना।
कहबररै (क्रिया)– नहीं कहा जाता, कहने की हिम्मत नही पड़ती।

का

काड – (सर्व.) क्या? स्त्री.लिंग 'की' कौन?
काई – (सं.स्त्री..) जल मे होने वाली एक घास।
काँइया – (विशे.) दुष्ट प्रवृत्ति का आदमी, कारणी व्यक्ति।

काकी – (सं.स्त्री..) चाची, पिताजी के छोटे भाई की पत्नी।

काकू – (सं.पु.) चाचा, पिता जी के अनुज।

काँकर – (सं.पु.) कंकड़, पत्थरों का सूक्ष्म अंश।

का–का – (अव्य.) क्या–क्या? कौन–कौन सी चीज?

काँखब – (क्रिया) पीड़ा के कारण कराहना, हार मान लेना।

कागद – (सं.पु.) कागज।

कागदी – (सं.पु.) एक विशेष प्रकार की नींबू की किस्म।

काँड़ब – (क्रिया) काँड़ी में अनाज कूटना, किसी को पीटना।

काँड़ी – (सं.स्त्री..) पत्थर का पात्र जिसमें अनाज मूसल से काँड़ा जाता है, ओखली।

काटब – (क्रिया) बहते पानी का छल्लेदार होना। काटना, टुकड़े–टुकड़े करना, काट खाना, दॉत गड़ा देना।

कॉठी – (सं.स्त्री..) डील–डौल, कद, ढाँचा, शारीरिक गठन।

काठ – (सं.पु.) काठ, मोटी ईमारती की लकड़ी।

काढ़ब – (क्रिया) निकालना, कर्ज लेना, घर से बाहर करना।

काढ़ा – (सं.पु.) कर्ज, तरल पदार्थ का गाढ़ा रूप, ऋण बतौर लिया गया उधारी रुपया–पैसा, या अनाज।

काचर – (विशे.) गाय–भैंस के स्तन प्रक्षेत्र में दुग्ध की उभार सूचक स्थिति।

काची – (सं.स्त्री..) महुआ एवं चावल से बना बघेली व्यंजन।

काँछब – (क्रिया) उँगलियों से बर्तन में लिपटे पदार्थ को पोंछना।

काछी – (सं.पु.) कुशवाहा, बागवान, साग भाजी उगाने वाली जाति।

काज – (सं.पु.) विवाह, शादी, कार्य या काम।

कातब – (क्रिया) कपास से सूत बनाना, सूत या रस्सी कातना।

काँद – (सं.स्त्री..) चकत्तेदार घास, गठीली घास, जोतन की घास।

काँदा – (सं.पु.) कन्दमूल, कीचड़ एक तरकारी का नाम।

काँदौ – (सं.पु.) बरसात का कीचड़ पानी–मिट्टी का उभार।

काँधा – (सं.पु.) कन्धा।

काँन – (सं.पु.) इज्जत, मर्यादा, सीमा मानना, कान मानब, बघेली मुहावरा।

कानी – (सं.स्त्री.. / विशे.) रस्सी का वह भाग जो मवेशी के गले में बाँधी जाती है, आँख से विकलांग।

कानीहउद – (सं.पु.) कांजी हाउस, आवारा पशुओं का जेलखाना।

कापा – (सं.पु.) खेत का हिस्सा या टुकड़ा।

कापू – (सं.पु.) जलाशय के तल पर जमी मिट्टी की मोटी तह।

काँपब – (क्रिया) कम्पन करना, भय या ठंड से शरीर हिलना।

कामरि – (सं.स्त्री..) तराजूनुमा कमरी, देवताओं को समर्पित कामर।

काँमा – (सं.पु.) कोपर के दोनों किनारे, प्रतिकूल परिस्थिति।

कॉयठ – (विशे.) हलका कड़वा, खाने में कसैला लगना।

कायली – (सं.स्त्री..) शर्म, संकोज, शर्मिन्दगी, ग्लानि।

काँय—काँय — (क्रि.वि.) कर्कश आवाज के साथ बातें करना, काँय—काँय करना, बघेली मुहावरा।

कारनी — (विशे.) घटिया किस्म का व्यक्ति, दिल में द्वेष रखने वाला।

कारकुन्नी — (ब.मु.) करामात, कारगुजारी, कार्यवाही, सरारत पूर्णकार्य।

कारी — (विशे.) काली, श्यामवर्ण, काले रंग वाली।

कारोबार — (सं.पु.) घरेलू स्थिति, उद्यम व्यापार, आर्थिक स्थिति।

कारछ — (विशे.) हल्की कालिमायुक्त, कालापन लिये हुये रंग।

काला भुसुंड़ — (विशे.) एकदम काला, काला एवं भयावह।

काल्हु — (अव्य.) आने वाला कल, बीता हुआ कल।

काँसि — (सं.स्त्री..) एक प्रकार की लम्बी घास।

काही — (अव्य.) किसे, किसको, किस व्यक्ति को।

काहू — (सर्व.) किसी को, कोई।

काँहीं — (अव्य.) को, का, लिए।

काहे — (अव्य.) क्यों, किसलिए, किस कारण, इसलिये कि।

काहूका — (सर्व.) किसी को, किसी को भी, अन्य को।

काहे से कि — (अव्य.) क्योंकि, इसलिए, इस कारण।

कि

किकिआब — (क्रिया) भय के कारण चीखना, सोते—सोते कूद उठना।

किकिरी कोंढा— (सं.पु.) छोटे—छोटे बच्चों की बहुतायत।

किचकिचाब — (क्रिया) दाँत पीसकर बोलना, पूरी ताकत लगाकर कहना।

किच्च — (विशे.) कोचिया, कृपण, मितव्ययी।

किच्चपिच्च — (क्रि.विशे.) आनाकानी, देने—लेने में बकवास करना।

किचिर—पिचिर— (विशे.) रिमझिम पानी से उत्पन्न हल्का कीचड़।

किट्ट—किट्ट— (क्रि.वि.) दाँतो से दाँत लड़ने से उत्पन्न ध्वनि, भोजन में कंकड़ मिल जाने पर उत्पन्न ध्वनि।

किटकिटाव — (क्रिया) कंकड़ मिल जाना, खाते समय दाँत में कंकड़ आने से किट—किट होना।

किटकिरी — (सं.स्त्री..) आँख में पड़ी धूल, धूल का कण, आँख में चुभनेवाली।

किधिनौ — (अव्य.) किसी दिन, किसी भी दिन।

किधिना — (अव्य.) किस दिन? कब? किस समय।

किन्हा — (अव्य.) किस दिन, कब?

किन्नर — (क्रि.वि.) बात—बात में तर्क—वितर्क पूर्ण पूछताछ।

किन्नरहा — (सं.पु.) कार्य के समय या देते—लेते समय पंचायत रोपने वाला।

किनकी — (सं.स्त्री..) चावल से टूटे हुये छोटे—छोटे कण समूह।

किनरिहाई — (विशे.) किनारीदार धोती या टोकनी विशेष।

किरमिचाब — (क्रिया) मुश्किल से बिना मन के कोई चीज देना, देने में।

किरिथ्थान — (विशे.) छूत—अछूत वस्तुओं का आपस में मिल जाना, अपवित्र हो जाना, जमीन पर जूठा भोजन बिखर जाना।

किरबा — (सं.पु.) कीड़ा, सर्प, कीड़े—मकोड़े।

किरचा — (सं.पु.) किसी वस्तु या पदार्थ का एक अंश या कण।

किरकिराब – (क्रिया) लिखते समय निब का कागज काटना, धूल के कारण आँख में दर्द होना।
किरहाव – (सं.पु.) घाव में डाली जाने वाली कीटनाशक दवा।
किरहा – (विशे.) घाव में कीड़े पड़ जाना, किड़ाया हुआ व्यक्ति।
किरिया – (सं.स्त्री..) कसम, सौगन्ध, चुनौती।
किलकिल – (सं.स्त्री..) वाद–विवाद, झगड़ा, बात–बात मे बहस।
किलनी – (सं.स्त्री..) मवेशियों की चमड़ी पर लिपटा रहने वाला कीड़ा, जुंआ।
किलबा – (सं.पु.) वह लकड़ी जिसके सहारे जांत घूमता है।
किलिप – (सं.स्त्री..) पेन के ढक्कन की क्लिप, औरतों के बाल वाली क्लिप।
किल्ल पों – (क्रि.वि.) शोरगुल करना, हीला हवाली करना।
किस्सा – (सं.स्त्री..) कथा, बीती बातें, कहानी, लोक कथा।
किसनिया – (सं.स्त्री..) मालकिन, किसान की पत्नी।
किहिन – (क्रिया) किये, किया, कर डाले, कर चुके।
किहिनी – (सं.स्त्री..) पहेली, बुझउअल, जनउहल, कहानी।

की

कीक – (सं.स्त्री..) जोर से चीखना, चीख–चीत्कार।
की–की – (सर्व.) कौन–कौन? रोते समय की ध्वनि विशेष।
कीट – (सं.स्त्री..) अति मैला, तेल रखने वाले बर्तन के तल पर जमा कचरा, दाँतों में जमा हुआ दाग।
कीचर – (सं.पु.) आँखों से निकलने वाला श्वेत कचरा।
कीन – (क्रिया) किया हुआ, किया।
कीन्हिन – (क्रि.भू.) किये हैं, किया है, की गई क्रिया।
कीरब – (क्रिया) लिखकर काटना, कर्ज पर पावती लगाना, माचिस की सलाई जलाना, आग लगाना, नष्ट करना।

कु

कुइँट – (सं.स्त्री..) दाने निकलने के बाद बचे अलसी के डंठल।
कुईनी – (सं.स्त्री..) तालाब में रात को फूलने वाला एक श्वेत पुष्प।
कुँई–कुँई – (क्रि.वि.) मैथुन हेतु बैल के मुख से निकली ध्वनि।
कुकरम – (सं.पु.) कुकर्म, बुरा कार्य, निन्दनीय काम।
कुकाम – (सं.पु.) काम का नुकसान, कार्य में व्यवधान होना।
कुंकुँधब – (क्रिया) मुक्का से जमकर पीटना, कुचलकर पीटना।
कुकुरदँती – (विशे.) कुत्ते की भाँति दाँत वाली, सामने के दाँत जिसके आगे–पीछे हो, पुलिंग कुकुरदता।
कुकुरिया – (सं.स्त्री..) कुतिया के लिये एक गाली, पुलिंग कुकुरा।
कुकुरमुँहा – (विशे.) कुत्ते की तरह मुँह हो जिसका, एक गाली।
कुचरब – (क्रिया) कुचलना, कूटना–पीटना, दातून चबाना।
कुचुहिली – (विशे.) दलहन के तुचके हुये अपुष्ट दानें।

कुचाहिल – (सं.पु.) अधमरा, पिटा हुआ, घायल शरीर वाला।

कुजँड़ा – (सं.पु.) नारियों का दरबार में बैठने का आदी पुरुष।

कुजुनिया – (अव्य.) खाना–खाने की बेला, सोने का समय, सूर्य डूबते समय की बेला, अनुपयुक्त समय।

कुजाति – (सं.स्त्री..) जात–विरादरी से तिरष्कृत व्यक्ति, असमान जाति का, छूत व्यक्ति।

कुजोर – (विशे.) काम का नुकसान, समय का नष्ट हो जाना।

कुजोग – (सं.पु.) दुर्भाग्यपूर्ण समय, बुरा वक्त, दुर्दिन, कुसमय।

कुछू – (विशे.) कुछ, कुछ भी, कोई चीज।

कुटकुर – (विशे.) गीली जमीन का हलका–हलका सूख जाना।

कुटुल्ली – (क्रि.वि.) निरर्थक बातें करना, बाते भिड़ाना, कुटुल्ली काटना, ब.मु.।

कुटुर–कुटुर – (अव्य.) जल्दी–जल्दी बोलना, तोतली बोली, निर्भीकता पूर्ण बोली।

कुटइलहा – (विशे.) हमेशा मार खाते रहने वाला, कुटेंव वाला।

कुट्टी – (सं.स्त्री.) बोलचाल बन्द हो जाना, बीड़ी की अधजली टुकड़ी।

कुटकी – (संस्त्री..) कण के आकार का महीन कीट, एक खरीफ फसल।

कुठुली – (सं.स्त्री..) अनाज रखने वाला मिट्टी का पात्र, पुलिंग कुठिला।

कुठाँव – (सं.पु.) कुत्सित स्थान, अनुचित ठौर, संवेदनशील अंग।

कुठाहिर – (सं.पु.) अनुपयुक्त जगह, मुलायम या नाजुक स्थान–अंग।

कुड़िया – (सं.स्त्री..) पत्थर या चीनी मिट्टी का कटोरानुमा बड़ा पात्र।

कुड़ि – (सं.स्त्री..) खेत जोतते समय हल से बनने वाली लकीर।

कुढ़िआउब – (क्रिया) संचित करके रखना, वस्तु का ढेर लगाना।

कुढ़ब – (क्रिया) ईर्ष्या द्वेष करना, प्रगति देखकर जी जलना।

कुतकुताउब – (क्रिया) शरीर पर उँगली का घर्षण करके हँसाना।

कुतकुती – (सं.स्त्री..) शरीर को उँगुलियों से सहलाने पर उत्पन्न आनन्ददायी अनुभूति, हँसाने की प्रक्रिया।

कुतक्क – (सं./कि.वि.) ठेंगा, हाथ का अँगूठा दिखाना, कुछ नहीं के अर्थ में।

कुतरक – (विशे.) दैनिक दिनचर्या बिगड़ने से उत्पन्न व्याधि।

कुतुरब – (क्रिया) दाँत से रोटी काटना, रोटी काट लेना।

कुदराब – (क्रिया) उछलना–कूदना, कूदना–फाँदना, दौड़ दौड़कर चलना।

कुदँउआ – (क्रि.वि.) कूदते–फाँदते या उछलते हुये चलना।

कुदरूप – (विशे.) रूप से भद्दा, गन्दा चेहरे वाला।

कुदाउब – (क्रिया) कुदाना, उछालना, उभारना।

कुदरिया – (सं.स्त्री..) छोटे आकर की कुदाली, पुलिंग कुदारा।

कुँदुरू – (सं.स्त्री..) परवल समूह का एक फल, तरकारी विशेष।

कुधुँलब – (क्रिया) मारना–पीटना, कुचल डालना।

कुनाई – (सं.पु.) भूसे से महीन भूसे का आटा जैसा निकला कण।

कुनू–कुनू – (विशे.) बहुत छोटा–छोटा, थोड़ा–थोड़ा, अति अल्प।

कुनेत – (विशे.) बुरी नियत, दो वस्तुओं की असमान ऊँचाई, जिसका रिश्ता बोलने या छूने का न हो।

कुन्नियाव – (विशे.) अन्याययुक्त कार्य, अनैतिक–अनमिल काम।

कुनकुन – (विशे.) हलका गर्म, बहुत कम गरम जल की स्थिति।

कुनकुनाब – (क्रिया) उत्तेजित होना, हल्का–हल्का गर्म होना, मन ही मन नाराज होना, पहले से चैतन्य होना।

कुबरा – (सं.पु.) जिसका कूबड़ निकला हुआ हो, स्त्री.लिंग कुबरी।

कुमरगह – (विशे.) क्वांरापन का दाग मिटना, बुढ़ापे में विवाह।

कुमार – (सं.पु.) क्वांरा, अनव्याहा, क्वार महीना।

कुमारगी – (विशे.) बुरे मार्ग मे चलने वाला, चाल चलन से गंदा व्यक्ति।

कुरिया – (सं.स्त्री..) कुटी, छोटा सा घर, घास–फूस की झोपड़ी।

कुरधन – (सं.स्त्री..) मथानी में लगी रस्सी विशेष।

कुरकुर – (क्रि.वि.) भुने पापड़ को तोड़ने से होने वाली आवाज, रोटी का अधिक भुन जाना, पिल्ले को बुलाने वाला एक शब्द।

कुरसंती – (विशे.) बदमासीनुमा शैली में अन्याय पूर्ण व्यवहार, संविदा से मुकर जाना, धोखा–धड़ी युक्त क्रिया कलाप।

कुरकुटिहा – (विशे.) चिथड़े पहने हुये, दरिद्र वेश भूषा, अति दीन–हीन।

कुरुरमुरुर – (क्रि.वि.) थोड़ा, बहुत कम, काम चलाऊ मात्रा, ऐन–केन प्रकारेण

कुरुर–कुरुर – (क्रि.वि.) फल या पापड़ खाने पर होने वाली एक ध्वनि।

कुरुआ – (सं.पु.) एक पाव की क्षमता का मापन पात्र।

कुरउब – राशि लगाना, जमीन पर रखना, संचयन क्रिया।

कुरई – (सं.स्त्री..) अनाज नापने का एक पुराने प्रचलन का पात्र।

कुरइली – (सं.स्त्री..) अनाज गहाई में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी का कृषि औजार।

कुरेंदब – (क्रिया) मिट्टी की ऊपरी परत छीलना, गड़ी बात को उखाड़ना, भूली बात को खोदकर जागृत करना।

कुलकब – (क्रिया) अति प्रसन्न होना, किलकारी मारना।

कुलुलबुलुल – (क्रि.वि.) मन्दगति से हरकत या हलचल करना, छोटी–छोटी अनगिनत वस्तुए, पिल्ले समूह की प्रवृत्तिगत हरकत।

कुलाँच – (सं.पु.) उलाहना, बुरा–भला शब्द, गाली–गलौज।

कुलच्छी – (विशे.) बुरे लक्षणों का, दुर्गुणी, बुरी प्रवृत्ति वाला।

कुलुनिया – (सं.स्त्री..) कोल की पत्नी, कोल जाति की नारी।

कुलपुज्ज – (विशे.) कुल का पूज्य, परिवार के लिये पूजित पुरोहित।

कुल्ल – (विशे.) सम्पूर्ण या योग, बहुत अधिक, पर्याप्त मात्रा।

कुलबोरन – (विशे.) वंश परिवार की मर्यादा डुबाने वाला।

कुल्लू – (सं.पु.) एक जंगली वृक्ष, कान के बगल का दाढ़ी की ओर झुका बाल।

कुसगुन – (सं.पु.) अपशगुन, बुरा संकेत, अशगुन।

कुसी – (सं.स्त्री..) गेहूँ के दाने को ढके रहने वाला छिलका, गहाई के बाद की डंठल की गठीली टुकड़ियाँ।

कुसा – (सं.पु.) घास या काँस की जड़, पूजा–पाठ का उपकरण।

कुसिया – (सं.स्त्री..) हल में प्रयुक्त होने वाली एक लकड़ी।

कुसिआरी – (सं.स्त्री..) हल का फाल, एक कीड़े द्वारा बनाया गया घर, चने के आकार की घास की जड़।

कुसाइत – (स.पु.) बुरा समय, कष्टप्रद दिन, प्रतिकूल परिस्थिति।

कुसुली – (सं.स्त्री..) गुझिया।

कुहब – (क्रिया) जमकर मारना– पीटना, खेत में अत्याधिक अनाज का उग आना, जोर से वर्षा होना।

कुहकुहाब – (क्रिया) पिल्ले की वेदनायुक्त आवाज का निकलना।

कुहार – (सं.पु.) कुम्हार, कुंभकार जाति, स्त्री.लिंग कुहारिन।

कुहिराब – (क्रिया) धुँआ छा जाना, धूल दूषित आसमानी वातावरण।

कूकीं – (क्रि.वि.) बच्चों का छिपा–छिपउहल वाला एक खेल, लुका–छिपी।

कुकुर – (सं.पु.) कुत्ता, कुत्ते की तरह आदमी।

कू

कूचब – (क्रिया) कुचलना, किसी वस्तु को कूटना, मारना–पीटना।

कूँची – (सं.स्त्री..) गहना साफ करने वाला ब्रस, दातून की कूँच।

कूँचा – (सं.पु.) झाड़ू, बढ़नी।

कूँची – (सं.स्त्री..) छोटे आकार की झाड़ू, महुए का फूल ढकने वाला डंठल, दीवाल पोतने का एक ब्रस।

कूढ़ा – (सं.पु.) कूड़ा कर्कट का ढेर, अनाज का ऊँचा गड्ढा।

कूता – (सं.पु.) ठेके का काम, बिना नाप–तौल के अन्दाज, नजर अन्दाज से मूल्यांकन।

कूतब – (क्रिया) अन्दाज लगाना, अनुमान से मूल्यांकन करना।

कूदा–फाँदी – (क्रि.वि.) भाग–दौड़ करना, किसी कार्य के लिये अतिरिक्त प्रयास करना, हाथ–पाँव पटकना, अथक परिश्रम करना।

कूर – (सं.स्त्री..) गुझिया के भीतर का मसाला, पिल्ले को बुलाने का शब्द।

कूरी – (सं.स्त्री..) पूजा के समय चावल से जमीन पर बना नवग्रह।

कूरा – (सं.पु.) कूड़ा–कर्कट, धूल–घास के कण, घास मिट्टी का ढेर।

कूल – (सं.स्त्री..) कमर के दोनों बगल की हड्डियाँ व माँस पेशी।

कूहा – (सं.पु.) बड़ा सा ढेर, अधिक मात्रा में संचित वस्तु समूह।

के

के – (सर्व.) कौन?

के–के – (सर्व.) कौन–कौन?

केऊ – (सर्व.) कोई, कोई भी।
केकँरा – (सं.पु.) केकड़ा, गीली मिट्टी में रहने वाला एक कीड़ा।
केखर – (सर्व.) किसका, (पुलिंग) केखरि (स्त्री.लिंग)
केखा – (सर्व.) किसको, किसे, किस व्यक्ति को।
केखे – (सर्व.) किसके यहाँ, किसके।
केंधा – (अव्य.) किधर, किस ओर, किस तरफ, कहाँ।
केचुर – (सं.पु.) सर्प के पेट से उत्सर्जित पुरानी चमड़ी।
केंचब – (कि.वि.) पटक–पटक कर पीटना, खूब जमकर खाना।
केत्तव – (विशे.) कितना भी।
केतका – (विशे.) कितनी मात्रा, कितना नग, स्त्री.लिंग केतनी।
केतू – (विशे.) कितनी, कितना, कितनी संख्या।
केत्ते जने – (विशे.) कितने लोग, कितने जन, कितने।
केत्तीदार – (अव्य.) किस समय, कितनी देर।
केबा – (क्रिया) परेशानी, उलझन, झंझट, आफत।
केबादा – (सं.पु.) परेशानी के कारण दुर्गति, दुखदायी उलझन।
केमरिया – (सं.स्त्री..) खिड़की में छोटे साइज की किवाड़िया।
केंमाचि – (सं.स्त्री..) एक प्रकार की रोयेदार सेम, तरकारी वाला फल।
केमाँ – (अव्य.) किसमें, किस पर, किसके ऊपर।
केमरा – (सं.पु.) किवाड़ा, फाटक।
केरकेर – (क्रि.वि.) पशुओं को अन्दर करने का सांकेतिक शब्द।
केरि – (अव्य.) की, आपकी, स्त्री.लिंग शब्द।
केर – (अव्य.) का, आपका, पुलिंग शब्द।
केरिआउब – (क्रिया) मवेशियों को भीतर करना, घर के अन्दर कर लेना।
केराई – (सं.स्त्री..) धुलते समय निकला हुआ दाल का छिलका।
केरबार – (सं.पु.) नाव खेने वाला लकड़ी का लठ्ठा।
केसे – (सर्व.) किससे, किस व्यक्ति से।
केहरा – (सं.पु.) अहीरों का एक नृत्य, चारों ओर नाचकर फिरना।
केहौं–केहौं – (क्रि.वि.) शिशु रुदन की एक विशेष ध्वनि।
केहीं – (सर्व.) किसे, किसको।

को

को – (सर्व.)कौन।
कोइली – (सं.स्त्री..) आम के फल में पड़ी काली बिंदी, कोयल।
कोइलियार – (सं.पु.) काले रंग का एक सर्प, कजरारी आँख।
कोंइदा – (विशे.) बिल्कुल कच्चा फल, फल की बतिया।
कोऊ – (सर्व.) कोई भी, भी, कोई।
कोऊ से – (सर्व.) किसी से, किसी भी से।
कोस – (सं.पु.) कौआ, एक नजर, गड़ाकर देखना।
को केत्ता – (विशे.) कौन कितना, कौन कितनी दूर तक।
को केखर – (अव्य.) कौन किसका, किसने किसका।
को केही – (अव्य.) कौन किसे, कौन किसकी।

कोख – (सं.स्त्री..) पेट, गोद, गर्भाशय।

कोगदा – (सं.पु.) लकड़ी के बीच का अपुष्ट भाग।

कोगी – (सं.पु.) दरिद्री पेटवाला, जिसका कभी पेट न भरे।

कोचइन – (सं.स्त्री..) चें–चे करने वाली चिड़िया, शोरगुल करने वाली नारी।

कोचट – (विशे.) कंजूस या कृपण।

कोचरा – (विशे.) कीचड़ लगी आँख वाला, बार–बार पलकें पटपटाने वाला।

कोटहाई – (विशे.) कोटे से खरीदी गई सस्ती चीजें।

कोट – (क्रिया) तास के खेल में सौ बार हारने का प्रतीक शब्द।

कोटर्रकोटर्र – (क्रि.वि.) मेढ़क के बोलने की एक विशेष ध्वनि।

कोठा – (सं.पु.) मकान का एक कमरा, पेट के दोनों बगल के प्रकोष्ठ।

कोठरिया – (सं.स्त्री..) कच्चे घर की छोटी सी कोठरी।

कोंढ़ा – (सं.पु.) छप्पर रहित बाड़ा, मवेशियों का घरौंदा।

कोड़ान – (विशे.) कीड़े लगे फल या दाँत।

कोड़हा – (विशे.) जिसके कोढ़ हो, सफेद दाग वाला, एक गाली।

कोड़बाउब – (क्रिया.) जमीन गोड़वाना, गोड़ में मदद करना।

कोड़ब – (क्रिया) जमीन की ऊपरी परत निकालना, हल्की खुदाई।

कोतरा – (सं.पु.) आलमारी के नीचे की जगह, बहुत अन्दर वाली जगह।

कोंथब – (क्रिया) नाखून से चमड़ी खीचना या गड़ाना, चिहुँटी काटना।

कोथबाउब – (सं.पु.) चिहुँटी कटवाना, अँगुली गड़वाने में सहयोग करना।

कोथबइया – (सं.पु.) चिहुँटी काटने वाला व्यक्ति।

कोदई – (सं.स्त्री..) छिलका रहित कोदौ का दाना।

कोदइली – (सं.स्त्री..) कोदा अनाज से छोटी खरीफ की फसल।

कोनमां – (सं.पु.) घर या पलक का एक कोन, खेत का एक हिस्सा।

कोनइता – (सं.पु.) धान दलने वाली मिट्टी की ग्रामीण चक्की।

कोनी–कोना – (अव्य.) चारो ओर, कोनी कोना बोलना, बघेली मुहावरा।

कोनिया – (सं.स्त्री..) घर के छप्पर का कोना, मस्तक के बगल वालों से बना कोन।

कोनातू – (विशे.) टेढ़ी स्थिति, कोणेदार जगह, तिरछी दृष्टि।

कोपराउब – (क्रिया) जुते हुये खेत को कोपर से समतल करना।

कोपरहा – (सं.पु.) कोपर में प्रयुक्त सांकल व बैल।

कोंपर – (सं.पु.) खेत की मिट्टी समतल करने वाली पटरी।

कोबा – (सं.स्त्री..) कटहल या सीताफल के दाने को ढकने वाला गबूझा।

कोमराउब – (क्रिया) मक्खन पालिस करना, प्रसन्न करना, मर्दन करके कठोर वस्तु को कोमल करना।

कोमरई – (विशे.) कोमलपन, विनम्रता, नमनीयता।

कोमरी – (सं.स्त्री..) नवीन कोपलें, अति मुलायम पत्ते।

कोमरि – (विशे.) मुलायम, सुकुमार, अरूढ़।
कोरा – (सं.स्त्री..) माँ की गोद, बाँस की तरह काठ की पतली लकड़ी।
कोरइया – (सं.स्त्री..) पतले बाँस के लठ्ठे, शिशु का माँ की गोद में पाँव में पाँव फँसाकर पड़ना।
कोरिखा – (विशे.) कोयला, कालिख, कलंक का टीका।
कोराव – (क्रि.वि.) प्रजनन पूर्व गाय–भैंस के जनांग से तरल पदार्थ निकलना।
कोरकसर – (सं.स्त्री..) कमी, न्यूनता, काँट– छाँट।
कोरउहा – (सं.पु.) दुधमुहा शिशु, माँ की गोद में रहने वाला शिशु।
कोरिखऊँ – (विशे.) बक्रदृष्टि, तिरछी नजर से देखना।
कोरभर – (क्रि.वि.) किसी वस्तु का नोक के बल गिरना, व्यंग्यात्मक कथन।
कोरचा – (सं.पु.) चोरी से अपने गाँठ से संचित रूपया–पैसा।
कोल्हू – (सं.पु.)तेल निकालने वाला लकड़ी का चरखा।
कोलान – (सं.पु.) कोलों की बस्ती, आदिवासी मुहल्ला।
कोलदहका – (सं.पु.) कोल प्रजा पति का चर्चित लोक गीत।
कोलीहा – (विशे.) जो दूसरे की जमीन में आकर बसा हुआ हो।
कोलिया – (सं.स्त्री..) घर के पीछे लगी जमीन का खेत, बगिया।
कोलिन – (सं.स्त्री..) कोल की पत्नी, पुलिंग कोल।
कोस – (सं.पु.) दो मील की दूरी, लम्बाई माप का पुराना पैमाना।
कोंहड़ा – (सं.पु.) श्वेत कद्दू, लाल कद्दू, एक फल तरकारी, स्त्री.. कोहड़िया।
कोहरी – (सं.स्त्री..) उवाली गई ज्वार–दाने, गेहूँ के उबले दाने, पुलिंग कोहरा।
कोहबर – (सं.पु.) गृह देवता वाला कमरा, पति–पत्नी का प्रथम प्रवेश कर पूजा करने का स्थल विशेष।
कोहू – (सर्व.) कोई, कोई भी, किसी भी की।
कोहराब – (क्रिया) गाय–भैंस के मूत्रांग से श्वेत पदार्थ का उत्सर्जन होना।
कोहड़उरी – (सं.स्त्री..) कोहड़े एवं दाल से बनी हुई पकौड़ीनुमा बरी।

खा

खई – (क्रिया) खालें, खायें, खाइए, खाओं, खा लूँ।
खइहौं – (क्रिया) खाऊगा, खाऊँगी।
खँइचब – (क्रिया) खींचना, निकालना, लाइन खींचना।
खइरबार – (सं.पु.) एक जाति, ऐरा–गैरा लोग, खाने वाले।
खउटाब – (क्रिया) रंग उड़ जाना, शरीर की चमक चली जाना।
खउटहा – (सं.पु.) एक गाली, मैल की पपड़ीयुक्त चमड़ी धारित आदमी।
खउरि – (क्रिया) सींग से जमीन खोदना, कार्य हेतु अति उत्तेजित होना।
खउरा – (विशे.) मैल की पपड़ी, एक प्रकार का रोग, आर्थिक तंगी, खउरा लगना, बघेली मुहावरा।
खउनहर – (सं.पु.) खाना खाने वाला, खाना के लिये प्रतीक्षारत लोग।

खउनहाई बेरा— (विशे.) खाना खाने का समय, दोपहर या रात की बेला।

खउँदब — (क्रिया) पाँव से कुचलना, पाँव से शरीर का मर्दन करना, किसी को पैरों से मारना—पीटना।

खउरिआन — (विशे.) धूल—धूसरित, चर्म रोग से ग्रसित, उड़ी हुई चमक।

खउदि — (सं.स्त्री..) जुताई वाले बैलों के पुठ्ठे पर बना चिन्ह्।

खउटान — (विशे.) जिसका रंग उड़ा हो, खउटा लगा हुआ।

खक्खा — (सं.पु.) जोर की हँसी, हँसी का ठहाका, अट्टहास।

खखलब — (क्रिया) दाँत से काटकर खून निकाल लेना, जमकर पिटाई करना।

खखरी — (सं.स्त्री..) पानी निकलने का कच्चा पुल, मीठा पापड़।

खखार — (सं.पु.) गाढ़ा कफ या थूक, बलगम।

खखरिया — (सं.स्त्री..) बेसन की बनी गुड़ के सिरेयुक्त पपड़ी।

खँचब — (क्रिया) गीली जमीन में पाँव का धंस जाना।

खँचन — (सं.पु.) ऐसी जमीन जहाँ पाँव रखने पर धँस जाते हों।

खचाड़ा — (विशे.) टूटी—फूटी स्थिति, जीर्ण—शीर्ण हालत।

खजुरी — (सं.स्त्री..) खुजली, एक रोग विशेष।

खजुआउब — (क्रिया) खुजलाना, खजुआ देना, बघेली मुहावरा।

खजुलँइया — (सं.स्त्री..) एक त्यौहार, कजली, रक्षा बन्धन का दूसरा दिवस।

खँझनी — (सं.स्त्री..) झाँझ या मजीरा, धातु का एक वाद्य यंत्र।

खँझझी — (सं.स्त्री..) जलाशय में होने वाली एक घास विशष।

खटिया — (संस्त्री..) चारपाई, लकड़ी का शयन पात्र।

खटकरब — (क्रिया) टिक पाना, रह पाना, पार हो जाना।

खटोलबा — (सं.पु.) बच्चों के लिये छोटे आकार की चारपाई।

खटरस — (विशे.) खट्टा एवं मीठा स्वाद का मिश्रण युक्त।

खट्ट—खट्ट — (सु.पु.) खटखट की आवाज, जल्दी—जल्दी बिना रुके हुये

खटकिल्ली — (सं.स्त्री..) लकड़ी की कील।

खटिक — (विशे.) अत्यन्त कंजूस आदत का कृपण, खटिक होना, ब.मु.।

खटाइँध — (विशे.) हल्का खट्टा, खटाई युक्त फल का स्वाद।

खटाका — (विशे.) तत्काल, तुरन्त, बिना रूके हुये, निर्भीक होकर।

खटर—पटर — (क्रि.वि.) चलते समय जूते से उत्पन्न आवाज, शोर—गुल।

खटमिठ्ठी — (विशे.) कुछ खट्टा कुछ मीठा स्वाद हो जिसमें।

खटखटाउब — (क्रिया) खटखटाने की आवाज करना, संकेत करना।

खटबाउब — (क्रिया) बहुत दिनों तक चलाना, काफी दिनों तक प्रयोग योग्य बनाये रखना, इफाजत के साथ उपयोग करना।

खटाऊ — (विशे.) टिकाऊ, मजबूत, अधिक दिनों तक चलने वाली।

खढ़ोरब — (क्रिया) भट्टी में चना भूनना, हल्का भूनना।

खढ़ढलान — जिस कार्य मे अधिक दिक्कत हो, कष्ट एवं व्यवधान युक्त।

खता – (सं.पु.) फोड़ा, बड़ा सा घाव, स्त्री.लिंग खतिया।

खतउनी – (सं.स्त्री..) जमीन का हिसाब वाला रिकार्ड, पटवारी का जमीनी गोशवारा।

खतहा – (विशे.) जिसके सिर पर फोड़ा–फुन्सी हो, स्त्री.लिंग खतही।

खदलेंहड़ – (विशे.) खाने भर के लिये छोटे–छोटे बच्चे जो कार्य योग्य न हो।

खदुगर – (विशे.) खादयुक्त मिट्टी, उर्बर भूमि।

खधाई – (सं.पु.) खेत के बीच–बीच की घास चराने वाला व्यक्ति।

खधँउब – (क्रिया) छींद लेना, वर्गीकृत करना, वर्ग में बाँटना, कब्जा करना।

खँधब – (क्रिया) बीच में रुक जाना, ठहर जाना, सोच–विचार कर चुप रह जाना।

खन्ती – (सं.स्त्री..) खदान, छोटी खदान, पुलिंग 'खन्ता'।

खनतरिया – (सं.स्त्री..) चमड़े का टूटा हुआ जूता, जूते के अन्दर की तक्ती।

खनखनाउब – (क्रिया) खन–खन की आवाज करना, बजाना।

खनीमा – (सं.पु.) एक प्रकार का कन्दमूल, एक तरकारी।

खनखजूर – (सं.पु.) दस पैरों वाला एक जहरीला कीड़ा।

खनपात – (क्रि.वि.) खोदना–पाटना, खनपात बराबर बघेली मुहावरा।

खनतीखोटिया– (सं.स्त्री..) दोनों टाँगों पर बच्चों को बिठाकर लेटे–लेटे झुलाना।

खन्न–खन्न – (सं.पु.) जमीन पर थाली गिरने से उत्पन्न आवाज, सिक्के से सिक्का बजाने की ध्वनि।

खनखोदरा – (विशे.) खुरदरा चेहरे वाला, चेचक के गहरे दाग वाला मुख।

खन्धा – (सं.पु.) घर का एक कमरा, खेत का एक टुकड़ा, खाना, वर्गीकृत।

खनब – (क्रिया) खोदना, अनभल मनाना, खुदाई करना।

खनबइया – (विशे.) खोदने वाला, उत्प्रेरित करने वाला।

खनाउब – (क्रिया) खुदाई करवाना, खोंदवाना।

खनबेय – (क्रिया) खोदोगे, खोदेंगे, खोदोगी।

खनेनतै – (क्रि.भू.) खोदा था, खोदी थी।

खपब – (क्रिया) माँग के अनुसार पूर्ति होना, खर्च हो जाना।

खपउब – (क्रिया) अपने आप को तपाना, खर्च कर देना।

खपबाउब – (क्रिया) औंधा करके रखना, अधोमुख वस्तु करना।

खपकउँआ – (अव्य.) जमीन पर सटाकर रखने की विधि।

खपटी – (सं.स्त्री..) पापड़ की तरह पतली पत्थर की परत, खपड़े की टुकड़ी, खपटी खुजलाना बघेली मुहावरा।

खपड़ा – (सं.पु.) छप्पर छाने का उपकरण, मिट्टी के बने खपड़े।

खपड़हा – (विशे.) खपड़े से छायी हुई छप्पर, खपरैल घर।

खपड़ी – (सं.स्त्री..) चना भूनने के लिये प्रयुक्त घड़ा, एक मिट्टी का पात्र।

खप्पर – (सं.पु.) खेल तमाशे में प्रयुक्त आगयुक्त पेंदीवाला अर्ध घड़ा।

खपचड़ी – (सं.स्त्री..) बैल की सीग मे बँधी पटरी एवं कपड़ा।

खबीस – (सं.पु.) इस्लामी भूत पिशाच या राक्षस।

खबाउब – (क्रिया) खिलाना, खिलवाना, खिलाने में सहयोग करना।

खबइया – (सं.पु.) खाने वाले लोग, भोज हेतु आमंत्रित जन।

खबड़ीहिल – (विशे.) उबड़–खाबड़, ऊँची–नीची, खुरदुरी भूमि।

खबर्रा – (सं.पु.) खूब खाने वाला, स्त्री.लिंग–'खबर्री' पेटारथू।

खबच्चड़ – (विशे.) अधिक खाने वाला, दूसरे का हक भी खा लेने वाला।

खब्बड़ – (सं.पु.) खाने–पीने में आगे रहने वाला, बघेली मुहावरा।

खभार – (सं.पु.) घर गृहस्थी का भार, गृहस्थी का कार्य।

खभुआउब – (क्रिया) सिर में बालों को तितिर–बितिर फैलाना, कंघी बिहीन केश।

खमखर – (विशे.) जलवृष्टि बाद धूप का निकालना, गीली जमीन का सूख जाना, वातावरण का खुल जाना।

खम्हार – (सं.पु.) एक वनौषधि।

खये – (क्रिया) खाना, खा लेना, खाना?

खयरात – (विशे.) खाने के बाद भाग जाने वाले, ऐसे–वैसे लोग।

खर – (विशे.) तेज–तर्राट, कंठस्थ या रट डालना, सामान्य से अधिक पका हुआ।

खरके – (क्रि.वि.) सुस्पृष्ठ ढंग से, ठीक से, जोर देकर, पूरे मन से।

खरकउनी – (सं.स्त्री..) पशुओं के एकत्र होने का विशेष स्थल, पशुओं का अखाड़ा।

खरकरब – (क्रिया) कंठस्थ करना, पूर्णता प्रदान करना, मजबूत बनाना।

खरी – (सं.स्त्री..) खली, खरी–बेनउरी,ब.मु.।

खररि – (सं.स्त्री..) अनाज के डंठल बाँधने वाली रस्सी।

खरचिन्हा – (सं.पु.) जमीन पर बनाया गया चिन्ह, खींची गई जमीन पर रेखा।

खरभोंटब – (क्रिया) दोनों हाथ से खाना, झटका मारकर छुड़ा लेना, जल्दी– जल्दी दोनों हाथ से संग्रह करने की क्रिया।

खरिका – (सं.पु.) बहुत अधिक, पशुओं के इकट्ठा होने वाली जगह।

खरखसील – (विशे.) खुरदुरापन, दानेदार या रबेदार, चिकनाहट रहित।

खरिहान – (सं.पु.) खलिहान, खरिहान करना बघेली मुहावरा।

खरकब – (क्रिया) आगे बढ़ना, खिसक कर आगे होना।

खरही – (सं.स्त्री..) फसल कटाई के समय सेवकों को दिया जाने वाला अनाज का डंठल।

खर–खर – (विशे.) दो टूक, सही–सही, पर्याप्त पकी हुई।

खरिया – (सं.स्त्री..) गुप्ता जाति का गोत्र, रस्सी का जालीदार बँधना।

खरहा – (सं.पु.) खरगोश।

खरहा कुँदाव – (विशे.) थोड़ा सा, छोटा–नीचा ढेर, बघेली मुहावरा।

खरखराब – (क्रिया) खड़खड़ाना, खड़खड़ाहट होना, सूखे पत्तों की आवाज।

खरकाउब – (क्रिया) खिसका देना, खिसका लेना, हटाना, दूर करना।

खर्रा – (सं.पु.) ठंडी में घास पर जमी तुषार, घास की जड़ से बना ब्रस।

खरचा – (सं.पु.) दाँत खोदने वाली सीक, हलवाहे का पारिश्रमिक खर्च।
खरपटबा – (सं.पु.) स्वाभिमानी, लेनदेन में खरा, समर्थ एवं सक्षम पुरुषार्थी।
खरखोड़ब – (क्रिया) जमीन से घास छीलना, पूर्णतः समेट लेना।
खरफुर – (क्रि.) सत्यापन करना, पक्का करना, सत्य–असत्य का परीक्षण करना।
खरहँट – (सं.स्त्री..) बिछौना रहित चारपाई, खाली चारपाई।
खरधरिआब – (क्रिया) कार्य के लिये तत्पर होना, पूर्ण मन बनाकर करना।
खरहरा – (सं.पु.) झाड़ू के विकल्प में प्रयुक्त अरहल के डंठल–समूह।
खरउब – (क्रिया) खरा करना, घी को खूब पकाना, भूख को जगाना।
खरान – (विशे.) पक कर सूखा हुआ, अधिक पकी हुई रोटी की स्थिति।
खराउब – (क्रिया) नदी नाले की तेज धारा, तीव्रगति से बहाव।
खरेदब – (क्रिया) पीछा करना, दूर भगाना, घर से निकालना, हटाना।
खरी के ढेपरा – (सं.पु.) खली का टुकड़ा, ब. मु.।
खरचब – (क्रिया) खर्च करना, सींक से पत्तल बनाने की क्रिया।
खलल – (सं.स्त्री..) विग्रह, बाधा–व्यवधान, आपसी मतभेद, रुकावट।
खलँइता – (सं.पु.) हवा देने हेतु चमड़े की धौकनी, ढीले–ढीले जूते।
खलबट्टा – (सं.पु.) खड़ा मशाला कूटने वाला लोहे का कटोरानुमा पात्र।
खलाउब – (क्रिया) नीचे करना, नीचे की ओर झुकाना, पेट का धसा होना।
खलरी – (सं.स्त्री..) चमड़ी, खाल, वाह्य आवरण।
खलीसा – (सं.पु.) जेब, पाकेट।
खलास – (विशे.) खाली हो जाना, चुक जाना।
खलखलाउब – (क्रिया उदार होकर झोली भरना, खूब दे देना।
खसट्टा – (विशे.) सस्ता, कमजोर, घटिया किस्म, असुंदर।
खँसिलब – (क्रिया) जमीन पर पड़े–पड़े खिसकना, फिसलना।
खँसिलाउब – (क्रिया) आगे बढ़ाना, पीछे खींचना, घसीटना।
खसकब – (क्रिया) बढ़ना, खिसकना, बैठे–पड़े इधर–उधर होना।
खँसेलब – (क्रिया घसीटना, जमीन पर घिसलाना।
खहराउब – (क्रिया) जूठी गिलास पानी डालकर धोना, दोहनी साफ करना।

खा

खाँड़ी – (विशे.) बीस कुरई की मात्रा का एक मापक शब्द।
खाँचब – (क्रिया) आगे पैर बढ़ाना, लंगोटी की काछ लगाना।
खादा – (सं.पु.) खाद, रसायन, गोबर का सड़ा समूह।
खाँधव – (क्रिया) वर्गीकृत करना, पार्टीशन करना।
खाखाखइया – (सं.पु.) बघेली जनउहल, एक प्रकार का खेल।
खाखी – (विशे.) भूरे मटमैले रंग का, कपड़ा का रंग।
खाब – (क्रिया) खायेंगे, खाऊँगा, खाऊँगी।
खाम्हीं – (विशे.) कमी, कमजोरी, कोर–कसर, गड़बड़ी।
खाये? – (सं.पु.) खा लिये? खा लिया?

खारी – (सं.स्त्री..) चने के पौध पर चिपका खट्टा चिपचिपा पदार्थ।

खाले – (अव्य.) तरी, नीचे, खा लीजिए, खा लो।

खाँवचबाँव – (ब.मु.) कर्कश एवं अप्रिय वाणी के साथ खाने को बढ़ना।

खाँव–खाँव – (अव्य.) अति भूखी मानशिकता एवं भूखी हरकत।

खासा – (विशे.) बहुत अधिक, पर्याप्त, भरपूर, बहुत अच्छा, बहुत सुन्दर, स्त्री.. खासी।

खि

खिआब – (क्रि.वि.) घिसकर घट जाना, छोटा या कम हो जाना।

खिखिरी – (सं.स्त्री..) बाँस की बनी बिना लेपन की टोकनी, पुलिंग–खिखिरा।

खिखीखिखी – (क्रि.वि.) अर्द्ध–हँसी, वेमतलब हसते रहना, बघेली मुहावरा।

खिरब – (क्रिया) कपड़े का घिसकर पतला हो जाना, भैंस या गाय के मूत्रांग से श्वेत पदार्थ का उत्सर्जन होना।

खिरकी – (सं.स्त्री..) खिड़की, घर के पीछे का निकास द्वार।

खिरझिआब – (क्रिया) जिदबस किसी कार्य के पीछे पड़ जाना।

खिरामा – (सं.पु.) कम खट्टा आम, एक विशेष आम।

खिसनिपोर – (विशे.) जिसकी खीस बाहर हो, हमेशा अनावश्यक हँसते रहने वाला।

खिसपादन – (विशे.) बात–बात में चिढ़ने वाला, चिढ़ने वाली प्रवृत्ति।

खिसखिस – (क्रि.वि.) गन्दगी के कारण घृणा, कीचड़ का फैल जाना।

खिसकटहा – (विशे.) जो हमेशा निरर्थक खीस निकालता हो, स्त्री.लिंग– खिसकढ़ी।

खिसिर खिसिर– (क्रि.वि.) बिना प्रयोजन के अविरल हँसना, निरर्थक दाँत निकालना।

खिसिबाउब – (क्रिया) किसी को चिढ़ाना, परेशान करना।

खिसिअउनी – (सं.स्त्री..) नाराजगी का ताव, नाराजगी का आवेग।

खी

खीखिर – (विशे.) पतला, पारदर्शी, घिसा हुआ, झिल्लीदार।

खींचब – (क्रिया) खींचना, निकालना, आक भट करना, बढ़ाना।

खीरा – (सं.पु.) मौसमी फल, एक ककड़ी विशेष।

खीलब – (क्रिया) कंघी से बाल सम्हालना, मंत्र द्वारा विष बंद करना।

खीला – (सं.पु.) बड़ा सा कील, मशीन के पुर्जे।

खीस – (सं.स्त्री..) दाँत के मसूड़े, दुरूपयोग, नष्ट उजाड़ होना (विशे.)।

खींसा – (सं.पु.) वस्त्र में लगे हुये जेब, पाकेट।

खु

खुआर – (विशे.) धन–सम्पत्ति नष्ट करना, व्यर्थ में पूँजी गँवाना।

खुआ – (सं.पु.) अन्याय, शरारत, झगड़े के बहाना खोजना।

खुइती – (सं.स्त्री..) शरारत, आगे से लड़ाई के वातावरण बनाना।

खुइला – (सं.पु.) लकड़ी का नुकीला कीला।

खुइलब – (क्रिया) खोदना, गड़ी बात को उखाड़ना।

खुई – (सं.स्त्री..) झगड़ेलू वातावरण की पृष्ठभूमि।

खुक्ख – (विशे.) जलकर खाक हुआ, बिल्कुल खाली, एकदम नष्ट।

खुखसब – (क्रिया) कोसना, दबाव देना, कमजोरी की आड़ में डाँटना।

खुखुआउब – (क्रिया) जलती आग को प्रज्जवलित करना, बुझी आग को जगाना।

खुचुर – (सं.स्त्री..) चर्चा, बिन्दु विशेष का विवेचन।

खुटखुटाउब – (क्रिया) खुट–खुट की आवाज करना, खुटखुटाना।

खुट्टई – (संस्त्री..) किसी की बुराई, कुबड़ाई, विरोध चर्चा।

खुँटिया – (संस्त्री..) छोटी कील, छोटे कद का आदमी, नाक का गहना।

खुटुर–खुटुर – (अव्य.) बच्चों के चलने पर पाँव की आहट।

खुढ़्ढी – (संस्त्री..) खेत में फसल की नुकीली डंठल।

खुथ्था – (सं.पु.) जमीन में जड़ सहित लगा डंठल।

खुथबा – (सं.पु.) काटेदार घास का एक फल।

खुदबिर्री – (संस्त्री..) शरारत पूर्ण हरकत, झगड़े का बहाना उत्पन्न करना।

खुदरा – (सं.पु.) फुटकर, खुल्ला, क्षुद्र वस्तु।

खुधिके – (अव्य.) जिदबस, रुख पूर्वक, पीछे पड़कर।

खुधब – (क्रिया) जान–बूझकर करना, किसी के पीछे पड़ जाना।

खुन्स – (संस्त्री..) सदमा, आघात, चिन्ता या सोच।

खुनिहाई – (सं.स्त्री..) गमी के कारण त्यौहार न मनाना, जिस त्यौहार को कोई गमी पड़ गई हो।

खुनिआउब – (क्रिया) किसी को खून खच्चड़ करना, सिर फोड़ डालना।

खुनिआब – (क्रिया) लहूलुहान होना, खून से लथपथ होना।

खुरचपहा – (विशे.) मवेशियों की खुर से निर्मित नुकली मिट्टी।

खुरुहुरी – (सं.स्त्री..) नारियल की गरी।

खुरपी – (सं.स्त्री..) घास छीलने का लौह कृषि यंत्र, पुलिंग खुरपा।

खुरखुन्द – (क्रिया) बार–बार आना–जाना, परेशान कर डालना, आतुरता का प्रदर्शन करना।

खुरपब – (क्रिया) खुरपा से घॉस की छिलाई करना, पौध पर गोड़ा चढ़ाना।

खुरी – (सं.स्त्री..) पशुओं की खुर।

खुरमा – (सं.पु.) आटे–गुड़ से बना एक बघेली व्यंजन।

खुरचब – (क्रिया) खरोचना, कुरेदना, हलके हाथ से छीलना, दही मथना।

खुरथेलब – (क्रिया) पाँव से रजाई को अस्त–व्यस्त करना।

खुराग – (सं.स्त्री..) आहार, भोजन, खाना–खर्चा, व्यय पूर्ति।

खुर्राट – (विशे.) अनुभवी, चतुर चालाक, घोटा–पिटा, बड़ा–बूढ़ा।

खुसुर खुसुर – (क्रि.वि.) कानाफूसी करना, कान में सलाह करना।

खुसुर पुसुर – (क्रि.वि.) हलचल होना, हरकत करना, चुपके–चुपके बोलना।

खुसरँजाय – (विशे.) स्वेच्छा से, अपनी खुशी से, सहजतः अपने मन से।

खुसकब – (क्रिया) चुपके से वस्तु देना, चोरी–चुपके से वस्तु देना।
खुसड़ा – (सं.पु.) दिनभर खीस काढ़ने वाला, औरतों की भाँति बातें करने वाला।
खुसिअन – (विशे.) अपनी राजी–खुशी से, बिना किसी दबाव के।

खू

खूँट – (सं.पु.) कान के अन्दर का मैल, पशुओं का एक रोग।
खूँटा – (सं.पु.) पशु बाँधने के लिये जमीन पर गड़ा छोटा लठ्ठा।
खूँटीदतेर – (सं.पु.) जड़ से नष्ट हो जाना, एकदम साफ होना।
खूँथब – (क्रिया) पूँजी नष्ट करना, सब्जी को पकाते समय कुचलना, किसी को चुपचाप कोसना।
खूँथी – (सं.स्त्री..) पूँजी, सम्पत्ति, नाभि का नाड़ा, बाप–बबा की पूँजी।
खूसड़ – (सं.पु.) एक पक्षी विशेष का नाम, खीस निकालने वाला।

खे

खेढ़ी – (सं.स्त्री..) प्रजनन के पश्चात् गर्भाशय से निकलने वाला प्ररस एवं माँस का नाड़ा।
खेतबाई – (सं.पु.) खेतों का भ्रमण, फसल का जायजा, खेत की देख–भाल।
खेदब – (क्रिया) दूर भगाना, पास से हटाना, दौड़कर पीछा करना।
खेदबा भैरमा – (ब.मु.) यैरे–गैरे लोग, बिना रिश्ते के, खानाबदोस लोग।
खेदा – (विशे.) विवाह के साथ व्रतबन्ध होना, व्रतबंध की परंपरा।
खेप – (सं.स्त्री..) एक दौर में उतारा गया सामान, एक चरण में।
खेर – (सं.पु.) खेत–गाँव की सीमा, पूर्वजों की प्रथम जन्म स्थली।
खेरमाई – (सं.स्त्री..) ग्राम्य देवी, गाँव की सीमावर्ती विशेष देवी।
खेलउँहा – (सं.पु.) खड़े आम का मशाला भरा एक अचार की किस्म।
खेलबउर – (सं.पु.) खिलवाड़, हँसी–मजाक।

खो

खोक्खा – (सं.पु) खाली दियासलाई बिल्कुल खाली।
खोकसा – (विशे.) सड़ा या अठोस अंश, अपुष्ट लकड़ी।
खोकसब – (क्रिया) बुरी तरह काट खाना, दाँत से काट देना।
खोंखब – (क्रिया) खाँसना, खाँसी आने की आवाज आना।
खोंखी – (सं.पु.) खाँसी, खाँसी का एक मर्ज।
खोंग – (सं.पु.) लकड़ी में फँसकर वस्त्र का फट जाना।
खोंचब – (क्रिया) खोंचना, गूलना, उत्तेजित करना।
खोचना के मारे– (सं.पु.) औरतों द्वारा दी जाने वाली मनोविनोदी गाली।
खोंची – (सं.स्त्री..) सामान क्रय करते समय प्राप्त की गई एक अतिरिक्त वस्तु, वितरण में बचायी गई मात्रा।
खोजाबर – (सं.पु.) कई पीढ़ी की संतानें, वंश परिवार की वृद्धि के लोग।
खोझरी – (सं.स्त्री..) प्रजनन के 3–4 दिन बाद का जमने योग्य दूध।
खोंटब – (क्रिया) पौध की कोपल काट देना, बाढ़ मारना।

खोंटलइँया – (सं.स्त्री..) तरकारी वाली एक ग्राम्य–लता।

खोड़इसा – (सं.पु.) लड़ने के लिये, रुखपूर्वक परिस्थिति बनाना, खोड़इसा रोपना, बघेली मुहावरा।

खोढ़ – (विशे.) खराब शुरूआत, कुशगुन, टोक देना, वृक्ष में पोली खुली जगह।

खोतड़ी – (संस्त्री.) सिर, खोपड़ी, ललाट, मस्तिष्क।

खोथइला – (सं.पु.) पक्षियों का घास फूस का घोसला।

खोदरा – (सं.पु.) चेचक के दागों से युक्त खुरदुरा चेहरा वाला व्यक्ति।

खोंधरी – (सं.स्त्री..) झोपड़ी, घास फूस की छोटी सी कुटिया।

खोन्नस – (सं.पु.) लड़ाई–झगड़े से उत्पन्न करने के लिये वातावरण बनाना।

खोंपहर – (सं.पु.) तीन दीवालों से बना एक घर विशेष।

खोपड़इया – (सं.स्त्री..) सिर, खोपड़ी, माँस रहित हड्डी–पेंशी।

खोंपा – (सं.पु.) घर के चौड़ाई प्रक्षेत्र का छप्पर, खोंपा उतिनना ब.मु.।

खोभा – (सं.पु.) जमीन में जड़ समेत गड़ा पैना–पौध का डंठल।

खोम्हरा – (सं.पु.) बाँस व पत्ते से बना बड़ा टोप, बड़े–बड़े बालों का सूचक व्यंग्य।

खोम्हरी – (सं.स्त्री..) पत्ते एवं बाँस की बनी एक ग्राम्य टोपी।

खोरसब – (क्रिया) जलती लकड़ी से शरीर को स्पर्श करना, मुँह में आग डालना।

खोरबा – (सं.पु.) कटोरा, खोरा, स्त्री.लिंग, खोरिया या कटोरी।

खोर्र–खोर्र – (सं.पु.) खाँसते समय की ध्वनि, खोर्र–खोर्र करना ब.मु.।

खोर – (सं.पु.) रास्ता–ढर्रा, सँकरा मार्ग, स्त्री.लिंग खोरि।

खोल – (सं.पु.) दो पहाड़ियों के बीच की जगह, रजाई का कवर, स्त्री खोली।

खोलकी – (सं.स्त्री..) दीवाल व छप्पर की संधि, बारी का क्षिद्रनुमा भाग।

खोसकब – (क्रि.) चुपचाप किसी को दे देना।

खोसना – (सं.पु.) वस्तु में लगी क्लिप, पेन का ढक्कन।

खोंसबा ढरकुलिया– (सं.स्त्री..) नारियों के कान का पुराना प्रचलित आभूषण।

खोह – (सं.पु.) अंधकार युक्त पहाड़ी जगह, कंदरा।

ग

गइ – (क्रिया) गयी, गयीं।

गइल – (सं.स्त्री..) गैल, आम रास्ता, सँकरी निकाय।

गइलहरा – (सं.पु.) घर के भीतर का आने–जाने का पतला रास्ता।

गइताल – (विशे.) आलसी, निकम्मा, कामचोर, निष्क्रिय।

गइधुरिया – (स्त्री..) गोधूलि, सूर्यास्त की बेला, सायंकाल।

गइरी – (सं.स्त्री..) घासयुक्त गीली मिट्टी जिससे कच्ची दीवाल बनती है।

गइहौं – (कि.भवि.) गाऊँगी, गाऊँगा।

गइल–घाट – (अव्य.) नदी–तालाब का रास्ता, बघेली मुहावरा।

गउँसट – (सं.पु.) उपकार, सहयोग, परमार्थ, मदद, भलाई।

गउँपबा – (सं.पु.) जिसे इनाम में गाँव मिला हो, एक–दो गाँव का राजा।

गउँटिया – (सं.पु.) कोल जाति, गाँव का मुखिया, स्त्री.लिंग–गउॅटिन।

गउँहार – (सं.पु.) ग्रामवासी, गाँव के रहवासी, ग्राम्य–जन।

गउँतरी – (विशे.) महिमानदारी, रिश्तेदारी का प्रवास।

गउरिमिन्ट – (सं.स्त्री..) सरकार, शासन, गवर्मेन्ट।

गउरिआब – (क्रिया) आम में बौर आना, बौर लगना, आम का पुष्पित होना।

गउरिआन – (विशे.) बौर लगा हुआ, बौराया हुआ आम्र–वृक्ष।

गउरि – (सं.स्त्री..) आम की बौर, पूजा–पाठ में प्रयुक्त गोबर का पिण्ड।

गउसाला – (सं.पु.) गोशाला, गौ सेवा–स्थल।

गउँहेड़ – (सं.पु.) गाँव का गाँव, गाँव के सभी निवासीगण।

गउँचब – (क्रिया) लम्बी–चौड़ी कोरी बात करना, बड़ी–बड़ी बातें करना।

गऊ – (सं.स्त्री..) गाय, गाय की तरह सीधी–साधी प्रवृत्ति।

गउ के – (सं.पु.) गो माता की एक कसम, गाय की सौंगन्ध।

गघरी – (सं.स्त्री..) मिट्टी का घड़ा, छोटे आकार का घड़ा।

गच्च–गच्च – (अव्य) दीवाल में सिर पटकनें से उत्पन्न एक ध्वनि।

गचर्रब – (क्रिया) गप्प मारना, डींग हाकना, निरर्थक बैठे–बैठे कोरी बातें फेंकना।

गचर–पचर – (अव्य.) अस्पष्ट बात, अनिर्णायक स्थिति, शोर–गुल।

गचकब – (क्रिया) जी भर के खाना, मैथुन करना किसी को पीटना।

गचगचायके – (विशे.) पूरी ताकत के साथ, पूर्ण दाबयुक्त, दाँत पीसकर लगाया गया बल, बघेली मुहावरा।

गचापेल – (विशे.) अच्छी मोटी–तगड़ी, देखने सुनने लायक, अति सुन्दर, मैथुन योग्य पूर्ण समर्थ।

गज्ज–बिज्ज– (अव्य.) अपच स्थिति, पेट में अजीर्ण होना।

गजर–बजर – (अव्य.) कमजोर, ऐसा–वैसा, गोल–माल, अनाप–सनाप, गजर–वजर होना, बघेली मुहावरा।

गजान – (विशे.) कीचड़ से मटमैला हुआ पानी, गंदा हुआ जल।

गँजार – (स.पु.) थूक एवं कफयुक्त तरल पदार्थ, बलगम, खखार।

गजाँउब – (क्रिया) साफ पानी को जलाशय में घुसकर मटमैला करना, पानी को गँदला करना।

गटउरी – (सं.स्त्री..) शिशुओं का अण्डकोश, खेतों की छोटी–छोटी क्यारी।

गटरमाला – (सं.स्त्री..) बड़े–बड़े दानों का माला, रुद्राक्ष का बड़ा माला।

गटारन – (सं.स्त्री..) कटीले फल वाली एक वनस्पति, वनौषधि, गटाइन।

गट्ट–गट्ट – (सं.पु.) पानी पीने पर होने वाली गले की आवाज विशेष।

गँठबा – (सं.पु.) घास की गुच्छेदार जड़, गठीली जड़ें।

गठजोराब – (क्रिया) गाँठ का जुड़ना, वैवाहिक सूत्र बन्धन में बँधना।

गठरी – (सं.स्त्री..) छोटा गठ्ठा, पोटली, पुलिंग गठरा।

गठिआउब – (क्रिया) पोटली बाँधना, पोटली में गाँठ लगाना, बाँधना।

गठिल्ला – (सं.पु.) गाँठदार वस्तु, अत्याधिक गाठों वाला बाँस।

गड्ड–विड्ड– एक दूसरे में मिला देना, मिला–जुला, मिश्रित।

गड्डाब – (क्रिया) लुढ़कना, लुढ़ककर आगे बढ़ जाना, ठोकर लग जाना।

गड्डाउब – (क्रिया) लुढ़काकर चलाना, पहिए जैसा घुमाना।

गढ़हा – (सं.पु.) छोटा गढ्ढ़ा, उथला गढ्ढ़ा।

गढागेंद – (सं.पु.) गेंद एवं डंडे पर केन्द्रित एक ग्रामीण खेल।

गढहिन – (सं.स्त्री..) बरसात का पानी भर गढ्ढ़ा।

गड़ास – (सं.स्त्री..) कृषि औजार, घास काटने वाली लोहे का पैना औजार।

गड़ेचब – (क्रिया) किसी का सिर जमीन पर दबाये रहना, पटककर पीटना, जमीन पर दबोचना।

गड़ाइन – (सं.स्त्री..) कई मवेशियों के गले को बाँधा जाने वाला एक विशेष गेंरमा।

गड़ारा – (सं.पु.) नमक–पानी से गले की सिंकाई करना।

गड़ेर – (विशे.) गले की मोटी आवाज, मोटा स्वर, असुरीली बोल।

गड़गड़ान – (विशे.) यौवन से परिपूर्ण, जवानी से भरी, व्याह योग्य।

गतिया – (सं.स्त्री..) ठंड से बचने के लिये शरीर पर बधी फटी–पुरानी धोती की टुकड़ियाँ।

गति–विपति – (अव्य) दुख–कष्ट, आकस्मिक आपत्ति, आपत्ति–बिपत्ति।

गदिया – (सं.स्त्री..) गदेली, हथेली।

गदेला – (सं.पु.) कम उम्र के बच्चे, छोटी सी कुदाल, बच्चों का छोटा गद्दा।

गदेलबा – (सं.पु.) रुआ भरा गद्दा, मोटा बिछावन।

गदराब – (क्रि.वि.) पकने के समीप पहुँची स्थिति का होना, अंगों का जवानी से भरना।

गद्द–गद्द – (सं.पु.) भूसे पर लाठी पटकने से उत्पन्न ध्वनि।

गदे – (सं.पु.) आदत में सुमार, आदी होना, गदे पड़ना, बघेली मुहावरा।

गधारब – (क्रिया) बुरा–भला कहना, गाली देना, उलाहना सुनाना।

गन्जा – (सं.पु.) चौड़े मुख का बड़ा पात्र, बिना बाल का सिर।

गन्तरा – (सं.पु.) शिशुओं के उत्सर्जन अंग के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़े का टुकड़ा, स्त्री.लिंग गन्तरिया।

गन्धइली – (सं.स्त्री..) बाड़ी बनाने की एक वनस्पति, झाड़ी।

गनगनाब – (क्रिया) नींद में मस्त होना, ध्यानमग्न होना, फिरंगी की तरह तीव्र गति से घूमना।

गनी–गरीब – (अव्य.) दीन–हीन, छोट–मोटे, निर्धनजन।

गन्ना – (सं.पु.) चिन्ता, परवाह, झरने का संचित पानी।

गनब–गूफब – (अव्य.) गणना करना, हिसाब–किताब करना, बघेली मुहावरा।

गनब – (क्रिया) गिनती करना, ध्यान में बैठा लेना, गणना करना।

गपकब – (क्रिया) लपककर खा लेना, हड़प लेना, निगल जाना।
गपर–गपर – (अव्य.) बिना सोचे–बिचारे जो भी मन आये बोलना।
गपुआब – (क्रिया) मौन हो जाना, मुँह फुला लेना, नाराजगी से न बोलना।
गपुआ – (सं.पु.) कम बोलने वाला, गाल फुलाये रहने वाला।
गपोड़ा – (विशे.) सदैव गप्प मारने वाला, डींग हाँकने वाला।
गपोड़संख – (विशे.) एक बघेली मुहावरा, गप्प मारने में सिद्धहस्त।
गफ – (विशे.) सघन सूतवाला वस्त्र, मोटे सूत का कपड़ा।
गबर्रा – (सं.पु.) गाते ही रहने वाला, खूब गाने वाला।
गबइया – (सं.पु.) गाने–बजाने वाला, गायक।
गभुआर – (विशे.) नादान, अबोध, दुधमुँहा, अन्जान।
गभेलुआ – (सं.पु.) दोनों गाल का आंतरिक भाग, मुँह का जबड़ा।
गभिनाब – (क्रिया) पशुओं का गर्भधारण करना, पशुओं का गर्भ ठहराना, ऋतुमती होना।
गभिनाउब – (क्रिया) गर्भवती कराना, पशुओं को प्रजनन योग्य बनाना।
गमइँहा – (सं.पु./विशे.) गाँव में रहने वाला, ग्रामीण रहन–सहन वाला।
गमरदल – (सं.स्त्री..) गँवार प्रवृत्ति के लोग।
गमनहाई – (सं.स्त्री..) गवने में आई नारी, वह नारी जिसका गवना होने वाला हो।
गमनहा – (सं.पु.) जिसका दुरागमन हुआ हो, जिसका दुरागमन होना हो।
गमराब – (क्रिया) बात–बात में अकड़कर बोलना, भाव बढ़ जाना, लडाकू भाषा ऐठ कर बोलना।
गमरगट्ट – (विशे.) गँवार प्रवृत्ति वाला, जिसे मारने या पिट जाने की शर्म न हो।
गय – (क्रिया) गई, चली गई, मर गई।
गयौंते – (क्रि.भू.) गया था, गई थी, मर गया था।
गरी – (सं.स्त्री..) खेत का गहरा भाग, नारियल की गरी।
गरियार – (विशे.) जी चुराने वाला, हल में न चलने वाला बैल।
गर – (सं.पु.) गला, गर्दन।
गरहा – (सं.पु.) घाव के कारण अंग पर बना गढ्ढा, पाँव के अँगूठे का फटा तल।
गरहन – (सं.पु.) ग्रहण, ग्रहण का काल।
गरेंठ – (विशे.) पात्र के गले तक भरा हुआ पदार्थ की मात्रा।
गरहनिया – (विशे.) ग्रहण से बाधित अंगवाला, ग्रहण के कारण विकलांगता।
गरिआउब – (क्रिया) गाली देना, उलाहना सुनाना।
गरफाँसी – (सं.स्त्री..) गले का फंदा, गले की फाँसी।
गरगटी – (सं.स्त्री..) पाँव की उँगुलियों के चिन्हों का फटाव, एक रोग विशेष।
गरजुआन – (क्रिया) गरजमन्द होना, गर्ज के वशीभूत होना।
गर्रान – (विशे.) यौवनापन का नशा, ताकत का घमण्ड़।

गर्रबा — (सं.पु.) एक विशेष पक्षी, गर्रबा राजा, बघेली मुहावरा।

गर्रइया — (सं.स्त्री..) एक विशेष किश्म की चिड़िया, गौरैया।

गर्राब — (क्रिया) गुर्राना, कड़ी आवाज में बोलना, अकड़कर बोलना।

गरू — (विशे.) भारी, वजनी, वजनदार, गंभीर, प्रतिष्ठित।

गरूर — (सं.पु.) गर्व, घमण्ड, अभिमान।

गरओरमाउब— (क्रिया) हीनता—दीनता के कारण किसी के दरवाजे पर प्रलोभनवश बैठना, गरओरमाउब, बघेली मुहावरा।

गरग — (सं.पु.) गर्ग गोत्री एक ब्राम्हण, शुक्ल ब्राम्हण।

गरदा — (सं.पु.) धूल, घास—धूल के कण, ढोलकनुमा तकिया।

गलेथब — (क्रिया) धान की बाली निकलने के पूर्व की स्थिति होना।

गलबेला — (क्रि.विशे.) चहल—पहल, शोर—गुल, खींचातानी, हो—हल्ला।

गलब — (क्रिया) ठंड लगना, ठंड से सिकुड़ना, वस्तु में घटाव होना।

गलाउब — (क्रिया) किसी वस्तु को ताप में तपाना, पचा डालना।

गलकब — (क्रिया) बिना परिश्रम के पा जाना, किसी वस्तु को लूट लेना।

गलगाप — (क्रिया) लापता, देखते ही देखते गुम जाना, लुप्त होना।

गलमदरी — (सं.स्त्री..) बड़े—बड़े गालों वाली, जिसके गाल फूले हों ऐसी नारी।

गल्लइया — (सं.स्त्री..) गलर—गलर करने वाली एक चिड़िया विशेष।

गलरी — (सं.स्त्री..) पोड़की नामक एक चिड़िया।

गल्ला — (सं.पु.) हल्ला, शोर—गुल, अनाज।

गलका — (सं.पु.) गदेली में पड़ा हुआ फफोला, एक ब्याधि।

गलभारब — (क्रिया) उलाहना एवं आवेश के साथ बोलना, जोर—जोर से चिल्लाना, दहकना, चुनौती देकर बातें करना।

गलिआउब — (क्रिया) खाकर गले के भीतर दबाना, गाल में दबाये रहना।

गलगलाब — (क्रिया) अस्पष्ट, भीतर ही भीतर स्वरों का रहना।

गला — (सं.पु.) सुआ, शुक पक्षी।

गलदा — (सं.पु.) माँस से लदा हुआ, किसी व्यक्ति का नाम।

गलदहा — (सं.पु.) कीचड़युक्त स्थल, पाँव धंसने वाली गीली जमीन।

गलथर — (विशे.) बढ़े एवं बड़े गाल, फूले गालों वाली नारी।

गलुआ — (सं.पु.) गाल, कपोल।

गली — (सं.स्त्री..) गैल, रास्ता, छोटी खोर।

गलँइचा — (सं.) धागे की बनी मोटी बड़ी दरी, गलीचा।

गलारा — (सं.पु.) बोलने की कर्कश आवाज, जोर का स्वर।

गसॅबाउब — (क्रिया) गुंथवाना, गहना धागे से कसवाना, मैथुन कराना।

गॅसबइया — (सं.पु.) गूंथने वाला, मैथुन करने वाला, कसने वाला।

गहबाउब — (क्रिया) पैरों से कुचलवाना, फसल की गहाई कराना।

गहिहौं — (कि.भ.) गहाई करुँगा,गहाई करुँगी, गाहूँगा।

गहिर – (विशे.) गहरा, वजनी, वजनदार।
गहदान – (विशे.) यौवनायुक्त, हरा–भरा, रसील, पकने के पास की स्थिति।
गहदाब – (क्रिया) पकना, परिपक्व होना, जवान होना, रस से भर जाना।
गहमागहमी – (विशे.) काँटे का टक्कर, मार–काट, जोशोखरोसमय।
गहिराउब – (क्रिया) गहरा करना, खुदी जगह को और खोदना।
गहदेला – (सं.पु.) छोटी कुदाल।

गा

गाष्ठज – (सं.स्त्री..) तड़ित बिजली, उलका पात, गाज गिरब, बघेली मुहावरा।
गाँजब – (क्रिया) वस्तु के ऊपर वस्तु दबाकर रखना, अन्दर रखना या भरना।
गाट – (सं.स्त्री..) हाथ से प्रसारित छोटी किन्तु गुदार पूड़ी।
गाँठी – (सं.स्त्री..) छोटी गाँठ, हाथ–पाँव की गाँठ, गाँठी लगाउब, ब.मु.।
गाता – (सं.पु.) पुस्तक का गत्ता, वाह्य आवरण।
गाती – (सं.स्त्री..) पुराने कपड़े की टुकड़ी जिसे ठंड में शाल के रूप में प्रयुक्त करते हैं।
गाते – (सं.पु.) दोनों टाँग के बीच का पोला भाग।
गाथब – (क्रिया) गुत्थीदार बनाना, गूँथना व कसना, वस्तु में वस्तु गूँथना।
गाद – (सं.स्त्री..) जलाशय की एक घास, गोंद।
गादा – (सं.पु.) ज्वार या गेहूँ के अधपके दाने, भुने हुये।
गादी – (सं.पु.) हमउम्र जोड़ी, बेल, समतुल्य जोड़ बराबरी की बेल।
गादर – (विशे.) अधपका, पकापन के समीप की स्थिति, यौवनावस्था।
गाप – (सं.पु.) खेत का वह अंश जिसको जोता जा रहा हो।
गाबा – (स.पु.) खेत का थोड़ा सा भाग, किसान का पैमाना, दो उँगुलियों के मध्य का स्थान।
गाभिन – (विशे.) गर्भधारण किये हुये, गर्भवती गाय या भैंस।
गामय के – (अव्य.) गाँव के ही, अपने ही ग्राम के।
गारब – (क्रिया) बुरादानुमा फल का गबूझा निकालना।
गारी – (सं.स्त्री..) गाली, बघेली लोक गीत।
गारी–गुप्ता – (सं.स्त्री..) परस्पर गाली देना, दुवर्चन का आदान–प्रदान, गारी गुप्ता, बघेली मुहावरा।
गाल–गूल – (ब.मु.) गाल–गूल करना, ब.मु. बहलाकर अनदेखी करना, अस्पष्ट।
गाला – (सं.पु.) गले की आवाज, गाल बजाना, कर्कश भाषा–बोली।
गाली – (सं.स्त्री..) मवेशी के गले से बँधी गेरमा की गाँठ विशेष।
गाँस – (सं.स्त्री..) बैर–विरोध, ईर्ष्या एवं प्रतिशोध, द्वेष पाले रहना।
गाँसब – (क्रिया) संधारण करना, एक सूत्र में पिरोना, दबाव बनाना, दमंगी, जताकर धमकी देना।
गाहब – (क्रिया) फसल की गहाई करना, बिछावन को पैरों से गन्दा करना।

गि

गिच्च–पिच्च – (अव्य) आना–कानी, लेन–देन में हीला–हवाली करना।

गिंजरब – (क्रिया) कमजोरी पकड़कर घोंसना, उपहास करना, किसी की हँसी उड़ाना, व्यंग्य करना एवं दबाना।

गिजगिज – (विशे.) अति मुलायम, लुंज–पुंज, अठोस, लोचदार।

गिट्ट – (विशे.) छोटे कद, सामान्य से कम ऊँचाई।

गिट्टी – (सं.स्त्री..) पत्थर की छोटी–छोटी कंकड़ी, ठिगनी, पुलिंग गिट्टा।

गिधरोमन – (सं.पु.) नवजात शिशु, हाल साल का जन्मा शिशु।

गिनगिनी – (क्रिया) एक ही परिधि में तेज से घूमना, झूले की घुमाव क्रिया।

गिनगिनाब – (क्रि.वि.) बहुत वेग से, बहुत गति से घूमना।

गिप्पी – (सं.स्त्री..) एक ग्रामीण खेल, जो खपड़े की टुकड़ियों में केन्द्रित होता है।

गिरब – (क्रिया) गिर पड़ना, पथभ्रष्ट होना, ऊपर से टपकना।

गिराउब – (क्रिया) किसी को पटकना, ऊपर से ढकेल देना, नीचा दिखाना।

गिरगोदब – (क्रिया) लिखकर काटना, निरर्थक कागज खराब करना।

गिरदान – (सं.स्त्री..) गिरगिट, छिपकली।

गिलाब – (सं.स्त्री..) मिट्टी का गारा, ईंट–जुड़ाई में प्रयुक्त मसाला।

गिल्ली – (सं.स्त्री..) तीव्र गति से पेड़ पर चढ़ने वाला जन्तु, गिल्ली कस दौड़ना बघेली मुहावरा।

गिलटी – (सं.स्त्री..) गले के बगल में निकली गुलथी, नश की निकली गाँठ।

गिलिट – (सं.स्त्री..) आल्मूनियम, एक मिश्रित धातु।

गिलगोंचब – (क्रि.वि.) हाथ से दबा–दबाकर बच्चों को खिलाना, स्नेहिल उँगुलियों से शिशु–अंग दबाना।

गिल्ला – (सं.स्त्री..) बुराई, उपहास, छोटपन, कुबड़ाई।

गिलपोच्चा – (विशे.) अति गीला, असमान्य गीला, कम आटा अधिक पानी।

गिलबिल – (सं.पु.) अस्पष्ट, ऐसी बोली जो समझ में न आयें।

गु

गुइँत – (सं.स्त्री..) माँस की गाँठ, घाव का सूखकर सिकुड़ जाना।

गुखुरू – (सं.स्त्री..) घास का कांटेदार फल, कांटा चुभा पाँव का घाव, नुकीली मिट्टी।

गुगुड़ा – (सं.पु.) फल की शैशवास्था, जिस फल से फूल न झड़ा हो, एक गूगुड़ वनौषधि।

गँगुआब – (क्रिया) सुलगना, धुँआ छोड़ना, न जलना न बुझना, ब.मुहा.।

गुच्चिआउब – (क्रि.वि.) लाठी के पेंदा से प्रहार करना।

गुचुर पंचाइत – (अव्य.) निरर्थक बातें, वही–वहीं बात बार–बार पूछना– बताना, ब. मु.।

गुच्चा – (सं.पु.) लाठी का निचला भाग, गाँठनुमा छड़ी का भाग।

गुचकब – (क्रिया) लाठी से किसी के शरीर में खोदना, लाठी चुभाना।

गुचुरामन – (क्रि.वि.) बहस एवं वार्ता, बिना अर्थ की बातें।

गुजरब – (क्रिया) मर जाना, बीत जाना, चला जाना।

गुजारा – (सं.पु.) जीविकोपार्जन, काम चलाना, निर्वाह होना।

गुझिना – (सं.पु.) फल की सूखी जाली, रेरूआ फल का कंकाल।

गुझिनब – (क्रिया) गुझिना द्वारा बर्तन साफ करना।

गुझार – (विशे.) गबूझेदार, पर्याप्त गुदायुक्त।

गुटकब – (क्रिया) बिना चबाये लील लेना, निगलना, पी लेना।

गुटँरूँ गूँ – (ब.मु.) मुर्गे की बोली, ब. मु.।

गुटकाउब – (क्रिया) किसी से निगलवाना, बिना चबाये अन्दर कर लेना।

गुठुरी – (सं.स्त्री..) फल की गुठली, भूसे में डंठल की गाँठ।

गुठुआ – (सं.पु.) घुटना, पाँव के ऊपर की गाँठ वाला भाग।

गुड्डी – (सं.स्त्री..) छोटे मुख वाला छोटा सा लोटा, लोटिया।

गुढ़ा – (सं.पु.) जिस नाड़े से भैंस के दोनों पीछे के पाँव बाँधे गये हों।

गुडुमतान – (विशे.) जोड़ना–तगोड़ना, जुगाड़ बनाना, सही–झूठ बोलकर काम निकालने वाली व्यवस्था।

गुड़गुड़ी – (क्रि.वि.) लुढ़ककर आगे होना, लुढ़कते हुये धक्के से दूर तक हो जाना।

गुड़न्तब – (क्रिया) लुढ़ककर गिरना, (बघेली मुहावरा), गिर जाना या फेल हो जाना।

गुड़गुड़ाउब – (क्रिया) हुक्का की भाँति आवाज निकालना, पानी पी लेना।

गुड़ गोबर – (ब.मु.) बना बनाया काम बिगड़ जाना, सत्यानाश होना।

गुड़मुड़ी – (क्रि.वि.) लोटपोट होना, लुढक– लुढ़ककर सिर के बल बढ़ जाना।

गुडेरी – (सं.स्त्री..) पतली रस्सी का बन्डल, जो भीतर ईर्ष्या द्वेष पाले हो।

गुथरब – (क्रिया) सम्बद्ध होना, अति सघन होना, पिरोना या गुथ जाना, एक दूसरे में मिला होना।

गुथीमा – (सं.स्त्री..) एक–दूसरे एवं तीसरे से संलग्न वस्तु, गुंथी हुई वस्तु।

गुदाम – (सं.स्त्री..) बटन।

गुदार – (विशे.) गबूझेदार वस्तु, माँसपेशियों से भरपूर, दलदार रोटी।

गुदामिल – (विशे.) खटमिठ्ठा स्वाद।

गुदरी – (सं.स्त्री..) फटे पुराने कपड़े का बिछावन, गुदड़ी, गुदड़ी मा लाल, बघेली मुहावरा।

गुधुनाब – (क्रिया) नाराज होकर बोलना, अन्दर ही अन्दर जलकर अस्पष्ट स्वर निकालना, नाक के बल मन्द स्वर से बोलना।

गुनब – (क्रिया) विचार करना, गुणा–भाग मन में लगाना, सीमा मानना।

गुनब–धुनब – (अव्य.) अति मंथन करना, खूब सोचना–विचारना, ब.मुहा.।

गुन काढ़ब – (ब.मु.) अपने दुर्गुणों का होशियारी के रूप में प्रदर्शन करना।

गुनमान – (विशे.) गुणवान, गुणों से भरा हुआ, बड़ा गुणवान व्यंग्यात्मक, बघेली मुहावरा।

गुनिया – (विशे.) झाड़–फूँक करने वाला, गुणी।

गुनियाउब – (क्रिया) सुधारते–सुधारते और बिगाड़ देना, बघेली मुहावरा।

गुफ्फा – (सं.पु.) आश्चर्ययुक्त बातें, हवाई फायर, बातों का अजूबा।

गुमकी – (सं.क्रि.) ढोलक या तबले की थाप, ओठ से ओठ पटककर ताल मिलाना।

गुर के बाप – (ब.मु.) काले कारनामों की जड़, दुगुर्णो का खजाना, गुर के बाप कोल्हूँ, व्यंग्य मुहावरा।

गुर – (सं.पु.) गुड़, गुरखाय, गुलगुला से परहेज, बघेली मुहावरा।

गुरेर – (क्रि.वि.) बैर, मन मोटाव, ईर्ष्या–द्वेष पाल लेना।

गुरूआइन – (सं.स्त्री..) गुरू की पत्नी, शिक्षा देने वाली, पुलिंग गुरूबाबा।

गुरगुदा – (विशे.) अति फटा पुराना, जीर्ण–शीर्ण वस्त्र।

गुरमेटब – (क्रिया) लपेटना, अस्त–व्यस्त को समेटना।

गुरिद – (क्रिया) वंश–परिवार का विनाश, वारिस न बचना, चौपड़ खेल में सभी गोटों का पिट जाना।

गुरिजा – (सं.पु.) दो मंजिला कच्चा घर, एक औषधीय वृक्ष का नाम।

गुरिया – (सं.स्त्री..) मनका, माला का एक भाग, सब्जी की एक टुकड़ी, माले का एक मूँगा।

गुरतुल – (विशे.) मीठा, मिठासयुक्त स्वाद, मधुर।

गुरदा – (सं.पु.) कपड़े का गुर्रीदार कोड़ा, पेट का एक भाग, मांश पेशी।

गुरी–गुरी – (अव्य.) टुकड़े–टुकड़े, छोटे–छोटे भाग, गुरी–गुरी काटना, बघेली मुहावरा।

गुराम – (सं.पु.) आम का रस, गुड़ आटा का पकाया गया घोल, व्यंजन।

गुर्रा – (सं.पु.) पुरुष धोती का काछदार एवं मरोड़दार एक पहनावा।

गुर्राब – (क्रिया) कुत्ते की तरह बोलना, अकड़कर बोलना, नाक के बल बोलना।

गुरुघंटाल – (ब.मु.) तिकड़म बाज, माहिर, चतुर–चालाक, घोटा– पिटा, अनुभवी।

गुल्ला – (सं.पु.) शिकार करने का औजार, दीवाल में गड़ी लकड़ी की मोटी कील।

गुल्ली – (सं.स्त्री..) ग्रामीण खेल की एक लकड़ी विशेष।

गुल्ली–डंडा – (सं.स्त्री..) ग्रामीण चरवाहों का दो लकड़ियों वाला खेल।

गुलगुल – (विशे.) ठोस रहित, पिलपिला, जो दबाने से दब जाय गेंद की भाँति।

गुलगुला – (सं.पु.) आटा एवं गुड़ से बना ग्रामीण व्यंजन।

गुलथी – (सं.स्त्री..) माँसपेशियों की गाँठ, आटे का न घुला अंश, मन में फर्क।

गुलूबन्द – (सं.पु.) गलाबन्द, कान की पट्टी, मफलर।

गुलेल – (क्रि.वि.) लोचदार, धनुषाकार होना, संकोच से झुककर अर्द्धगोलाकर हो जाना, एम ग्राम्य धनुष (संज्ञा)

गुलरा – (सं.पु.) मेढ़क, गूलर स्त्री.लिंग गुलरिया।

गुलमगट्ट – (विशे.) पराई औरतों के चक्कर में रहने वाला, गुलाम प्रवृत्तिवाला, पत्नी का वशीभूत, स्त्री.लिंग गुलमगट्टी।

गुलुर–गुलुर – (अव्य.) तोतली बोली, शिशुओं की बोलने वाली प्रिय शैली।

गुलमेहंदी – (सं.स्त्री..) एक वन फूल।

गुस्सइला – (विशे.) क्रोधी, बात–बात में नाराज होने वाला।

गुस्साब – (क्रिया) नाराज होना, आवेशित होना।

गुहब – (क्रिया) क्रमबद्ध गूंथना, माला की तरह पिरोना।

गुहु – (सं.पु.) मैला, टट्टी, कुछ नहीं, न के बराबर, गुहु, बघेली मुहावरा।

गुहु लकड़िया– (ब.मु.) गड़ी बात को बार–बार उखाड़ना व प्रकाश में लाना।

गुहइया – (विशे.) गहने को धागे से गूंथने वाला, माला पिरोने वाला।

गू

गूगुड़ – (सं.पु.) एक वनौषधि, एक वनस्पति।

गूझा – (सं.पु.) गवूझा, फल का मांसल, गूझा काढ़ना, ब.मुहा.।

गूदी – (ब.मु.) नाभि, पेट की बोड़री, फल का गबूझा।

गूना – (ब.मु.) गूना गोठना (ब.मु.), घड़े की गोवबंर एवं चने से कढ़ाई।

गूरा – (सं.पु.) कमर की हड्डी, कूल की हड्डी, पत्थर का टुकड़ा।

गूलर – (सं.पु.) मेढ़क, ऊमर का एक वृक्ष।

गूलब – (क्रिया) चुभाना, कार्य के लिये प्रेरित करना, स्मरण कराना।

गे

गेदुर – (सं.पु.) एक स्तनधारी जन्तु, जमगादड़।

गेरमा – (सं.पु.) खूँटे से पशु को बाँधने वाली रस्सी, स्त्री.लिंग गेराई।

गेरब – (क्रिया) घेरना, घेराव करना, घेर लेना।

गेलभ – (क्रि.वि.) फिजूल की बातों में फँसाकर समय नष्ट करना, दारुखोर की बोली भाषा।

गेल्हराब – (क्रिया) जानबूझकर अन्जान बनना, अज्ञात की कला।

गो

गोंई – (सं.स्त्री..) सखी, सहेली, मित्र, एक तकिया कलाम।

गोइआरो – (सं.पु.) दोस्ती, दोस्ती का रिश्ता, मित्रता।

गोचंदर – (सं.स्त्री..) व्यर्थ की वार्ता, आपसी वाद–विवाद, तर्क वितर्क।

गोंच–पोंच – (अव्य.) संदिग्ध, विवादित, उलट फेर, इधर का उधर।

गोजहरा – (सं.पु.) अन्दर डाल देना, डाल देना, छिपा देना।

गोंजब – (क्रिया) जौ का अनाज, चना एवं जौ मिश्रित फसल।

गोटँइया पारब— (ब.मु.) दूर से ही पूछ—ताछ करते रहना, अनावश्यक बातों में समय नष्ट करना।

गोटई — (सं.स्त्री..) गोटी पत्थर की टुकड़ी, गोटई बैठाना, (ब.मु.) पुलिंग गोटबा।

गोट्टी — (विशे.) गोरी, गौरवर्ण की, गोरे रंग की, पुलिंग गोट्टा।

गोटईटार — (ब.मु.) नाम मात्र का, बहानेबाज, कामचोर।

गोठब — (क्रिया) आटे से कसीदाकारी करना, कलात्मक खुदाई करना।

गोठबाउब — (क्रिया) आटे की कसीदाकारी में सहयोग करना।

गोंठबाई — (सं.पु.) गोठने का पारिश्रमिक, कार्य का लाभांश।

गोठाब — (क्रिया) खट्टापन के कारण दाँतों का निष्क्रिय हो जाना।

गोंठबइया — (सं.पु.) खूब बातें बतानें वाला, गोठने का कार्य करने वाला।

गोड्ड़ाब — (क्रिया) लड़खड़ा जाना, लड़खड़ाकर उछल जाना, रास्ते से भटक जाना।

गोढ़री — (सं.स्त्री..) सिर पर भार रखने के लिये सिर पर कपड़े का छल्ला।

गोड़ब — (क्रिया) गुड़ाई या खुदाई करना, जमीन को ढीलेदार बनाना।

गोड़ — (सं.पु.) पाँव, पैर, एक आदिवासी जाति।

गोंड़ा — (सं.पु.) पौधे में चढ़ाई गई मिट्टी, कुर्सी टेबिल का पावा, घर की सीमा।

गोड़चल — (विशे.) चलते—फिरते रहने वाला, मजबूत हाथ—पाँव वाला।

गोड़धोई — (सं.स्त्री..) पाँव धुलाई की रस्म, एक बघेली परम्परा।

गोड़हरा — (सं.पु.) पाँव में धारित चाँदी का आभूषण, पाँव का बड़ा मोटा चूड़ा।

गोड़उस — (अव्य.) चारपाई के पैर की ओर, सिरहाने से विपरीत हिस्सा।

गोती — (सं.स्त्री..) परिवार का व्यक्ति, पट्टेदार या हिस्सेदार।

गोदब — (क्रिया) हाँथ में गोदना, कागज खराब करना।

गोदबइया — (सं.पु.) गोदने वाला, जिसने कागज खराब किया।

गोदबाउब — (क्रिया) हाथ में चित्र बनवाना, फूल बैठवाना।

गोदा — (सं.पु.)पौधे में चढ़ी मिट्टी, प्रस्फुटित पौध की कोपलें।

गोनिया — (सं.स्त्री..) घोड़े के पीठ का दोनों पहलू के बोरे, पटवारी का पैमाना।

गोप्सहर — (सं.पु.) परोपकारी, कृत्रिम मददगार, दिखावटी सहयोगी।

गोपालगाँठ — (ब.मु.) जोड़—तगोड़, लाग—वाग, जुगाड़, जोड़—गाँठ।

गोफना — (सं.पु.) रस्सी का एक युक्तिपूर्ण पत्थर फेंकनें की वस्तु।

गोफरी — (सं.स्त्री..) पौध की नवीन कोपलें, नये—नये कोमल पत्ते।

गोबरइला — (सं.पु.) गोबर में रहने वाला एक विशेष काला कीड़ा।

गोबरउटब — (क्रिया) गोबर से घर की पुताई—लिपाई करना।

गोबरकरी — (सं.स्त्री..) गोबर उठाने वाली मजदूरनी।

गोभव — (क्रिया) नुकीली वस्तु आर—पार करना, सुई चुभाना।

गोमट — (विशे.) नमीयुक्त, हल्का गीला, पूरा जो न सूखा हो।

गोमा – (सं.पु.) सखी–सहेली का पति, नारी का पुरुष मित्र।

गोरि – (विशे.) गौर वर्ण, गोरी, पुलिंग गौर।

गोरकिया – (सं.स्त्री..) गौरवर्ण वाली नारी।

गोराब – (क्रिया) गौर वर्ण का हो जाना, साफ रंग का होना।

गोराई – (विशे.) रूप–रंग एवं सौन्दर्य, गोरापन।

गोरू – (सं.पु.) मवेशी, पशु।

गोरूआरी – (क्रिया) पशुओं का बाँधने– छोड़ने व घास खिलाने का कार्य।

गोरसी – (सं.स्त्री..) आग जलाने के लिये बनी मिट्टी की टोकनीनुमा पात्र इसका पुलिंग गोरसा।

गोलिआउब – (क्रि.वि.) गोला आकार प्रदान करना, पिण्ड रूप में बनाना।

गोलमाल – (ब.मु.) विषय बदलना, सन्दर्भ घुमाना, गायब करना, छिपा देना, कुछ का कुछ कर देना।

गोलकिया – (विशे.) जो गोली हो, गोल वाली वस्तु।

गोलहथी – (सं.स्त्री..) नये चावल की खिचड़ी, सिर के बल जमीन पर पलटना (क्रि.वि.)

गोलम्बर – (सं.पु.) गोलाईदार चौराहा।

गोला – (सं.पु.) लकड़ी का बड़ा ईमारती लठ्ठा।

गोलियामटरा– (सं.पु.) मटरफली, गोला मटर।

गोसट – (सं.पु.) परोपकार, लाभ, गोसट देना, ब.मुहा.।

गोसँइया – (सं.पु.) संरक्षक, मालिक, स्वामी, पालनकर्ता।

गोस – (सं.पु.) माँस, गोस्त।

गोहटी – (सं.स्त्री..) एक मादा जन्तु जो विषैली होती है, पुलिंग गोह।

गोही – (सं.स्त्री..) फल की बीजा, महुआ का बीजा, जंघा में उगी मांशपेशी–गाँठ।

गोहागर – (ब.मु.) नाम गोहागर मुहु कुकुर कस, बघेली मुहावरा।

गोहराउब – (क्रिया) आवाज देकर बुलाना, लौटने के लिये आग्रह स्वर।

गोहूँहा – (सं.पु.) जिस खेत में गेंहूँ बोया हो, गेंहूँ की फसल का बाँध।

गोह – (सं.पु.) एक विषैला जन्तु, जो छिपकली से बहुत बड़ा होता है।

गोहार – (क्रि.वि.) संकट के समय तेजी आवाज से पुकार, गोहार मारना, बघेली मुहावरा।

गोहूँ – (सं.पु.) गेंहूँ का पौध, गेंहूँ।

गोहमना – (सं.पु.) गेंहुआ रंग, एक वनस्पति, सर्प की एक प्रजाति।

गोहरबइया – (सं.पु.) बुलाने वाला, पुकारने वाला।

घ

घइरब – (क्रिया) कमर हिलाते हुये चलना, बन–ठन के गतिमान होना।

घइला – (सं.पु.) मिट्टी या धातु का घड़ा, स्त्री.लिंग घइली।

घइया – (सं.स्त्री..) बतासा, बतासा बनाने का पात्र।

घउघई – (अव्य.) समय, क्षण, अवधि, काल, अवसर।

घउदा – (सं.पु.) फलों का गुच्छा, फलों का झोंथ।

घँघरिया – (सं.स्त्री..) छोटा लहँगा, घेरदार चमकीला लहँगा।

घँघोउब – (क्रिया) पानी को हिलोर कर मटमैला करना।

घघोमन – (विशे.) मैल धोया हुआ पानी, हिलोर कर गन्दा किया गया पानी।

घघोटब – (क्रिया) काटने जैसा दौड़ना, बाज जैसा टूट पड़ना।

घटबढ़ – (विशे.) कम–अधिक, कमी–वेशी।

घट्टिहा – (विशे.) घृणित, गन्दा आचरण वाला, एक गाली विशेष।

घटबा – (सं.पु.) जलाशय का घाट, स्नान करने का निर्धारित स्थल।

घटनउक – (विशे.) कमाने लायक, घटने योग्य, कम होने लायक।

घटघटाउब – (क्रि.वि.) पानी जैसा पीना, घट्घट करके पी लेना।

घटब – (क्रिया) कम होना, कम पड़ जाना, घटना, घट जाना।

घटउब – (क्रिया) इज्जत कम करना, घटवा देना, घटा लेना।

घटरमाला – (सं.पु.) बड़े–बड़े मनका या मूंगे का बना हुआ माला।

घठ्ठा – (सं.पु.) रगड़ लगने से गदेली पर उभरे ठेंठा या चिन्ह।

घच्च–घच्च – (अव्य.) जमीन पर सिर पटकने से उत्पन्न ध्वनि, नुकीली चीज घुसने की आवाज।

घत – (ब.मु.) दाव लगाना, घात लगाना, लाग बैठाना।

घतिआउब – (क्रिया) पकड़ में कर लेना, अपनी पहुँच में करवा लेना।

घन्ट – (ब.मु.) कुछ नहीं, पुरुष मूत्रांग।

घनिआउब – (क्रिया) सघन करना, घन से पीटकर प्रसारित करना।

घनघनाउब – (क्रिया) जोर से घण्टी बजाना।

घमउरी – (सं.स्त्री..) पशीने से हुई शरीर पर रबेदार फुन्सी–फोड़िया।

घमसान – (सं.पु.) गोंड जाति का एक पूज्य देवता।

घमछाहिर – (विशे.) घाम एवं छाँव, आधी धूप एवं आधी छाँव।

घमान – (विशे.) धूप से ग्रसित या व्याकुल, कड़ी धूप से त्रस्त।

घमाका – (सं.पु.) मुष्ठिका, मुष्ठिका का प्रहार।

घमाघम – (विशे.) धूप की धूप, बादल ही बादल, बरसात के पूर्व गर्जन।

घमघबाउब – (क्रिया) बाजा बजवा लेना, उत्सव या आयोजन बाजे–गाजे के साथ करना।

घमचुरहा – (क्रि.वि.) धूप में पीला हुआ फल।

घम्मा – (सं.पु.) सदैव गाल फुलाये रहने वाला व्यक्ति विशेष का नाम।

घमिरा – (सं.पु.) एक घास, एक वनौषधि।

घम्म–घम्म – (सं.पु.) मुष्ठिका प्रहार से उत्पन्न ध्वनि, दही मथने की आवाज, दूध दुहते समय की आवाज।

घरक्का – (सं.पु.) मरने के पूर्व की श्वॉस, सोते समय की सांस–ध्वनि।

घरसठ – (क्रि.वि.) घरोबा, घरेलू सम्बंध, ताल–मेल, घुल–मिल जाना।

घरहा – (सं.पु.) घर–परिवार का, आपसी या घरेलू व्यक्ति।

घर–घुसना – (सं.पु.) घर के भीतर रहे आने वाला, पराई औरत के पीछे पड़े रहने वाला, बघेली मुहावरा।

घरी – (सं.स्त्री..) एक घण्टा समय, चूल्हे का वह भाग जिसके किनारे रोटी सेंक रही हो।

घरइहा – (सं.पु.) पति, गृहस्वामी, घरवाला, घरेलू सदस्य।

घरफोरवा – (विशे.) घर–परिवार में कलह उत्पन्न करने वाला, मिया–बीबी को लड़ा देने वाला।

घराती – (सं.पु.) कन्या पक्ष के लोग, कन्या पक्ष के स्वागताकांक्षी।

घरिया – (सं.पु.) छप्पर का झुकावदार खपड़ा जो ऊपर रहता है।

घरीघरी – (अव्य.) बार–बार–, उलट–पलट, फिर–फिर से।

घरबइठा – (सं.पु.) विवाह के बाद जो पत्नी के मायके में ही रहने लगा हो।

घरघराब – (क्रिया) बादलों की गर्जना, गाड़ी मोटर की आवाज होना।

घरुहा – (सं.पु.) बटन डालने के लिये, वस्त्र पर बना क्षिद्र या कज।

घलाय – ((योजक) सहित, समेट, भी।

घली – ((क्रिया) मार पड़ेगी, मार पड़ी, बजी।

घलाघली – ((क्रि.वि.) एक दूसरे पर मार–पीट, झगड़ा।

घलघलाब – ((क्रि.वि.) पेट के पानी हिलने–डुलने की ध्वनि होना, पेट का गुड़–गुड़ाना।

घलब – (क्रिया) मार पड़ना, मार खाना, सिर पर संकट या प्रहार पड़ना।

घँसब – (क्रिया) घिसना, घर्षण करना, अनसुनी करना, मालिश करना, मैल छुड़ाना, लेपन करना, घँसि डारब, बघेली मुहावरा।

घसिआरी – (क्रि.वि.) मवेशियों को सुबह–शाम घास खिलाने का कार्य करना और लाभांश से दूर रहना।

घँसबाउब – (क्रिया) घिसवाना, घर्षण करवाना, स्वयं झसवाना।

घँसनीठ – (विशे.) जिस पर गाली–मार का असर न होता हो, जो मार खाते रहने पर भी मार–गाली की परवा न करता हो, निर्भीक।

घसोंटब – (क्रिया) धूल में घसीटना, घसीट कर गन्दा करना, रोज–रोज पहनना।

घँसिलब – (क्रिया) घिसट–घिसट कर चलना, काम चलाऊ गति।

घसिलाउब – (क्रिया) घसीटना, घसीटते हुये खीचना, काम न करके लटकाये रहना।

घसबरब – (क्रिया) घिसल जाना, जमीन पर फिसल जाना, पिस जाना।

घसरभसर – (ब.मु.) ऐसा–वैसा, कमजोर, लापरवाही, कामचोर, हीला–हवाली।

घसबइया – (सं.पु.) घिसने वाला तेल लगाने वाला, मैल रगड़ने वाला, रगड़–रगड़ कर तेल का लेपन करने वाला।

घा

घाउर घुप्प – (विशे.) एकदम गुप्प, चुप, मौन, मुहबन्द, बघेली मुहावरा।

घाघ – (विशे.) घोटा–पिटा, जानकार, चतुर–चालाक।

घाठ – (सं.स्त्री..) दलिया, गेहूँ की खिचड़ी, गेंहूँ व ज्वार का भात।

घाती – (सं.पु.) ह्रदय का काला, धोखेबाज, घात करने वाला।

घानी – (सं.स्त्री..) तेल के बदले दिया गया तिलहन, घानी निकारब, ब.मु.।

घाम – (सं.पु.) धूप, सूर्य की ऊष्मा।

घालब – (क्रिया) उक्ति या आख्यान कहना, सुनाना, छोड़ना।

घाल – (योजक) सहित, समेत।

घिआर – (विशे.) अधिक घी देने वाली, जिसके दूध में घी मात्रा अधिक हो।

घि

घिउ – (सं.पु.) घी, घृत।

घिउहाई – (सं.स्त्री..) घी से युक्त, घी रखने वाला पात्र, घी से बना व्यंजन।

घिघ्घी – (सं.स्त्री..) आवाक हो जाना, सब कुछ सुध–बुध खोना, होश उड़ जाना, चेतना शून्य होना, घिघ्घी बंधना, ब.मु.।

घिघिआब – (क्रिया) दाँत गड़ा देना, पुरुजोर प्रयास के साथ निवेदन करना।

घिंचरब – (क्रिया) खिंच जाना, आक भट होना, खिंचाव के कारण घिसलना।

घिंचमरा – (सं.पु.) एक गाली, कमजोर गर्दन वाला, पतली गर्दन वाला।

घिंचबइठा – (विशे.) छोटी गर्दन वाला, जिसकी गर्दन बैठी हो, स्त्री.लिंग घिंचबइठी।

घिंचाउब – (क्रिया) खिंचवाना, खींचने में मदद करना, निकलवाना।

घिन – (सं.पु.) घृणा, निन्दा, अरुचि, जी मचलाना।

घिनघिनाब – (क्रिया) मन भिनकना, घृणा लगना, नफरत होना।

घिनाब – (क्रिया) घृणा लगना, मन मिचलाना, गन्दगी के कारण अरुचि होना।

घिनउची – (सं.स्त्री..) वह स्थान जहाँ पानी से भरा घड़ा नियमित रखा रहता हो।

घिनउनी – (सं.स्त्री..) हाथ में होने वाली मवाददार व्याधि, एक गाली।

घिनहा – (सं.पु.) गन्दा व्यक्ति, घृणित कार्य करने वाली, स्त्री.लिंग घिनही।

घिनहाई – (सं.स्त्री..) अभद्र कार्य, निन्दनीय क्रिया, कमीयुक्त कार्य।

घिर्रा – (सं.पु.) घर्षण, घिसाब–चिन्ह्, रस्सी के घर्षण का चिन्ह्।

घी

घींच – (सं.स्त्री..) गर्दन, लेवाड़ी, घीच कुटाना, बघेली मुहावरा।

घींचब – (क्रिया) निकाल लेना, खींचना, चुरा लेना।

घींच मराउब – (ब.मु.) व्यर्थ में कार्य करना, फोकट में प्राण लगाकर काम करना।

घु

घुआ – (सं.पु.) किवाड़ के ऊपर–नीचे का नुकीला भाग, मक्का की रेशेदार बलरी।

घुइरब – (क्रिया) घूरकर देखना, कड़ी नजर से देखना, एकटक देखना, आँख दिखाना।

घुइँस – (सं.पु.) धमकीयुक्त दबाव, दबावबस कोसना।

घुघुँरी – (सं.स्त्री..) उबले हुये हरे ज्वार के दानें, उबले हुये गेंहूँ के दानें।

घुघुँची – (सं.स्त्री..) एक रंगीन फल वाली वनस्पति, एकरती माप का फल, घुघुँची अपनें रंग बाउर, ब.मु।

घुघुआर – (सं.पु.) मैला–कुचैला व्यक्ति, कूड़े–कर्कट की तरह अस्तित्वहीन।

घुटकी – (सं.स्त्री..) गला, गर्दन, गले की मांसल गाँठ।

घुटुआ – (सं.पु.) पैर मुड़ने के स्थल की गॉठ, पैर की कटोरीनुमा कटोरी।

घुटघुट दोहनी– (विशे.) दोहनी के गले तक भरा हुआ माप का पदार्थ।
घुटकब – (क्रिया) निगलना, पानी–पीना, निवाला गले से अन्दर करना।
घुनहा – (वि. / सं.पु.) घुन लगा हुआ एक कोमल पत्थर।
घुनब – (क्रिया) घुन जाना, कीड़े से अनाज का अपुष्ट हो जाना।
घुनघुना – (सं.पु.) बच्चों का खिलौना, बच्चों का बाजा।
घुपब – (क्रिया) चारों तरफ से बादलों का घिर आना, अंधकारमय होना।
घुमइया – (सं.पु.) घूमने वाला, घुमक्कड़, चलते–फिरते रहने वाला।
घुमड़ब – (क्रिया) बादलों का घिर आना, बादलों का अच्छादन।
घुरब – (क्रिया) घुलना, एकात्म होना, ताल–मेल बैठ जाना, घुट–घुट कर मरना।
घुरउब – (क्रिया) किसी को घुट–घुट कर मरने लायक कर देना।
घुरूर–घुरूर – (अव्य.) गाड़ी या बस की आवाज, चक्की की ध्वनि।
घुरबा – (सं.पु.) कूड़ा कर्कट रखने का स्थल, आँख गड़ाये रखने वाला।
घुघुरी – (सं.स्त्री..) उबले ज्वार या गेहूँ के खड़े दाने।
घुर्राब – (क्रिया) घुर–घुराहट होना, बस गाड़ी की आवाज होना।
घुरहगना – (ब.मु.) अस्तित्वविहीन, घर की मुरगी दाल बराबर।
घुल्ला – (सं.पु.) कपड़ा या वस्तु टांगने की लकड़ी, खूंटी।
घुल्लाब – (क्रिया) पेट का घुल–घुलाना, पेट में घुल्ल–घुल्ल होना।
घुल्लघुल्ल – (सं.पु.) घड़े से पानी निकालते समय की आवाज, पेट के अन्दर की आवाज।
घुसेरब – (क्रिया) अन्दर डालना, पिरोना।
घुसबाउब – (क्रिया) अन्दर डलवाना, डलवाने में सहयोग करना।
घुँसहा – (सं.पु.) जो घूँस लेकर काम करता हो, घूँसखोर।
घुसेरबइया – (सं.पु.) जो डालने का कार्य करता हो, पिरोने वाला।
घुसुरब – (क्रिया) किसी से चिपकना, आधीन होना, जबरिया ठंसना।

घू

घूँचा – (सं.पु.) मुस्ठिका, मुस्ठिका से प्रहार।
घूर – (सं.पु.) सड़ा–गला कूड़ा कर्कट, घूर होइगा, बघेली मुहावरा।
घूँटी – (सं.स्त्री..) शिशुओं को पिलाने बड़ी जड़ी–बूटी, एक औषधि।

घे

घेंचा – (सं.पु.) हाथ मोड़ने पर निकली हड्डी या गाँठ।
घेचिआउब – (क्रिया) घेंचेंके बल किसी को मारना–पीटना।
घेटब – (क्रिया) घिसना, घिसकर चिकना करना, रगड़ना।
घेट्टा – (सं.पु.) घिसकर चिकना करने वाला पत्थर।
घेंटी – (सं.स्त्री..) छिलकायुक्त फली।
घेतल – (विशे.) मन्द बुद्धिवाला, हकलाकर बोलने वाला।
घेमन – (सं.पु.) परेशानी, दुगर्ति, विडम्बना।
घेर – (सं.पु.) केले के फल का एक गुच्छा, कपड़े की चौड़ाई।

घो

घोक्की – (विशे.) घिरी हुई, आकाश की भाँति झुकी हुई वस्तु स्थिति।
घोखब – (क्रिया) रटना, याद करना, कंठस्थ करना, स्मरण करना।
घोखबाउब – (क्रिया) किसी से याद करवाना, कंठस्थ करवाना।
घोखबइया – (सं.पु.) रटने वाला, पुनर्रावृत्तिकर्ता।
घोंघी – (सं.स्त्री..) गर्दन या गला, शंख की आकृति का कीड़ा, पुलिंग घोघा।
घोंघा – (सं.पु.) गर्दन, कण्ठ, गला, गले की आवाज।
घोंघाब – (क्रिया) जोर–जोर से बोलना, गला फाड़कर चिल्लाना।
घोटहर – (सं.पु.) बड़े–बड़े मनका से बना बड़ा माला।
घोट्ठा – (सं.पु.) तर्क पर तर्क करना, काष्ठ पर रगड़कर चिन्ह्।
घोट्ठब – (क्रिया) परेशान होना, बार–बार आना–जाना, दौड़–धूप करना।
घोटब – (क्रिया) घिसना, मथना, महीन करना, कंठस्थ करना, घिसाई करना।
घोटघोटाउब – (क्रि.वि.) पानी जैसा पीना, बिना रूके एक साँस में पी जाना।
घोटाउब – (क्रिया) घिसवाना, घोटाई करना, परेशान करना, सिर मुड़वाना।
घोट्घोट – (सं.पु.) पानी पीते समय की एक ध्वनि।
घोटन्ना – (सं.पु.) हुकदार छड़ी या बेंत, स्त्री.लिंग घोटन्नी।
घोटा – (सं.पु.) पशुओं को तरल दवा पिलाने वाली बाँस की पोंगली।
घोड़मुहा – (विशे.) घोड़े के मुँह की तरह वाला व्यक्ति, एक गाड़ी।
घोड़सार – (सं.पु.) घोड़ा बाँधने वाला स्थल, घुड़शाल।
घोड़ाब – (क्रिया) घोड़ी का गर्भवती होने की क्रिया।
घोड़ग्घर – (सं.पु.) बड़ा एवं वयस्क, घोडग्धर आय, बघेली मुहावरा।
घोड़दउर – (क्रि.वि.) घोड़े की दौड़, घोड़े की भाँति आदमी की दौड़।
घोड़िया – (सं.स्त्री..) घोड़ी, सयानी नारी के लिये अपमानजन्य संकेत।
घोडिबाउब – (क्रिया) घोड़ी को गर्भधारण करवाना।
घोड़चढ़ा – (ब.मु.) बहुत बड़ा आदमी, घोड़चढ़ा आबै बघेली मुहावरा।
घोड़चरा – (सं.पु.) एक घास विशेष, घोड़े की चरी हुई घास।
घोड़हा – (सं.पु.) घोड़ रखने वाला, घोड़ चढ़ने वाला, घोड़ खरीदने व बेचने वाला, गुप्त जाति का गोत्र।
घोन्नस – (सं.पु.) घुटना की मोटी हड्डी, घुटना।
घोरब – (क्रिया) घोलना, दही मथना, माठा सा घोरब, बघेली मुहावरा।
घोरबाउब – (क्रिया) किसी से घुलवाना, दही मथवाना।
घोराउब – (क्रिया) किसी को आवाज देकर बुलाना एवं बुलवाना।
घोराघारी – (ब.मु.) टाल–मटोल, अस्पष्ट व अनिर्णय, संदिग्ध बातें।
घोल घोलब – (क्रिया) बड़े बर्तन के क्षिद्र से पानी निकलना, खेत की मेंड़ से पानी बहना।
घोंसमन – (सं.पु.) दबावयुक्त उलाहना, धमकी भरा दबाव, कोसने का कार्य।
घोंसनहर – (सं.पु.) सदा घोंसने या कोसने वाला व्यक्ति।

च

चइली – (सं.स्त्री.) छोटी पतली लकड़ी की टुकड़ी, रोटी का छिलका, गरम मशाले की पतली लकड़ी, पुलिंग चइला।

चसेला – (सं.पु.) ज्वार को मक्का के आटे से बनी घी–तेल से छनी पूड़ी।

चउपट – (विशे.) आँख का फूट जाना, अत्यधिक क्षति का होना।

चउमासा – (सं.पु.) चउमासा कटना (बघेली, मुहावरा), चतुर्मासी पत्रिका

चउपटा नन्द – (ब.मु.) नाम, चार महीने का शिशु, एकदम सर्वनास, सत्यानाश की स्थिति।

चउम्ही – (सं.पु.) कृषि कार्य सम्बन्धी हल मे संलग्न एक लकड़ी।

चउम्ह – (सं.पु.) मुख के दोनों जबड़ा।

चउगोलबा – (सं.पु.) कवितानुमा चारों पदो ंकी कहावत।

चउकी – (सं.पु.) रोटी बेलने के लिये काष्ठ या पत्थर का बना वृत्ताकार पात्र, पुलिस स्टेशन या थाना वनरक्षक नाका।

चउगाब – (क्रिया) आश्चर्य चकित होना, देखकर आश्चर्य मे पड़ना।

चउगान – (सं.पु.) घर के सामने का आरक्षित स्थल, आश्चर्य चकित, मन।

चउपाल – (सं.पु.) प्रमुख प्रवेश द्वार के पास बना बैठका, आकाशवाणी के एक कार्यक्रम का नाम।

चउबिआन – (सं.पु.) चौबे लोगो की बस्ती, चौबे के नाम से जाना जाने वाला मुहल्ला।

चउकठ – (सं.पु.) दरवाजे पर लगने वाले लोहे या काष्ठ का बना फ्रेम।

चउमास – (विशे.) वर्षा ऋतु के चारमास, बरसात।

चउमसही – (सं.स्त्री..) बरसात ऋतु से होने वाली साग–सब्जी फल, बरसात से धारित की जाने वाली वस्तु।

चउकब – (क्रिया) अकस्मात उछल पड़ना, भय से कूदना, भौचक्का।

चउक – (सं.स्त्री.) घर के बाहर चौक, पूजा हेतु आटे से निर्मित स्थल।

चउथि – (सं.स्त्री.) महीने की चतुर्थी तिथि का नाम।

चउथिया – (सं.विशे) चार दिन के अन्तराल में चढ़ने वाला बुखार।

चउरा – (सं.पु.) किसी की स्मृति मे बना चबूतरा, झाड़–फूँक का स्थल।

चउगिरदा – (विशे.) चारों ओर या चतुर्दिक, चारों ओर से घिरा हुआ।

चउखुट – (विशे.) जिसके चारों कोण बराबर हो, चौकोर वस्तुस्थिति।

चउपरतब – (क्रिया) कपड़ों को मोड़कर व्यवस्थित ढंग से रखना।

चउहद्दी – (विशे.) खेत के चारों दिशाओं की सीमा, सीमांकन या सीमारेखा।

चउथइया – (सं.स्त्री.) एक पाँव की चौथाई नाप का बना, काष्ठ का पात्र।

चउथी – (सं.स्त्री.) कक्षा चार, पर्व के चौथे दिन का परंपरागत कार्यक्रम।

चउरी – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का चबूतरा, देवी का देवालय।

चउथेरा – (सं.पु.) तमाचा या हाथ की चपत, गदेली से गाल पर प्रहार।

चउंड़रा – (सं.विशे.) झुकी सींग वाला बैल, किसी बैल विशेष का नाम, अंग प्रदर्शित करने वाली, बदचलन औरत।

चउधरा – (विशे.) जवानी न सम्भाल पाने वाली पूर्ण वयस्क बालिका।

चउकी – (सं.स्त्री.) घर के सामने के आरक्षित जगह, पूजा पाठ के पूर्व जमीन पर बना रेखा चित्र।

चउपहल – (विशे.) चारों ओर से कोन निकली एवं चिकनी स्थिति, गाटर की भाँति स्थिति।

चउपलही – (सं.पु.) चौकोर वस्तु, ऐसी जो चारों ओर से चीरकर चौकोर हो।

चउँसी – (सं.स्त्री.) माघ–पूस की रात में ओस का जमीन में सफेद जम जाना।

चउकस – (सं.पु.) साही माप या माप स्थिति, शरीर में फिट बैठना, मनमुताबिक हो जाना।

चउकसी – (विशे.) चतुराई या चलाकी, बदमाशी एवं बेईमानीनुमा होशियारी।

चउरासी – (सं.पु.) घुँघरूनुमा चाँदी का आभूषण, नारियों द्वारा कमर में धारण करने वाली सँकली।

चउपर – (सं.पु.) चौपर का एक खेल।

चउगुन – (विशे.) चारगुना, किसी वस्तु को चार मोड़ में मोड़ना।

चउहानी – (ब.मु.) अपना कार्य अपने हाथ कर लेने में लघुता नहीं के अर्थ पर केन्द्रित (बघेली मुहावरा), भाजी खाये चौहानी नहीं घटे।

चट्टी – (ब.मु.) द्विग भ्रमित करने के अर्थ में चट्टी (बघेली मुहावरा), दूसरे के कहने–सुनने में पड़ना।

चकराउब – (क्रिया) मुँह चौड़ा करके फैलाना, मुँह फैलाकर बात करना।

चकराब – (क्रिया) मुँहफाड़कर बातें करना, मुँह चमकाना, मुँह बनाकर लम्बी– चौड़ी मारना।

चकल्लस – (सं.स्त्री.) व्यर्थ की झंझट, उलझनयुक्त वस्तुस्थिति, निरर्थक पंचायत।

चकत्ती – (सं.स्त्री.) शरीर पर चकत्तेदार चर्मरोग, चपटा शुष्क घाव।

चकरपेहदिया– (विशे.) छोटे कद का मोटा व्यक्ति, असमान्य ढंग से मोटा।

चकचक – (विशे.) एकदम से गीला, घी–तेल में डूबी हुई।

चकाचक्क – (विशे.) प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण एवं सम्पन्न व्यवस्था।

चकरान – (विशे.) हृष्ट–पुष्ट युक्त, मोटाई युक्त, चौड़ाई से ओतप्रोत।

चकेठ्ठा – (विशे.) लम्बा कम मोटा अधिक, दोहरा वदन, स्त्री.. चकेठ्ठी।

चकरा – (सं.पु.) मिट्टी का दो पाट वाला पात्र, मिट्टी की चक्की।

चकरी – (सं.स्त्री.) पत्थर की बनी दो पाट वाली चक्की।

चकलई – (विशे.) किसी वस्तु या व्यक्ति की चौड़ाई या मोटाई।

चकलाउब – (क्रिया) विस्तृत करना, चौड़ा करना, फैलाना।

चकउड़ा – (सं.पु.) उड़द के फल सा एक घास का पौधा।

चकबार – (सं.पु.) लकड़ी का औजार – जिससे चौकोर गीली मिट्टी काटी जाती है।

चकदण्ड – (सं.पु.) कष्ट, परेशानी मुक्त संकट, उलझनयुक्त।

चकरिहा – (सं.पु.) नौकरी करने वाला कर्मचारी या नौकरी में संलग्न व्यक्ति।

चकरहा – (सं.पु.) वह स्थान जहाँ मिट्टी की बनी चक्की गड़ी हो।

चकुनिआब – (क्रिया विशे.) शर्म के कारण सिकुड़ना, लज्जा के कारण मुख छिपाना, संकोच करना।

चगड़ब – (क्रिया) दौड़कर पीछा करना, गतिमान कर दूर भगाना, दौड़कर भगाना।

चगड़वइया – (सं.पु.) पीछा करने वाला व्यक्ति, मवेशी दौड़कर भगाने वाले।

चँछरब – (क्रिया) छिल जाना, छिलका का निकल जाना, चमड़ी का छिल जाना।

चँछउआ – (विशे.) छीलते हुए शैली में कार्य करना।

चँछवइया – (सं.पु.) छीलने वाला, लकड़ी को सुडौल बनाने वाला व्यक्ति।

चँछवाई – (सं.पु.) लकड़ी को सुडौल बनाने के बदले में प्राप्त मेहनताना।

चटपटी – (सं.पु.) चटपट करने वाली काष्ठ की चप्पल।

चट्टी चढ़ाना – (ब.मु.) दिक्‌भ्रमित करके कार्य के लिए उद्धत करना।

चटकनिआउब– (क्रिया) तमाचे से पीटना, तमाचा जड़ देना।

चटबइया – (सं.पु.) चटवाने वाला व्यक्ति, स्वाद लेने वाला।

चटुआ – (सं.पु.) बार–बार अपमानित होने पर भी जो उसी के पीछे चले।

चटकब – (क्रिया) फट जाना, विदीर्ण हो जाना, दो भागों में खण्डित हो जाना, दरार आ जाना।

चट्ट चट्ट – (सं.पु.) सूखी लकड़ी को हाथ से तोड़ने पर होने वाली ध्वनि।

चटपट – (विशे.) तुरन्त, तत्काल, जल्द

चढ़ाव – (सं.पु.) विवाह के समय वर द्वारा मण्डप के तले कन्या को अर्पित होने वाले आभूषण, श्रृँगारयुक्त कन्या की एक रस्म।

चढ़बइया – (सं.पु.) सहारा लेकर ऊपर चढ़ाने वाला, चढ़ने में मदद करने वाला।

चढ़ईया – (विशे.) रास्ते की उच्च भूमि, समतल से ऊँचा।

चढ़ब – (क्रिया) चढ़ाई करना, सवार होना, चढ़ना या चढ़ जाना।

चढ़बाइक – (सं.पु.) विवाह की मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति विशेष।

चढ़ाउब – (क्रिया) सहारा देकर ऊपर उठाना, ऊपर करना, चढ़ाना अर्पित करना।

चढ़बाउब – (क्रिया) अपने ऊपर चढ़वाना, चढ़वाने में सहयोग करना।

चढ़बाई – (क्रिया) चढ़वाने के बदले प्राप्त पारितोषिक, भाड़ा उठाने की मजदूरी।

चतुरबइकल – (सं.स्त्री.) जो जान बूझकर पागल बना हो अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए चटक–मटक, आकर्षक वेशभूषा, श्रृँगार, चमक–दमक।

चथ्थ–चथ्थ – (सं.सी.) माँसपेशी पर गदेली से प्रहार करने पर उत्पन्न ध्वनि।

चदउरे – (सं.पु.) सिर के चाँद पर, ब. मु.।

चदिया – (विशे.) पाँव के तलबे पर बने चिकने चिन्ह, तलबे के ठेठे।

चँदिहाई – (सं.सी.) चाँदी की धातु से बनी हुई वस्तु।

चनचनाव – (क्रि.) कर्कश वाणीयुक्त वार्ता की क्रिया, आवेशित होकर अनाप सनाप बोलना।

चनफन – (विशे.) चंचल एवं चैतन्य, कर्मठ एवं सक्रिय, होशियार एवं तत्पर।

चन्नाब – (क्रि.) बालों के खींचने से दर्द का होना।

चन्नावाउब – (क्रि.) बाल उखाड़कर पीड़ा की अनुभूति करवाना।

चन्टई – (विशे.) तेजाई या टटकापन, फुर्ती, सजगता एवं सर्तकता।

चपरास – (सं.पु.) पुलिस या कोटवार के कमर का शासकीय बेल्ट।

चपटब – (क्रि.) चिपकना, किसी वस्तु का दबाव से चपटा हो जाना।

चपटाउब – (क्रि.) वस्तु को चपटी करना, गोंद से चिपकाना।

चपटवइया – (सं.पु.) चिपकाने वाला व्यक्ति, वस्तु को चपटी करने वाला।

चपेट – (सं.स्त्री..) भारी पत्थर के नीचे हाथ दब जाना, किसी का दबाव किसी व्यक्ति पर पड़ना, दबाव से लगी चोट।

चपेठब – (क्रि.) किसी को घेरकर किसी कार्य हेतु दबाव देना।

चपकउली – (सं.स्त्री.) चपटी आकृति वाली वस्तु–जूती की तरह चपटी, चिपका हुआ गाल या मुँह।

चपका – (सं.पु.) कोड़ा, चमड़े का अस्त्र।

चपरपेल – (सं.पु.) गलत बात को भी जबरिया सही सिद्ध करना।

चपरपेली – (क्रि.) जबरिया, जबरदस्ती, मनमानीपूर्ण कार्य करना।

चपउआ – (सं.पु.) दबे पाँव, दबाकर चलने की शैली।

चपबइया – (सं.पु.) दबाव देकर, दबाने वाला, दबाये रहने वाला व्यक्ति।

चपाउब – (क्रि.) दबाना, शक्ति लगाकर दबाव देना।

चपबाउब – (क्रि.) दबवाना, ताकत लगवाना, मालिश करवाना।

चपटिआउब – (क्रि.) किसी वस्तु को चपटी आकृति में करना।

चपटा – (सं.पु.) चपटे आकृति की वस्तु, चिपकी हुई।

चपर – (अव्यय) बेबुनियाद जिदपूर्ण वाली बातों विहीन वार्तालाप।

चबइना – (सं.पु.) चबेना, भुना चना, मक्का का फूटा, फसल काटते समय दिया जाने वाले अतिरिक्त बोनस।

चबरिआउब – (क्रि.) तमाचा से मारना, गाल पर गदेली से प्रहार करना।

चबाउब – (क्रिया) दाँतों से कटवाना किसी वस्तु को दाँतों से चबाना।

चबइया – (सं.पु.) चबाने वाला व्यक्ति, चबेना चाभने वाला, काट खाने वाला।

चबरा – (सं.पु.) तमाचा, उँगुलियों सहित हथेली प्रक्षेत्र।

चबनहा – (सं.पु.) काट खाने वाला जानवर, विषैला जानवर, दाँत से पकड़ने का आदी जानवर।

चबडिढ़ – (विशे.) बात भिड़ाने में तेज, तर्क–वितर्क मे समर्थ, बात करने में निर्भीक बहस में जल्दी न मानने वाला।

चभराब – (विशे.) ओंठ पर ओंठ जोर–जोर से पटकर बात करने की शैली।

चभोक्का – (ब.मु.) तरल पदार्थ का किसी वस्तु पर भरपूर लेपन तेल या घी में डूबी हुई रोटी की स्थिति।

चभर–चभर – (अव्यय) समाज में गाल बजाना, योग्य समुदाय के मध्य निरर्थक राग अलापना, मुँह बना बनाकर कृत्रिम बातें करना।

चमकइया – (सं.पु.) चमकने वाला, आँख चमकाने वाला व्यक्ति।

चमाचम्म – (विशे.) हर दृष्टि से भरपूर एवं सम्पन्न, जोर से चमचमाता हुआ।

चमकब – (क्रिया) चमकना, किसी को खिझाने के लिए मुँह बनाना, इधर–उधर अंग हिलाना, किसी के सामने बनना–ठनना।

चमका – (सं.पु.) धता पढ़ाने वाली शब्दवलियाँ, उलटा–सीधा बताने वाली बातें बहानाबाजी या विलोमअर्थी प्रस्तुति।

चमकुल – (विशे.) बदचलन प्रवृत्ति की नारी, अंग प्रदर्शन करने वाली।

चम्पई – (विशे.) पीला गहरा, चंपा के रंग का।

चमर – (सं.पु.) देवी–देवताओं को या राजसी पुरुषों को हवा करने वाला घोड़े के बाल का बना एक विशेष वस्तु या पात्र।

चमरहाई – (विशे.) निकृष्ट व्यवहार, अतिघृणित क्रिया–कलाप।

चमरडोभा – (क्रिया) विरल सिलाई, दूर–दूर सुई की सिलाई।

चमकाउब – (क्रिया) चिढ़ाने के लिए मुँह की आकृति विकृत बनाना, किसी की हँसी उड़ाना, दूसरे को संकेत करके नकल उतारना।

चमराई – (सं.स्त्री.) बड़े पत्तों वाली साग की एक किस्म।

चरहा – (सं.पु.) आरक्षित घास का मैदान, घास की कटाई करने वाले।

चरचरी – (विशे.) किसी भी कार्य की अधिकता, फसल कटाई का समय।

चरमुट – (विशे.) धन–धान्य से सम्पन्न, स्वस्थ्य एवं शक्तिवान, शरीर हृष्ट एवं पुष्ट, लम्बा–चौड़ा, नया जवान।

चरवाह – (सं.पु.) पशुओं को वन में चराने वाला, पशुओं की सेवा सुश्रुसा करने के लिए संलग्न व्यक्ति।

चरवाहिन – (सं.स्त्री.) पशु चराने वाली नारी।

चरागन – (सं.पु.) जहाँ पर खूब चारा उगा हुआ हो वह प्रक्षेत्र।

चराउब – (क्रिया) घास खिलाने का कार्य, पशुओं को चरवाना।

चरबाउब – (क्रिया) मवेशी चरवाना, चरवाने में सहयोग करना।

चरबइया – (सं.पु.) चरवाहा, पशुओं को चराने वाला।

चरचराउब – (क्रिया) ओर–छोर फाड़ देना, लकड़ी की डाली या नया कपड़ा फाड़ने से उत्पन्न ध्वनि होना।

चरु – (सं.पु.) दुधारु पशुओं के छोटे–छोटे बच्चे, चिड़िओं के बच्चे।

चरेर – (विशे.) कड़ा या सख्त, अधिक उम्र या वयस्क, परिपक्व अवस्था।

चरचराब – (क्रिया) पेड़ की डाली टूटने से होने वाली एक विशेष ध्वनि, आवश्यकता से अधिक तेज आवाज के साथ बोलना।

चरगोड़ा – (विशे.) चार पाँव वाली वस्तु–चार पैर का जीवधारी।

चरब – (क्रिया) पशुओं द्वारा घास चरना, चुन लेना या खा डालना।

चरोहन – (सं.पु.) चावल धोने के बाद निकला हुआ श्वेत पानी।

चरसा – (सं.पु.) गाय, भैंस का चमड़ा।

चरसी – (सं.स्त्री.) चमड़ी, खलरी चरसी खीचंब, बघेली मुहावरा।

चरपर – (विशे.) तिक्त या कड़वा स्वाद, मिर्चा के स्वाद का आधिक्य।

चरउही – (सं.स्त्री.) मवेशी चराने की मजदूरी।

चर्राउब – (क्रिया) किसी कपड़े को ओरा–छोरा फाड़ना।

चरपरहा – (सं.पु.) गाँव में प्रचलित आटे की मसालेदार सब्जी।

चरन्नी – (सं.स्त्री.) रुपये का चौथा भाग, चौथाई मूल्य का प्रचलित सिक्का।

चरचरी – (विशे.) कृषि कार्य की अधिकता या जोर की स्थिति।

चरु – (सं.पु.) जंगल में पशुओं को प्रवेश देने के लिए वन विभाग द्वारा लिए जाने वाला शासकीय शुल्क।

चरहा – (सं.पु.) जहाँ बड़ी बड़ी घास उगी हो वह आरिक्षत जगह।

चराई – (सं.स्त्री.) मवेशी चराने की मजदूरी, चरवाही का मेहनताना।

चरनन – (सं.पु.) पाँव के बल पैदा हुआ बालक, प्राण लेवा शिशु, खराब चरण में।

चलनी – (सं.स्त्री.) आटे के छिलके को अलग करने हेतु लोहे का बना जालीदार एक पात्र, पुलिंग 'चलना'।

चलबइया – (सं.पु.) आटा चलाने वाला व्यक्ति, चलने वाला राहगीर।

चलबाउब – (क्रिया) आटा चलवाना, पकड़कर चलना सिखाना, आटा चालने में सहयोग करना।

चलना – (सं.स्त्री.) अनाज और कंकड़ को अलग करने वाला जालीदारी पात्र।

चलाचली – (सं.स्त्री.) प्रस्थान की बेला, विदाई समारोह।

चलबली – (सं.स्त्री.) गाल का मध्य भाग, हवा फूंकते समय फूलने वाला गाल।

चलब – (क्रिया) चलना, साथ मे जाना, गतिमान होना, चलेंगे, चलूँगा।

चलाउब – (क्रिया) सहारा देकर चलने हेतु प्रोत्साहित करना आटा चालने में मदद करना।

चलक्चिल – (विशे.) अपने स्थान से हटा हुआ, बेठिकाने व अव्यवस्थित, बिरादरी से गिरा हुआ, हेरा–फेरी।

चहली – (सं.स्त्री.) पानी भरने के लिए जमीन पर भरा गया चौकोर स्थल।

चहलब – (क्रिया) किसी को जमीन पर पटककर पाँव से कुचलना, गीली मिट्‌टी में घास डालकर पाँव चलाना व मिश्रित करना।

चलन – (क्रिया) चाल, प्रचलन, चलने की शैली, रीति–रिवाज।

चहला – (सं.पु.) सतह पर पानी से कीचड़ उठ जाना, पानी–मिट्‌टी मिश्रित कीचड़नुमा स्थिति।

चहड़ार – (विशे.) जो अकारण मारपीट करने का आदी हो, आये दिन लड़ने–भिड़ने वाले के लिए व्यंग्य बोधक।

चहका – (सं.पु.) किसी पर कीचड़ उछालना, हँसी उड़ाना और चर्चा करना।

चहवोर – (विशे.) तरल पदार्थ में डूबी हुई वस्तु, लेपन से ओत–प्रोत।

चहचिड़बा – (सं.पु.) बरसाती सब्जी का फल जो लम्बे गुब्बारे की तरह फलता है।

चहकारब – (क्रिया) किसी के बोलते ही उसके ऊपर चढ़ बैठना, पानी चढ़ाना।

चहकब – (क्रिया) चिल्लाकर उलाहनायुक्त बातें कहना, गुस्सा बुझाने की क्रिया, चीख–चीख कर व्यंग्य वर्षा।

चहलाउब – (क्रिया) किसी को किसी से पिटवाना, छोटे बच्चे से पाँव द्वारा अपना शरीर कुचलवाना।

चहॅंदर – (सं.पु.) भोजन स्थल में थाली से अन्नांश पानी गिराकर गंदा कर देने का परिदृश्य।

चहेटब – (क्रिया) पीछे से खदेड़ना, किसी का पीछा करना, किसी को दौड़कर पकड़ने का प्रयास करना।

चहेड़ब – (क्रिया) गले तक खाने के लिए बघेली मुहावरा।

चहेड़िआउब – (क्रिया) मनोविनोद की दृष्टि से किसी को चिढ़ाना।

चहबोकब – (क्रिया) पर्याप्त मात्रा मे तरल पदार्थ का लेपन करना।

चहकाउब – (क्रिया) जी खोलकर किसी को पेटभर खिलवाना।

चहलबइया – (क्रिया) पाँव से कुचल–कुचलकर मारने–पीटने वाला, गीली मिट्‌टी में घास डालकर पाँव से मिश्रित करने वाला व्यक्ति।

चहटबइया – (सं.पु.) दौड़कर मवेशी को दूर भगाने वाला, दौड़कर पीछा करने वाला।

चहहा – (सं.पु.) चाय सना बर्तन, चाय पीने वाले लोग।

चा

चाइचुआ – (सं.पु.) चकते की शैली में सिर के बाल झड़ने का रोग।

चाँईमाई – (क्रिया) फिरंगी जैसा भ्रमण करने की क्रिया, वृत्ताकार घूमना।

चाउर – (सं.पु.) चावल।

चाकल – (विशे.) चौड़ा या चौड़ी, अधिक चौड़ाई वाली वस्तु या रास्ता।

चाकर – (सं.पु.) नौकर, अधीनस्थ शासकीय कर्मचारी, अनुबंधित व्यक्ति।

चाकी – (सं.स्त्री.) चक्की, चाकी पड़ना, बघेली मुहावरा।

चाँचर – (क्रिया) खाना खाते समय जमीन पर चारों तरफ भोजन बिखरना।

चाँछब – (क्रिया) छीलना ऊपरी छिलका निकालने की क्रिया, चाँचर मचाना, (बघेली मुहावरा) व्यर्थ की बकवास करना।

चाटब – (क्रिया) चाटने की क्रिया, जीभ से चाटना।

चाँड़ – (विशे.) बहुत तेज, जोरदार, तेज–तर्राट।

चाड़े – (विशे.) जोर–जोर से, ऊँचे स्वर में, खुलेआम या खुलासा।

चापब – (क्रिया) पाँव दवाना किसी वस्तु को ढंकना, दबाव देना या दबाना।

चापट – (सं.पु.) चपटे आकार का या चपटी आकृति।

चाबर – (सं.पु.) तमाचा, गदेली का समग्र भाग।

चाबब – (क्रिया) किसी को दाँत से काटना, दाँत से चना चबाना।

चाबुक – (सं.पु.) सवार होने के समय घोड़े के मुख में लगाई जाने वाली लोहे की एक साँकल।

चाभ – (सं.पु.) मुख का जबड़ा, जबड़े का गतिमान होना, आवाज फूटना।

चाम – (सं.पु.) पशुओं की मृत चमड़ी, चमड़ा।

चाँय–चाँय – (अव्यय) कर्कश स्वर में बोलना, अप्रिय भाषा–बोली एवं आवाज।

चार – (सं.पु.) एक वनफल का नाम।

चारा – (सं.पु.) घास, पशुओं का आहार।

चारखाना – (सं.पु.) ऐसा कपड़ा जिसमे चौड़ी पट्टी की खड़ी रेखा हो।

चालब – (क्रिया) किसी की चर्चा चलाना, चलना से मिश्रित को अलग–अलग करना, अनाज से कंकड़ अलग करना।

चालबाजी – (सं.पु.) चाल–चलकर चतुराई, चतुरना, धोखा, बदमासी।

चाहब – (क्रिया) चाहना, चाहत किसी को पसन्द करना।

चाही – (अव्यय) चाहिए, लेंगे, आवश्यकता है, अपेक्षा है।

चाहे – (अव्यय) होवे तो, या तो, इच्छा हो, मन आवे।

चि

चिआंचिया – (विशे.) थोड़ा–थोड़ा करके देना या लेना, फुटकर कार्य, कईबार में किसी कार्य को पूरा करना, खण्ड–खण्ड रुप।

चिकचिकाब – (विशे.) रोटी–घी का भरपूर लेपन का उभर आना।

चिकचिकान – (विशे.) चिकनई में डूबा हुआ, घी में डुबाकर निकाल ली गई स्थिति।

चिआर – (सं.पु.) घर का मध्य, माथा, छप्पर का ऊपरी भाग।

चिकनिया – (सं.पु.) शौकीन, सौन्दर्य प्रेमी, स्वच्छता सफाई वाला।

चिकनई – (विशे.) चिकनाहट, तेल या घी के लेपन की स्थिति।

चिकचोधरा – (विशे.) बालों की छोटी–बड़ी छटाई की स्थिति।

चिकुनगुंडा – (सं.पु.) खाने–पहनने का शौकीन व्यक्ति, सौन्दर्य प्रेमी।

चिकचिक – (सं.पु.) वाद–विवाद, मन–मोटाव, उलझनयुक्त बातचीत, किसी वस्तु पर तरल पदार्थ का भरपूर लेपन की स्थिति।

चिकनाउब – (क्रिया) चिकनी करना, तेल मालिस लगाना, खुशामद करना, लेपन करना।

चिकनाब – (क्रिया) चिकनाहट से ओत–प्रोत होना, पौष्टिक आहार से मजबूत होना, चर्बी चढ़ आना।

चिकटब – (क्रिया) कपड़े का तेल में खूब सना होना, हाथ में तेलयुक्त कपड़े का चिपकना।

चिकचिकहा – (सं.पु.) ऐसा व्यक्ति जो चिकचिकबाजी करता हो।

चिखना – (सं.पु.) सलाद, चटनी, दारु पीते समय प्रयुक्त सामग्री।

चिखबाउब – (क्रिया) चिखलाना, स्वाद का परीक्षण करवाना, खा करके स्वाद जानना, जानने।

चिखरब – (क्रिया) स्वाद के लिए चखाई होना।

चिखइया – (सं.पु.) चीखने या स्वाद लेने वाला व्यक्ति।

चिखना – (सं.पु.) स्वाद बदलाव के लिए प्रयुक्त पदार्थ, चटनी, सलाद आदि।

चिगिड्डा – (सं.पु.) चिड्डा की भाँति दौड़कर कार्य करने वाला, पतले ढांचे का व्यक्ति।

चिगुरब – (क्रिया) जकड़ना, नस का संकुचित होना।

चिचिरी – (सं.पु.) तेंद का दातून, तेंद का एक पौधा, वनौषधि पौधा।

चिटका – (सं.पु.) चिता, अग्निदाह क्रियास्थल, चिटका फोरब (गाली)।

चिटकबरा – (सं.पु.) रंग–बिरंगा, कबरा, चिटकबरा, चिटकबरी।

चिट्ट – (सं.पु.) वसूल हो जाना, पक जाना, उपलब्धियाँ, लाभ, पीठ के बल जमीन पर गिरना, चिट्ट होना या चिट्ट करना, बघेली मुहावरा।

चिटकहनी – (सं.स्त्री.) मरघट, जहाँ चिता जलाया जाता हो।

चिटकब – (क्रिया) तिड़कना, शीशे का टूटना, आक्रोश के कारण कूदना–उछलना।

चिटा – (सं.पु.) चौकोर चाक से बनाया गया जमीन पर चिन्ह, ग्रामीण खेल के लिए वर्गीकृत रचना।

चिटापटी – (विशे.) रंग–बिरंगी, भाँति–भाँति के छापे रचना।

चिट्टी – (सं.स्त्री.) चमड़ी पर पड़ी हुई चित्ती, सफेद दाग से चकतीदार चमड़ी

चिड्डा – (सं.पु.) हरे रंग का एक कीड़ा अति दुबले पतले व्यक्ति।

चिड़चिड़ाब – (क्रिया) बात–बात में आवेशित होना, खीझ उठना।

चिडचिडहा – (सं.स्त्री.) चिड़चिड़ाने की प्रवृत्ति का आदमी।

चितावर – (सं.पु.) औषधीय एक वनस्पति व लकड़ी का विशेष।

चिथरा – (सं.पु.) फटा–पुराना, जीर्ण–शीर्ण कपड़े के टुकड़े।

चिन्हारी – (सं.स्त्री.) जान–पहिचान, एक दूसरे को भली प्रकार जानना।

चिथरब – (क्रिया) सड़ी वस्तु का खींचने से टुकड़े–टुकड़े हो जाना।

चिनी मिट्टी – (सं.स्त्री.) मिट्टी मिश्रित एक धातु का नाम, बर्तन बनाने वाली एक विशेष धातु।

चिन्धी – (सं.स्त्री.) फटे–पुराने वस्त्र का कई जगह से फूट जाना, जीर्ण–शीर्ण कपड़े का अवशेष।

चिन्हबाउब – (क्रिया) किसी को पहचनवाना पहिचान कराना, परीक्षण करना।

चिन्हाउब – (क्रिया) परीक्षण करना, परिचय कराना, पहेली बुझाना।

चिन्हार – (सं.पु.) जाना–पहचाना व्यक्ति, परचित व्यक्ति।

चिन्हइया – (सं.पु.) देखकर पहचान जाने वाला, परिचयकर्ता, जानकार या भिज्ञ, सबको जानने–समझने वाला।

चिन्हबया – (सं.पु.) पहचानने वाला, जानने वाला, परिचय पूछने वाला।

चिनगा – (सं.पु.) मछली के छोटे–छोटे शिशु, स्त्री.लिंग चिनगी वाला, इधर को उधर करने की प्रवृत्ति वाला।

चिपुरा – (विशे.) जो आँखें चिपचिपाता रहता हो, जिसकी आँखें प्रायः कीचड़ सनी हो।

चिपुराब – (क्रिया) आँखों की पलकों का आपस में चिपक जाना, आँखे पटपटा कर देखना।

चिपुराउब – (क्रिया) बार–बार पलकों को पटकना।

चिपोटा – (सं.पु.) छोटे बच्चे, संकुचन या सिकुड़न, माँसपेशियों को खींचना।

चिपोंग – (विशे.) चीपों, गदहा की भांति भाड़ा ढोने वाला व्यक्ति, बुद्धिहीन, अकल रहित।

चिविल्ला – (सं.पु.) नुकसान करने वाला, हरकत करने की प्रवृत्ति वाला, लड़का, स्त्री.लिंग चिबिल्ली।

चिबुलखी – (सं.स्त्री.) चंचलमन वाली नारी, बदचलन और चरित्रहीन सी।

चिभऊ – (अव्यय) बिना रुचि के खाना, खाने की शैली।

चिमनी – (सं.स्त्री.) दीपक व लालटेन, धुआँ निकलने का खम्भा।

चिमान – (सं.पु.) शांत या चुपकी स्थिति, मुँहबंद या वार्ता बंद।

चिमाब – (क्रिया) चुप एवं शांत हो जाना, एकदम चुप होना।

चिमाउब – (क्रिया) रोते हुए या बोलते हुए को समझाकर चुप करा देना।

चिमटा – (सं.स्त्री.) लोहे की पतली पटरी जो बीच से बराबर मुड़ी हो।

चिमटी – (सं.स्त्री.) औरतों द्वारा बालों में धारित चिमटी गहना।

चिमटिआउब – (क्रिया) चिमटे से पिटाई करना, छप्पर को नीचे ऊपर लकड़ी से बंधन द्वारा बाँधना।

चिमराब – (क्रिया) पानी में भिगोकर लचीला बन जाना, आर्द्रयुक्त हो जाना।

चिमरान – (विशे.) नमी से अशुष्क हुई वस्तु, लोचदार स्थिति।

चियाचिया – (विशे.) वस्तु की थोड़ी–थोड़ी सी कई दौर में दी गई अलग–अलग मात्रा।

चिरिया – (सं.पु.) चीरने वाला, चीड़–फाड़ करने वाली।

चिरइया – (सं.स्त्री.) चिड़िया, गले में उठी हड्डी, लकड़ी या लोहे की बनी घर के माथ की महत्वपूर्ण एक लकड़ी।

चिरंजू – (विशे.) चिरंजीवी या दीर्घायु होने के लिये शुभाशीश शब्द।

चिरकोटी – (क्रिया) हाथ के अँगूठे और तर्जनी के दबाव से शरीर की चमड़ी खींचना या काटना।

चिरीमा – (सं.पु.) चीरी हुई इमारती लकड़ी, फाड़ी हुई लकड़ी।

चिरंउजी – (सं.स्त्री.) चार नामक फल का बीज, बेर या कद्‌दू का बीज।

चिरई – (सं.स्त्री.) चिड़िया, पक्षी।

चिरकब – (क्रिया) पतला दस्त पड़ना, लिखकर गन्दा सा कर देना।

चिरभोंट – (सं.पु.) कटीली वस्तु के स्पर्श से शरीर में रेख बन जाना, चमड़ी छिलने से बनी लकीर।

चिरबाई – (सं.पु.) लकड़ी फाड़ने की मजदूरी, आप्रेशन शुल्क।

चिरबइया – (सं.पु.) आप्रेशन करने वाला सर्जन, लकड़ी चीरने वाला।

चिरपिर – (विशे.) बहुत तीखा, तिक्त स्वाद, कषैला।

चिराइध – (विशे.) चमड़ी को जलाने से उत्पन्न दुर्गन्ध।

चिराउब – (क्रिया) चीड़–फाड़ करवाना, लकड़ी की चिराई करवाना।

चिरबिर – (क्रि.विशे.) बच्चों जैसी हरकत, नादान जैसी बात–व्यवहार, चिढ़ाने वाली गतिविधियाँ।

चिरकुटिया – (सं.स्त्री.) सूखी लकड़ियों की पतली–पतली टहनियाँ।

चिरकुटिहा – (सं.पु.) फटे–पुराने चीथड़े कपड़े पहने हुये व्यक्ति, निर्धन या हीन।

चिर्री – (सं.स्त्री.) बिजली गिरना, उल्कापात होना, आग का अंगार।

चिरचिरी – (सं.स्त्री.) तेंदू का छिलका, तेंदू का पौधा, एक औषधीय पौध।

चिल्फी – (सं.स्त्री.) लकड़ी का छोटा छिलका, रोटी की पतली पर्त, पुलिंग चिल्फा।

चिल्हार – (क्रि.विशे.) लम्बी चीख–जोर से दर्दयुक्त आवाज, करुण पुकार।

चिलचिलाब – (क्रिया) चमकता हुआ, चमकदार, जेठ मास की दोपहरी।

चिल्लवा – (विशे.) शोरगुल करना, जोर–जोर से आवाज करना, क्रन्दन करना।

चिलकनहा – (सं.पु.) जो चमकता हो ऐसी वस्तु।

चिल्हों ट – (सं.पु.) नवजात शिशु, दुग्धमुहा, अबोध बालक।

चिल्ला – (सं.पु.) गहाई किया हुआ बीज रहित अलसी का डंठल, मसूर से बनने वाला एक ग्राम्य व्यंजन विशेष।

चिल्लबाउब – (क्रिया) जोर–जोर से चिल्लाने के लिए विवश कर देना, चिल्लवाना।

चिल्लाब – (क्रिया) जोर–जोर से चिल्लाना या चीखना, रोटी पर जली चिट्टियाँ पड़ जाना, अलसी के पौधा में फूल के बाद फल न लगना।

चिल्लवइया – (सु.पु.) गला फाड़कर चिल्लाने वाला, जोरदार आवाज से पुकारने वाला, गुहार लगाने वाला।

चिलकब – (क्रिया) चमकीला दिखना, किसी वस्तु का चमचमाना,घाव का काटना, माँसपेंशियों में दर्द उठना।

चिल्लर – (सं.पु.) खुदरा पैसे, फुटकर सिक्के, छोटे–छोटे बच्चे, चिल्लर पार्टी।

चिहुटी – (सं.स्त्री.) अंगुली से त्वचा खींचना या दबाना, चुटकी काटना।

चिहुटा – (सं.पु.) काले रंग का चींटा, अति छोटा काला कीड़ा।

चिहराब – (क्रिया) किसी वस्तु में और दरार पड़ जाना, फट जाना।

चिहिराउब – (क्रिया) किसी वस्तु में दरार कर देना, किसी वस्तु को फोड़ देना, दरारयुक्त वस्तु को करना।

चिहिरान – (विशे.) दरारयुक्त, फटी हुई व खण्डित।

ची

चीकट – (विशे.) ऐसी वस्तु जिसे हाथ से छूने पर हाथ चिपके, बहुत मैला।

चीकन – (विशे.) चिकना, महीन या बारीक, अच्छा एवं सुन्दर कार्य।

चीखब – (क्रिया) खाकर स्वाद का परीक्षण करना, वस्तु स्थिति से अवगत होना।

चीटीपोटा – (अव्यय) घर के छोटे मोटे सभी उम्र के बच्चे।

चीड़ा – (सं.पु.) तरल पदार्थ का ठोस रूप, दही का जमा अंश।

चीथब – (क्रिया) शरीर की चमड़ी को अंगुली से खींचना, कपड़ा फाड़ना।

चीन्ह – (क्रिया) चिन्ह या निशान, किसी प्रकार का दाग पहिचान।

चीन्हब – (क्रिया) पहिचानना, परीक्षण करना, अवगत होना, जानना, समझना।

चीभब – (क्रि.वि.) बिना रुचि या बिना भूख के खाना–खाना।

चीमर – (विशे.) गीली लकड़ी जो तोड़ने पर टूटने के बजाय लटक जाय।

चीरब – (सं.पु.) चीड़ना या फाड़ना, फाड़कर दो टुकड़े करना, चीरा लगाना।

चीरा – (सं.पु.) तेल में डूबा हुआ कपड़ा, अत्यन्त मैला कपड़ा, चीरकर बनाया हुआ घाव, शरीर पर बनाई गई जगह।

चीलर – (सं.पु.) गन्दगी पसीने से उत्पन्न होने वाले जूं. या जुंआ।

चील्ह – (सं.स्त्री.) एक प्रकार का शिकारी पक्षी जो मृत पशु को खाते हैं।

चु

चुअना – (सं.पु.) छप्पर फाड़कर वर्षा का पानी जहाँ से टपकता हो।

चुअब – (क्रिया) छप्पर से पानी गिरना, टपकना।

चुआउब – (क्रिया) बूंद–बूंद टपकना, ऊपर से पानी टपकाना।

चुक्का – (सं.पु.) समय या अवसर गंवाना, चूककर जाना।

चुकब – (क्रि) काम खत्म हो जाना, किसी का मर जाना, वस्तु का नष्ट होना।

चुकाउब – (क्रि.) खतम कराना, समाप्त करवाना, मार डालना।

चुकाब – (अव्यय) बिल्कुल खत्म या समाप्त हो जाना।

चुकरी – (सं.स्त्री.) मिट्टी का बना दवात के समतुल्य छोटा सा पात्र, चुकरी कस मुँह, बघेली मुहावरा।

चुकड़िया – (सं.स्त्री.) मिट्टी का दवात की भाँति पात्र पुलिंग चुकड़ा।

चुकिया – (सं.स्त्री.) मिट्टी का बना पात्र जो दवात के आकार का हों।

चुक्खा – (सं.पु.) कलम के बड़े–बड़े बाल के लिए व्यंग्य बोधक शब्द।

चुक्ख – (सं.पु.) कान के पास के लम्बे बाल, ओंठों की मुस्कान।

चुकिगा – (क्रि.पु.) खतम हो गया, समाप्त हो गया, मर गया।

चुचुआउब – (क्रि.) मारकर सिर से खून गिरा लेना, पानी का टपकाना।

चुट्ट,पुट्ट – (अव्यय.) किसी प्रकार की हरकत न होना, छोटे–छोटे फुटकर कार्य, छोटे–छोटे सामान।

चुचुआन – (विशे.) लहूलुहान, पानी से लथपथ।

चुटू – (विशे.) थोड़ा सा, छोटा सा, अति न्यून मात्रा, एक तकिया कलाम।

चुट्ट–चुट्ट – (विशे.) सूखी लकड़ी, चूड़ी को तोड़ने की आवाज।

चुटपुट – (विशे.) तिक्तपन, तीखा स्वाद, कड़वापन,हरकत होना।

चुटकवैदिया – (सं.पु.) हल्की–फुल्की जड़ी–बूटी की दवाई।

चुँदिआउब – (क्रिया) किसी की शिखा पकड़ना, किसी को पकड़कर लाना, किसी को अपनी मुट्टी में करना।

चुदई – (सं.स्त्री.) शीर्ष की चोटी या प्रमुख शिखा, सिर के बाल।

चुनी – (सं.स्त्री.) दाल दलते समय निकलने वाले दाल के छोटे–छोटे कण।

चुनूगून – (सं.पु.) चिड़ियों पर आश्रित छोटे–छोटे बच्चे।

चुन्न पुन्न – (अव्यय) धीरे–धीरे छूने से ही खर्च हो जाना, फुटकर रुप में वस्तु।

चुनचुनाव – (क्रि.विशे.) पानी में चूना बुझाने से होने वाली बलक की क्रिया, घाव में चुनचुनाहट का होना।

चुन्नी – (सं.स्त्री.) चुनावदार साड़ी का पहनावा, नाभि के नीचे कमर में साड़ी का परतदार खोंसी हुई स्थिति।

चुनब – (क्रिया) चुग लेना, चुनाव कर लेना, प्राण ले लेना।

चुनिआउब – (क्रि.वि.) साड़ी या धोती को चुनावदार शैली में समेटना, किसी के चूना लगाना, किसी को ठग लेना, मूर्ख बना देना।

चुनकी – (सं.स्त्री.) बाँस की बनी छोटे आकार की टोकनी।

चुनिया – (सं.पु.) बिना कत्था का सिर्फ चूना लगा पान।

चुनरी – (सं.पु.) चूनर, देवी–देवताओं को चढ़ने वाला रुमाल के समतुल्य रंगीन कपड़ा, विवाह के समय कन्या के सिर पर रखा जाने वाला वस्त्र।

चुन्नू – (विशे.) थोड़ा सा, नाम मात्र के लिये, आकार में अति छोटा।

चुनहरा – (सं.पु.) वह बड़ा घड़ा जिसमें थोक मात्रा में चूना रखा जाता है।

चुनहाई – (सं.स्त्री.) चूना रखने वाला घड़ा, धातु का बना चूना वाला पात्र।

चुन्ना – (सं.पु.) हुक वर्ण श्वेत कीड़े जो पेट से मल के साथ निकलते हैं।

चुनमरदा – (सं.पु.) खाली चूना तम्बाकू, बिना सुपाड़ी की तम्बाकू।

चुपकइया – (अव्यय) धीरे से लुके–छिपे, चोरी–चोरी गोपनीय ही।

चुप्पे – (अव्यय) गुप्त रुप से, धीरे से, बिना किसी को बताए, मौन रहना।

चुपाब – (क्रिया) चुप हो जाना, शांत एवं स्थिर होना, मुँह बंद कर लेना।

चुपरब – (क्रिया) हाँ मे हाँ मिलाना, रोटी में घी का लेपन करना।

चुप्पा – (विशे.) कम बोलनेवाला, जो किसी बात का उत्तर जल्दी न दे।

चुपारे – (अव्यय) चुपचाप बिना शोरगुल किये, धीरे से, गोपनीय ढंग।

चुपाई – (सं.स्त्री.) जागते हुये भी सोते जैसा बन जाना, मौन साध लेना।

चुमा–चुम्म – (सं.पु.) न अधिक न कम की मात्रा, ठीक नाप के अनुरूप।

चुरुआ – (सं.पु.) चुल्लू, दोनों गदलियों की कटोरीनुमा बनी आकृति।

चुरबा – (सं.पु.) चूड़ा, नारियों द्वारा कलाई में पहना जाने वाला एक आभूषण, पकाया हुआ पदार्थ।

चुरइल – (सं.स्त्री.) चुड़ैल एक प्रेत, प्रेत योनी की नारी, इसी प्रवृत्ति वाली नारी।

चुरिहार – (सं.पु.) चूड़ी बेचने वाला, चूड़ी पहनाने वाला व्यक्ति।

चुरिया – (सं.स्त्री.) चूड़ी, चुरिया केर आड़, बघेली मुहावरा।

चुर – (सं.स्त्री.) शेर का गुफा, शेर का विश्राम स्थल, छोटा सा घर।

चुरब – (क्रिया) आग मे पदार्थ का पक जाना, धूप के कारण फल का तुचकना।

चुरउब – (क्रिया) कच्ची वस्तु को ताप में पकाना, भोजन पकाना।

चुरबाउब – (क्रिया) पकवाना, बनवाना, पक्का करवाना।

चुरचुराब – (विशे.) टूटती हुई चारपाई की प्रतिध्वनि चुड़पुड़ाहट।

चुरकुट – (विशे.) टूटकर टुकड़े–टुकड़े हो जाना, पूर्णतः नष्ट हो जाना, अरमान पूर्ण हो जाना।

चुरबइया – (सं.पु.) भोजन पकाने वाला व्यक्ति।

चुरुर–चुरुर – (अव्यय) विरल रुप से हल्की–फुल्की पकी फसल के लिये प्रतीक, देशी जूते पहनकर चलने से उत्पन्न ध्वनि, झूला या कोल्हू को गतिशील करने से होने वाली एक विशेष आवाज।

चुरकी – (सं.स्त्री.) बाँस की बनी कटोरी के समतुल्य टोकनी।

चुरमन – (सं.पु.) तरल पदार्थ घी या तेल।

चुलुक – (सं.पु.) एक विशेष प्रकार की उत्सुकता, शौकनुमा, आतुरता।

चुलबुलाब – (क्रि.वि.) हरकत होना, शरीर को धीरे–धीरे हिलाना–डुलाना।

चुलचुलाब – (क्रिया) हिलने–डुलने की हरकत करना, जाहिर होना।

चुलचुलान – (क्रि.वि.) पराकाष्ठा पर पहुँची हुई शौक, यौवन में उतरी हुई इच्छा।

चुलभा – (सं.पु.) चूल्हा या मिट्टी के बने चूल्हे।

चुल्हइया – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का चूल्हा।

चुहब – (क्रिया) चूसना, गन्ना चूसना–चूसने की क्रिया।

चुहाउब – (क्रिया) गन्ने का रस चुसवाना।

चुहुरुक–चुहुरुक–(अव्यय) कंधे में वजनदार कामर लेकर चलने से होने वाली आवाज, चारपाई को दबाकर हिलाने से उत्पन्न आवाज।

चुहुकब – (क्रिया) खून पीना, किसी का शोषण करना, किसी को चूस खाना।

चुहचुइया – (सं.स्त्री.) चुह–चुह की आवाज करने वाला पक्षी।

चुहुकबाउब – (क्रिया) चुसवाना, शोषण कराना, पिलाना।

चुहुकबइया – (सं.पु.) चूसने वाला, शोषण कर्ता, खून पीने वाला।

चे

चेकब – (क्रिया) किसी से कतराना, किसी से कटकर रहना या चलना।

चेघलाब – (क्रिया) जानते हुये अन्जान बनना, जानकर किसी बात को जानना।

चेचुरा – (सं.पु.) बाँह, हाथ का ऊपरी हिस्सा, कंधे के नीचे की स्थिति।

चेंच – (सं.पु.) एक वनस्पति, एक पौधा विशेष का नाम।

चेचर – (सं.पु.) मन्दबुद्धि वाला, चेचर प्रवृत्ति का व्यक्ति।

चेंचे – (सं.स्त्री.) कमजोरी जाहिर कर हँसी उड़ाना, चिड़िया के बोलने का शब्द।

चेंटक – (सं.पु.) बहाना, कौतुक, जादू का खेल।

चेचरा – (सं.पु.) मन्दबुद्धि वाला, जो औरतें की भाँति बोलता हो।

चेड़ा – (सं.पु.) हृष्ट–पुष्ट एवं जवान लड़का, नौजवान या वयस्क व्यक्ति।

चेपू – (सं.पु.) जबरिया चिपकने वाला, लिपटने के गुण वाला।

चेरउरी – (क्रिया) दैन्यतापूर्ण विनती, दोनों हाथ जोड़कर निवेदन करना।

चेलाने – (सं.पु.) शिष्यों की बस्ती या घर–गाँव, शिष्यों के घरों में।

चेलाइन – (सं.स्त्री.) शिष्यायों, सेविका, सेवा करने वाली।

चेलान – (सं.पु.) शिष्यवृत्ति का स्थान या चेलों का घर।

चेहेड़िआउब – (क्रिया) किसी की बात को दुहरा–दुहराकर उसे बोर करना, कमजोरी उध्दृत कर हंसी उड़ना, समाज में किसी को लज्जित करना।

चू

चूरन – (सं.पु.) चूर्ण, महीन, पीसा हुआ।

चूकब – (क्रिया) चूक जाना, पीछे रह जाना।

चूसब – (क्रिया) चूसना, किसी का शोषण करना।

चूँतिया – (विशे.) मूर्ख, बेवकूफ, मन्द अक्ल।

चो

चोकरा – (सं.पु.) आटा पीसने से निकला अनाज का वाह्य आवरण।

चोक्क–चोक्क– (अव्यय) पश्चाताप करते समय मुँह से निकली ध्वनि।

चोकरब – (क्रिया) उदारतापूर्वक देना, वापसी देना।

चोखलाउब – (क्रिया) दोनों ओंठ जोड़कर नुकीली आकृति बना लेना, किसी वस्तु को छीलकर नुकीली करना।

चोंख – (विशे.) पैना, धारदार, नुकीला, उत्कृष्ट प्रजाति या गोत्र।

चोंगी – (सं.स्त्री.) चिलम, तेल डालने वाला संकीर्ण क्षिद्र का पात्र, कुप्पी।

चोंगा – (सं.पु.) लाउडस्पीकर, धतूरा बाद्य, चोंगी या चिलम के लिये व्यंग्य।

चोरदन्त – (सं.पु.) वह दाँत जो बत्तीस दाँत के अतिरिक्त निकलता हों।

चोचाल – (सं.पु.) प्रिया या स्नेहिल, लाड़–प्यार, वात्सल्यमय सम्वाद।

चोला – (सं.पु.) शरीर, सम्पूर्ण जीवन, शारीरिक ढाँचा।

चोचलाब – (क्रिया) प्यार–दुलार युक्तवार्ता, अपनत्व पूर्ण, वात्सल्यमय क्रिया–कलाप, तोतलवाणी में ठुनकना।

चोटलग – (सं.पु.) जरुरत से अधिक चतुर चालाक बनने वाला, एकलौता।

चोट्टा – (सं.पु.) चोर, कामचोर, जी चुराने वाला, कार्य मे कमजोरी करने वाला।

चोटाहिल – (विशे.) घायल, चोंट खाया हुआ।

चोटइया – (सं.स्त्री.) चोटी, सिर का शिखा, छोटे–छोटे बच्चों के सिर के बाल।

चोटिला – (सं.पु.) बाल समेटने वाला नारियों के जूड़े का बन्धन विशेष, बाल गुंथने वाली चोटी।

चोट्टी – (सं.स्त्री.) चोर नारी के लिये गाली, चोरी करने वाली।

चोंता – (विशे.) गोबर की वह मात्रा जो पाँचों अँगुली से एकबार में उठाई जा सके।

चोंथब – (क्रिया) किसी के शरीर की खाल पकड़कर उगुलियों से अपनी ओर खींचना, चुटकी काटना, शरीर में नाखून गड़ाना।

चोथवाउब – (क्रिया) चुटकी कटवाना, खाल खिंचवाना।

चोंथबइया – (सं.पु.) चुटकी काटने वाला, खाल खींचने वाला।

चोदड़–उर – (सं.पु.) छोटे–छोटे बच्चों का समूह, बच्चों की अधिक संख्या।

चोदरबंगी – (विशे.) मूर्खता पूर्ण कार्य, बचपना युक्त कार्य, जिस कार्य का कोई अर्थ न हो।

चोदरा – (सं.पु.) एक गाली विशेष, जिसका पानी उतर चुका हो।

चोरतलिया – (सं.स्त्री.) ऐसी ताली जो पेचीले ढंग से खुलती बंद होती हो।

चोरक्कब – (क्रिया) भैंस की आवाज विशेष, उदारवादी दृष्टिकोण।

चोरीमा – (अव्यय) गोपनीय ढंग से बिना मूल्य की वस्तु, चोरी से प्राप्त।

चोरउधहा – (अव्यय) लुके स्थित का कार्य, गोपनीय ढंग से किया गया कार्य।

चोरकट – (सं.पु.) चोर बदमास, धोखेबाज, बेईमान, उचक्का।

चोला – (सं.पु.) शरीर का ढाँचा, श्वासयुक्त शरीर।

छ

छइहा – (सं.पु.) जो हर तरह से परेशान होकर हार मान लिया हो।

छइरब – (क्रिया) मन मुताबिक घूमना–बागना, कुसमय घूमना।

छई – (सं.स्त्री..) कष्टकारी या हानिकारक सिर दर्द लेना, अवांछित बोझ।

छँउकब – (क्रिया) साग–सब्जी बनाते समय पात्र में रखे गर्म तेल में मिर्च मशाला डालकर भुनने की क्रिया करना।

छँउकबाउब – (विशे.) तेल में मशाला भुनवाना, तलवाने में सहयोग करना।

छँउकबइया – (सं.पु.) मशाला बघारने वाला व्यक्ति।

छउनी – (सं.पु.) बकरी का बच्चा, दूधपिया बच्चा पुलिंग 'छउना', छौना।

छकलब – (क्रिया) मनमाने ढंग से घूमना, मन पसंद कार्य करना।

छकउड़ी – (सं.पु.) किसी व्यक्ति विशेष का नाम।

छकड़ा – (सं.पु.) छः पहिये वाली लकड़ी की गाड़ी, बच्चों का खिलौना।

छकतीरब – (क्रिया) कार्य को करने के पश्चात् उपलब्धि पूर्ण करना।

छकउब – (क्रिया) धोखाधड़ी युक्त क्रिया, भ्रम में डाल देना, किसी को मूर्ख बना देना।

छकलिया – (सं.स्त्री.) पुरुषों द्वारा ऊपर धारण किया जाने वाला वस्त्र जिसमें बटन के स्थान पर कपड़े की 6 रस्सी लगी रहती है।

छकाउब – (क्रिया) किसी को मूर्ख बनाना, धोखा देना।

छकब – (क्रिया) भ्रमित हो जाना, खाकर हिचजाना, मूर्ख बन जाना, धोखा खा जाना।

छछुन्दर – (सं.स्त्री.) चूहे के आकार का एक जीवधारी जिसका मुँह लम्बा व पतला होता है, 'छछुन्दर कस मुहु' बघेली मुहावरा।

छछलब – (क्रिया) जमीन पर लताओं का फैलना, बच्चों द्वारा किसी माँग को लेकर माँ से हठधर्मिता करने की क्रिया।

छछोरा – (सं.स्त्री.) बदचलन बालिका, नटखट युवती, इधर–उधर घूमते रहने वाली।

छछकालन – (सं.पु.) कुकृत्य एवं घटना को स्मरण करके हॉनि पहुँचाने की स्थिति में उसके नाम से रोते रहना।

छज्जा – (सं.पु.) द्वार के ऊपर की पटिया जो बाहर की ओर निकली रहती है।

छटिलाउब – (क्रिया) फिसलाना, आगे–पीछे करना।

छटिलब – (क्रिया) फिसलना, जमीन पर पाँव फिसलने की क्रिया।

छटाँक – (सं.स्त्री.) एक तौल के पैमाने की मात्रा का नाम, जिसका वजन 100 ग्राम होता है, 100 ग्राम का पुराना बाट।

छटन – (सं.पु.) हाथ से समय संयोग व सुअवसर का चूकते रहना।

छटपटाब – (क्रिया) तड़पना, हाथ–पैर पटकना, चिन्तित होना।

छटकब – (क्रिया) बंधन से मुक्त होना, हाथ से छूट जाना, फिसलकर दूर होना, वक्त को छोड़ देना, जेल से छूटना, छटपटाना।

छटकाउब – (क्रिया) घर मे बँधे पशुओं को बन्धन मुक्त करना, स्वतंत्र छोड़ना, घर से बाहर निकालना।

छठमासा – (सु.पु.) जो माँ के गर्भ से छठवें महीने में ही जन्म ले लिया हो।

छठी – (सं.स्त्री.) बालक के जन्म के छठवें दिन होने वाला एक संस्कार।

छड़ाउब – (क्रिया) छुड़ाना, दो व्यक्तियों या वस्तुओं का अलग–अलग करना, बंदी को स्वतंत्र कराना, बंद मुट्ठी खोल देना।

छड़ा – (सं.पु.) नारियों द्वारा पाँव में पहने जाने वाला चाँदी का आभूषण।

छड़बाउब – (क्रिया) किसी बंदी को छुड़वाना, लड़ते हुये को अलग करना।

छतीसा – (सं.पु.) चतुर, चालाक एवं तिकड़मबाज, अति बदमास, नाई।

छतोदरा – (सं.पु.) छाती फट जाये भाव पर केन्द्रित एक गाली।

छदर–विदिर – (अव्यय) यत्र–तत्र बिखरना, दूर–दूर हो जाना, तितर–बितर की क्रिया, इधर–उधर फैला हुआ।

छदॉम – (सं.पु.) तावे की धातु का पैसा, छिद्रदार एक पैसे का सिक्का।

छनहर – (विशे.) सुगठित एवं सुन्दर शरीर, मध्यम कद।

छनकब – (क्रि.वि.) आग की ताप में पानी भरा बर्तन देर तक गर्म करने से पानी के कम हो जाने की क्रिया।

छनन – (सं.पु.) छन–छन की ध्वनि करना।

छनिहर – (सं.पु.) ऐसा कच्चा घर जिसकी छप्पर मे खपड़े छाये हुये हों।

छन्गा – (सं.स्त्री.) छः अंगुलियाँ जिसके एक हाथ में हो।

छन्नी – (सं.स्त्री.) पानी या अन्य पदार्थ छानने वाला बारीक क्षिद्रनुमा पात्र, बाँस की छोटी सी टोकनी।

छपकब – (क्रिया) चिपकना, चिपककर छिपना, दब जाना।

छपछप – (विशे.) अनाज भरकर पात्र के मुखड़ा को समतल की गई मात्रा।

छपटब – (क्रिया) चिपकना, जमीन से चिपककर पड़ना, किसी को देखकर छिप जाना।

छपबड़िया – (सं.पु.) छपवाने वाला, प्रकाशित कराने वाला, प्लास्टर करवाने वाला।

छपबाउब – (क्रि.) छपवाना, दीवाल पर प्लास्टर कराना।

छपइया – (सं.पु.) छापने वाला, प्लास्टर करने वाला, छपाई का कार्य करने वाला।

छपास – (सं.पु.) छपने की लालशा, प्रकाशित होने की पिपाशा।

छपरा – (सं.पु.) कच्चे घर के ऊपर की लकड़ी का भाग या छप्पर।

छपकब – (क्रि.) किसी की ओट में छिपना, शरीर से लिपट जाना, कागज पर गोंद लगाकर चस्पा होना।

छबाउब – (क्रि.) छप्पर सुधरवाने का कार्य कराना, छप्पर में खपड़े चढ़वाना।

छबइया – (सं.पु.) छप्पर छाने वाला, छाया बनाने वाला व्यक्ति।

छबुँदिया – (सं.स्त्री.) छ:बिन्दी का भौरे के रंग का एक जहरीला कीड़ा।

छबाई – (क्रि.) घर की छप्पर छाने का चल रहा कार्य, छाने की मजदूरी।

छमछमऊहन – (क्रि.वि.) आतुरता के साथ, नृत्य सा करते हुए, बिना अवरोध के उछलते हुए, आने की स्थिति।

छमासी – (ब.मु.) छमासी घेरना, (बघेली मुहावरा), देर तक सोना।

छरहर – (विशे.) फुर्तीला किन्तु एकहरा, सुगठित वदन वाला व्यक्ति, सुन्दर एवं सुडौल।

छरिहाब – (क्रि.वि.) जमीन पर गिरना, टुकड़े– टुकड़े हो जाना, पदार्थ का कण में बिखरना।

छरछर – (सं.पु) बुरा लगना, कष्टकारी बातें, अभद्र वार्ता,मनोदशा के विपरीत बातें, अप्रिय व्यवहार की अनुभूति।

छरकब – (सं.पु.) किसी घटना या कारण अथवा भय विशेष के कारण किसी से कटते–छंटते व बचकर सतर्क रहने की क्रिया।

छरदू – (सं.पु.) ठोस वस्तु का चूर्ण।

छरछन्द्र – (सं.पु.) भिन्न–भिन्न समय में भिन्न–भिन्न प्रकार की बातें बताना।

छरबाउब – (क्रि.) चावल का क्षरण करवाना।

छरब – (क्रि.) काँड़ी एवं मूसल के सहयोग से चावल का क्षरण करना।

छरहा – (सं.पु.) एक पद के लिए सम्बोधन, किसी गीत का एक बन्द।

छरछराब – (क्रि.) शरीर के कटे हुए भाग में टिन्चर लगाने या घाव में नमक छिड़कने से होने वाली वेदनात्मक अनुभूति।

छरबाई – (सं.पु.) छरण करने के बदले मेहनताना, मजदूरी।

छरबइया – (सं.पु.) चावल का क्षरण करके साफ बनाने वाला व्यक्ति।

छल्ला – (सं.पु.) उँगलियों में पहने जाने वाली मुंदरी या मुद्रिका।

छल्लिआउब – (क्रि.) अनाज से भरे बोरों को क्रमशः एक के ऊपर एक को रखना।

छल्ली – (सं.स्त्री.) बोरों के ऊपर एक दूसरे पर ऊँची रखी ढेरी।

छल्लिवइया – (सं.पु.) छल्ली लगाने वाले मजदूर विशेष।

छल्लिबाई – (सं.पु.) छल्ली लगाने की ली गई मजदूरी या पारिश्रमिक।

छा

छाउब — (क्रि.) छाया के निमित्त, कच्चे घर की छप्पर पर खपरा आदि छाने की क्रिया, छा जाना या छाया करना, छाया बनाना।

छाटबं — (क्रि.) किसी वस्तु की छटनी करना, किसी वस्तु का अलग करना।

छाटन — (सं.पु.) अनुपयोगी या छटा हुआ अंश, अनाज से निकला अपुष्ट अनाज या कूड़ा कर्कट।

छाँड़ब — (क्रि.) छोड़ना या छोड़ देना, किसी को बिरादरी से अलग कर देना, चर्चा बन्दकर देना, बंदी को मुक्त करना।

छाड़न–छूड़न — (अव्यय) प्रयोग के पश्चात् बचा हुआ अंश, खाने के बाद अवशेष, छोटी हुई अनुपयोगी मात्रा।

छाती के पीपर— (ब.मु.) एक बघेली मुहावरा, व्यंग्य बोधक, वक्षस्थल के बासुदेव।

छाता — (सं.पु.) छत्ता, धूप एवं वर्षा से बचाने वाला पात्र।

छात — (सं.पु.) बर्र या मधु के कीड़ों द्वारा बनाया जाने वाला छत्ता।

छाती छोलन — (ब.मु.) परेशान करने वाले व्यक्ति पर केन्द्रित बघेली मुहावरा।

छापब — (क्रि.) पतली मिट्टी से दीवाल या फर्स की चिकनी छपाई या लेपन की क्रिया, प्रिन्टिग करना, कागज पर चित्र बनाना।

छापा — (सं.पु.) चित्र,चौकोर, रेखा, छपाई किया हुआ, चित्रकारी।

छाली — (सं.स्त्री.) किसी वृक्ष के वाह्य आवरण का छिलका, छाल।

छाहिर — (सं.पु.) छाया, वृक्ष की छाया का प्रतिबिम्ब का जमीन पर पड़ना।

छाये — (क्रि.) छवाई कर दिये, छप्पर छा दिये।

छि

छिउलहनी — (सं.स्त्री.) पलास के वृक्षों वाले वन या जगह विशेष।

छिकँरबाउब — (क्रि.) नाक से प्ररस या पानी निकलवाना।

छिकइया — (सं.पु.) छीकने वाला व्यक्ति विशेष।

छिकरबइया — (सं.पु.) नाक से प्ररस निकालकर नाक साफ करने वाला व्यक्ति।

छिउला — (सं.पु.) पलास नामक वृक्ष जो वन–बगार में उगता है।

छिकरब — (क्रि.) नाक से प्ररस निकालना, प्ररस को नाक से अलग करना।

छिछिआउब — (क्रि.) किसी को अपमानित करके अस्तित्व विहीन बनाना, अनुपयोगी मानकर दुतकारते रहना, हँसी उड़ाना।

छिटबा — (सं.पु.) तीज–त्यौहार के अवसर पर दिया जाने वाला बाँस का पात्र।

छिटकब — (क्रि.) फैलना प्रकाश या किसी चर्चा का फैलना विस्तार करना।

छिटिकबइया— (क्रि.) चारों ओर फैलाना, प्रचाारित व प्रसारित कर देना।

छिटकाउब — (क्रि.) प्रचारित–प्रसारित करने वाला व्यक्ति।

छिटुआ — (क्रि.वि.) छिटाई करके बोया गया बीज वाला खेत।

छिटकी — (विशे.) छोटे वाली, जिस धोती मे छीट हो।

छिटिक–कंरउदा—(ब.मु.) स्वच्छन्द विचरण, ब. मु.।

छितरिया – (सं.स्त्री.) टूटी हुई टोंकनी, टूटी टोकनी का हिस्सा।

छितराउब – (क्रि.) जमीन पर फैलाना, फेंककर फैलाना, तितिर–बितिर करना।

छितराब – (क्रि.) जमीन पर गिरने से टुकड़े–टुकड़े रूप में विभक्त होने की क्रिया, फैल जाना।

छितरान – (विशे.) अव्यवस्थित रूप से चारों ओर फैला या बिखरा हुआ।

छितरबइया – (सं.पु.) वस्तु को तितिर–बितिर करने वाला व्यक्ति।

छिदिक्का – (सं.पु.) पानी का कीचड़ से उछलकर पड़ने वाली बूँद।

छिनमाँ – (क्रि.) क्षण भर में, थोड़े, समय में, देखते–देखते।

छिनार – (सं.स्त्री.) चरित्रहीन नारी, कई पति साजने वाली।

छिरब – (क्रि.) वस्त्र का फट जाना, किसी नारी का भग जाना।

छिनबुद्वी – (सं.पु.) छड़भर में बदल जाने वाला व्यक्ति।

छिन्गी – (सं.स्त्री.) हाथों की सबसे छोटी वाली उँगुली।

छिकिल्ली – (सं.स्त्री.) गिरदान की आकृति का छप्पर वाला एक जीव–जन्तु।

छिबुलकी – (सं.स्त्री.) बदचलन नारी, कोसी जाने वाली एक अश्लील गाली।

छिमाबा – (क्रि.) क्षमा करना, पानी की बूँद बिरल होना।

छिरहा – (सं.पु.) जिसके नाक में गुस्सा हो, क्षणभर में नाराज होने वाला।

छिलनी – (सं.स्त्री.) फल या सब्जी छीलने का औजार।

छिलइया – (सं.पु.) छीलने का कार्य करने वाला व्यक्ति विशेष।

छी

छीकब – (क्रि.) छींकना, किसी कार्य का करने के लिए असगुन होना।

छीछन – (सं.पु.) नाक से निकलने वाला चिपचिपा तरल प्ररस।

छीछिल – (विशे.) उथल या उथला, ऊपर का मुहाड़ा फैली हुई अवस्था।

छीट – (सं.स्त्री.) किसी साड़ी या कपड़े में बने हुए छापा या चित्र।

छीटब – (क्रि.) बिखराना, इधर–उधर फैलाना, छिटाई करना।

छीद – (सं.स्त्री.) एक प्रकार की वनस्पति जिसकी पत्तियों से झाड़ू बनता है, पशुओं को स्वच्छन्द दौड़ने की सूचना।

छीदब – (क्रि.) व्यक्ति को आगे जाने से रोकना, मवेशियों की रखवाली करना।

छीना – (सं.स्त्री.) घड़े का टुकड़ा, फूटा हुआ घड़ा।

छीलन – (सं.स्त्री.) सब्जी का निकला हुआ छिलका।

छु

छुअबाउब – (क्रि.) स्वयं स्पर्श करवाना।

छुअब – (क्रि.) किसी को स्पर्श करना, छूने की क्रिया।

छुआउब – (क्रि.) स्पर्श करना, छुआने की क्रिया।

छुअउहल – (सं.पु.) गाँव का एक खेल जिसमें एक खिलाड़ी छिपता या भागता है तथा प्रतिद्वन्दी उसे छूने का प्रयास करता है।

छुइला – (सं.पु.) पलास, पलास के वृक्ष।

छुइलहनी – (सं.स्त्री.) जहाँ पलास के पौधों की अधिकता हो वह प्रक्षेत्र।

छुछुई – (सं.स्त्री.) हबूब फैलाना एक प्रकार का पटाखा, छुछुई छोड़ब ब.मु.।

छुछुआब – (क्रि.) बिना प्रयोजन के इसके उसके– घर आना–जाना।

छुछन्द – (विशे.) हृदय से साफ–सुथरा पेट, पीठ न मारने वाला।

छुट्ट – (विशे.) बिना लगाम, अंकुश विहीन संकोच रहित, खुलेआम।

छुट्टा – (विशे.) मुक्त, खुल्ला, जो न बांधा हो, जो खुले रूप में रहता है।

छुटबिटार – (सं.पु.) अशुद्धि फैलाना, गन्दगी फैलाना, अछूत को छूना, छुआछूत हो जाना।

छुटकब – (क्रि.) बंधनमुक्त होना, छूट आना, फिसल जाना।

छुटकाऊब – (क्रि.) बंधी गाँठ खोलना, किसी बंदी व्यक्ति को मुक्त कराना, खूँटे से बँधे पशु को छोड़ना।

छुतिहर – (सं.स्त्री.) चरित्रहीन एवं कर्कश तथा झगड़ने वाली नारी।

छुतिहरा – (सं. स्त्री.) न छूने योग्य, घड़ा, अशुद्वियुक्त, पुराना कड़ा।

छुतिहाई – (सं.स्त्री.) छूत चढ़ना, अछूत कार्य का दोष लगाना।

छुन्ना – (सं.पु.) कच्चे आम का छिलका, छुन्ना, चाछना।

छुन्नी – (सं.स्त्री.) छोटे शिशुओं का पुलिंग, मूत्रांग।

छुनछुनाब – (क्रि.) छुन–छुन की आवाज होना, घुँधुरु की ध्वनि।

छुनन–मुनुन – (सं.पु.) बच्चे के पैर के आभूषण का चलने से उत्पन्न शब्द है।

छुनुन–मुनुन – (सं.पु.) कमर में धारित घुँघरू या पाँव की पायल की ध्वनि।

छुपकब – (क्रि.) किसी व्यक्ति से किसी व्यक्ति का चिपकना, स्वयं आलिंगन करना, बच्चों का माँ की गोद में छिपकना।

छुपुकबइया – (सं.पु.) सीने से लगाने वाला, छाती से चिपका लेने वाला व्यक्ति।

छुपकाऊब – (क्रि.) सीने से लगाना, छाती से चिपकाना, शरीर से सटा लेना।

छुरूरब – (क्रि.) हाथ द्वारा अनाज की बालें निकालना।

छुरूर–छुरूर – (अव्यय) उँचाई में रखे हुए बोरों से चावल का जमीन पर गिरना व गिरते हुए समय में एक ध्वनि विशेष का होना।

छुरछुराब – (क्रि.) उँचाई से जमीन पर अनाज गिरने की ध्वनि।

छुर – (सं.स्त्री.) बिल्ली, बिल्ली को आगे बढ़ने से रोकने के लिए संकेत।

छुल–छुल – (सं.पु.) छोटा सा प्यारा सा बच्चा जिनको लोग चूमते–चाटते हैं।

छुल्ल–छुल्ल – (अव्यय) रूक–रूक कर जल का निकलना, पेशाब करते समय निकलने वाली ध्वनि।

छुलछुलाउब – (क्रि.) पेशाब करने की क्रिया, बघेली मुहावरा।

छुही – (सं.स्त्री.) सफेद रंग की मिट्टी जिससे दीवाल की पुताई की जाती है।

छुहिया – (सं.स्त्री.) ऐसी घटिया जिसमें सफेद पत्थर अधिक–अधिक मात्रा में हो।

छुहिआउब – (क्रि.) सफेद मिट्टी से पोताई करना, दीवाल पर छूही चढ़ाना।

छू

छूछ – (विशे.) खाली, सूखा, सूनी, कोख, बिना बछड़े की गाय।

छूछूमाई – (सं.स्त्री.) हास्य, विनोद की दृष्टि से किया गया कार्य, सहजतः कार्य।

छूछै – (विशे.) यों ही, वैसे ही, बिना मतलब के ही।

छूँछी – (सं.स्त्री.) जिसके पास कुछ न हो, धन वैभव रहित।

छूँछ छरीदा – (ब.मु.) संतान रहित, एकदम स्वतंत्र, बिल्कुल अकेले, खाली हाथ।

छे

छेऊ – (सं.पु.) चेतावनी देना, किसी को गलत कार्य से रोकना, समझाइस।

छेउका – (सं.पु.) छिद्र, अन्तराल, प्रक्रिया, बारी के बीच का क्षिद्र।

छेक्क – (सं.पु.) छींकते समय निकलने वाली नाक की ध्वनि।

छेकब – (क्रि.) किसी की राह रोकना, न जाने देना, छुपकर किसी को आगे बढ़ने से रोकना।

छेकबाउब – (क्रि.) रास्ता बंद करवाना, चलते व्यक्ति को रास्ते में रोकवाना।

छेका – (सं.पु.) दीवाल या खेत की सीमा पर लगी बारी का बीच से टूटा होना।

छेदा – (सं.पु.) क्षिद्र, पोल, छेदा होब, ब.मु.।

छेदब – (क्रि.) क्षिद्र करना, नुकीली चीज आर–पार करना, सुई चुभाना।

छेदिया – (सं.स्त्री.) खेत की बारी में आदमी के निकलने को बना क्षिद्र।

छेदबइया – (सं.पु.) क्षिद्र करने वाला, कर्णवेधन कर्ता, सुई चुभाने वाला।

छेदबाउब – (क्रि.) सुई चुभवाना, क्षिद्र करवाना, भेदन करवाना।

छेदवाई – (सं.पु.) कर्ण भेदन करने के बदले दिया गया पारितोषिक।

छेनी – (संस्त्री.) लोहे को काटने वाला औजार।

छेमन – (सं.पु.) कहीं कुछ कहना, कभी कुछ कहना, अस्थिर मानसिकता।

छेरिया – (सं.स्त्री.) बकरी, अज।

छेरीहा – (सं.पु.) बकरी चराने वाले लोग, बकरी रखने वाले व्यक्ति।

छेरिअऊँ – (विशे.) बकरी की तरह हरकत, बकरी की गतिविधि की भाँति।

छेहर – (सं.पु.) शिशु, महिलाएँ, बच्चियों का समूह।

छो

छोकला – (सं.पु.) किसी वस्तु का वाह्य आवरण या छिलका।

छोकड़ा – (सं.पु.) युवक, लड़का, नृत्य करने वाला व्यक्ति, खिलौना।

छोकता – (सं.पु.) छाँछ, निस्सार अंश, स्याही, शोषित करने वाला कागज।

छोकताउब – (क्रि.) कागज से अधिक स्याही को शोषित कराना।

छोछट – (क्रि.) वात्सल्य व स्नेहयुक्त शिशु के साथ माँ का व्यवहार।

छोछटही – (सं.स्त्री.) जो वात्सल्य दिखावा की दृष्टि से स्नेह करती हो।

छोटनरेबा – (संपु.) छोटे उम्र का शिशु जिसमें बचपना हो, बच्चौंजैसी गतिविधियोंवाला।

छोटकीबा – (सं.स्त्री.) छोटकानी, छोटी औरत, छोटी लड़की को सम्बोधन।

छोटकबा – (सं.पु.) छोटा छोटबा, छोटकइला, छोटबादा, छोटकाऊ, छोटकू आदि।

छोड़ब – (क्रि.) छोड़ना, निश्चित स्थान में पहुँचाना, त्याग देना।

छोडबाउब – (क्रि.) पहुँचवाना, त्याग करवाना, प्रेरित करके छोड़वाना।

छोड़बइया – (सं.पु.) त्यागने वाला, पहुँचाने वाला।

छोडान – (विशे.) छूटी हुई, जो दूध पिलाना बन्द कर दी हो, बिना दूध देती, अलगता गाय भैंस।

छोपा – (सं.पु.) पानी भरे खेत के खुले भाग में धान की बोनी।

छोपब – (क्रि.) किसी वस्तु को किसी वस्तु से ढकना।

छोरबाउब – (क्रि.) बंधी गाँठ खुलवाना, बंधे व्यक्ति को स्वतंत्र करवाना।

छोरब – (क्रि.) मुक्त करना, गाँठ खोलना, किसी बँधी वस्तु को खोलना।

छोरबइया – (सं.पु.) गाँठ को खोलने वाला व्यक्ति।

छोरलगाउब – (ब.मु.) निष्कर्ष निकालना, अंतिम छोर तक पहुँचना।

छोर – (सं.पु.) किसी वस्तु का किनारा अंत का भाग।

छोलरब – (क्रि.) चोट से चमड़ी छिल जाना, घास की छिलाई हो जाना।

छोलब – (क्रि.) छोलना, घास छीलना, घास निकालकर चिकना करना।

छोलइया – (सं.पु.) छीलने वाली घास की छिलाई करने वाला।

छोलबाउब – (क्रि.) छिलवाना, घास छिलवाने में योगदान करना।

छोहलग – (विशे.) आकर्षक, सौन्दर्य, सुन्दर एवं सुगंधित शरीर वाला व्यक्ति।

छोहगइला – (सं.पु.) काठ का पुतला जो विवाह के समय वर के हाथ में रहता है।

छोहराइली – (सं.स्त्री.) काठ की पुतली जो विवाह के समय कन्या के हाथ में रहती हो।

छोडकीबा – (सं.स्त्री.) छोटकानी, छोटी औरत, छोटी लड़की को सम्बोधन।

छोहारा – (सं.पु.) छुहाड़ा, पौष्टिक सूखा फल।

छोहाब – (क्रि.) पश्चाताप के साथ कोई वस्तु किसी को देना।

छोहातू – (विशे.) अकस्मात्, विरल दृष्टि से, अर्ध अवलोकन, आंशिक रूप से।

छोहदियाब – (क्रि.) बढ़ते मन का रूक जाना, पश्चाताप करते हुए कार्य करना, डरते–डरते कार्य करना।

ज

जइसन – (अव्य.) जैसा, जो, जिस प्रकार, जिस तरह आदि।

जइसनके – (अव्य.) जिस प्रकार से, जिस विधि से, जिस तरीके से।

जइलबार – (विशे.) अधिक, पर्याप्त मात्रा, आकार में बहुत बड़ा, भरपूर।

जइकल – (विशे.) चकित होकर किसी वस्तु को देखे और देखता ही रहे।

जइहौ – (क्रि.वि.) जाऊँगा, जाऊँगी।

जइसेने – (अव्य.) जैसे ही, जैसा, पूर्व की भाँति, आदि अर्थ देने वाला शब्द।

जइहेय – (क्रि.भ.वि.) जाओगे, जायेंगे, क्या जाओगे।

जइहैं – (क्रि.) जायेंगे, जाना है, आदर सूचक शब्द या कथन।

जई – (क्रि.) जाइये, जाओ, जायें।

जइल के – (विशे.) पर्याप्त मात्रा में, अधिकता बोधक शब्द।

जउआल – (सं.पु.) आपत्ति एवं अड़चन युक्त कार्य, तबाह करने वाला वातावरण एवं परिस्थिति।

जउहर – (सं.पु.) अनहोनी कार्य, लड़ाई–झगड़ा, आश्चर्य चकित कर देने वाला गाली–गलौज, वाद–विवाद।

जउन – (अव्य.) जो देखने लायक हो, सुन्दर।

जउने – (अव्य.) जिसे, जिससे, जिसको।

जउँकबइया – (सं.पु.) कार्य करने के लिए हिम्मत करने वाला, देखताक कर मन बनाने वाला।

जऊँ – (विशे.) अच्छी, सुन्दर,देखने योग्य,जो कि, जो कार्य, अन्य।

जऊकब – (क्रि.) किसी कार्य को करने के पूर्व अनुमान लगाना, विचार करना, देखकर मन बनाना, करने के लिए साहस जुटाना।

जक्क–जिक्क– (अव्यय) अस्वाभाविक एवं हास्यास्पद, चितमन, अचेत अवस्था में पागलों की भाँति, इधर–उधर देखने की क्रिया।

जकब – (क्रि.) दबना, भय लगने की क्रिया, संकोच के कारण भयभीत होना।

जकीरा – (सं.पु.) राजा–रजवाड़ों का घर–राजी हवेली।

जकड़ब – (सं.पु.) विक्षिप्त मानसिकता का व्यक्ति, सहमी–सहमी प्रवृत्ति का विवेक शून्य व्यक्ति।

जकला – (क्रि.) किसी को रस्सी में बॉधना, किसी को मारना–पीटना, शरीर में या किसी अंग में ऐंठन या शिथिलता।

जक्किआब – (क्रि.) जक्का मार जाना, आश्चर्य चकित होना।

जक्का – (ब.मु.) कुछ न समझना, विवेकशून्य स्थिति, जहाँ का तहाँ, ज्यों का त्यों स्थिति में खड़े रह जाना।

जग्ग – (सं.पु.) यज्ञ, अनुष्ठान आदि कार्य।

जगबाउब – (क्रि.) सोते हुए को जगवाना, निन्द्रा भंग करवाना।

जग्गपुरूष – (सं.पु.) यज्ञ के समय काष्ठ का बनाया जाने वाला प्रतीक पुरुष।

जगहर – (क्रि.वि.) जागरण, अनिद्रा, जागते रहने की स्थिति।

जग्गशाला – (सं.पु.) यज्ञ के लिए बनी पर्णकुटी, यज्ञशाला।

जगबइया – (सं.पु.) जागते रहने वाला जागरण कर्ता, किसी को जगाने वाला आदमी, जन जागरण में संलग्न व्यक्ति।

जजकब – (क्रि.) भय या स्वप्न के कारण बिस्तर से उछलना या कूदना, भयभीत होकर किसी को दबाना या काटना–छांटना।

जजकाउब – (क्रि.) डराकर उछलवा देना, किसी को डराते रहना, भयभीत करना।

जधिया – (सं.वि.) चड्डी, पज्जी, जाँघिया।

जघेला – (सं.पु.) जाँघ का ऊपरी हिस्सा।

जजकबइया – (सं.पु.) भयभीत करने वाला व्यक्ति, घबड़ाहट व डर पैदा कर देने वाला।

जजरब – (क्रि.) निशाना लगाकर किसी को हाथ से जोर से मारना।

जजमान – (सं.पु.) चेला, शिष्य समुदाय, शिष्यों का संगठन।

जटबइया – (सं.पु.) ठग, धोखा देकर ठग लेने वाला व्यक्ति।

जटब – (क्रि.) प्रलोभन देकर किसी को फुसलाना, धोखा देकर काम साधना।

जटर–मटर – (अव्यय) किसी निश्चित स्थान से किसी वस्तु को इधर–उधर हटा देना, अनाप–सनाप या कृत्रिम प्रतिउत्तर, हेरा–फेरी।

जटा–जूट – (सं.पु.) लम्बे–लम्बे–केश एवं डाढी के लिए प्रतीक।

जटा – (सं.पु.) बड़े–बड़े बाल, नारियल का छिलके से सलग्न रेशे।

जट्ठा – (सं.पु.) अधजला हुआ व्यक्ति या वस्तु।

जड्ड – (विशे.) अति कठोर वस्तु, कठोर प्रवृत्ति वाला व्यक्ति।

जड़बोग – (विशे.) जो बाँस की तरह पूर्णतः जड़ हो, मोटी बुद्वि या जड़ प्रवृत्ति का।

जड़कार – (सं.पु.) ठण्ड का महीना, शीत ऋतु या जाड़े का मौसम।

जड़मुठ्ठ – (विशे.) ऐसा व्यक्ति जो काष्ठ की तरह जड़ हो, पूर्ण–रूपेण मूर्ख।

जड़ाबर – (सं.पु.) रबी एवं खरीफ की ऋतुओं में किसान द्वारा हलवाहे या चरवाहे को दिया जाने वाला उपहार।

जड़ाब – (क्रि.) ठंड लगने का एहसास होना, ठंड का लगना।

जड़ान – (विशे.) ठंडी के कारण ग्रसित एवं सिकुडा हुआ।

जड़हा – (सं.पु.) जाड़े के बस, जाड़े के ऋतु वाला फल, ठंड वाली वस्तु।

जड़ब – (क्रि.) कृत्रिम बातें साज देना, किसी को मार–पीट देना, जड़ देना।

जताकता – (अव्यय) यत्र–तत्र, कहीं– कहीं, विरल रूप से, यदा–कदा।

जथारथ – (सं.पु.) यथार्थ एवं न्याययुक्त बात, विश्वसनीय व्यक्ति।

जनाब – (क्रि.) जिससे जानकारी हो, महसूस करना, मालूम पड़ना, एहसास होना।

जनगाँथी – (सं.पु.) कुम्हड़ा जो प्रायः बरसात में फलता है।

जनबहा – (सं.पु.) जानकार, जानने वाला, जानकारी रखने वाला, विज्ञ, भिज्ञ।

जनबही – (सं.पु.) जानकारी, किसी विशेष विषय का ज्ञान, पूर्व सूचना।

जनउहल – (सं.पु.) कहानी, पहेली, पहेली की भाँति पूँछे, गये प्रश्न, ज्ञान वर्द्धक परीक्षा।

जनउक – (विशे.) जानने–समझने लायक, परिपक्व व्यक्ति, वयस्क व्यक्ति।

जनमांस – (सं.पु.) घरात पक्ष द्वारा दिये जाने वाला रात्रिकालीन प्रवास स्थल, जीवन या दिनचर्या।

जनबाउब – (क्रि.) अवगत करवाना, यथार्थ बोध करा देना, जानकारी दे देना।

जनाउब – (क्रि.) ज्ञात कराना, बुझाना, पहेली बुझाना, बताना।

जनीजने – (क्रि.) एक–एक व्यक्ति,बारी–बारी से हर व्यक्ति।

जनबुध – (विशे.) जानने–समझने एवं निर्णय लेने योग्य, परिपक्व अवस्था।

जन्नाब – (क्रि.वि.) आँख निकालना व लड़ने के लिए तत्पर होना, किसी व्यक्ति से अकड़ना, झगड़ा करने के लिए शरीर को तोड़ना–मरोड़ना।

जनकतनी – (सं.स्त्री.) पत्थर या लकड़ी की बनी हुई फिरंगी या लट्टू।

जनाउर – (सं.पु.) हिंसक वन्य प्राणी, निगल लेने वाला बड़े मुँहवाला जंगली जानवर, शेर–चीता।

जना – (अव्यय) संदिग्ध अवस्था, शायद, संभवतः, लगता है।

जनेऊ – (सं.स्त्री.) यज्ञोपवीत।

जने – (सं.स्त्री.) व्यक्ति, जन, आदमी, प्राणी, आदि अर्थों में प्रचलित।

जपब – (क्रि.) जाप करना, जपना, स्मरण करना।

जपबाउब – (क्रि.) जाप करना, जाप करवाने में सहयोग करना।

जपबइया – (सं.पु.) जाप करने वाला, जापकर्ता।

जबा – (सं.पु.) जौ, एक प्रकार का अनाज, लहसुन का एक दाना, आदिवासियों का परम्परागत पर्व एवं मान्यता।

जबऊआ – (क्रि.वि.) जाने की मनःस्थिति, प्रस्थान करने वाला।

जकीरा – (सं.पु.) राजा, रजवाड़ों का सहायक घर, मनोरंजन स्थल।

जबइया – (सं.पु.) प्रस्थान करने वाला, चले जाने वाले व्यक्ति।

जबरवार – (विशे.) भारी भरकम व्यक्ति, वजनी एवं मोटा तगड़ा, बड़ा एवं सम्पन्न।

जबरिआन – (विशे.) अक्खड़पन के कारण जिद रोपे हुए, ताकत के बल अड़ा।

जबरिआब – (क्रि.) जबरदस्ती ठसे रहना या अड़ जाना, मनमानी करना।

जबरई – (अव्यय) बिना स्वीकृति या सहमति के जबरिया, दबंगी के बल पर।

जबरा – (विशे.) जो शक्तिशाली एवं समर्थ हो, मनचाहा कार्य करने में समर्थ।

जबर – (विशे.) जो भारी हो, जो बहुत बड़ा हो,जो अति मोटा–ताजा या धन–धान्य से सम्पन्न हो, बड़ा श्रेष्ठ।

जबरपेली – (अव्यय) उचित–अनुचित का विचार किये बिना अपनी मर्जी से कार्य करने की प्रकृति या प्रवृत्ति।

जबै – (अव्यय) जब, जिस समय, जैसे ही, जब ही।

जबऊँ – (क्रि.वि.) जो जाने की स्थिति में हो, मरने लायक।

जबाई – (क्रि.) किसी स्थान से प्रस्थान करना, विदाई।

जमहा – (सं.पु.) लगान लेकर भूमि स्वामी द्वारा कृषि कार्य हेतु दिया गया खेत।

जम्फर – (सं.स्त्री.) लड़कियों द्वारा कमर के नीचे धारण किये जाने वाला घाघरानुमा विशेष वस्त्र।

जमाइन – (सं.स्त्री.) एक प्रकार के मसाले का पौध।

जमकला – (सं.पु.) जनसमूह की बैठक, निरर्थक भीड़ हो, जलामयी दृश्य।

जमजमाब – (क्रि.) किसी स्थान में डटे रहना, इत्मिनान से आसन लगा लेना।

जमानी – (सं.स्त्री.) यौवन, मौखिक रूप से कथन आदि।

जमान – (विशे.) नौजवान, वयस्क व्यक्ति, वाणी,शब्द या स्वर, जीभ।

जमना – (सं.पु.) बिना बोये–लगाये उगने वाली घास।

जमा – (सं.पु.) खेत का लगान, कृषि कार्य का किनारा, तरल का ठोस हुआ।

जमोकब – (सं.पु.) किसी कथन को गवाह द्वारा कहने वाले के समक्ष सत्यापित करना या कराना, किसी कही गई बात को पूछना, पुछवाने का कार्य।

जमोकबाउब – (क्रि.) आमने–सामने कथन की पुष्टि कर देना, कथन को सत्यापित करवा देना।

जमती – (सं.स्त्री.) जामुन का फल, जामुन का पेड़।

जमरे – (सं.पु.) पास में, किसी से चिपक कर बैठने की स्थिति, बगल में।

जमोकब – (क्रि.) साक्ष्य द्वारा किसी बात का सत्यापन कराने की क्रिया, आमने–सामने, यथार्थ वस्तुस्थिति, पूछताछ।

जये – (क्रि.) चले जाना, जाना, जाइएगा, जाना ही।

जरबइया – (सं.पु.) जलाने वाला, भूनने वाला, जला देने वाला व्यक्ति।

जरजॉती – (विशे.) ईर्ष्यायुक्त कार्य, ईर्ष्या के कारण किया गया कार्य, ऐसे कार्य जो पूर्णतः अनुचित–अव्यवहारिक एवं अशोभनीय हो।

जरफरात – (विशे.) खौलता हुआ तरल पदार्थ, तुरंत निकाली गई वस्तु।

जरबेरिया – (सं.स्त्री.) वन में फलने वाली मौसमी बेर की छोटी–छोटी झाड़ियाँ।

जरबाउब – (क्रि.) जलवाना, जलाने का कार्य करवाना।

जराउब – (क्रि.) स्वंय जलाना, जला देना, भून देना।

जरब – (क्रि.) आग में जलना, ईर्ष्या के कारण जलना, द्वेश भावना का पनपना।

जरंसा – (सं.स्त्री.) बुखार की अनुभूति होना, ऐसा लगना मानो बुखार है।

जर – (सं.पु.) जड़, इसे बरिजरी भी कहा जाता है, पास,बगल,पुरूष।

जरै – (विशे.) जले, जलने की अनुभूति, तपना, जलन होने की अनुभूति।

जरतुआ – (सं.पु.) जो परायी विभूति देखकर ईर्ष्या द्वेष के कारण जलता हो।

जहरबात – (सं.पु.) एक प्रकार का जहरीला बात का रोग।

जरमेटब – (सं.पु.) सभी वस्तु को समेट कर खा लेना, लाक्षणिक अर्थ बाँह से बाँध लेने की क्रिया।

जरेठ – (सं.पु.) किसी पौधे का जड़ वाला भाग, जड़ सहित डंठल।

जरकुट – (सं.पु.) किसी पौधे के जड़ की पतली–पतली शाखायें, जड़ सहित पौध का पतला तना के टुकड़े, झाडियों की सूखी जड़ें।

जलीहा – (सं.पु.) जाली वाला आम का फल।

जलिआन – (विशे.) ऐसा फल जिसमें जाली पड़ गयी हो, जालीयुक्त।

जल्ल–बिल्ल – (विशे.) अव्यवस्थित रूप से वस्तु को फैलाकर रखना, पागलों जैसा इधर–उधर देखना, अस्थिर कृत्य एवं गतिविधियाँ।

जलिआब – (क्रि.) फल में जाली का आना या पड़ना, फल का पुष्ट होना।

जलजलाब – (क्रि.) जलने के बाद पड़ा हुआ फफोला, जलती दोपहरी।

जलजला – (सं.पु.) बोल–बाला, मान्यता एवं अस्तित्व, दबदबा एवं प्रतिष्ठा।

जल्लाधि – (सं.पु.) कसाई की एक जाति, बिना मोह ममता एवं दया का व्यक्ति, कठोर दिल वाला प्राणी।

जलामल्ल – (विशे.) थलभाग में जहाँ–जहाँ जल ही जल भरा हो, जलामय दृश्य।

जलकेशर – (सं.स्त्री.) एक धान की विशेष प्रकार की प्रजाति।

जलाहल – (विशे.) बहुत ही भयावह एवं खतरनाक, प्रखर, जहरीला।

जलहली विराजने – (सं.स्त्री.) देवताओं की मूर्ति का जालीदार पात्र।

जस का तस – (अव्यय) ज्यों का त्यों, जैसा का तैसा, कोई किसी से कम नहीं।

जसी – (क्रि.) जिसे बिना श्रम के यश मिल जाय, यश लूटने वाला।

जस – (सं.पु.) यश,कीर्ति, श्रेय, जिधर, जहाँ, जिस ओर।

जसका – (अव्यय) जैसे कि, जिस प्रकार का, जैसा का आदि अर्थों वाला।

जहिराब – (क्रि.) जानकारी देना, दिखाई पड़ना, विदित कराना।

जहिया – (अव्यय) जिस दिन, जिस समय, जब।

जा

जाँगर – (सं.पु.) पौरुष या शारीरिक क्षमता– दक्षता, क्रियाशीलता, तत्परता।

जाघा – (सं.स्त्री.) जमीन, खेत, अचल भूमि, स्थान, जगह।

जाड़ी – (क्रि.वि.) बिना क्रम टूटे, सधन रूप से चल रहा कार्य, जरूरी कार्यं।

जाता – (सं.पु.) पत्थर की चक्की, जिसमें आटा पीसा जाता है, जाओ तो।

जानपाड़े – (सं.पु.) मनोविनोदी (बघेली लोकोक्ति) जो सबमर्म को जान लेता हो।

जानुक – (सं.पु.) जानने–समझने वाली उम्र का वयस्क बालक या व्यक्ति।

जानमान – (अव्यय) किसी के स्वरूप का ज्यों का त्यों दूसरे व्यक्ति का होना।

जाब – (क्रि.) जायेंगे, जाना है, जाने का मन करता है।

जाबय – (क्रि.) जाऊँगा, जाना है, जाना चाहते हो, प्रश्नवाची शब्द?।

जानागोंइया – (विशे.) जाना–पहिचाना साथी, पूर्व से पूर्ण परिचित।

जामन – (सं.पु.) दही के लिए दूध में डाला जाने वाला मठा या खटाई।

जामाजोड़ा – (सं.पु.) दूल्हे का विवाह के समय का विशेष वस्त्र।

जामा – (सं.पु.) अंकुर के लिए भिगोया हुआ बीज, फल–फूल या धान।

जारब – (क्रि.) जलाना,भूनाना, जला देना, दाग देना।

जाहिर – (सं.पु.) सूचना देना, सबको बताकर, दिखाकर खुलेआम।

जि

जिआन – (सं.पु.) पौरुष, जी, जीवन, जिआन होब, बघेली मुहावरा।

जिआउब – (क्रिया) जिलाना, जिन्दा करना, जिन्दा रखना, पालना– पोषना।

जिअब – (क्रिया) जीना, जिन्दा रहना, जीवित होना।

जिअनी – (सं.स्त्री.) ऐसी गाय जो किसी के द्वारा किसी व्यक्ति को पालने पोषने या जिलाने के लिये निःशुल्क दान रुप मे दी गई हो।

जिऊ – (सं.पु.) जीव, जीवन, जान, प्राण आदि अर्थों वाला शब्द।

जिउचल – (विशे.) कठिन परिश्रम करने में सक्षम या समर्थ, बलवान या हृष्ट–पुष्ट।

जिउलेन – (सं.पु.) जीवन ले लेने वाला, हत्यारा, प्राणघाती।

जिउमार – (सं.पु.) हत्या करने वाला, दूसरे प्राणी का वध करने वाला।

जिउजामा – (अव्यय) शारीरिक क्षमता एवं दक्षता, स्वास्थ्य शारीरिक कुशलता।

जिउजुड़ाब – (ब.मु.) आत्मा को संतोष होना, जलता मन ठंडा होना।

जिउना – (सं.पु.) जीव, प्राण, जान, शरीर।

जिकिर – (सं.पु.) किसी बिन्दु विशेष की चर्चा, जिक्र करना।

जिगरा – (सं.पु.) सिर के बाल या बड़े–बड़े रोम आदि।

जिगरी – (सं.पु.) बाल फैलाये रहने वाली नारी, पुलिंग जिगरहा।

जिड्डी – (सं.पु.) जिद या हठधर्मिता की प्रवृत्ति।

जिताउब – (क्रिया) जिताना, जिता देना, जीत हासिल कराना।

जितबाउब – (क्रिया) प्रयासोपरान्त जीतने में सहयोग करना, विजयी बनवाना।

जितबइयाँ – (सं.पु.) विजय दिलाने वाला, विजयी बना देने वाला।

जितँऊ – (विशे.) जीतने योग्य, जीत दर्ज करने लायक।

जितनहा – (सं.पु.) जो हमेशा जीत जाता हो, हारी न मानने वाला।

जिन्ती – (विशे.) जितनी, जितनी संख्या यामात्रा।

जितार – (सं.पु.) जो सबसे लड़ता–झगड़ता व मारपीट करता रहता हो।

जिन्नगी – (सं.स्त्री.) जिन्दगी या जीवन के लिये संज्ञावाची शब्द।

जिन्नार – (सं.पु.) चौड़े फन वाला सर्प, जहरीला बड़ा एवं भयावह कीड़ा।

जिन्हा – (अव्यय) जिस दिन, जिस रोज, जब, जिस समय।

जिरहानान – (सं.पु.) जीरायुक्त मशालेदार नमक।

जिलकन – (विशे.) जलाशय के नीचे का वह खेत जहाँ हमेशा पानी की कमी बनी रहती हो। पानी के कारण सदैव गीला रहना।

जिल्ला – (सं.पु.) जलाशय की मेड़ के नीचे पानी का निकलते रहना या झरना की भाँति शनैः–शनैः पानी का संचित होना।

जिल्लान – (विशे.) जिल्ला खाया हुआ, जल से आच्छादित हुआ।

जिल्लाब – (क्रिया) खेत में सदैव पानी भरे रहने से खेत गीला रहना।

जितारिया – (विशे.) सबको परास्त कर देने वाला, सबसे जीता हुआ।

जु

जुआ – (सं.पु.) गन्दगी के कारण सिर पर उत्पन्न होने वाला जूं, हल–जुआ।

जुई – (संस्त्री.) भैंस या गाय का मूत्रांग विशेष।

जुइती – (सं.स्त्री.) पशुओं के शरीर पर बालों के मध्य पड़ने वाले जूं, एवं स्वेत रंग के पेशुआ आदि।

जुगाड़ – (ब.मु.) जोड़–गाँठ करके व्यवस्था बनाने की प्रक्रिया, उपाययुक्त निदान, युक्तियुक्त पहल।

जुग – (सं.पु.) एक साथ, चौपड़ खेल की गोट, युग, काल, जमाना।

जुगुति – (सं.स्त्री..) युक्ति या उपाय, समस्या के समाधान हेतु निकाला गया हल।

जुगजुगाब – (सं.स्त्री.) धराशायी, व्यवस्था का थोड़ा–थोड़ा संभल जाना, आग का प्रज्जवलित होना।

जुगुर–जुगुर – (अव्यय) आंशिक रूप से दीपक या आग का जलते रहना।

जुगुल जोडी – (अव्यय) दाम्पत्य जोड़ी, दो व्यक्तियों की सुन्दर समरूपता।

जुगराज – (सं.पु.) युवराज,राजा, महाराज के राजकुमारों के लिए आदर सूचक।

जुज्झ – (सं.पु.) लड़ाई, झगड़ा, युद्ध।

जुझाऊब – (क्रिया) प्रेरित करके किसी को लड़ा–भिड़ा देना।

जुट्टा – (विशें.) ऐसा फल जो एक दूसरे से जुड़े हुए हों, या चिपके हुए हों, जोड़ीनुमा व्यक्ति का पैदा होना।

जुठहाई – (क्रिया) जो व्यक्ति दूसरे का जूँठा भोजन करता हो, उसकी प्रवृत्तिगत प्रकृति के लिए उलाहना एवंआलोचना।

जुठन्तर – (सं.पु.) भोजन के पश्चात् का जूँठा भोजन का कण यत्र–वत्र विखरे हुए हों, अपवित्र स्थल।

जुड़ाई – (सं.स्त्री..) ठंडी के कारण शरीर पर चकत्तेदार ददोरे पड़ना।

जुड़बाऊब – (क्रिया) गर्म पदार्थ को आग से दूर रखकर उसे ठण्डी अवस्था में लाना, जिउ जुड़बाउब ब.मु.।

जुड़ाब – (क्रिया) ठंड होना,शीतल की अनुभूति, शान्ति की अनुभूति।

जुतहाउ – (सं.स्त्री.) दो पक्षों के बीच जूते चलना, जूते की मार शुरू होना।

जुमकब – (क्रिया) पास पहुँचना, सामर्थ्य का होना, नजदीक आना।

जुम्मा – (सं.पु.) जिम्मेदारी या दायित्व, ठेका, जबावदारी आदि।

जुर बटुरिके – (अव्यय) जन समुदाय का विचार विमर्श के साथ कार्य विशेष के निमित्त एकत्रित या संगठित होने की क्रिया।

जुरबइया – (क्रिया) जोडनेवाला, टूटे रिश्ते को बनाने वाला।

जुरबाउब – (क्रिया) जोड़ने में सहयोग करना, एकत्र कराना।

जुरब – (क्रिया) जुड़ना, जुड़ जाना, इकट्ठा होना, जोड़ होना।

जुलुफ – (सं.पु.) केश, सिर के सुन्दर बाल, जुल्फ।

जुल्ल – (सं.पु.) सफेद गप्प, जिसकी आदि–अन्त न हो, धुँआ में लठ मारने वाली बातों का प्रचार–प्रसार।

जुहाब – (क्रिया) संचित होना, भीड़ लग जाना, अधिक मात्रा में संचयन।

जुहबाउब – (क्रिया) एकत्रित करना, संचय करने की क्रिया, भीड़ इकट्ठी करना।

जुहान – (विशे.) एकत्रित हुई स्थिति, इकट्ठा हुए लोग।

जू

जूक–कूप – (ब.मु.) किसी कार्य को सम्पन्न कराने के लिए जुटायी गई सहायक सामग्री।

जूठन – (वि.सं.पु.) जूँठा भोजन या पदार्थ, खाने के पश्चात् बचा हुआ शेष अंश।
जूड़ – (विशेष) ठंड,शीत का वातावरण, शीतलता की अनुभूति।
जूड़ा – (सं.पु.) बालों की गाँठ, ठण्डी हो जाना।
जूना – (अव्यय) सम्पूर्ण दिवस को दो भागों में विभक्त करने पर एक भाग की अवधि, समय।
जूरी – (सं.स्त्री.) किसी व्यक्ति के मरने पर जलाशय के घाट पर एक स्थान पर गाड़ा हुआ कुशा।

जे

जे–जे – (सर्व.) जो–जो, जो–जो लोग।
जेई – (सर्व.) जिसने, जो।
जेउनार – (सं.पु.) भोजन, व्यंजनयुक्त भोजन।
जेऊरी – (सं.स्त्री.) पतली रस्सी।
जेके – (सर्व.) जिसके।
जेखे – (सर्व.) जिसके।
जेखर – (अव्यय) जिसका, जिनकी, अर्थ से प्रयुक्त होने वाला शब्द।
जेंटा – (विशे.) अनाज को डंठल की जितनी मात्रा एक कखरी में दबाई या रखी जा सके।
जेटिआउब – (क्रिया) एक हाथ की कखरी में दबोच लेने की क्रिया।
जेठऊत – (सं.पु.) पति के बड़े भाई का पुत्र।
जेठरी – (विशे.) दो या तीन पत्नी वाले पति की प्रथम पत्नी।
जेठरऊ – (सं.पु.) किसी माँ–बाप का ज्येष्ठ पुत्र।
जेठरिया – (सं.स्त्री.) ज्येष्ठ कन्या,बड़ी कुरई, बड़ी बहू या बड़ी भाभी।
जेड़ी – (सं.स्त्री.) रक्षाबन्धन के अवसर पर दो लम्बे बाँस लेकर उसके मध्य में एक फीट लम्बा बाँस का टुकड़ा आड़ा बाँधकर और दोनो पैर उन्हीं में रखकर लोग रास्ता चलते हैं।
जेतबा – (सं.पु.) पत्थर की चक्की जिसमें हाथ से घुमाकर आटा पीसा जाता हो।
जेत्तीदार – (अव्यय) जिस समय, जितनी देर।
जेन्ता – (विशे.) जितना, जितना अधिक
जेनका – (अव्यय) जिनको।
जेतने – (विशे.) जितने, जितने लोग।
जेतू – (विशे.) जितना, जितनी।
जेमन – (सं.पु.) रसोई पकाना, रसोई पकाने के पूर्व तैयारी या प्रबंध।
जेरबा – (सं.पु.) काँटेदार वनस्पतियों की टहनियाँ, काँटेदार वृक्ष या पौधे की शाखाएँ।
जेरा – (सं.पु.) खेत को घेरे हुए पतली लकड़ी, झाड़ियों की टहनी।
जेसे – (सर्व.) जिससे।
जेही – (अव्यय) जिसे, जिसके के लिए पर्यायवाची शब्द।

जो

जो – (अव्यय) अगर,यदि, जो बोलना, यदि बुलाओ।
जोकड़ – (अव्यय) जोकड़, मनोरंजन करने वाला व्यक्ति, हँसाने वाला जोकर, तास की एक पत्ती का नाम।
जोकड़ई – (क्रि.वि.) जोकर की तरह गतिविधियाँ एवं नाट्य करने की विशेषता।
जोखब – (क्रिया) तौलना, नापना, मात्रा जानना।

जोखइया – (सं.पु.) नाप–तौल करने वाला व्यक्ति, पंसारी,लेखा लगाने वाला।

जोगिया – (सं.पु.) चींटे के आकार के लाल रंग वाले चीटे, योगियों का समूह।

जोगा – (सं.पु.) छोटे बच्चों की भयभीत करने के लिए प्रयुक्त होने वाला।

जोगउब – (क्रिया) जुगाड़ बनाकर किसी काम को करना। मितव्यतता के साथ कार्य करना, हिसाब बैठाकर आय के अनुसार कार्य।

जोग – (सं.पु.) संयोग लग जाना, योग साधना, योग, लग्न, योग्य।

जोगनी – (सं.स्त्री.) शुभ मुहूर्त, संयोग का शुभ लग्न या शुभ घड़ी।

जोगी – (सं.पु.) योगी, तपस्वी, योग साधना का साधक, सन्त–महात्मा।

जोड़उरिहा – (विशे.) ऐसी संतान जो माँ के गर्भ से एक साथ क्रमशः (अल्पावधि के अन्तराल में उसी दिन) जन्म लिये हो।

जोड़ीमा – (सं.पु.) दो फलों का एक साथ जुड़कर फलना, एक जोड़, एक साथ जन्मीं संतान।

जोतब – (क्रिया) खेत की जुताई करना, हल चलाना।

जोती – (सं.स्त्री.) ज्योति, जुताई की हुई भूमि, पत्थर की चक्की के ऊपर अरी में लगने वाली पतली रस्सी, प्रकाश।

जोतबाउब – (क्रिया) किसी के खेत की जुतवाई करवाना।

जोत – (सं.पु.) चमड़े के पट्टे जो हल के जुए में लगाकर बैल के गले में बाँधा जाता है।

जोतवाई – (सं.पु.) खेत जोतने के बदले में प्राप्त मजदूरी।

जोतइया – (सं.पु.) हल चलाने वाला हलवाहा या खेत की जुताई करने वाले।

जोतहरा – (सं.पु.) ऐसा खेत जिसकी जुताई हो चुकी हो।

जोधँइया – (सं.स्त्री.) चन्द्रमा, जोधा माई।

जोधा – (सं.पु.) योद्धा, शूरवीर, सूरमा, पराक्रमी, चन्द्रमा।

जोधावली – (सं.पु.) योद्धा एवं शक्तिशाली, बलवान,किन्तु वक्रोक्ति के साथ।

जोधामाई – (सं.स्त्री.) चन्द्रमा के लिए मातृत्वयुक्त सम्बोधन।

जोन्हरी – (सं.स्त्री.) ज्वार, जो खरीफ की फसल में बोई जाती है।

जोन्हरिहा – (सं.पु.) जिस खेत में ज्वार की फसल लगी हो।

जोबाब – (सं.पु.) जवाब, उत्तर, प्रतिउत्तर के अर्थ में प्रचलित शब्द।

जोरब – (क्रिया) जोड़ना, एकत्र करना, पूँजी बनाना, संग्रहण करना।

जोरई – (सं.स्त्री.) हरे रंग का कीड़ा, जो फसल एवं सब्जी के पौधे में लगते हैं तथा बुरी तरह से क्षिद्र करके नुकसान पहुँचाते हैं।

जोरिआउब – (क्रिया) एक दूसरे में जोड़ना,एक सूत्र में बाँधना।

जोरबइया – (सं.पु.) जोड़ने वाला,एक रस्सी में कई को बाँधने वाला।

जोरगर – (विशे.) बहुत अधिक, बहुत शक्तिशाली।

जोरतनिहा – (सं.स्त्री.) जोड़–गाँठ लगाकर तैयार की गई वस्तु।

जोरतनी – (सं.स्त्री.) एक टुकड़े में कई टुकड़ों के जोड़ने की क्रिया।

जोर–जुगत – (अव्यय) मनसा–वाचा–कर्मणा से किया गया या किया जा रहा अथक प्रयास, शक्ति एवं युक्ति मिश्रित कार्य।

जोरन – (सं.पु.) दूध जमाने के लिए प्रयुक्त सहायक सामग्री, मठा।

जोरा–तगोरी – (अव्यय) विभिन्न प्रकार के प्रयासों से संग्रह की हुई।

जोरी – (सं.स्त्री.) जोड़ी, जोडी हुई वस्तु जो पहले टूटी रही हो, जोड़ना।

जोरू – (सं.स्त्री.) पत्नी, औरत के लिए संज्ञावाची शब्द।

जोरे–बटोरे – (अव्यय) जोड़–बटोरकर परिश्रम के साथ किया गया।

जोरगर – (विशे) जोरदार, ताकतवर, बहुत तेजी से।

जोलाहल – (विशे) तहस–नहस, प्राणलेवा, तेज–तर्राट अथवा क्रोधप्रद।

जोलहा – (सं.पु.) सूत कातने वाला, हाथ से कपड़ा बुनने वाला।

जोला – (सं.पु.) तहस–नहस कर देने वाला, क्रोध, गुस्सा, आवेश।

जोसभरा – (सं.पु.) आवेश या आक्रोशवस, अत्यधिक क्रोध से युक्त।

जोसाब – (क्रि.वि.) क्रोधित होकर लाल–पीला होना, उत्तेजित होना।

जोहब – (क्रिया) राह देखना, प्रतीक्षा करना, खोजना आदि अर्थों में प्रचलित।

जोहारब – (क्रिया) पर्वोत्सव के अवसर पर भाईचारे का व्यवहार निभाना।

जोहार – (सं.स्त्री.) पयलगी, प्रणाम एवं अभिवादन आदि।

जोहैसो – (सं.पु..) बात करते समय प्रयुक्त प्रवृत्तिगत तकिया कलाम।

जोहाउब – (क्रिया) खोज करवाना, खोजवाना, पता लगवाना।

जोहइया – (सं.पु.) पता लगाने वाला, खोजने वाला, खोजबीन करने वाला।

झ

झउआ – (सं.पु.) चौड़ी मुँहवाली बाँस की टोकनी जो क्रमशः पेंदा की ओर संकरी होती जाती है।

झउड़ब – (क्रि.) ऊपर की ओर बढ़ना, लता के फैलने की क्रिया।

झकलेट – (विशे.) मूड़ी एवं झक्की प्रवृत्ति वाला आदमी, सनकी, झक्की।

झकाउब – (क्रिया) दिखवाना,झकवाना, प्रयास कराना।

झकमराउब – (ब.मु.) विवश होना, मजबूर होकर कार्य करना।

झकइया – (सं.पु.) झांकने–ताकने वाला व्यक्ति।

झकिया – (सं.स्त्री.) दीवाल में बनाया जाने वाला रोशनदान, खिड़की।

झगुंली – (सं.स्त्री..) ऐसी चारपाई जिसके रस्सी का बुनाव नीचे झूलता हो, ऐसा बच्चों का नीचे झूलने वाला फ्राक या फटा पुराना वस्त्र।

झंझाब – (क्रि.वि.) गीले वस्त्र का लगभग सूख जाना।

झझोरब – (क्रिया) बिना चिंता के भरपेट जी भर खाना, अच्छी खासी बिना श्रम के कमाई करना।

झँझाउब – (क्रिया) हल्के रूप में सुखवाना, कपड़े का पानी सुखाना।

झझझा – (सं.पु.) कुण्ड में गिरते समय पानी की आवाज।

झटकब – (क्रिया) किसी वस्तु को छिपाकर या चुराकर प्राप्त करना, बिना परिश्रम के उपलब्धि, हाथ इधर–उधर फेंकना, आक्रोश के कारण किसी को धक्का देना।

झटकारब – (क्रिया) दोनों हाथ से हवा में फटकारना ताकि पानी निकल जाय।

झटकरबइया – (सं.पु.) छपटकर ले–लेने वाला, चोरी कर लेने वाला।

झट्टी – (अव्यय) जल्दी, जल्दीबाजी, शीघ्रता आदि अर्थों हेतु।

झटका – (सं.पु.) किसी को धोखा देना, उल्टी–सीधी बातें करना, धोखाधड़ी।

झट्टिल्ला – (सं.पु.) पुरुष के लिए एक अश्लील गाली।

झटुहा – (सं.पु.) पुरुष के लिए एक अभद्रगाली।

झड़ास – (क्रिया) टट्टी की अनुभूति

झन्ना – (सं.पु.) झरना, दस्त लगना या पतली टट्टी जाना।

झने – (सं.पु.) लोग, जन समुदाय आदि अर्थों के लिए प्रयुक्त शब्द।

झन–झन – (क्रि.वि.) ईर्ष्यालु प्रवृत्ति की क्रिया, आक्रोश युक्त वाणी।

झनझनाब – (क्रि.) बड़े भवन में आवाज प्रतिध्वनित होना।

झन्झी – (सं.स्त्री.) पैसे का बिल्कुल न होना, नाममात्र, बिल्कुल नहीं।

झपब – (क्रिया) झेपना या दबना, संकोच या भय के कारण न बोलना, अदब करना, पलक बंद हो जाना।

झपटब – (क्रिया) दौड़कर आतुरता के साथ कोई वस्तु छुड़ा लेना, पंजे से दौड़कर छोटे जीवधारी को दबोचना।

झपट्टा – (सं.पु.) झटके से चलने में होने वाली वस्तु की ध्वनि।

झब्बा – (सं.पु.) बड़े–बड़े घुँघराले बाल वाला व्यक्ति, बालों से ढके मुखवाला कुत्ता, किसी कुत्ता या आदमी का नाम।

झपड़ा – (सं.पु.) सघन पत्तियों वाला चारों ओर से तने को घेरने वाला पेड़।

झम्म – (सं.पु.) कुँआ नदी या तालाब में उँचाई से कूदने पर हुई ध्वनि।

झमाका – (सं.पु.) बिना रूके हुए पानी भरे स्थल पर ऊँचाई से कूदना।

झमकाउब – (क्रिया) पशुओं द्वारा इधर–उधर सिर हिलाना–डुलाना।

झमेला – (सं.पु.) अतिथियों की भीड़, झंझटनुमा, उलझाऊ स्थिति, जन समुदाय।

झमब – (क्रिया) संतुलन के कारण शरीर का कँप उठना, जमीन में गिर पड़ने की क्रिया, चक्कर आना।

झरका – (सं.पु.) लकड़ी में लाख लगा हुआ एक वस्तु जिसे स्त्रियाँ कान के छिद्र में पहनती हैं।

झरहाई – (क्रि.वि.) ईर्ष्या करने की प्रवृत्ति, द्वेशपूर्ण भावना।

झरहा – (सं.पु.) देखि न सके पराय, विभूति वाली प्रवृत्ति का व्यक्ति।

झरब – (क्रिया) दस्त लगना, फूल या बाल का झड़ना, फलों का ऊपर से नीचे गिरना।

झर्रहट – (ब.पु.) व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति के साथ कार्य की सफलता।

झरबाउब – (क्रिया) झाड़–फूँक करवाना, कपड़े की धूल हटवाना।

झरबइया – (सं.पु.) झाड़–फूँक करने वाला व्यक्ति या पण्डा।

झरझराब – (क्रिया) किसी पर नाराज होना, भुनभुनाना।

झलकब – (क्रि.वि.) झलकना, आंशिक रूप से दिखना, झलकी के रूप में दिखना।

झलरा – (सं.पु.) शिशुओं के मुण्डन के पूर्व के बढ़ते बाल, झलरी।

झलरिहा – (सं.पु.) ऐसा शिशु जिसका मुण्डन संस्कार न हुआ हो।

झल्ला – (सं.पु.) बड़े–बड़े बालों वाला व्यक्ति, मुण्डन संस्कार न हुए बालक, किसी व्यक्ति का नाम, झल्ली।

झंलगा – (सं.पु.) बच्चों द्वारा धारण किया गया वह वस्त्र जो सामान्य स्थिति से बहुत बड़ा एवं ढीला हो।

झलरी – (सं.स्त्री.) चवेना वाली एक ज्वार की किस्म, मुण्डन न हुई कन्या।

झा

झाँई – (सं.स्त्री.) आँख की चमड़ी का काला होना,गाल पर चिन्ता का दाग।

झाँकब – (क्रिया) छिपकर देखना, नीचे सिर करके गहराई झाँकना, झाँक–ताँक करना।

झागा – (सं.पु.) उलझनयुक्त दृश्य,अड़चन एवं बहानामय परिस्थिति।

झाँझर – (विशे.) पारदर्शी स्थिति के पत्ते, आर–पार दिखना, शरीर का माँस विहीन कोरा ढाँचा।

झाड़े – (सं.पु.) उत्सर्जन क्रिया,टट्टी करना या टट्टी करने जाना, दीर्घशंका।

झापड़ – (सं.पु.) ऊँगुली खोलकर हथेली द्वारा प्रहार, तमाचा लगाना।

झामर – (विशे.) भूख के कारण आँख से न दिखना, चलते समय शरीर में कम्पन का होना।

झाँपी – (सं.स्त्री.) बाँस की एक सन्दूक, मन्दिरनुमा आकृति की बन्द टोकनी।

झाँय–झाँय – (सं.स्त्री.) झनकर, सूनसान,वायु का शब्द,आवाज प्रतिध्वनित होना।

झारब – (क्रिया) झाड़–फूँक करना, शरीर से धूल हटाना,खाना खाना, किसी पर प्रहार करना।

झार – (सं.स्त्री.) ईर्ष्या, द्वेष भावना, आग में जलते मिर्च का धुआँ, किसी का धन वैभव न देख सकने की प्रवृत्ति।

झारा – (सं.पु.) पूड़ी या व्यंजन झाड़ने वाला बड़ा करछुवा।

झालर – (सं.पु.) बच्चों के सिर के जन्म के समय के बाल, बड़े–बड़े बाल।

झाला – (सं.पु.) लकड़ी के खम्भे पर घास का छप्पर, नारियों द्वारा कान में धारण करने वाला सोने का आभूषण।

झि

झिकनी – (सं.स्त्री.) चौड़े चूल्हे पर बर्तन के नीचे प्रयुक्त पत्थर की टुकड़ियाँ खपड़े के नीचे खपड़े की टुकड़ी।

झिकबाउब – (क्रि.) किसी से कोई वस्तु निकलवाना, चुरवा लेना।

झिकझोरब – (क्रि.) किसी को पकड़कर जोर से हिलाना, पीटने के लिए, आक्रोश में हाथ पकड़कर हिला देना।

झिकँबइया – (सं.पु.) निकालने वाला, अपनी ओर खींचने वाला व्यक्ति।

झिझिरी – (विशे.) विरल सलाई से बनी टोकनी, अनाज रखने वाली टोकनी।

झिझकब – (क्रि.) हिम्मत न पड़ना, किसी कार्य में दिक्कत होना, झिझक।

झिटकी – (सं.स्त्री.) भटकटैया, बारी बनाने हेतु झाड़ी का डंठल।

झिटकब – (क्रि.) पकड़ने वाले को धक्का देना, झटका देकर अपना हाथ छुड़ाना, ताकत लगाकर बल पूर्वक फेंकना।

झिंगा – (सं.पु.) छोटे–मोटे कीड़े–मकोड़े, टिड्डा नामक एक कीड़ा।

झिमकब – (क्रि.) विरल रूप में मन्द–मन्द जल वृष्टि का होना।

झिमिर–झिमिर–(अव्यय) मन्द फुहार पड़ना, अति विरल रूप में जल वृष्टि का होना।

झिमाब – (क्रि.) शान्त स्थिति, पानी बरसने की गति का घटना, बच्चों का रोना कम हो जाना, नींद लग जाना।

झिरकी – (सं.स्त्री.) विरल जल वृष्टि, पानी की बूँद, पानी की फुहार।

झिरब – (क्रि.) टोकनी से अनाज का नीचे गिरना, झरने से जल निःसृत।

झिरकुटिया – (सं.स्त्री.) छोटी–छोटी झाड़ियों की पतली–पतली सूखी टहनियाँ।

झिरिया – (सं.स्त्री.) झरना के द्वारा बना हुआ गहरा कुण्ड।

झिरा – (सं.पु.) आय के श्रोत, झरना झरने का स्थल, तल या सतह, चोंगी में डाला जाने वाले पत्तों का टुकडा।

झिलँगी – (विशे.सं.स्त्री.) चारपाई से टूटे बन्धन का झूलदार हो जाना, जीर्ण–शीर्ण चारपाई।

झिमान – (विशे.) थककर सोयी हुई स्थिति, निद्रा ग्रसित, मौन अवस्था।

झी

झीकब – (क्रि.) पक्ष कहना, अपना हाथ खींचना, किसी से अत्यधिक धन वसूल लेना, जेब से कुछ निकाल लेना, कोई संरचना।

झीका–झपटी– (बं.पु.) लूट–खसोट, जबरिया छुड़ाना, विवाद या झगड़ा।

झींगुर – (सं.पु.) पतली टाँग वाला एक विशेष कीड़ा–मकोड़ा।

झीटी – (सं.स्त्री.) बाँस की पतली–पतली टहनियाँ।

झु

झुक्का – (सं.पु.) अचेत अवस्था में क्षण भर के लिये हो जाना।

झुकाउब – (क्रि.) नतमस्तक कराना, किसी वस्तु को झुकाने की क्रिया।

झुकुर – (क्रिया) किसी को देखने के लिए या मारने के लिए चारों ओर से घेर लेना, देखने को लगी गोलाईदार भीड़।

झुठ्ठी – (सं.स्त्री.) सूखी व दुर्बल शरीर वाली नारी या कन्या पु. छुट्ठा।

झुठिहा – (सं.स्त्री.) झूठ बोलने वाला व्यक्ति, असत्य बोलने की प्रवृत्तिवाला।

झुनकी – (सं.स्त्री.) छोटे दाने वाली एक ज्वार।

झुनझुनी – (सं.स्त्री.) पाँव में झुनझुनाहट हो जाना, शरीर का शून्य होना।

झुमकी – (सं.स्त्री.) कानों की बाली, झूलदार कान का गहना,पु. झुमका।

झुर्र – (ब.मु.) वस्तु या पदार्थ का समग्रतः समाप्त हो जाना, उड़ जाना।

झुरान – (विशे.) शुष्क अवस्था वाली वस्तु या पदार्थ, सूखे शरीर वाला व्यक्ति, सूखा हुआ अन्न, आर्द्रता रहित स्थिति।

झुरिया – (सं.स्त्री.) सूखे खेत में सूखे धान की बोवाई।

झुरहा – (सं.पु.) जो शरीर से दुर्बल हो, सूखे शरीर वाला।

झुरठ्ठा – (सं.स्त्री.) दुबला–पतला, दुर्बल एवं एकहरे शरीर का व्यक्ति।

झुरमन – (सं.स्त्री.) आर्द्र पदार्थ को सुखाने से भार में होने वाली कमी।

झुरबाउब – (क्रि.वि.) किसी वस्तु का सुखाना, नमी–आर्द्रता दूर करना, गीला कपड़ा धूप में या हवा में सुखाना।

झुरझुरी – (सं.स्त्री.) कपकपी, कम्पन, बुखार आने की स्थिति में ठण्ड का लगना।

झुर्रइया – (संस्त्री.) जल्दी–जल्दी कूदने–फुदकने वाली गौरैया।

झुलइहेय – (क्रि.) झुलाओगे।

झुलाये – (क्रि.) झुलाइये, क्या झुलाये।

झुलबे – (क्रि.) झूलोगे, झूलना होगा, हिलोगे।

झुलबू – (क्रि.) झूला झूलेगी, झूलना होगा, हिलो डुलोगी।

झुलरब – (क्रि.) किसी पेड़ की डाली में लटकना या झूलना।

झुलना – (सं.पु.) झूला, झूलदार बच्चों का खिलौना।

झुलनी – (सं.स्त्री.) झूला, झूलकर चलने वाली जिसका सिर प्रायः डोलता रहता हो, नाक की नथुनी।

झुलनिया – (सं.स्त्री.) नाक में झूलने वाली बड़ी वृत्ताकार नथुनी।

झुलउआ – (सं.पु.) झूमते– झामते सी चाल गति पुरूषों का एक वस्त्र विशेष।

झुलबइया – (सं.पु.) झूला झुलाने वाला व्यक्ति, हिलाने–डुलाने वाला।

झुलाऊब – (क्रि.) हिलाना–डुलाना, झूले में झुलाना, मानसिकता से अवगत होने के लिए मन जानना।

झू

झूमब – (क्रि.) झूलना, ताकत अजमाना, लगे रहना।

झूर – (विशे.) सूखा, केवल, खाली, मात्रा, स्वार्थ, सूखा।

झूरझार – (अव्यय) सिर्फ, निर्धारित, मजदूरी या आदेशित वस्तु।

झूरा – (सं.पु.) सूखा या अकाल, बच्चों का शरीर सूखने वाला एक रोग, एक प्रकार का महुआ वाली शराब।

झूरै – (अव्यय) खाली–खाली।

झूलाखाली – (अव्यय) सूर्यास्त का समय, हल्का अन्धेरा होना, सायंकालीन बेला, गोधूलि का समय।

झूलब – (क्रि.) झूलना, हिलना–डुलना, झूमते रहना।

झे

झेहझेह – (अव्यय) ऊँचाई से जलाशय पर बार–बार कूदने पर होने वाली पानी की ध्वनि विशेष।

झेहाका – (अव्यय) बिना रूकावट के पानी में ऊपर से कूदने की क्रिया, सीधे पानी में ऊपर कूदना।

झो

झोकब – (क्रि.) झोकना, अत्यधिक खाना, अतिसंयोक्ति बातें करना, किसी को ढकेलना।

झोकबाई – (सं.स्त्री.) झोंकने के बदले प्राप्त परिश्रामिक या शुल्क।

झोकबाउब – (क्रि.) किसी से झोंकवाने का काम कराना।

झोकइया – (सं.पु.) बढ़–बढ़कर बातें करने वाला अतिशयोक्ति बोलने वाला, बहुत अधिक खाने वाला।

झोकाझोंक – (अव्यय) मुक्तहस्त से बिना चिन्ता किये हुए कोई वस्तु वितरित करना, स्वच्छन्द एवं चिन्ता रहित कार्य।

झोंखरा – (सं.पु.) बड़े–बड़े एवं अव्यवस्थित बाल।

झोझर – (सं.पु.) पेट के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

झोझा – (सं.पु.) जालीदार रस्सी का बुनाव जो नीचे की ओर झूल गया हो।

झोझी – (सं.स्त्री.) ऐसी चारपाई जो बीच में टूटकर नीचे की ओर झुकी हो।

झोटिआउब – (क्रि.) चोटी पकड़कर मारना–पीटना, चोटी खींचना।

झोटइया – (सं.स्त्री.) बड़े–बड़े बालों को आक्रोश में कहा जाने वाला शब्द।

झोथ – (विशे.) समूह, कई संख्याएँ, बहुतायत छत्ता।

झोथा – (संपु) गुच्छेदार शैली में फलों का फलना।

झोप – (क्रि.वि.) चारों ओर से घेर लेना, चारों ओर से ढकी स्थिति।

झोरब – (क्रि.) आम के फल या किसी वृक्ष में लगे फल में हाथ से पत्थर मारकर तोड़ने या जमीन में गिराने की क्रिया।

झोरा – (सं.पु.) बड़े आकार का झोला, पत्थर या लकड़ी की टुकडी फेंककर फल तोड़ने के लिए निर्देश, तोड़िये।

झोरकट – (सं.पु.) झूठ बोलने वाला, लम्बी–चौड़ी झोकने वाला।

झोर – (सं.स्त्री.) झोली, भिक्षा माँगने में प्रयुक्त होने वाली सैली।

झोरीहा – (सं.पु.) ऐसा व्यक्ति जिसकी दिनचर्या झोली पर केन्द्रित हो।

झोरइया – (सं.स्त्री.) किसी बात को बढ़ा–चढ़ाकर तिल का ताड़ बताकर बातें करने वाले, छोटे आकार की झोली या झोला।

झोल – (ब.मु.) झोल खाना (बघेली मुहाबरा) जिसका अर्थ होता है पीछे हटना, धोखा होना, चक्कर आना।

झोलइया – (अव्यय) श्रमिकों–मजदूरों स्त्री–पुरूषों द्वारा कार्य करते समय गाया जाने वाला बघेली लोकगीत।

झोलबाउब – (क्रि.) छानने एवं छाँटने की क्रिया करवाना।

झोलब – (क्रि.वि.) कपड़े से छानना, छाँटकर पदार्थ ग्रहण करना।

झोला – (सं.पु.) दोपहर की कड़ी धूप के बाद नहाने में बुखार आना।

झंझटि – (सं.स्त्री.) आपत्तिपूर्ण, बड़ी दिक्कतों से युक्त, दिक्कतनुमा, टंटा, बखेड़ा।

झंगाझोरा – (विशे.) ढीला–ढाला, नीचे से ऊपर तक ढीला वस्त्र पहनना।

ट

टकर – (सं.स्त्री.) आदत, प्रवृत्ति, टेव।

टकटकी – (सं.स्त्री.) एकटक देखना, पलक न गिरना, नजर गड़ाना।

टकबाउब – (क्रि.) खुरदुरा करवाना, टाँका लगवाना।

टकबाई – (सं.स्त्री.) टांकने की क्रिया, मजदूरी, शुल्क, टांकने का मेहनताना।

टकिया – (सं.पु.) पत्थर टाँकने वाला, टंकन कर्ता।

टका – (सं.पु.) सिक्का या रूपया, पैसा।

टँगरी – (सं.स्त्री.) टाँग, टगरी, चीरना बघेली मुहावरा।

टटेर – (सं.पु.) ज्वार के सूखे डंठल।

टरकाउब – (क्रि.) एक स्थान से दूसरे स्थान में रख देना, टाल देना, टालमटोल करना, बहानेबाजी बता देना।

टटस – (विशे.) ठोस, मजबूत, स्वास्थ्य एवं जवान, चलने–फिरने लायक।

टटोहब – (क्रि.) टटोलना,किसी वस्तु को खोजना, हाथ से छूकर पता लगाना, थाह लगाना।

टठुलिया – (सं.स्त्री.) छोटी सी थाली, प्लेट जैसी थाली।

टठिया – (सं.स्त्री.) थाली, टाठी।

टनमन – (विशे.) मजबूत, हृष्ट–पुष्ट, चलने योग्य, स्वस्थ्य, पहले से ठीक।

टन्नाब – (क्रि.) रोते–रोते शांत, रूक जाना, रूदन में डूब जाना।

टनाटन – (सं.स्त्री.) नगद, चल सिक्का, त्वरित भुगतान, मूल्य देकर वस्तु लेना।

टंटा–टोरब – (ब.मु.) नामोनिशान मिटा देना, काम तमाम करना, प्रकरण को समूल नष्ट करना, झंझट समाप्त करना।

टंटनाउब – (क्रि.) टन–टन की क्रिया करना, घण्टी बजाना।

टन्च – (विशे.) चंचल, तेज तर्राट, होशियार एवं फुर्तीला।

टंटपाली – (क्रि.वि.) बचकानी हरकत, अनाप–सनाप कार्य, शरारतयुक्त क्रिया।

टन्ट–घण्ट – (सं.पु.) दैनिक कार्य, वाह्य आडम्बर, टन्टघन्ट बजाकर पूजा का कार्य करना।

टप्पा – (सं.पु.) खेतों–खलिहानों के गीत, मजदूरों का लोकगीत।

टपरा – (सं.पु.) बाँस–फूस की झोपड़ी, अस्थायी लकड़ी वाला छोटा सा घर।

टपाका – (विशे.) सुस्पष्ट आकार बहुत बड़ी बिन्दी, अलग–थलग दिखना।

टम्ब – (सं.पु.) तास खेलते समय तुरूप का निर्धारण।

टरबाटारब – (ब.मु.) घर छोड़कर कुछ समय के लिए बाहर निकल जाना, टाल–मटोल करके टाल देना, पिण्ड छुड़ाना।

टरब – (क्रि.) किसी स्थान से चले जाना, घटना का टल जाना, अदृश्य होना।

टरकाउब – (क्रि.) एक स्थान से दूसरे स्थान में रख देना, टाल देना, टाल–मटोल करना, बहानेबाजी बता देना।

टर्राब – (क्रि.) अकड़कर बोलना, कुत्ते सा गुर्राना, कर्कश ध्वनि निकालना।

टसमस – (सं.स्त्री.) एक स्थान से जरा भी न हिलना, न खिसकना।

टहकारब – (क्रि.वि.) तेजी से बोलना, सशक्त स्वर।

टहुआ – (सं.पु.) उबले आम का प्ररस, हल्का–फुल्का कार्य।

टहूका – (सं.स्त्री.) छोटा–मोटा घरेलू काम, सेवा, काम धंधा।

टहटी – (सं.स्त्री.) पीतल धातु।

टा

टाँकब – (क्रि.) टाँका लगाना, पत्थर में टंकन करना, खुरदुरा बनाना।

टाँकी – (सं.स्त्री.) किसी वस्तु पर खुदाई करना, टंकन करने वाली लोहे की कील, टाँकीन लागी, ब. मु.।

टाँगब – (क्रि.) लटकाना, ऊपर उठाकर लेना, पकड़ से बाहर वस्तु को रखना, विलम्ब किये रहना, लालच में फँसाये रहना।

टाँगर – (सं.पु.) टाँग, जँघा।

टाँगी – (सं.पं.) कुल्हाडी, लटकी हुई, टँगी हुई।

टाटक – (विशे.) तरोताजा, तुरन्त का बना हुआ, गर्मागर्म, खाद्य पदार्थ।

टाँठ – (विशे.) ठोस, हल्का गीला।

टाठी – (सं.स्त्री.) थाली।

टाड़ – (सं.पं.) परौहा ब्राम्हण की एक प्रजाति।

टांड़ना – (सं.पु.) परेशानी, समस्या ग्रसित, दुर्गति, आफत, कष्टप्रद स्थिति।

टापब – (क्रि.) आते–जाते रहना, चक्कर लगाना, सुन्दर अक्षर लिख देना।

टाँय–टाँय – (सं.स्त्री.) अनावश्यक की वार्ता, टाँय–टाँय फिस्स (बघेली मुहावरा), तोते की तरह एक साँस में बोलना, अप्रिय शब्द।

टार बहिटआव– (सं.स्त्री.)टाल मटोल, अनसुनी करना, अनदेखी करना, बहाना बता के टाल देना, टार बहिटीयाब, ब.मु.।

टार टहुआ – (सं.पु.) हल्का–फुल्का काम करना, इधर से उधर वस्तु को रखना।

टारब – (क्रि.) टाल देना, दूर कर देना, पास से हटा देना, घर से बाहर कर देना।

टाल – (सं.पु.) तेन्दूपत्ता का क्रय केन्द्र, लकड़ियों का संचयन स्थल।

टि

टिक्कड़ – (सं.पु.) हाथ से बनी मोटी–मोटी रोटियाँ।

टिकब – (क्रिया) बहुत दिनों तक किसी के यहाँ ठहरे रहना, किसी वस्तु का वस्तु पर टिकना, अति टिकाउपन होना, पाँव जम जाना।

टिकउना – (सं.पु.) उपहार या पारतोषिक, टीका नामक परम्परागत व्यवहार।

टिकुरा – (सं.पु.) उच्च भूमि, टीलानुमा, खेत, टीला।

टिकुली – (सं.स्त्री.) बिन्दी, गोल आकार की नारी श्रृँगार वस्तु।

टिकोरी – (सं.स्त्री.) आम के प्रारम्भिक फल, शिशु आम्रफल।

टिटरीटी – (विशे.) चिड़चिड़ा व्यक्ति, अति दुर्बल एवं कमजोर।

टिटिंगा – (विशे.) अति दुर्बल शरीर वाला, एकहरा शरीर का आदमी।

टिपुर्रब – (क्रि.) किसी के ऊपर जल्दी ही बिगड़ जाना, बात–बात में नाखुश हो जाना।

टिटिरिही – (सं.स्त्री.) अति दुर्बल, पतला शरीर, एक चिड़िया विशेष का नाम।

टिटुरिआब – (क्रि.) सिकुडना, ठण्ड या भय के कारण अंगों को सिकोड़ना।

टिटिम्मा – (सं.पु.) आवश्यक औपचारिकता, परम्परागत कार्य, रूढ़िगत मान्यता।

टिड़िन – (सं.पु.) तामस, बात–बात में बिगड़ने की प्रवृत्ति, जोश।

टिपिर टिपिर – (अव्य) बिरल पानी की बूँदे, छप्पर पर बूँद गिरने से उत्पन्न ध्वनि, पानी की बूँदों सा बातें करना।

टिपकी – (सं.स्त्री.) भाल की बिन्दी, शून्य आकार का चिन्ह।

टिर्रा – (विशे.) अति दुर्बल, पतला, एकहरा शरीर, व्यक्ति का नाम।

टिहुनी – (सं.स्त्री.) जहाँ से हाथ मुड़ता है वहाँ की गाँठ।

टिहुनिआब – (क्रि.) घुटनों से मारना, घुटने से किसी का शरीर दबाना।

टिहुनिआब – (क्रि.) घुटना मोड़कर जमीन पर बैठना।

टिल्ल पो – (ब.मु.) बच्चों का शोरगुल, कार्य करने से आगे–पीछे होना।

टी

टी.टी. – (विशे.) जीर्ण–शीर्ण एवं चिड़चिड़ापन, अति दुर्बल एवं पतला।

टीकुर – (सं.पु.) चोंट लगने से फोड़े की तरह किसी अंग में फूल आना।

टीडी – (सं.स्त्री.) टिट्डी दल, टीड़ीकुस उतराब, बघेली मुहावरा।

टीप – (सं.स्त्री.) लेन–देन वाला खाता, स्पर्श कर पाना, दस्तावेज।

टीमटाम – (सं.स्त्री.) दिखावायुक्त सजावट, कृत्रिम सौंदर्य हेतु श्रृँगार।

टीहड़ – (सं.स्त्री.) कमर के नीचे हिप की गुटकेदार हड्डी, टीहड़ मराना, बघेली मुहावरा।

टु

टुकबा – (सं.पु.) पुराने कपडे का एक टुकड़ा।

टुकुर टुकर – (अव्य) एकटक किसी को देखना, मौन रहकर चुपचाप देखते रहना, लाठी टेककर धीरे–धीरे चलना। (क्र.वि.)

टुच्चा – (विशे.) बदमाश एवं घृणित व्यक्ति, ओछा कार्य करने वाला।

टुच्चई – (क्रि.) बचकानी हरकत, निन्दनीय कार्य, अति छोटेपन, ओछा कार्य।

टुटुआउब – (क्रि.) लालचवश, किसी के द्वार में खड़े रहना, किसी के घर में दुके रहना, किसी के द्वार में बार– बार बने रहना।

टुटपुँजिहा – (विशे.) अल्प पूँजी का व्यक्ति, कम पूँजी वाला।

टुटाहिल – (ब.मु.) बचपन से ही पेट भर भोजन न पाने वाला, पैर से टूटा हुआ शरीर से कमजोर।

टुटहा गोड़ – (ब.मु.) कोई भी आदमी, कैसा भी व्यक्ति, बघेली मुहावरा।

टुटुरिआन – (विशे.) ठंड के कारण, सिकुड़े हुये अंग, दबा मन रहना।

टुडटुराउब – (क्रि.) चना चबाना, दाँत से चना चाबने की आवाज।

टुनटुन – (संपु.) अति प्यारा एवं नटखट शिशु, किसी का नाम।

टुनमुनाब – (क्रि.) दुर्बल व्यक्ति का स्वस्थ्य एवं चैतन्य हो आना, मरीज आदमी का चलने–फिरने लगना।

टुनगुन – (विशे) चंचल, स्वस्थ्य, गतिशील, नटखट।

टुन – (क्रि.) आक्रोश के कारण नाराज होना, नाराज होकर शीर्ष में चढ़ना।

टुप्प – (विशे.) बूँद, अति अल्प मात्रा।

टुपकब – (क्रि.) बूँद–बूँद कर गिरना, पानी टपकना, धरती पर चूकर गिरना।

टुपकाउब – (क्रि.) बूँद–बूँद कर गिराना, टपकाना, तरल पदार्थ चुआना।

टुपुर–टुपुर – (अव्य) अनावश्यक रूप से जल्दी बोलना, बिना अवसर का प्रयोजन विहीन बोलना, बघेली मुहावरा।

टुमाँकी – (सं.पु.) बीच में बोलकर सबकों हँसा देना, बीच–बीच में कुछ कहकर ठहाका लगवाना।

टुरूर टुरूर – (अव्य) अनाज का खूब सूख जाना, सूखे चना चाबने पर उत्पन्न आवाज।

टू

टूका – (सं.पु.) रोटी का एक टुकडा, आधा या आंशिक भाग।

टूट – (विशे.) टूटी हुई वस्तु, बिना लगाम के बोलने वाला, निर्भीक एवं निर्लज्ज वक्ता।

टूंटा – (सं.पु.) घाटा या घाटा का सौदा, नुकसान या हानि।

टूरा – (संस्त्री.) प्रिय कन्या, प्रिय पुत्री, बिटिया।

टे

टेंउ – (सं.स्त्री.) आदत या प्रवृत्ति, प्रकृति या स्वभाव।

टेउब – (क्रि.) पत्थर में घिसकर धार पैनी करना, मूँछ में ताव चढ़ाना।

टेउनखरा – (सं.पु.) औजार की धार पैनी करने वाला पत्थर, धार पैनी करने वाली।

टेकब – (क्रि.) चरण स्पर्श करना, पाँव पड़ना, जमीन पर टिकाना, टेक या सहारा लेना, चेचक के बाद टीका लगाकर विदा करना।

टेघरब – (क्रि.) पानी–पानी होना, अत्यधिक प्रभावित होकर भाव–विभोर हो जाना, सहृदय हो जाना, किसी वस्तु का पिघल जाना।

टेधराउब – (क्रि.सं.) पिघलाना, सहृदय करना, प्रभावित एवं आकर्षित करना।

टेटबा – (सं.पु.) घास–फूस एवं पत्तियों की परती या बाड़ा, घास–फूस का दरवाजा।

टेटमुहा – (वि.) घोड़े की तरह मुँह वाला व्यक्ति, एक गाली।

टेटुआ – (सं.पु.) घोड़ा, लादने वाला गदहा।

टेंटर – (सं.स्त्री.) कमर के नीचे का भाग, आँख की फूली, टेंट।

टेंट – (सं.स्त्री.) धोती का फेड, टेट भरा रहना, बघेली मुहावरा।

टेड़ुआब – (क्रि.) आवेश में आकर अकड़ना, लड़ने के लिये उतावला होना, पुरूष मूत्रांग का उत्तेजित होना, मर जाना, या समाप्त हो जाना।

टेढनउक – (विशे.) झुकी हुई, मुड़ी हुई, कुछ तिरछी सी, सर्पाकार आकृति।

टेंढ – (विशे.) तिरछा या अशुद्व, वक्रोक्ति बात, बिल्कुल–टेढ़ा।

टेंढ़ँमुहा – (विशे) टेढ़े मुँह वाला व्यक्ति, तिरछे मुँहवाला।

टेढबा – (विशे.) टेढ़ा चलने वाला व्यक्ति, टेढ़ी–मेढ़ी वस्तु, टेढ़े मुँह वाले।

टेढई – (सं.पु.) टेढ़ी गर्दन बाला, तिरछे मुँहवाला, किसी का नाम।

टेढबॅइता – (विशे.) टेढा पाँव करके चलने वाला, तिरछे पाँव का व्यक्ति।

टेना – (सं.पु.) बाँस की टहनियाँ, सूखे बाँस की उपशाखाएँ।

टेपर – (विशे.) टेढ़ा–मेढ़ा, कुछ तिरछा सा, आँख की तिरछी चितवन।

टेपुआब – (क्रि.) गुर्राना, मर जाना, अकड़ना एवं ऐंठना।

टेम – (सं.स्त्री.) दीपक की लौ, दीपक की ज्योति।

टेमरि – (सं.स्त्री.) पशुओं के पूछ का बाल, जवान या समर्थवान होना।

टेंय टेंय – (ब.मु.) तोते की तरह बोलते रहना, बीच में अनावश्यक बोलना।

टेरब – (क्रि.) किसी को पुकारना या बुलाना, आवाज देना।

टेरी – (सं.स्त्री.) आम की टहनी।

टोका – (सं.पु.) किसी पात्र का छिद्र, कपड़े में छेद हो जाना, टोंक दो, टोंकिए या टोंक दीजिये।

टो

टोंट – (सं.पु.) तोते की चोंच, पक्षियों का मुख।

टोटका – (सं.पु.) तांत्रिक प्रयोग, तंत्र–मंत्र।

टोड़क्का – (सं.पु.) सुपाड़ी का टुकड़ा, नामक की बड़ी सी डली, ठोस टुकड़ा।

टोरही – (सं.स्त्री.) टोना जादू जानने वाली, टोना मारने वाली।

टोनी – (सं.स्त्री.) हँसिया का नुकीला वाला भाग, औजार का पैना हिस्सा।

टोनकब – (क्रि.) उँगली मोड़कर किसी के सिर पर मारना, बीच में टोंक देना, हँसिया की टोनी से प्रहार करना।

टोपरी – (सं.स्त्री.) टोकनी, बाँस का बना पात्र।

टोपरा – (सं.पु.) बड़े आकार की बाँस की टोकनी, बाँस का बड़ा सा पात्र।

टोरइली – (सं.पु.) बचपना, बचकानी हरकत, बच्चों की गतिविधि।

टोरब – (क्रि.) तोड़ना, मरोड़ना, सीमा उल्लंघन करना, रिश्ता खत्म कर देना, मवेशियों को काट खाना।

टोरबा – (सं.पु.) छोटी उम्र का लड़का, छोटा सा बच्चा।

टोरउना – (सं.पु.) कम उम्र का लड़का, कुछ तोड़ने का पारिश्रमिक।

टोरइया – (विशे.) तोड़ने वाला।

टोरिया – (सं.स्त्री.) बच्चा मर जाने के बाद भी दूध देते रहने वाली दुधारू गाय–भैंस छोटी उम्र की लड़की, बिटिया या पुत्री।

टोर्रा – (सं.पु.) नमक का बड़ा सा टुकड़ा, सुपाड़ी की बड़ी–बड़ी टुकड़ियाँ।

टोला – (सं.पु.) कुछ घरों का समूह, गाँव का एक मुहल्ला।

टोहब – (क्रि.) खोजना या अन्वेषण करना, थाह लगाना, धीरे–धीरे चलना।

टोहिटोहि – (अव्य) थाह लगा–लगाकर आगे बढ़ना, पाँव जमा–जमाकर जाना।

ठ

ठउर – (सं.स्त्री.) जगह, भोजन करने के लिए जमीन पोतना, ठौर, स्थान।

ठउरि आउब – (क्रि.) भोजन स्थल को पानी से सींचना, पवित्र बनाना।

ठउरिबइया – (सं.पु.) भोजन स्थल में ठउर लगाने वाला।

ठउर ठिकाना – (ब.मु.) संभावना, सुव्यवस्थित, निश्चितता।

ठउँका – (सं.पु.) यथोचित अड्डा, निर्धारित जगह, निश्चित स्थान, ठिकाना।

ठउकाउब – (क्रि.) ठिकाना लगाना, जगह खोजना, तय करना, पता लगाना।

ठउँकइया – (सं.पु.) ठिकाना तय करने वाला, खोजकर तय करने वाला।
ठउहा – (सं.पु.) ठिकाने लगाना, स्थिर होना, हार मानकर चुप होना, शांत हो जाना।
ठक्कर – (क्रि.) ठोकर, धक्का।
ठक्करिआउब – (क्रि.) ठोकर मारना, ठोकर देकर भगाना, दर किनार करना।
ठक्काठाही – (ब.मु.) दो टूक, खरी–खरी, स्पष्ट, बिना दबाव संकोच के।
ठकुर सोहाती – (ब.मु.) मुँह देखकर व्यवहार, पक्षपात पूर्ण।
ठगब – (क्रि.) ठगना, झटका मारकर लूट लेना।
ठगाब – (क्रि.) ठग जाना, ठगी का शिकार होना, लुट जाना।
ठगबाउब – (क्रि.) किसी से ठगवाना, ठगने में सहयोग करना।
ठगबरब – (क्रि.) किसी द्वारा ठग जाना, लुट जाना, घाटा खा जाना।
ठगुआ – (सं.पु.) ठगने वाला, जिसके ठगने की आदत पड़ गई हो।
ठगइया – (सं.पु.) ठगने वाला, ठग लेने वाला, ठग।
ठगनहर – (सं.पु.) जो हमेशा ठगता रहता हो।
ठगबिद्या – (ब.मु.) ठगने के लिए अमल में लाई गई विधि व बुद्धि।
ठगिहौं – (क्रि.) ठगूँगा, ठग लूँगी, ठग लूँगा।
ठगेंवतै – (क्रि.) ठग लिया था, ठगा था, ठग ली थी।
ठटरी – (सं.स्त्री.) शरीर का ढाँचा, बिना माँस का शरीरिक ढाँचा पुलिंग 'ठटरा'।
ठठाउब – (क्रि.) किसी को मारना–पीटना, अस्त्र से प्रहार करना।
ठठुरब – (क्रि.) ठंड से ठिठुरना, ठंड से सिकुड़ना।
ठठ्ठा – (क्रि.वि.) हँसी का ठहाका, ठठ्ठा मारना बघेली मुहावरा।
ठठुरान – (विशे.) ठंड के कारण सिकुड़ा हुआ, हाथ या अंग।
ठंठनाब – (क्रि.वि.) सूखकर अतिठोस होना, खाली घड़े का सूखा होना।
ठंडाब – (क्रि.) ठंडा होना, ठंड लगना, शान्त होना, चुप हो जाना।
ठढुकब – (क्रि.) चलते–चलते रूकना, रूक–रूक कर चलना, थोड़े समय हेतु खड़े हो जाना, रूककर प्रतीक्षा करना।
ठंडवाउब – (क्रि.) ठंडी कराना, शीतल करवाना, ठंडा कराना।
ठढेसुर – (सं.पु.) दरवाजे पर अड़े रहने वाला, प्रायः खड़े रहने वाला।
ठंडवइया – (सं.पु.) ठंडा करने वाला व्यक्ति, मावला शांत कराने वाला।
ठनठनाब – (क्रि.) सूखकर खरा होना, बातचीत में सामना करना।
ठनकब – (क्रि.) सिर का ठनकना, धातु पर धातु पटकने से आवाज होना।
ठनगन – (क्रि.) इच्छा होते हुए भी न करने का नाटक करना, बहाने बाजी।
ठनबाउब – (क्रि.) लड़ाई छिड़वा देना, झगड़े हेतु पानी दे देना।
ठनब – (क्रि.) दो पक्षों में लड़ाई छिड़ जाना।
ठनठन गोपाल – (ब.मु.) शून्य उपलब्धि, शून्य मूल्य, कुछ नहीं।
ठनठनाउब – (क्रि.) सूखा घड़ा सा बजाना।
ठप्प – (सं.पु.) एकदम बन्द, निरस्त, बिल्कुल स्थगित।
ठप्पा – (सं.पु.) मुहर, चिन्ह।
ठर्रा – (सं.पु.) महुए से तैयार कच्ची शराब, चबेना के अप्रस्कुटित दाने।

ठसब – (क्रि.) जबरिया चिपककर बैठना, अनामंत्रित के बाद भी प्रवेश लेना।

ठसइया – (सं.पु.) जबरिया ठसने वाला, बिना बुलाये जम जाने वाला।

ठस – (विशे.) ठोस एवं पुष्ट, शख्त एवं कठोर।

ठसका – (सं.पु.) गले में पानी अड़ने से खाँसी आ जाना,गले में पानी अड़ना।

ठसिके – (विशे.) ठीक से, जोर लगाकर, ठीक से, दो टूक शब्दों में।

ठसिआउब – (विशे.) दबाव देकर कार्य करने हेतु विवश कर देना।

ठहिके – (अव्य.) आराम से, रूककर, इत्मिनान से, सोच–विचार के।

ठहुरूक – (विशे.) ठीक ठाक, अच्छा या जोरदार, देखने योग्य।

ठहाका – (सं.पु.) अट्टहास, जोर की हँसी।

ठहरब – (क्रि.) रूकना, विश्राम करना, रूक जाना, रह जाना।

ठहराउब – (क्रि.) रोकवाना, रूकने की व्यवस्था करना, ठहरवाना।

ठहरबइया – (सं.पु.) ठहरने वाला, रूकने वाला, विश्राम कर्ता, ठहरवाने वाला।

ठहनाव – (क्रि.) निर्भीकता पूर्वक अकड़ना, भय रहित उत्तर देना।

ठा

ठाढ – (विशे.) एकदम खड़ा, सीधा, दण्डाकार।

ठाँय – (सं.स्त्री.) बन्दूक से गोली छूटने से उत्पन्न ध्वनि।

ठारी – (सं.स्त्री.) कड़ाके की ठंडी, ठंडी के कारण जमी हुई ओस।

ठाँव–ठाँव – (अव्य) शान्त एवं सन्नाटा, अपने–अपने स्थान में हो जाना।

ठासब – (क्रि.) दबाव देकर बढ़ता कदम रोकना, चेतावनी देना।

ठासा – (सं.पु.) घमण्ड, अहंकार, अपने गुमान में उतान।

ठाहिर – (सं.स्त्री.) स्थिर या स्थायी, उपयुक्त एवं अच्छी, पुलिंग 'ठाहर'।

ठास – (सं.पु.) ठेके पर कृषि हेतु किसी को दी गई जमीन।

ठि

ठिकधर – (विशे.) सुनिश्चित एवं सही, सही ठिकाना, व्यक्ति का सुधर जाना।

ठिगना – (विशे.) नाटा कद का, छोटे कद का, स्त्री.लिंग 'ठिगनी'।

ठिठुरब – (क्रि.) ठिठुरना, ठंड से सिकुड़ना।

ठु

ठुकसा – (सं.पु.) सूखी रोटी का टुकड़ा, खाली सूखी रोटी।

ठुँठबा – (विशे.) बिना सींग का बैल, ऊँगली कटा आदमी, बिना डाली व पत्ते का वृक्ष।

ठुँठिया – (विशे.) लूला व्यक्ति, छोटे कद वाला, बिना सींग का बैल।

ठुनकब – (क्रि.) किसी वस्तु के पानी के लिए मचलना या जिद करना।

ठुनकइया – (सं.पु.) मचलने वाला, जिद करने वाला व्यक्ति।

ठुनकाउब – (क्रि.) मचलवाना या जिद करने के लिए उत्प्रेरित करना।

ठुनकिहौं – (क्रि.) मचलूँगा, मचलूँगी, जिद करूँगा या करूँगी।

ठुर्रू – (सं.पु.) भूनने पर न प्रस्फुटित हुए चबेना के दाने।

ठुँठाब – (क्रि.) पत्ते झड़ जाना और ठूँठा होना, सींग विहीन होना।

ठू

ठूँठा – (सं.पु.) नग्न पेड़, बिना पत्ता के जड़ सहित कटा हुआ पेड़।

ठूठी – (सं.स्त्री.) सींग विहीन गाय व भैंस, लूली महिला।

ठूँठ – (सं.पु.) वृक्ष का जड़ से लगा छोटा तना, दो टूक बोलने वाला व्यक्ति।

ठूमुक – (विशे.) नाटे कद का आदमी व बैल।

ठूसब – (क्रि.) जबरिया डालना, दबा–दबाकर डालना, खूब खा लेना।

ठे

ठें – (अव्य) पर, ऊपर में।

ठेउहा – (विशे) स्थिर व शान्त, पेट का पानी पच जाना, ठेउहा, ब. मु.।

ठेउहाउब – (क्रि.) चेतावनी देकर ठिकाने लगा देना।

ठेकब – (क्रि.) बालों की छटाई करना, बढ़ते कदम में अंकुश लगाना।

ठेकबाउब – (क्रि.) अनुमानित मूल्यांकन करवाना, बालों को छँटवाना।

ठेकबइया – (सं.पु.) बालों को छाँटने वाला, ठेका तय कराने वाला व्यक्ति।

ठेक्कड – (सं.पु.) बराबरी करना, सामना करना, धक्का।

ठेकहा – (सं.पु.) ऐसा कार्य जो ठेके में लिया गया हो, ठेके का कार्य।

ठेकार – (सं.पु.) शरीर पर बड़े–बड़े निकले हुए चकत्ते।

ठेकुरा – (सं.पु.) अवारा पशु के गले में अंकुश हेतु बँधी लकड़ी।

ठेंगा – (सं.पु.) अँगूठा, कुछ नहीं का संकेत।

ठेंघब – (क्रि.) कोई वस्तु ले लेना, टिकना, टेंकना, सहारा लेना।

ठेंघबाउब – (क्रि.) भारा उठाने में सहारा लगवाना।

ठेंघबइया – (सं.पु.) पकड़कर वस्तु स्वीकारने वाला, सहारा देने वाला।

ठेंघाउब – (क्रि.) किसी के हाथ में कुछ देना, ओट लगाना, सहारा लेकर टिकाना।

ठेंघी – (सं.स्त्री.) तकिया कलाम, बोलने की टेक।

ठेंघना – (सं.पु.) टेकने वाली वस्तु, सहारा लेने वाली छड़ी।

ठेंठी – (विशे.) नाटे कद की नारी या गाय।

ठेंठरी – (सं.स्त्री.) बेसन की ग्रामीण सलोनी, गाँव का एक व्यंजन।

ठेंठ – (विशे.) निरा ग्रामीण, बिना किसी मिलावट के, अकृत्रिम या मौलिक।

ठेंठा – (सं.पु.) गदेली में फोड़ों का ठोस रूप, गदेली के चिन्ह।

ठेंठाब – (क्रि.) हाथों में फोड़ों का पड़ जाना, आदती हो जाना।

ठेंठान – (विशे.) ठेठें पड़े हुए, ऐसी गदेली जिसमें ठेठें ही ठेठें हों।

ठेपी – (सं.स्त्री.) शीशी का ढक्कन, कान में ऊँगली डालना, शीशी का काग।

ठेलब – (क्रि.) ताकत लगाकर अन्दर की ओर डालना, सहारा देकर आगे बढ़ाना।

ठेलबाउब – (क्रि.) धक्का देकर गतिमान करवाना, स्वयं डलवाना।

ठेलबइया – (सं.पु.) धक्का लगाने वाला, जोर लगाकर आगे बढ़ाने वाला व्यक्ति।

ठेला – (सं.पु.) लकड़ी की गोमती, ट्रक या भार वाहक।

ठेलिया – (सं.स्त्री.) नारियों द्वारा पैर की उँगलियों में धारित छल्ला।

ठेलिहौं – (क्रि.) ठेलूँगी, धक्का देकर बढ़ाउँगी, सहारा दूँगी।

ठेलबइहौं – (क्रि.) किसी से डलवाउँगी, धक्का देकर गतिमान करूँगी।

ठेलमठेल – (ब.मु.) खींचातानी की स्थिति, आपसी मतभेद का होना।

ठेव – (सं.पु.) चेतावनी, अंकुश, हिदायत, रोक–थाम।

ठेस – (सं.पु.) धक्का पहुँचना, उँगलियों में ठोकड़ से लगी चोट।

ठेसब – (क्रि.) जबरिया ठूँस–ठूँस कर डालना, दबाव देकर घुसेड़ना।

ठेहर – (विश.) मध्यम कद, न लम्बा न छोटा कद।

ठो

ठोंकब – (क्रि.) चोट मारकर कील धंसाना, ठोंकना, मारना–पीटना।

ठोंकबाउब – (क्रि.) ठोंकवाना, किसी को पिटवाना।

ठोंकबइया – (सं.पु.) प्रहार करने वाला, ठोकने वाला, पिटाई करने वाला।

ठोकड़ा – (सं.स्त्री.) एक वर्ष पहले की जनित दुधारू गाय व भैंस।

ठोकड़ – (सं.स्त्री.) पैर में लगी चोट, चोट मारना, धक्का खाना।

ठोकड़िआउब – (क्रि.) ठोकर मारकर हटा देना, ठुकरा देना, धक्का देकर भगा देना।

ठोकड़िआब – (क्रि.) ठोकर खा जाना, धक्का खाना, ठुकरा दिया जाना।

ठोंके ठहनाब – (ब.मु.) अकारन अकड़बाजी करना, चोरी और सीना जोरी करना, डंके की चोट पर बिना भय के बोलना।

ठोक्कड़ – (सं.पु.) मुकाबला या बराबरी, चोट या ठेस लगना।

ठोंगा – (सं.पु.) मोटे–मोटे बास के 2–2 फीट के लम्बे टुकड़े।

ठोर्रसई – (सं.स्त्री.) हँसी–मजाक, मनोविनोदी बातें एवं वार्ता।

ठोर्रसऊँ – (विशे.) मजाकिया शैली में मनोविनोदी अंदाज में।

ठोर्रसहा – (सं.पु.) हँसी–मजाक करते रहने वाले प्रवृत्ति का आदमी।

ठोसब – (क्रि.) जबरिया डालना, ठूँस–ठूँस कर खाना।

ठोसबाउब – (क्रि.) ठूँस–ठूँस कर डलवाना, प्रवेश करवाना, अन्दर करवाना।

ठोसबइया – (सं.पु.) ठोंसने वाला, ठूँस–ठूँस कर डालने वाला।

ठोसीमा – (विशे.) ठोस ढंग से बना, ठोस, मजबूत एवं ठोस युक्त।

ड

डउआ – (सं.पु.) लकड़ी का बना करछुल के विकल्प का पात्र।

डउका – (सं.पु.) पुरुष, मर्द, स्त्री.लिंग 'डउकी'।

डउरि – (सं.स्त्री.) ढाँचा, खाका, बनावट, शक्ल सूरत।

डउरब – (क्रि.) ढाँचा बनाना, नमूना तैयार करना, खाका खींचना।

डउड़िआब – (क्रि.) अकेलेपन की उदासी की अनुभूति करना, अकेलापन लगना।

डउड़ी – (सं.स्त्री.) मुनादी, नगड़िया द्वारा सूचना, मुनादी पीटना, ब.मु.।

डॅउकब — (क्रि.) ताक में रहना, घात लगाये रहना, इंतजार करना।
डक — (सं.पु.) दोष, अशुभ, डक परब ब. मु.।
डकार — (सं.पु.) मुख से गैस का उद्‌गार, पेट भरने का सूचक।
डखना — (सं.पु.) पंख, उपशाखाएँ, परिवार या वंश के सदस्य।
डगर — (सं.पु.) रास्ता, एक हिंशक जानवर।
डगना — (सं.पु.) नाव खेने वाला लम्बा बाँस, स्त्री.लिंग डगनी।
डगनी — (सं.स्त्री.) मिट्‌टी खुदाई का नपना, गन्ने का एक नग।
डग — (सं.पु.) साइकल में कम्पन की स्थिति, दो पाँव के बीच की दूरी।
डगर डिगिर — (ब.मु.) अति दुर्बल चाल, डगमगाते हुए चलना, पाँव का लड़खड़ाना।
डगडगाव — (क्रि.वि.) डगमगाना या कँपना, लड़खड़ाकर चलना।
डगडउआ — (सं.पु.) एक प्रकार की घास, किसी गाँव का नाम।
डग्गा — (सं.पु.) फाग गीत का एक किश्म, उथले किस्म का खेत, चार पहिया भार वाहक।
डड़हरा — (सं.पु.) करछुल की डण्डी, पकड़ने वाला हिस्सा, मूठ या हत्था।
डड़उकी — (सं.स्त्री.) पतली सी छोटी छड़ी, छोटा बाँस का दो फीट का टुकड़ा, पुलिंग 'डड़उका'।
डड़ार — (सं.पु.) मैदानी भू–भाग, वह खेत जो सदैव पड़ती पड़ा रहता हो।
डड़बार — (सं.पु.) कभी न जोता बोया जाने वाला खेत, खाली मैदान।
डड़ई — (सं.स्त्री.) पतली बाँस की छोटी सी छड़ी।
डड़िया — (सं.स्त्री.) विवाह में वर पक्ष द्वारा ले जाई गई साड़ी विशेष, ऊँची भूमि वाला उचहन खेत।
डड़िआउब — (क्रि.) धोती को फाड़कर दोनों छोर को फिर सिल देना।
डड़ब — (क्रि.) घाटा होना, दण्डित हो जाना, नुकसान हो जाना।
डड़बाउब — (क्रि.) घाटा बैठा देना, किसी को दण्डित करवाना।
डढिल्ला — (सं.पु.) दाढ़ी वाला, लम्बी दाढ़ी वाला व्यक्ति।
डढ़ियल — (सं.पु.) जिसके बड़ी–बड़ी दाढ़ी उगी हो, दाढ़ी वाला व्यक्ति।
डढेल — (सं.पु.) व्यंजन पकाने के पश्चात कड़ाही में बचा हुआ तेल या घी।
डण्डाकार — (सं.पु.) दण्डवत, लम्बवत लेट जाना।
डण्डकमंडल — (सं.पु.) अपना उपयोगी सामान, घर गृहस्थी का सामान ब. मु.।
डण्डी — (सं.स्त्री.) छोटी सी बाँस की लकड़ी, पुलिंग 'डण्डा'।
डफुला — (सं.पु.) एक ग्राम्य वाद्ययंत्र, स्त्री.लिंग 'डफुली'।
डफल डफल — (अव्य) वाद्ययंत्र की बेसुरी आवाज।
डबरा — (सं.पु.) पानी से भरा गढ़ढा, पानी भरे गढ़ढे में भैंस का पड़ना।
डबिया — (सं.स्त्री.) छोटे आकार की डिब्बी।
डबुलिया — (सं.स्त्री.) मिट्‌टी की बनी सकरे मुखवाली मिट्‌टी की लोटिया, 'डबुलिया कस मुँह, बघेली मुहावरा, पुलिंग 'डबुला'।
डब्बल — (सं.पु.) पुराने प्रचलन का एक पैसे का सिक्का।
डब्बा — (सं.पु.) डिब्बा, शून्य उपलब्धि, शट्‌टे का पैसा डूबना।

डब्बी – (सं.स्त्री.) डिबिया, दिया, सिंदूरदान, चिमनी।

डभका – (सं.पु.) चावल पानी एक साथ डालकर पकाया गया भात।

डम्फान – (सं.पु.) दिक्कतनुमा कार्य, अतिरिक्त व्यवस्था।

डमाडोल – (विशे.) मुहाने तक भरा पानी, दयनीय स्थिति, संदिग्ध हालात।

डमरिआउब – (क्रि.) डामर लगाना, डामर से पात्र में पुताई कराना।

डमरिहा – (सं.पु.) जिस बर्तन में डामर लगा हो, डामर रखने का पात्र।

डरिया – (सं.स्त्री.) डली, एक वस्तु की टुकड़ी, डिगलिया।

डरइया – (सं.स्त्री.) वृक्ष की उपशाखाएँ, डाली।

डरक्का – (सं.पु.) नमक की बड़ी सी डली।

डरीमा – (सं.पु.) डाली में ही पका हुआ फल, डाल का पका फल।

डरील – (विशे.) डाली वाला, जिसमें डालियाँ हो, डालियों से युक्त वृक्ष।

डल – (विशे.) कमजोर, दयनीय, गिरी हुई स्थिति।

डँहकाउब – (क्रि.) घाटा खाना, लुट जाना, पिट जाना, गंवा देना।

डहठान – (सं.पु.) शिशु जन्म के छठवें दिन का उत्सव विशेष, शिशु संस्कार।

डहरब – (क्रि.) पशुओं का चलकर आगे अग्रसर होना।

डहराउब – (क्रि.) पशुओं को गतिमान करना, पशुओं को गन्तव्य की ओर ले जाना।

डहर डहर – (अव्य) पशुओं को अग्रसर करने का सांकेतिक शब्द।

डा

डाइन – (सं.स्त्री.) चुड़ैल, राक्षसिन, चुड़ैल प्रवृत्ति की नारी।

डाँगर – (विशे.) वयोवृद्ध, निर्बल व्यक्ति, बूढा एवं कमजोर।

डाँगब – (क्रि.वि.) कूद कर पार होना, लाँघना।

डाँटा – (सं.पु.) खुफिया लगना, छिपकर बातें सुनना।

डाँटी – (सं.स्त्री.) डाटी टइया (बघेली मुहाबरा), दिक्कतें, उलझने, अशान्ति।

डाँठ – (सं.पु.) शीशी का काग, गेंहूँ का डंठल।

डाढ – (सं.पु.) गलफड़े के अंतिम मसूढ़े, जबड़े की माँसपेशी।

डाढा – (सं.पु.) सब्जी बनाने हेतु प्रयुक्त तेल–मशाला, कुँए के अंदर पावदान, दीवाल में छोड़ी गई चौड़ाईनुमा खंधा।

डाढीजार – (सं.पु.) एक मनोविनोदी नारियों द्वारा दी जाने वाली गाली।

डाँड़ा – (सं.पु.) औजार का मूठ, करछुल का पृष्ठ भाग।

डाँड़ – (सं.पु.) हरजाना, जुर्माना, नुकसानी, घाटा।

डाँड़ बाँध – (ब.मु.) जुर्माने के रूप में दण्ड, कार्य करने के लिए विवश करना।

डाँड़ी – (सं.स्त्री.) तराजू, तराजू में लगी डंडी, एक लाइन, ककरीली भूमि।

डाबर – (अव्य) दबे पाँव चलने की शैली, चुपके–चुपके आना–जाना।

डामर – (सं.स्त्री.) डामरि।

डार – (सं.स्त्री.) डाली, पौधों की शाखाएँ, वंश की उपशाखाएँ।

डारा – (सं.पु.) दो खम्भों में रखी लम्बवत लकड़ी या रस्सी।

डारब – (क्रि.) डालना, घुसेड़ना, प्रवेश कराना, क्षिद्र में घुसेड़ना।

डाला – (सं.पु.) ट्रक, भार वाहक, किसी गाँव का नाम।

डाह – (सं.पु.) पाने की इच्छा, पाने का लोभ, लालसा व लालच।

डाहिल – (विशे.) प्रगतिशील, वृद्धि योग्य, होनहार।

डि

डिगिलिया – (सं.स्त्री.) गुड़ या नमक की डली, एक ठोस टुकड़ी, मिट्टी की डली।

डिग्गी डोला – (क्रि.वि.) एक व्यक्ति द्वारा सिर व दूसरे द्वारा पाँव पकड़कर चलने की शैली, दो आदमी द्वारा उठाकर चलने की विधि।

डिठमन – (सं.पु.) जेठ मास की एकादशी का एकव्रत वाला त्यौहार।

डिठिआर – (सं.पु.) जिसकी आँखों में अभी सब कुछ दिखता हो, मजबूत आँखों वाला।

डिठउरी – (सं.स्त्री.) छोटा सा डिठौना, डीठ से बचने हेतु एक टोटका।

डिठिआउब – (क्रि.) देखकर नजर लगा देना, डीठ लगा देना।

डिठोन – (सं.पु.) जेठ मास की एकादशी तिथि को मनाया जाने वाला हिन्दू त्यौहार।

डिढ – (विशे.) मजबूत व पुष्ट, हृष्ट–पुष्ट, धनवान।

डिढके – (विशे.) मजबूती के साथ, खूब जोर से, जमकर, पर्याप्त।

डिढान – (विशे.) दानों की परिपक्वता, सख्त एवं पुष्ट दाने से युक्त।

डिढबाउब – (क्रि.) पुष्ट एवं परिपक्व करवाना व कराना।

डिढबइया – (सं.पु.) फल या दानों को पुष्ट व परिपक्व करवाने वाला।

डिब्बा – (सं.पु.) पानी व अनाज नापने रखने का टीन का पात्र।

डिबिया – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का काजल व सिन्दूर रखने का पात्र।

डिमारी – (सं.स्त्री.) डिमार या दीमक।

डिमरिआन – (विशे.) दीमक का खाया हुआ, दीमक लगी हुई वस्तु।

डिल्ल – (सं.स्त्री.) बैल के मध्यभाग में उठा माँस का गोला।

डिलिया – (सं.स्त्री.) नमक गुड़ या मिट्टी की एक डली या टुकड़ी।

डिलहा – (विशे.) खुदाई या कशीदादार किवाड़ा, ढीले से युक्त खेत।

डिल्लारिया – (विशे.) बड़े–बड़े डिल्लों वाला बैल विशेष।

डिलार – (सं.पु.) जोता हुआ खेत, जिस खेत में डीले ही डीले हों।

डिलरहा – (सं.पु.) मिट्टी के ढेलों से परिपूर्ण खेत।

डिलिआउब – (क्रि.) खेतों के डीले संचित करना, मिट्टी के ढेलों से प्रहार करना।

डिहुला – (सं.पु.) मोटी एवं काले छिलके वाली एक धान की किस्म।

डी

डीठ – (सं.स्त्री.) नजर, आशंका का रोग, टोना–जादू।

डीमी – (सं.स्त्री.) दीमक, दिमाक के कीड़े।

डीला – (सं.पु.) मिट्टी के टुकड़े, ढेला।

डीलि – (सं.स्त्री.) शारीरिक ढाँचा, शारीरिक बनावट, नाक–नक्श।

डीह – (सं.स्त्री.) पुराने घर की जगह, गॉव का देवता, गोत्र जाति का परिचय।

डु

डुग्गी – (सं.स्त्री.) छोटे आकार की नगड़िया, मुनादी या सूचना।

डुराब – (क्रि.) हिल–डुल जाना, सत्य से चूक जाना, प्रण टूट जाना।

डुगाउब – (क्रि.) हिला–डुला देना, हिलाना, ध्यान भंग कर देना।

डुगबइया – (सं.पु.) ध्यान भंग करने वाला, डुलाने वाला।

डुगुर डुगुर – (अव्य) शरीर डुलाते हुए चलना, ठंड की कंपकपी से शरीर हिलना।

डुँठहा – (सं.पु.) बिना पत्ती का ठूंठ वृक्ष, डुठुरी युक्त अनाज।

डुँठबा – (सं.पु.) एक हाथ से विकलांग व्यक्ति, सींग टूटा बैल।

डुठुरू – (सं.पु.) अप्रस्फुटित चबेना के दाने।

डुड़बा – (विशे.) टूटी सींग का पशु, बिना पत्ते शाखा का वृक्ष, काठ का मोटा सा टुकड़ा।

डुड़बइठा – (सं.पु.) मर जाने की अशुभ कामना वाली एक गाली, स्त्री.लिंग डुड़बइठी।

डुबाउब – (क्रि.) डुबाना, पानी में पूरी वस्तु को डालना।

डुबाब – (क्रि.) डूब जाना, पानी के अन्दर समा जाना।

डुबकँइया – (अव्य) डुबकी लगाते हुए जल में गतिमान होने की शैली।

डुबकी – (सं.स्त्री.) गोता लगाना, पानी में डूबना और फिर उतराना।

डुहकइया – (विशे.) अविरल अश्रुधार, अश्रुधार युक्त रूदन की शैली। डुहुक–डुहुक कर रोना, बघेली मुहावरा।

डुहुराब – (क्रि.) किसी की ओर जाने का मन बनाना, धीरे–धीरे पहुँचना।

डू

डूँठा – (सं.पु.) पत्ते विहीन, ठूँठ, जड़ से लगा छोटा तना।

डूँड़ा – (सं.पु.) मोटी लकड़ी का टुकड़ा, जिसकी सींग टूटकर छोटी हो (विशेष)

डूड़ी – (विश.) बिना सींग की गाय या भैंस, छोटी सींग वाली।

डे

डेउढा – (विशे.) डेढ़ गुना अधिक, एक सही एक बटे दो की मात्रा।

डेचकी – (सं.स्त्री.) एल्यूमोनियम का छोटा सा पात्र, पुलिंग 'डेचका'।

डेढहथा – (विशे.) डेढ़ हाथ की लम्बी लाठी, जिसके डेढ़ हाथ ही हो।

डेड़हा – (सं.पु.) सर्प की एक प्रजाति।

डेबर – (सं.पु.) लिखने–पढ़ने में जिसका बांया हाथ चलता हो, बांया हाथ।

डेबरहा – (सं.पु.) बायें हाथ से लिखने व खाने वाला व्यक्ति।

डेबा – (सं.पु.) बांया हाथ।

डेरइया – (सं.स्त्री.) डाली, वृक्ष की शाखायें व उपशाखायें।

डेलार – (सं.पु.) जुता हुआ खेत, जिस खेत में मिट्टी के ढीले हों।

डेलहा – (सं.पु.) ऐसा खेत जो मिट्टी के ढीले से संतृप्त हो।

डेला – (सं.पु.) मिट्टी की डली, मिट्टी के टुकड़े।

डेलहरा – (सं.पु.) जिस खेत में बड़े–बड़े मिट्टी के डेले ही डेले हों।

डेली – (सं.स्त्री.) मिट्टी की डली, पुलिंग डेला।

डेहरी – (सं.स्त्री.) देहली, द्वार का निचला हिस्सा।

डेहरउटा – (सं.पु.) द्वार के बाहर ओरमानी के नीचे बने पतले चबूतरे।

डेहिरिआउब – (क्रि.) देहली को गोबर से पुताई–लिपाई करना।

डो

डोकलइया – (सं.स्त्री.) नारियल की खोपड़ी, खोपड़ी का कटोरानुमा आधा भाग।

डोकिया – (संस्त्री.) नारियल की क्षिद्रनुमा आधी झुकावदार खोपड़ी।

डोकरी – (सं.स्त्री.) बूढ़ी नारी, बुढ़ापे से झुकी हुई बुढ़िया।

डोकरिया – (सं.स्त्री.) जो बुढ्ढी होकर एकदम झुक गई हो ऐसी नारी।

डोकरा – (सं.पु.) बुढ्ढा व्यक्ति, झुकी कमर का वृद्व आदमी।

डोंगा – (सं.पु.) महुए का तरोताजा फूल, देशी काठ की नाव।

डोंगरिया – (सं.स्त्री.) छोटी पहाड़ी, झाड़ियों व पत्थरों से आच्छादित टीला।

डोंगरा – (सं.पु.) बड़े आकार का पहाड़।

डोंड़ा – (सं.पु.) इलायची की भाँति मशाला, फल की गुठुली।

डोंड़ी – (संस्त्री.) छोटी–सी नाव, फल की गुठुली।

डोभी – (सं.स्त्री.) रबी की फसल में उगने वाली एक घास विशेष।

डोभ – (क्रि.वि.) दो क्षिद्रों के बीच का सुई का धागा, सुई की सिलाई।

डोभरी – (सं.स्त्री.) उबाला गया महुआ, महुए का ग्राम्य व्यंजन।

डोमार – (सं.पु.) डोम की एक प्रजाति।

डोमार परै – (ब.मु.) डोम पड़ जाये के आशय की गाली व बघेली मुहावरा।

डोरा – (सं.पु.) धागा, सूत, संरचना।

डोरिया – (सं.स्त्री.) नारी केश बाँधने वाला रेशे का धागा विशेष।

डोरिआउब – (क्रि.) लम्बी रस्सी से पशु को बाँधना, पीछे–पीछे लिये रहना।

डोरी – (सं.स्त्री.) डोर, रस्सी, महुए का फल– बीज, अटकी हुई श्वांस।

डोर – (सं.स्त्री.) पतंग की रस्सी या धागा, लम्बी पंक्ति।

डोल – (सं.स्त्री.) झूला या झाँकी, गोले आकार की बाल्टी, भू डोल।

डोलची – (सं.स्त्री.) प्लास्टिक की डलिया, पानी भरने की चौड़ी बाल्टी।

डोलडाल – (अव्य) टट्टी मैदान के लिए संकेत, नित्य क्रिया।

डोलब – (क्रि.) हिलना–डुलना, डगमगाना, एक स्थान से हटना।

डोलाउब – (क्रि.) हिलाना–डुलाना, इधर–उधर करना।

डोलबइया – (सं.पु.) हिलाने वाला व्यक्ति, डुगाने व धक्का देने वाला।

डोला – (सं.पु.) पालकी, आदमी को ढोने वाला विशेष चारपाई नुमा पात्र।

डोलहा – (सं.पु.) पालकी या डोली उठाने वाले कहार।

डोलिया – (सं.स्त्री.) खेत की छोटी क्यारियाँ, छोटे आकार की डोली।

डोहर – (विशे.) हल्की–हल्की तरल पदार्थ की गर्म स्थिति, कुनकुना पानी या दूध।

डोहरिआन – (विशे.) नाम मात्र का गर्म हुआ दूध व पानी, कुनकुना।

ढ

ढकब — (क्रि.) ढकना, मूँदना, छिपाना, ढक लेना व ढक देना।

ढकबाउब — (क्रि.) किसी से ढकवाना, चारोंओर से छुपाना।

ढकबइया — (सं.पु.) ढकने वाला, मूँदने या छिपाने वाला व्यक्ति।

ढका मुदा — (ब.मु.) बनी हुई इज्जत, बना बनाया सम्मान।

ढँखिया — (सं.स्त्री.) टहनियों युक्त सूखी झाड़ी, जो लताओं के लिपटने हेतु लगाई गई हो।

ढट्ठा — (सं.पु.) कान तक बँधी कपड़े की पट्टी, मुरेठा, स्त्री.लिंग 'ढट्ठी'।

ढठाब — (क्रि.) निर्भीक हो जाना, आदती बन जाना, घासामीसी होना।

ढठाउब — (क्रि.) किसी को हथकड़ी लगवाकर बंद करवाना।

ढनगब — (क्रि.) लुढ़क जाना, लुढ़क—लुढ़क कर बढ़ना, मृत्यु हो जाना।

ढनगाउब — (क्रि.) किसी को लुढ़काना, मार डालना, अनभल मनाना।

ढनगइया — (सं.पु.) लुढ़काने वाला व्यक्ति, हत्यारा व्यक्ति।

ढनढनाब — (क्रि.) वस्तु का लुढककर आगे पहुँच जाना, लुढ़कना।

ढपूसा — (सं.पु.) उलाहना, असंतोष ज्ञापन, बुरा—भला कथन।

ढपोरसंख — (ब.मु.) बिना मतलब का बयान करते रहने वाला, झूठी एवं बड़ी—बड़ी घोषणाएँ करने वाला।

ढपुरा — (सं.पु.) पत्तल के डंठल का ढेप।

ढपरा — (सं.पु.) खली का टुकड़ा, सूखी रोटी के लिए प्रतीक।

ढमढमउहन — (विशे.) ढमाढम बाजे—गाजे के साथ कार्य की सम्पन्नता।

ढमढमाउब — (क्रि.) बाजा बजवाना, उत्सव मनाना, खुशी जाहिर करना।

ढमढमाब — (क्रि.) ढमढम की आवाज होना, बाजे का बजना।

ढमढबइया — (सं.पु.) उत्सव मनवाने वाला, ढमाढम बजाने वाला।

ढरका — (सं.पु) आँख के आँसू आँख से पानी बहने वाला रोग।

ढरकब — (क्रि.) गिर जाना, लुढ़क जाना, शनैः—शनैः आगे बढ़ना, किसी के घर आने—जाने लगना।

ढरकाउब — (क्रि.) तरल पदार्थ गिराकर बहा देना, पानी से भरा पात्र लुढ़काना।

ढरीमा (विशे.) ढलाई किया हुआ आभूषण, कलात्मक गहना।

ढरबाउब — (क्रि.) साँचे में ढलवाना, गढ़वाना, खुदाईनुमा गहना बनवाना।

ढरबइया — (सं.पु.) ढालने वाला, खुदाई करके आभूषण बनाने वाला।

ढरकुलिया — (सं.स्त्री.) नारियों के कान का पुराने चाल का गहना।

ढर्रा — (सं.पु.) चौड़ा रास्ता, गाँव की गैल, सड़क, तौर तरीका।

ढलब — (क्रि.) अस्त होना, वातावरण के साथ घुल—मिल जाना, ढल जाना।

ढलबाउब — (क्रि.) किसी को परिस्थिति के अनुरूप मोड़ लेना।

ढहब — (क्रि.) धराशायी होना, गिर जाना, गिरकर भूमिगत होना।

ढहाउब — (क्रि.) खड़ी दीवाल या पेड़ को गिरा देना।

ढहाब – (क्रि.) पेड़ या दीवाल का अपने आप गिर जाना।

ढा

ढाँकब – (क्रि.) ढकना, चारों ओर से छिपाना, ढक देना, छिपा लेना।

ढाँखा – (सं.पु.) लताओं के लिपटने के लिए प्रयुक्त शुष्क झाड़ी।

ढाँगी – (विशे.) काफी लम्बी नारी, ऊबड़–खाबड़ चेहरे वाली।

ढाठर – (सं.पु.) पेट के प्रकोष्ठ, पेट के दोनों कोठे।

ढाठी – (सं.स्त्री.) आदत पड़ जाना, अभ्यस्त हो जाना, आदत में परणित होना।

ढाठब – (क्रि.) ताले के अन्दर बंद कर देना, संभोग क्रिया करना।

ढाढस – (सं.पु.) धैर्य, साहस, हिम्मत, दृढता, सान्त्वना।

ढारब – (क्रि.) ढाल देना, किसी के ऊपर मढ देना, अपना दोष दूसरे पर थोपना, देवता को जल चढ़ाना, अशगुन मनाना।

ढालब – (क्रि.) ढालना, गढ़ना, ढलाई करना।

ढालू – (विशे.) ढालनुमा स्थिति, ऊँचाई के बाद उतारनुमा जमीन।

ढि

ढिकुरब – (क्रि.) वृद्व होकर आगे की ओर झुक जाना।

ढिकुरी – (सं.स्त्री.) ढीकुर।

ढिग ढोरा – (विशे.) नग्न वदन, वस्त्र रहित, नंग–धड़ंग।

ढिंग्ग – (सं.स्त्री.) किनारी, धोती की बाट, कलात्मक लिपाई–पुताई।

ढिंगही – (सं.स्त्री.) किनारीदार, सस्ती एवं मोटी सादी धोती।

ढिगिआउब – (क्रि.) चित्रकारी युक्त कच्चे फर्श की लिपाई–पुताई करना।

ढिठाब – (क्रि.) धीरे–धीरे आदत पड़ जाना, निर्भीक बन जाना, मुँह लगा बन जाना।

ढिमनिया – (सं.स्त्री.) कहार की पत्नी, कहारिन।

ढिमरा – (सं.पु.) ढीमर या कहार, स्त्री.लिंग 'ढिमरिन'।

ढिमरहाई – (सं.पु) कहारों द्वारा गाया जाने वाला विशेष लोकगीत।

ढिलरब – (क्रि.) खूँटे से छूटना, बाहर निकलना, बंधन मुक्त होना।

ढिलबइया – (सं.पु.) घर के अन्दर से मवेशी को बाहर निकालने वाला।

ढिलहर – (विशे.) अति ढीला–ढाला नाप का धारित वस्त्र।

ढिलर मिलर – (अव्य) अव्यवस्थित एवं अनिश्चततापूर्ण।

ढिलपोक्का – (विशे.) एकदम से ढीला बिना नाप का, लुंज–पुंज एवं सुस्त प्रवृत्ति, स्त्री.लिंग, 'ढिलपोक्की'।

ढी

ढीठ – (विशे.) हिम्मती, साहसी, निर्भीक, घुला–मिला, संकोच रहित।

ढीसा – (सं.पु.) गुड़ का बड़ा सा ढेला या टुकड़ा।

ढीलब – (क्रि.) खूँटे से मवेशी छुटकाना, क्यारी में पानी लगाना।

ढील ढाल – (अव्य) सुस्त एवं लापरवाह, जबावदारीहीन, जो तटस्थ न हो ऐसी प्रवृत्ति।

ढु

ढुकब – (क्रि.) लालचवश किसी के द्वार पर बैठे रहना।

ढुकइया – (सं.पु.) पराये द्वार पर प्रायः अड़े रहने वाला।

ढुकबू – (क्रि.) द्वार पर अड़ी रहोगी, मेरे मुख ताकोगी।

ढुढबाउब – (क्रि.) किसी से चीज खोजवाना, गुम का पता लगाना।

ढुढिया – (क्रि.वि.) झारा तलाशी, घर को छान डालना, खोजबीन।

ढुढिआउब – (क्रि.) घर के सामान की एक तरफ से खोजबीन करना।

ढुनढुनाब – (क्रि.) लुढ़कते हुए जमीन पर अग्रसर होना, फूल की ढुनढुनी लगना।

ढुनढुनाउब – (क्रि.) वस्तु को लुढकाना, लुढकाते हुए आगे बढ़ा देना।

ढुनढुनइया – (सं.पु.) लुढ़काते हुए वस्तु को अग्रसर करने वाला व्यक्ति।

ढुनढुनी – (सं.स्त्री.) फूल की कली, अविकसित पुष्प।

ढुनढुनियाब – (क्रि.) फूल में ढुनढुनी का लगना।

ढुरब – (क्रि.) मन मिलने लगना, मेल मिलाप होने लगना, आना–जाना होना।

ढुरकब – (क्रि.) धीरे–धीरे बढ़ना, दबे पाँव आना, चालू करना, राह गहना।

ढुरकइया – (सं.पु.) धीरे–धीरे चलते रहने वाला, आना–जाना, चालू करने वाला।

ढू

ढूकब – (क्रि.) ललचायी आँख से किसी को देखना, एकटक घूरकर देखना।

ढूढब – (क्रि.) खोजना, गुम का पता लगाना, अन्वेषण करना।

ढूँढी – (सं.स्त्री.) प्रजनन पश्चात् नारियों को दिया जाने वाला घी–गुड़ का लड्डू।

ढे

ढेक – (सं.पु.) जलाशय में रहने वाला बड़ी टांग का एक पक्षी विशेष।

ढेकुर – (सं.पु.) ढीकुर, ढीकुर सा लम्बा व्यक्ति।

ढेख – (सं.पु.) लम्बी टाँगों वाला आदमी, एक पक्षी का नाम।

ढेचकब – (क्रि.) लंगड़ाते हुए चलना, असमान्य चलने की चाल।

ढेढा – (सं.पु.) आँख की पुतली सहित सम्पूर्ण प्रक्षेत्र।

ढेपरा – (सं.पु.) खली का बडा सा टुकड़ा, खली जैसा खुरदुरा पाँव।

ढेपरी – (सं.स्त्री.) खली की टुकड़ी, पत्ते का डंठल।

ढेप्पी – (सं.स्त्री.) शीशी का काग, शीशी का ढक्कन।

ढेपुनी – (सं.स्त्री.) पेन का ढक्कन, पत्ता का डंठल का जुड़ाव बिन्दु।

ढेबरी – (सं.स्त्री.) पत्ते के डंठल का वह बिन्दु जो डाली से संलग्न रहता है।

ढेर – (सं.पु.) विलम्ब या देर, वस्तुओं की राशि, टाल–मटोल।

ढेरिया – (सं.स्त्री.) औरतें, लडकियाँ या युवतियाँ।

ढेरा – (सं.पु.) रस्सी कातने वाला काष्ठ का प्लस आकार का एक उपकरण।

ढेला – (सं.पु.) गुड़ का डिगला, मिट्टी का ढेला।

ढेलहा – (सं.पु.) ढेले से युक्त खेत, जो खेत जुता हो।
ढेलहाब – (क्रि.वि.) ढेलों से प्रहार करके मारपीट करना।

ढो

ढोउब – (क्रि.) ढोना, ढुलाई करना, भारा लादकर पहुँचाना।
ढोकब – (क्रि.) पानी पीना, गड़गड़ करके पानी पीना।
ढोकास – (सं.पु.) प्यास, अधिक प्यास की इच्छा।
ढोकबाउब – (क्रि.) गट्गट् पानी पिलवाना, मन पसार पिवाना।
ढोकबइया – (सं.पु.) पानी–पीने वाला, जमकर पीने वाला।
ढोका – (सं.पु.) गढ़े हुए चौकोर पत्थर, बड़े–बड़े पत्थर।
ढोकहुर – (विशे.) बहुत बड़ा, प्रतिष्ठित, भारी भरकम।
ढोग – (सं.पु.) बहाने बाजी, दिखावा, नाटक करना।
ढोगी – (सं.पु.) नाटकबाज, बहाना बनाने वाला, दिखावा करने वाला।
ढोढा – (सं.पु.) गला या गर्दन, बड़ा सा नाला, जमीन का लम्बा गढ़ढा।
ढोढक – (सं.पु.) बहाना बनाना, नाटक करना, कृत्रिम प्रदर्शन, दिखावा।
ढोढबा – (सं.पु.) बरसाती नाला, ऊबड़–खाबड़ गहरे कन्दरा, गला या गर्दन।
ढोढ – (सं.पु.) खेतों का कंदरा, जमीन पर छोटे नाले।
ढोबाई – (सं.स्त्री.) ढुलाई, ढुलाई का पारिश्रमिक, ढोने की मजदूरी।
ढोबाउब – (क्रि.) भारा ढुलवाना, ढोने का कार्य कराना, ढुलाई में सहभागिता करना।
ढोबइया – (सं.पु.) ढोने वाला, भारा उठाने वाला।
ढोबा – (क्रि.) ढुलाई करो, ढुलाई कीजिए, दूसरे के घर से बनाया हुआ खाना लाना।
ढोबरब – (क्रि.) ढुलाई होना, ढुल जाना।
ढोलबा – (सं.पु.) बाँस का बना ढोला, स्त्री.लिंग 'ढोलिया'।
ढोलकी – (सं.स्त्री.) ढोलक, छोटे आकार का ढोल।
ढोलिया – (सं.पु.) बाँस की बनी छोटे आकार का ढोला।
ढोलकिहा – (सं.पु.) ढोल बजाने वाला, जो ढोलक बजाने में प्रवीण हो।
ढोर – (सं.पु.) पशु, जानवर, मवेशी।
ढोरिअऊँ – (विशे.) जानवर की तरह, पशुवत व्यवहार का होना।
ढोरहा – (सं.पु.) मवेशी चराने वाले लोग, पशु का रखवाला।
ढोरब – (क्रि.) क्यारी में पानी देना, नाली द्वारा खेत में पानी पहुँचाना।
ढोसब – (क्रि.) धक्का देना, धक्का मारकर गिराना, ठेलना या अंदर करना।
ढोसरब – (क्रि.) धराशायी होना, लड़खड़ाकर गिरना, किसी पर गिरना।
ढोसबाउब – (क्रि.) धक्का दिलवाना, धक्का देने में मदत करना।
ढोसिहौं – (क्रि.) धक्का लगाउँगा, धक्का लगाउँगी, धक्का दूँगी।
ढोसबइहौं – (क्रि.) धक्का देकर बढ़वाउँगी, मैथुन करवाउँगी।

ढोसबइया – (सं.पु.) धक्का लगाकर गतिमान करने वाला व्यक्ति।

त

तइ – (सर्व.) तुम, तू बड़ों के अनादर सूचक छोटे के लिए स्नेह ।

तइगल – (विशे.) हिस्सा लेने में आगे हो जाने की प्रवृत्ति, लाभांश लेने में आगे।

तइसन – (अव्य) जैसा, उसी प्रकार, जिस प्रकार,पूर्वानुसार ।

तइँती – (सं.स्त्री.) ताबीज या डिठौना, एक प्रकार का आभूषण ।

तइनब – (क्रिया) अपने पक्ष में करना, अपनी ओर खींचना ।

तइनाउब – (क्रिया) अपनी ओर खिंचवाना, खींचने में सहयोग करना ।

तइसा – (अव्य) जैसा चाहो, जैसा कहो, जैसी इच्छा हो, जो उचित हो।

तऊ – (अव्य) फिर भी, उस पर भी, उतने पर भी, तो भी ।

तँऊ – (अव्य) जो, जैसा, जहाँ का तहाँ, यथा स्थान ।

तउने से – (अव्य)इसलिए, इस कारण से, किसी कार्य होने के कारण का कारक।

तउनि कि – (अव्य)इसलिए कि, इस कारण से, तो, एक तकिया कलाम शब्द।

तउलइया – (सं.पु.) तौलने वाला, मूल्यांकन व मापनकर्ता ।

तउलब – (क्रिया) वजन करना, नाप–जोख करना, तौलने की क्रिया।

तउलाउब – (क्रिया) तौलवाना, तौलने में सहयोग करना ।

तउआब – (क्रिया) ताव में आना, गर्म मिजाज का होना, जोश में आना।

तउलहा – (सं.पु.) आमंत्रित व्यक्ति को घर में भोजन न कराके उसके घर में भेजी गयी बिना पकी भोजन सामाग्री ।

तउना – (सं.पु.) मिटटी से अनाज रखने का पात्र का मुख बंद करना, निकास बंद करना, पूर्णतः बंद करना ।

तउहीनी – (सं. स्त्री.) बेइज्जती, अपमान, हँसी उड़ाना, कुबड़ाई करना ।

तकइया – (सं.पु.) ताकने वाला, चरवाहा, रखववाली करने वाला ।

तकथा – (सं.पु.) चौकोर, चारपाईनुमा काष्ठ का पात्र, तखता।

तकबारी – (क्रि.) देखभाल करने की क्रिया, रख–रखाव संबंधी कार्य ।

तकबाही – (सं. स्त्री.) देखभाल करने का दायित्वपूर्ण कार्य, किसी कार्य की जबावदेही ।

तकबाउब – (क्रिया) प्रतीक्षा करवाना, इंतजार कराना, देख–रेख करवाना ।

तकुआ – (सं.पु.) ताकने वाला, देखभाल करने वाला, चरवाहा।

तकबार – (सं.पु.) रखवाली करने वाला, देखभाल करने वाला चरवाहा।

तखरिया – (सं.स्त्री.) छोटे वनोपज को तौलने वाला तराजू बाँस की लगी पलड़ी।

तंगिआन – (सं. स्त्री.) परेशान, बीमार, दुख–तकलीफ में अर्थात् अभाव में।

तंगइया – (सं.पु.) फटे–पुराने कपड़ों को हाथ की सुई से काम चलाऊ सिलने वाला, गद्दा–रजाई तागने वाला।

तँगिआब – (क्रिया) बीमार पड़ जाना, परेशान हो जाना, अस्वस्थ्य पड़ना।

तँगबाउब – (क्रिया) सिलवाना, धागे से गुंथवाना।

तजबीजब – (क्रिया) अंदाज करना, निरूपण करना, नाप–माप एवं वजन का अनुमान लगाना।

तड़बइया – (सं.पु.) ताड़ने वाला, बदमाशी पकड़ने वाला, चतुराई ताक लेने वाला, माप जाने वाला, समझ लेने वाला।

तड़इया – (सं.पु.) निगरानी व देख–रेख करने वाला व्यक्ति।

तड़ाउब – (क्रिया) देखने–ताकने का कार्य करवाना।

तड़ातड़ – (क्रि.वि.) अविरल गति से लाठी या हाथ से पीटने का प्रतीक।

तड़तड़ाव – (क्रि.) आँख में आँसू भर आना, अविरल गति से आँख में आँसू का पदार्पण।

तड़के – (सं.पु.) भोर में, प्रातःकाल, सूर्योदय के पूर्व का समय।

तड़काव – (क्रि) तावबस उछलना, कूदना, आवेशित होकर चौकना, बिजली का चमकना, बादल की गर्जना ।

तड़ाका – (सं.पू.) भोर का प्रथम पहर, तमाचा, तमाचा की ध्वनि।

तड़ाक – (सं.पु.) तत्काल, गाल पर तमाचा मारने से उत्पन्न ध्वनि, बहुत जल्दी।

तड़ंग – (वि.) पूर्ण जवान एवं हृष्ट–पुष्ट व्यक्ति, पूर्ण परिपक्व बालक।

तड़काउब – (क्रि) तड़ाक से मार देना, जमा कर प्राप्त कर लेना।

तता ओठी – (अव्य) हल में संलग्न, बांया बैल तता, दांया बैल ओठी ।

तंत के तार – (सं.पु.) आवश्यकता के अनुरूप, पहले की नाप दूसरी के बराबर।

ततेरव – (क्रि) आँख दिखाना, जलती आग का लुआठा शरीर पर स्पर्श कराके जला देना, बिच्छू का डंक मार देना।

ततकारब – (क्रिया) हल के बांये बैल को बढ़ने के लिए प्रेरित करना।

तघड़ – (वि.) तंदुरस्त, हृष्ट–पुष्ट, धनवान या संपन्नता की भावमयता।

तनइया – (सं.पु.) खींचने वाला, खींचातानी करने वाला।

तनतनाव – (क्रि.) कड़ा रूख अपनाना, खिंचाव की अनुमति, घाव या जख्म में चिलकन होना।

तनधन – (वि.) पूर्णरूपेण तना हुआ, बिलकुल सीधा शरीर, उभरा सीना ।

तनेन – (वि.) सावधान की स्थिति, पूर्णतः अकड़ा हुआ, सीना ताने हुए ।

तन्नाब – (क्रि.) लड़ने के लिए किसी का रूख दिखाई पड़ना, अकड़ना।

तनबाउब – (क्रि) नींव खोदवाना, आधारशिला रखवाना।

तनबइया – (सं.पु.) खींचने वाला, खिंचाई के कार्य में सहयोग करने वाला।

तनब – (क्रि) आधारशिला रखना, खिंचजाना, तन जाना।

तपइया – (सं.पु.) तापने वाला, संपत्ति बर्बाद करने वाला, आग तापने वाला।

तपक तउलिया– (बं.मु.) खुशमद, सीमा से अधिक सेवा भाव।

तपिस्सा – (सं.पु.) तपस्या, तप, कठोर साधना, भूख प्यास, कठिन परिश्रम।

तपाउव – (क्रि.) आग में आभूषण जलाकर खरे–खोटे का परीक्षण करना।

तबल मंजनी – (क्रि.) चौका बरतन करने का कार्य, बर्तन साफ करने का कार्य।

तबौ – (अव्य.) तो भी,तब भी, इतने पर भी, इसके बावजूद भी।

तबहूं – (अव्य.) रोकने के बाद भी, इसके पश्चात भी, तो भी इतने पर भी।

तबउ – (अव्य) तो भी, तो पर भी, इतने पर भी, उस पर भी।

तबहिनै – (अव्य) उसी समय, बीते समय में।

तबहिन – (अव्य) उसी समय, उसी समय, तब।

तबला – (सं.पु.) चौड़े मुख का अल्मोनियम की बटलोई।

तषै – (अव्य.) तब के समय में, बीते समय में, पुराने जमाने में।

तबेलिया – (सं.स्त्री.) छोटे से अल्मोनियम का काँस की बटलोई।

तबाई – (क्रि) अनाज के बर्तन का निकासद्वार को मिटटी से बंद करने की क्रिया।

तबइया – (सं.पु.) फूटे बर्तन या बर्तन के छिद्र को बंद करने वाला व्यक्ति।

तबाउब – (क्रिया) बर्तन के छिद्र को पदार्थ से बंद करवाना।

तमेरबा – (सं.पु.) धातु के बर्तन बनाने वाली एक प्रजाति, बर्तन बेचने वाले

तमूरा – (सं.पु.) गोले के आकार की लौकी के सूखे फल से निर्मित वाद्य यंत्र।

तम्मा – (विशे.) तांबे की तरह बालों वाला, जिसके अधिकांश बाल भूरे हों।

तम्मिआन – (विशे.) फल, फल का कुछ अंश कत्थई हो जाना, कड़ी धूप से आम का दागदार हो जाना।

तमाब – (क्रिया.) भूरा रंग होना, फल का तांबे रंग का हो जाना।

तमोली – (सं.पु.) पान बेचने वाला, छोटे कद का आदमी।

तमखुलहा – (स.पु.) तंबाकू का सेवन करने वाले, तंबाकू रखने वाले।

तमतभाव – (क्रि) किसी पर आवेशित होना, क्रोधित होकर लड़ने को तत्पर हो उठना, गुस्से से भर जाना।

तमखुलिआब – (क्रि) तम्बाकू खाने की अमल की अनूभुति होना।

तमखुलहाई – (सं.पु.) तम्बाकू वाली, झोली तंबाकू की थैली।

तमाखुल – (सं.पु.) सुर्ती, तंबाकू, संज्ञावाची शब्द।

तमहाई – (सं.स्त्री.) तांबे की धातु से बनी हूई, ताम्रपात्र, दागयुक्त आम्रफल।

तमासगीर – (संपु.) खेल–तमाशा देखने वाले एकत्रित लोग।

तमकब – (क्रि.) तामस के कारण उछलना–कूदना, आवेशित होकर गुस्सा प्रदर्शित करना।

तमोलिन – (सं.स्त्री.) पान बेचने वाली, बरई की पत्नी।

तमान – (अव्य) हर जगह, सर्वत्र, प्रत्येक स्थान में।

तयहा – (संपु.) पशुओं को पानी पीने के लिए प्रेरक संकेत।

तँय – (सर्व) तुम, तू के पर्याय में, तुंकारी सुनिश्चित करना।

तरछी – (सं.स्त्री.) दही पात्र, मठा रखे जाने वाला मिटटी का पात्र, पुलिंग तरछा।

तरइना – (सं.पु.) आँख से भरे हुए अश्रु नीर, रोने से पूर्व दुखित आँख की दशा।

तरई – (संस्त्री.) तारागण, आँख के मध्य की काली पुतली।

तरक–मरक – (क्रि.वि.) चाल–ढाल क्रिया कलाप एवं गतिविधियाँ।

तरवा – (सं.पु.) तलवा, पैर के नीचे का भाग।

तरूआ – (सं.पु.) सिर का मध्य भाग, खोपड़ी, सिर।

तरबोरिया – (वि.) तलवे डूबने भर के लिए संचित जल की गहराई।

तरदब्बू – (वि.) जो दूसरे को पूर्ण दबाव में हो, प्रतिबंधित या एहसान से दबा हुआ, दूसरे के अधीन रहने वाला।

तरफदारी – (सं.पु.) पक्षपात करना, अंध समर्थन करना, किसी का पक्ष गहना।

तरी – (अ.) नीचे, निचला भाग, सब्जी या सिकार का मशालेदार रसा ।

तरपन – (क्रि.) विशिष्ट हवन पूजन या धर्म कर्म–के कार्य–गाय दान या गो पूजन।

तरउछी – (सं.स्त्री.) हल में चलने योग्य बनाने के लिए बैल के कंधे में रखे जाना वाला जुँए के विकल्प में काठा।

तर्रोई – (सं.स्त्री.) हरी धारीयुक्त एक फिट लंबी सब्जी का फल।

तरब – (क्रि) पार हो जाना, मुक्त हो जाना, मोक्ष मिलना, किसी वस्तु को तेल से तलना।

तरबइया – (सं.पु.) मुक्त कराने वाला, नाप–जोख करने वाला, सब्जी तलने वाला।

तरइली – (सं.स्त्री.) हल–जुँआ के छिद्र में नियंत्रण के लिए प्रयुक्त होने वाली लकड़ी की कील, नागदंती ।

तरबोर – (वि.) तलवे डूबने भर के लिए संचित जल।

तरेठ – (सं.पु.) कमर के नीचे का भाग–नाभि के नीचे का उठा हुआ प्रक्षेत्र।

तरकी – (सं.स्त्री.) लाख की बनी चूड़ी, मोटी चूड़ी जो कलाई में रहती है।

तरसइया – (सं.पु.) तरसने वाला, ललचाने वाला।

तरसब – (क्रि) ललचाते रहना, ललचायी मनःस्थिति, लालायित रहना ।

तरसाइब – (क्रि) ललचाना, प्रलोभन देकर पिपाशा प्रबल करना।

तर ऊपर – (वि) एक दूसरे के कद, एक बर्तन पर दूसरा बर्तन रखना।

तरहंगा – (सं.पु.) कमर से नीचे धारित वस्त्र, सबसे नीचे की वस्तु।

तरिहौ – (कि.मवि.) नापूँगा, नाप करूँगा, नाप–जोख करूँगी, पहनकर देंखेगें।

तरवेय – (कि.वि.) तारोगे, नाप जोख करोगे, नाप लोगे।

तल्ले–मल्ले – (ब.मु.) भरपूर, जीभर उपयोग, मौज–मस्ती के साथ पर्याप्तता।

तलातल्ला – (वि.) पर्याप्त मात्रा में तरल, भरपूर गीला होना।

तलबा – (सं.पु.) तड़ा जलाशय, तालाब ।

तल्ली – (सं.स्त्री.) छोटी सी कील,नाक या कान में पहने जाने के आभूषण में लगने वाली कील।

तलसवइया – (सं.पु.) खोजबीन करने वाला, अन्वेषणकर्ता।

तलासब – (क्रिया) तलाश करना,खोजबीन करना।

तलसबाउब – (क्रि.) खोजवाना, अन्वेषण करवाना, खोजने में सहयोग करना।

तल्हे – (अ.) तब तक, जब तक, निर्धारित समय के पूर्व, जबलौ।

तलइया – (सं.स्त्री.) पुष्कर, छोटे आकार का तालाब, तालाबनुमा खेत ।

तल्हे – (अ.) तब तक, तबलौ ।

तलघे – (अ.) तब तक, तबलौ, जब तक, अमुक समय तक, अवधि।

तल्लाब – (क्रि) तरल पदार्थ का बहाना, किसी बर्तन से तरल वस्तु का गिरना, धारनुमा शैली में बर्तन से पानी गिरकर बहना।

तलतलउअन – (वि.) जलामयी सघन, पूर्णरूपेण भरा हुआ।

तल्ला – (सं.पु.) पीछा, गहना, देखभाल या निगरानी करना, चर्चा, चिंता जूते के तल का टुकड़ा।

तलफा – (सं.पु.) चाय की भाँति, पानी एवं दूध में हल्दी गुड़ नमक डालकर काढ़ा।

तलफब – (कि.) तड़फड़ाना, बेदना से बेचैन होना, जीभ निकालकर लंबी सांस लेना।

तसलिया – (संस्त्री.) पीतल या अल्मोनियम की बनी बटलोई ।

तसला – (संपु.) अल्मोनियम या पीतल का चौड़े मुखवाला बर्तन।

तहां – (अन्य) जहां, जिस स्थान में ।

तहिना – (वि) जब, जहाँ, जैसे ही अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

तहस–नहस – (वि) सत्यानाश कर डालना, नष्ट–भ्रष्ट, तितर–बितर कर

तहूँ – (सर्व) तू भी, तुम भी ।

तहिआउब – (क्रि) तह लगाना, परत मोड़कर, सुरक्षित रखने की क्रिया ।

तहबइया – (सं.पु.) तह लगाकर सुरक्षित रखने वाला व्यक्ति ।

ता

ता – (योजक) तो क्या जैसे ' ता का करी' अर्थात् तो क्या करें ।

ताई – (सं.स्त्री.) शरीर पर चोट या मार का नीला दाग, कष्ट सूचक चिन्ह

ताउब – (क्रि) बंद करना, मुख या छिद्र बंद करना।

ताकब – (क्रि) रखवाली करना, देखभाल करना, रख रखाव–करना ।

ताका तूकी – (अ.) एक दूसरे की कमी को देखना, झांक–ताक, करने की प्रवृत्ति, ईर्ष्या युक्त निगरानी।

ताके–ताके – (अव्य.) राह देखते, इंतजार करते–करते।

ताकी – (क्रि) क्या देखते रहें? क्या देखभाल करें ? प्रतीक्षा करें।

तागपार – (सं.पु.) विवाह के समय कन्या की कलाई में बांधा जाने वाला शुभ संकेत युक्त एक धागा विशेष ।

तागब – (क्रि) विरल कार्य करना, विरल धागे से कपड़े की सिलाई ।

ताड़व – (कि.वि.) किसी का पता लगाने के लिए छुपकर देखना, नजर गड़ाकर देखते रहना,पूर्णरूपेण परखकर समझना।

तात – (वि.) तारोताजा, एकदम गर्म, ताप गुणवत्ता से युक्त स्थिति ।

ताँत – (सं.पु.) पशुओं की माँसपेशी का तारनुमा धागा।

तॉंतसाही – (विश.) अत्यंत दुबला–पतला, अति कमजोर धागे जैसा।

ताना तूनी – (अ.) एक राय का न होना, अपनी–अपनी ओर खींचना।

ताना – (सं.पु.) वक्रोक्ति, व्यंग्यात्मक उद्बोधन, व्यंग्य कसना या मारना

तानव – (क्रि) अपनी ओर खींचना, लंबी अवधि बढ़ाना, खींचातानी की क्रिया।

तापब – (क्रि) नष्ट करना, आग लगाकर जलाना।

तापुन – (अन्य) तो फिर, निश्चितता बोधक तकिया कलाम।

तामझाम – (क्रि.वि.) ऊपर से अधिक दिखावा, वाह्य आडंबर,कृत्रिम प्रदर्शन

ताम – (सं.पु.) ताम्र धातु या तांबे की वस्तु, तांबा धातु।

ताये – (वि) वशीभूत, किसी व्यक्ति के अधीनस्थ या आधिपत्य में होना।

तार बेउत – (सं.पु.) व्यवस्था बनाना, लाग–बाग बैठाना, सविधा व्यवस्था ।

तार–बार – (अन्य) घरेलू कारोबार, घरेलू स्थिति एवं परिस्थिति ।

तार तुम्मा – (अन्य) योजना के अनुरूप व्यवस्था, कार्य या आयोजन के पूर्व साधन जुटाना ।

तारब – (क्रि) पार करना, मोक्ष दे देना, पहलकर नापना–जोखना ।

तारी – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का ताला, दोनों हथेलियों से उत्पन्न ध्वनि, नाप जोख, क्या कर लूँ? पहनकर नापे।

तारा तूरी – (अ.) नाप लूँ जोख करने की क्रिया।

तारौं – (क्रि) नाप लूँ, पहनकरण देख लूँ, क्या नाप जोख कर लूँ, तार लूं।

तार – (सं.पु.) कारोबार, औकात, हिम्मत, घरेलू स्थिति, धन वैभव,कपड़े सिलने के लिए नाप, समय या व्यवस्था का होना।

तालेबर – (सं.पु.) धन–धान्य से पूर्व सम्पन्न व्यक्ति, ऐश्वर्यवान या पूंजीपति।

ताल मुकाम – (अ.) संगीत का सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान।

ताली – (सं.स्त्री.) लय–धुन मात्रा पर आधारित संगीत गाने वाला, स्वर धुन।

तासा – (विशे.) प्यासा होना, प्यास लग जाना, पानी–पीने की इच्छा।

ताहम – (अन्य) उस पर भी, तो भी, इतने पर भी, इसके बावजूद भी।

ताहीं – (अन्य) तब तो, तो फिर तो ।

ति

तिआह – (वि) तीसरा विवाह, जिसका विवाह तीन बार हुआ हो।

तिउराइन – (सं.स्त्री.) तिवारी की पत्नी, तिवारी जाति की नारी के लिए आदरसूचक संबोधन।

तिकड़मी – (वि) जोड़–गाँठ करके अपना उल्लू सीधा करना।

तिक्की – (वि) तीन चिन्हों वाली तास की तीसरी पत्ती।

तिकड़म – (क्रि) दंद–फंद करना, अनाप–सनाप कार्य, बदमाशी एवं चतुराई।

तिकड़ी – (सं.स्त्री.) तीन लोगों का गुट, झूठी बात सजाकर बाधा डालना, लाग–बांग।

तिकोनियां – (वि) त्रिकोण, तीन कोने का ।

तिकोन – (वि) टेढ़ा–मेढ़ा तीन कोण से अच्छादित, तीन कोने का ।

तिकथी – (सं.स्त्री.) बनायी गई चिता पर संचित लकड़ी।

तिकोन्ना – (वि.) तीन कोना, तीन कोण से घिरा क्षेत्र, त्रिभुजाकार स्थिति

तिखरवइया – (सं.स्त्री.) बातों की पुष्टिकरण करने वाला व्यक्ति, जांचने परखने वाला तीसरा आदमी।

तिघरा – (वि) जस स्थान विशेष में इकट्ठे तीन घर बने हों।

तिजहाई – (वि.) तीजा के समय बनाया जाने वाला व्यंजन।

तिड़कव – (क्रि) नाराज होकर कूदना, आक्रोश वश इधर–उधर करना ।

तिड़िर–बिड़िर– (वि) अस्त–व्यस्त, छितराया हुआ, तितर–बितर।

तिडी मारव – (ब.मु.) बने बनाये कार्य को बिगाड़ देना, होने वाले कार्य को अपने बयान से रोकवा देना।

तितुरचरा – (वि) बालों की ऐसी असामान्य छंटाई जो छोटे बड़े–हों।

तिती – (संस्त्री.) बकरियों को बुलाने के लिए आवाज संकेत।

तितर वितर – (अ.) इधर–उधर होना, बिखर जाना, दूर–दूर होना, अव्यवस्थित होना।

तिताला – (सं.पु.) वाद्य, राग का एक ढंग व तर्ज, तीन ताल पर केन्द्रित गीत।

तिदनिया – (सं.स्त्री.) नारियों का एक आभूषण विशेष का नाम।

तिधिना – (अ.) उस दिन, जिस दिन, पूर्व समय की ओर संकेत ।

तिनहर – (सं.स्त्री.) घास–फूस छाया हुआ घर, तीन दीवालों वाला मकान।

तिन्नी – (सं.स्त्री.) साड़ी व धोती का वह भाग जो पर्तदार मोड़कर नाभि के नीचे कमर के सहारे व्यवस्थित किया जाता है।

तिनहूं – (विशेष) तीनों के तीनों लोग, तीनों आदमी ।

तिनपरवा – (अ.) डेढ़ मास या पैंतालिस दिन की अवधि, तीन पक्ष।

तिन्न–बिन्न – (अ.) तितर–बितर होना, मतभेद की स्थिति का उत्पन्न होना, इधर–उधर फैल जाना ।

तिनबाउब – (क्रि) खिंचवाना, खींचने में सहयोग करना।

तिनबइया – (सं.पु) भारा खींचने वाला, आकृष्टकर्ता।

तिनपतिया – (वि) तीन पत्तियों से खेला जाने वाला तास का खेल, तीन पत्ती वाली वनस्पति औषधि ।

तिनगव – (कि) आक्रोश के कारण आवेशित होना, नाराज होकर उछलना।

तिनगा – (सं.पु.) आग कि चिनगारी, अंगार का एक टुकड़ा।

तिगुनव – (क्रि) तीन गुना करना, तीन गुना बढ़ा लेना, एक का तीन करने की क्रिया, तीन बार बराबर–बराबर मोड़कर एक करना।

तिनगुड्डी – (सं.स्त्री.) एक प्रकार का चर्मकार का एक लोह यंत्र।

तिन्हा – (अ.) जिस दिन, जिस समय, उस दिन।

तिनपहरा – (वि.) तीन पहर का समय, काम ।

तिनहथी – (वि) तीन हाथ लंबी वस्तु, इसका पुलिंग तिनहथा।

तिनबुंदिया – (सं.पु.) तीन सफेद बिंदुओं वाले काले रंग का बरसाती कीड़ा।

तिनगी – (संस्त्री.) आग की छोटी सी चिनगारी।

तिनघरवा – (वि) तीन के बीच में अदल–बदल कर विवाह करना।

तिपबइया – (सं.पु.) तापयुक्त करने वाला, गर्म करने वाला व्यक्ति।

तिपउब – (क्रि) गर्म करना, तपाना, धातु की शुद्धता का परीक्षण करना ।

तिपबाउब – (क्रि) तापयुक्त करवाना, किसी से गर्म करवाना।

तिपइहों – (क्रि.वि) गर्म करूँगा, धातु को आग में डालकर परीक्षण करूँगा।

तिफरव – (क्रि.वि.) किसी वस्तु को तीन बर्तनों में डालना, तीन बराबर भाग में विभक्त करना।

तिबरिआन – (सं.पु.) तिवारियों का मुहल्ला , एक गाँव का नाम।

तिबारा – (वि.) तीसरी बार, तीन बार वही , तीसरे दौर में।

तिबासी – (वि) तीन दिन पहले का बना भोजन, तीन पहर के पूर्व का।

तिवाह – (वि) खेत की तीन बार जुताई करना।

तिमड़ा – (सं.पु.) जिसका सिर तीन कोने का हो, गोल न होकर चपटा सिर, सही आँख होते हुए भी तिरछा या नीचे देखने वाला।

तिमाही – (अ.) तीन माह का कार्यक्रम, तीन महीने के बाद की परीक्षा ।

तिमासी – (वि.) तीन मास की उम्र वाला जो मात्र तीन महीने का हो।

तिरपट – (वि.) बहुत अधिक, बहुत जोर, अत्यधिक तेज, तीव्र गति, तिरछापन।

तिरछाउंआ – (वि) तिरछा होकर देखना या बैठना, टेढ़ी–मेढ़ी स्थिति।

तिरमड्डा – (वि) तिराहा, तीन घर से होने वाले विवाह की व्यवस्था।

तिरपाल – (सं.स्त्री.) धूप या वारिश से रक्षा करने में समर्थ मोटा कपड़ा ।

तिरथहा – (संपु.) तीर्थ यात्रा में गये हुए लोग, तीर्थ स्नान करने जाने वाले।

तिरबेनी – (सं.पु.) त्रिवेणी, किसी व्यक्ति विशेष का नाम, नदी का नाम ।

तिरतिराउब – (क्रि) औपचारिक रूप से या नाम मात्र का किसी वस्तु का वितरण, विरल रूप से जमीन पर घास बिखेरना।

तिरछंऊ – (वि.अ.) तिरछापन लिये हुए, तिरछी स्थिति, वक्रता से।

तिरसूल – (सं.स्त्री.) त्रिशूल, तीन नोकवाला अस्त्र।

तिल्ली – (सं.स्त्री.) चुनौती, सौगंध खिलाना, कसम देना।

तिल – (संस्त्री.) एक अनाज विशेष जिससे तेल बनता है।

तिलबड़िया – (सं.पु.) तिल से बनाया बड़ा, तेल में तला जाने वाले बड़ा।

तिलमिलआउब– (क्रि) आँख की पलक बार–बार गिराना, आँख का चंकाचौंध होना।

तिलाक – (सं.पु.) तलाक, एक चुनौती ।

तिलबाचउथ – (सं.पु.) माघ मास के प्रथम चतुर्थी का परंपरागत त्यौहार।

तिलबढ़वा – (सं.पु.) शनैः शनैः बढ़ने वाला, एक घास विशेष का नाम।

तिलबा – (सं.पु.) तिल का लडडू, शरीर में काले तिल का निशान।

तिलउरी – (सं.स्त्री.) तिल के दाने एवं सफेद कुम्हड़े से बनाया गया बड़ा।

तिलेठ – (सं.पु.) तिल की लकड़ी, दाना रहित तिल का सुखा डंठल ।

तिसरहा – (वि.) तीसरा व्यक्ति, पराया व्यक्ति, अपरचित एवं गैर आदमी।

तिसरबार – (क्रि.वि.) मुण्डन संस्कार के तीसरे चरण का होना।

तिसराउब – (क्रि.वि.) किसी कार्य को तीन बार करना।

तिसरकम – (क्रि.वि.) एक काम को तीन बार करना, उसी–उसी काम को ।

तिसरा – (वि.) तीसरा, तीन–तीन बार गर्भ धारित।

तिसरहा – (सं.पु.) तीसरा व्यक्ति जो दो के बीच में आये, पराया व्यक्ति।

तिहंती – (सं.स्त्री.) तीसरे घर की अपरचित नारी, परायी एवं अपरचित औरत ।

तिहंता – (सं.पु.) तीन लोगों को मार डालने वाला, संबंधियों के अतिरिक्त तीसरा व्यक्ति, पराया या अपरिचित।

तिहइया – (संस्त्री.) खेत की उपज का तीसरा भाग, तृतीयांश।

तिहाव – (विशे.) किसी वस्तु का तीसरा भाग, एक बटे तीन।

ती

तीज – (सं.स्त्री.) महीने की तृतीय तिथि।

तीत – (विशे.) तिक्त, चटपट खाद्य, तेज कड़ुआपन, मिर्च की स्वादानूभूति।

तीतुर – (सं.पु.) तीतर, एक वेगगामी पक्षी ।

तीनव – (क्रि.) पकड़कर अपनी ओर खींचने की क्रिया, किसी के हाथ से कोई वस्तु खींच लेना, अपने पक्ष में आकृष्ट करना।

तीनतकड़म – (ब.मु.) झूठ–फरेब युक्त कार्य, बदमाशी, बेइमानी।

तीन तिखार – (ब.मु.) बार–बार पूँछकर पक्का करना, तीन बार हाँ कहलाना।

तीन पाँच – (ब.मु.) जोड़–गाँठ, बदमाशी या चालाकी, हाँ, ना, दंद–फंद ।

तीरथ – (से.पु.) तीर्थ, तीर्थ स्थान तीर्थ यात्रा।

तीरापाती – (सं.पु.) पंक्तिबद्ध स्थिति ।

तीरूस – (ब.मु.) दो वर्ष पहले का वर्ष, दो वर्ष के बाद आने वाला वर्ष ।

तीसमारी – (ब.मु.) बहादुरी का कार्य, विजय हासिल करना (व्यंग्योक्ति) ।

तीसौदिन – (अ.) हमेशा, हरदम, प्रत्येक दिन।

तु

तुकबइया – (सं.पु.) निशाना लगाना, किसी के प्रति गलत सोचने वाला निशानेबाज।

तुक्का – (ब.मु.) घात लग जाना, संयोग बस सिद्धि मिल जाना।

तुकतोरा – (अ.) हिसाब–किताब समय–संयोग, धनात्मक समय का होना ।

तुक तुक – (अ.) दो बैलों को लड़ने के लिए प्रोत्साहित एवं उत्प्रेरित करने वाली ध्वनि, निशाना लगाकर स्पर्श करना।

तुचुकब – (क्रि) दुबला होना, पचक जाना, दबकर चपटा होना ।

तुड़की – (सं.स्त्री.) किसी चीज का छोटा टुकड़ा, बात–बात में चटकना।

तुतुराव – (क्रि) तोतलाना, अस्पष्ट भाषा निकलना, हकलाना।

तुतुई – (सं.स्त्री.) कुतिया की तरह अधिक संतान पैदा करने वाली।

तुन्न – (ब.मु.) नाराजगी की चोटी पर चढ़ जाना, नाराज होकर आग बबूला होना।

तुपक – (सं.स्त्री.) बंदूक, तोप ।

तुबे तुबे – (सं.स्त्री.) एक खेल खेलते समय की विशेष ध्वनि या शब्दोच्चारण।

तुम्मा – (सं.पु.) गोल आकृति की बड़ी लौकी, स्त्री.. तुम्मी ।

तुमड़ी – (सं.स्त्री.) लौकी का सूखा फल का पात्र।

तुमड़ा – (सं.पु.) बड़े आकार का लौकी का फल।

तुरपब – (क्रि) हाथ से की जाने वाली सुंदर सिलाई, हैण्ड स्टीचिंग ।

तुरपइया – (सं.पु.) हैण्ड स्टीचिंग करने वाला व्यक्ति।

तुरइया – (सं.स्त्री.) तर्रोई प्रजाति की पतली छोटी नश्ल, एक सब्जी का नाम

तुरूप – (सं.स्त्री.) तास के खेल का ट्रंप ।

तुर्रान – (वि.) एकदम से लंबवत बढ़ाव, धूप से सूखकर सिकुड़ा हुआ।

तुर्राब – (क्रि.) हरी सब्जी के फल का सूखकर तुचुक जाना।

तुलुलुआ – (वि) अधिक मात्रा में पतली दस्त, बहुत अधिक तरल पदार्थ का बहना, बहुत अधिक पतला दस्त जाना।

तुलतुलाब – (सं.पु.) किसी कार्य के लिए तुरंत तैयार हो जाने की प्रवृत्ति।

तुलबुलिहा – (सं.पु.) आतुर हो उठने वाला व्यक्ति, गंभीरता विहीन प्रवृत्ति।

तुल्ला – (क्रि.वि.) तीव्रगति से अति तरल रूप में किसी बर्तन या खेत से बहने की स्थिति, छिद्र से पानी का वेग से बहना।

तुलुआइस – (क्रि) आवश्यकता से अधिक मक्खन पालिस करना, अत्यधिक सेवा भाव के साथ सम्मान एवं स्वागत करना।

तुलुल–तुलुल – (अ.) अति चंचल एवं आतुरता युक्त क्रिया कलाप।

तुल्लाब – (क्रि.वि.) बर्तन में पतली धार द्वारा पानी के नीचे बहना, खेत में भने पानी का निकल जाना ।

तुहूं – (सर्व.) तुम भी, आप भी ।

तुहिन – (सर्व) तुम्ही, तुम ही, तू–तू ही।

तू

तू–तू – (सं.पु.) कुत्ते को बुलाने वाली प्रतीकात्मक ध्वनि।

तूल – (ब.मु.) तिल का ताड़ बनाना, समस्या मूलक बना देना ।

तूस – (सं.पू.) कत्थई रंग का पतला कपड़ा।

ते

तेउहार – (सं.पू.) त्यौहार, पर्व का दिन ।

तेरव – (सं.पु.) ताव, नाराजगी युक्त क्रियाकलाप, तामस, उथलापन ।

तेरवा – (अ.) जिसको, जिस ।

तेगब – (क्रि) त्याग देना, सदा सर्वदा के लिए किसी को छोड़ देना ।

तेमा – (अ.) उसमें, तो पर भी, उस पर भी, इतने पर भी, उतने पर भी ।

तेरस – (सं.स्त्री.) महीने में होने वाली त्रयोदशी की तिथि।

तेरहिया – (सं.पु.) तेरही, पुण्य तिथि में सम्मिलित होने वाले लोग ।

तेरही – (सं.) तेरहवे दिन होने वाला मृतक संस्कार, तेरहवीं।

तेरा – (वि.) तेरह संख्यावाची शब्द ।
तोलिया – (सं.पु.) काले रंग का दुर्गन्धयुक्त बरसाती कीड़ा।
तेलपनियार – (क्रि.वि.) आधातेल और आधा पानी मिलाकर लेपन करना।
तेलमस – (वि.) तेल में डूबे हुई वस्तु, ऐसा कागज जिसमें तेल लगा हो ।
तेलमसहा – (सं.पु.) तेल से सना हुआ कपड़ा ।
तेलवाई – (सं.पु.) तेल लगाने का चलता हुआ दौर, विवाह के समय शरीर में तेल की प्रथा।
तेलिआउब – (क्रि) चापलूसी करना या किसी के तेल लगाना, लाठी उठाकर किसी को मारने को उद्यृत होना।
तेलहड़ी – (क्रि) नियमित रूप से तेल रखे जाने वाला मिटटी का पात्र।
तेलिआन – (सं.पु.) तेली जाति के निवासियों की बस्ती एवं मुहल्ला।
तेलहा – (वि.) तेल से सना हुआ, तेल से पकाया गया पदार्थ।
तेलहड़ा – (सं.पु.) तेल रखने का बड़ा पात्र, स्त्री.. तेलहड़ी।
तेलइया – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का मिटटी का बना पात्र जिसमें तेल रखा जाता हो।

तो / तौ

तोका – (सर्व) तुझे, तेरे को, आक्रोश एवं अपमानयुक्त संबोधन।
तोखा – (सर्व) तुझको तेरे को अनादर सूचक शब्द।
तोखार – (वि) बहुत तेज, बड़ा ताकतवर, सबको जीतने वाला।
तोतरा – (वि.) तोतली वाणी बोलने वाला, तोतला।
तोतराब – (क्रि) तोतली भाषा बोलना, तुतलाना।
तोपब – (क्रि) गड्ढे में डालकर ऊपर से मिटटी से ढंक देना।
तोपान – (वि.) एकदम ढका हुआ, पूर्णतः ढका हुआ, बंद।
तोपाउब – (क्रि) किसी दूसरे से चारों तरफ ढकवाना।
तोपइया – (सं.पु.) वस्तु को गाड़ने वाला, वस्तु को चारों ओर से ढकने वाला।
तोबरा – (सं.पु.) बैलों के मुख में लगाये जाने वाला रस्सी का टोप ।
तोरा – (सं.स्त्री.) किसी की सेवा–सुश्रुषा, टहला, चाकरी।
तोरंगा – (सं.स्त्री.) सेवा सत्कार, व्यवस्था के पर्याय में प्रयुक्त होने वाला व्यंग्यार्थ।
तोर – (सं.पु.) आम के नुरूआ का पानी, ऐसी भैंस जिसका पड़ेरू मर चुका हो।
तोरहा – (सं.पु.) तोर, प्ररस से ओत–प्रोत आम।
तोरइकिन – (सं.स्त्री.) सेवा–सुश्रुषा करने वाली, घर में भोजन बनाने वाली।
तोसो – (सर्व) तुमसे, आपसे, अपनत्वपूर्ण संबोधन।
तोहरौ – (सर्व) तुम्हारा भी, आपका भी ।
तोहंरे – (सर्व) तुम्हारे, आपके, तुम्हारे यहाँ, आपके यहाँ।
तोहंई – (सर्व) तुमको, तुझे, तुम्हें, आपको।
तोहंसो – (सर्व) तुममें, आपसे, विश्वनीयता बोधक शब्द।
तोहार – (सर्व) तुम्हारा, आपका ।

तोही – (सर्व) तुमको, अपने से छोटे के लिए, स्नेहिल संबोधन।

तोहारें – (सर्व) तुम्हारा भी, आपका भी ।

तौ – (अ.) उस पर भी, हाँ–हाँ जी, ऐसा ही है, सही है।

थ

थइली – (सं.स्त्री.) छोटे आकार की थैली, सुपाड़ी–तंबाकू रखने वाली झोली।

थकवाह – (सं.स्त्री.) थकावट से उत्पन्न शारीरिक शिथिलता, थकान की अनुभूति।

थकान – (क्रि) थक जाना, परास्त होना ।

थकबाउब – (क्रि) परास्त करना ।

थकान – (सं.स्त्री.) मारना–पीटना, हथेली से पीठ पर प्रहार करना।

थकउहा – (क्रि) थका–मांदा, कुछ थका हुआ, शिथिल।

थक्का – (सं.पु.) तरल पदार्थ का जमकर ठोस रूप जैसे घी–दही ।

थथल मथल – (अ.) टाल–मटोल, लेट–लतीफ करना।

थनहरी – (सं.स्त्री.) माँ का स्तन, शिशु के दुग्धपान करने का दुग्धांग ।

थन्ना – (सं.पु.) स्थान या जगह, अड्डा, सुनिश्चित या निर्धारित जगह।

थपोकब – (क्रि) पर्याप्त मात्रा में सांगोपांग लेपन।

थपकी – (क्रि) गदेली या चपटी चीज से थप–थप करना।

थपरा – (सं.पु.) हथेली से अँगुलियों के सहारे पीटना, तमाचा।

थपथोरब – (क्रि) थपकी द्वारा शरीर पर पिटाई करना, हाथ से जल्दी–जल्दी मारना–पीटना, हथेली से पीठ पर प्रहार करना।

थपडिआउब – (क्रि) किसी को थप्पड़ लगाना, मार देना ।

थम्हब – (क्रि) ठहर जाना या रूकना, पशुओं का गर्भवती हो जाना ।

थमइया – (सं.पु) भार उठाने वाला, संभालने वाला व्यक्ति, गिरती वस्तु को गिरने से बचाने वाला।

थमउना – (ब.मु.) नाम मात्र की प्राप्ति हेतु ब.मु।

थम्हाउब – (क्रि) किसी को कोई वस्तु पकड़ाना, हाथ में दायित्व सौंपना।

थरी – (सं.स्त्री.) मिट्टी से बनाये जाने वाली चक्की का निचला भाग।

थरिया – (सं.स्त्री.) थाली, छोटे आकार का थाल।

थरहब – (क्रि) बीजारोपण करना।

थपथपाउब – (क्रि) अच्छे कार्य के बदले पीठ ठोंकना, धन्यवाद ज्ञापित करना

थरथराब – (क्रि) शरीर का काँपना, घबराहट के कारण शरीर में कंपन।

थलर थुलुर – (अ.) ढीले माँसपेशियों वाला वृद्ध व्यक्ति, ढीले कपड़े ।

थलल मलल – (अ.) थुलथुल–ढुलढुल शरीर हुई माँसपेशियों युक्त।

थहाउब – (क्रि) थाह लगाना, थाह लेना, गहराई का पता लगाना ।

थहबाउब – (क्रि) गहराई का पता लगवाना, किसी से मन लेना।

था

थाक – (सं.पु.) थकावट की अनुसूचित शिथिल हो जाना ।

थाका – (सं.पु) जिसकी संतान न हो उसकी संपत्ति घर में जाकर रह जाना।

थाती – (सं.स्त्री.) धारोहर, जमा पूँजी, धन–अमानत।

थान – (वि.) आभूषणो की संख्या गिनने का एक मानक, नग, अदद।

थानमनंगा – (क्रि.वि.) बिना हाथ से पकड़े, बैलेंस बनाकर पतली रस्सी पर क्रमशः पाँव बढ़ाकर चलना।

थाना बिरवाही– (सं.स्त्री.) सब्जी के पेड़–पौधे आदि।

थाने पमाने – (ब.मु.) स्थायी स्थान, पूर्व स्थान, यथास्थान, अपने नियत स्थान।

थायब – (क्रि) स्थापित करना, हथेली से चपटा आकार बनाना।

थार – (सं.पु.) थाली में तरल व्यंजन फैलाकर उसको सूखने के बाद टुकड़ें–टुकड़ें में विभक्त करना ।

थारी – (सं.स्त्री.) बड़े आकार की थाली ।

थाह – (सं.स्त्री.) गहराई की सीमा, यथार्थ स्थिति का परीक्षण।

थाम्हा – (सं.पु.) खंभा, भार रोपने वाली लकड़ी विशेष, संभाल।

थाम्हब – (क्रि) थाम लेना, गिरते को संभालना, भार उठा लेना ।

थि / थी

थिर – (वि) स्थिर, अटल, ठहरा हुआ, निर्मल, शांत।

थिरकब – (क्रि) नृत्य करने की क्रिया, वृत्ताकार फिरना, स्थिर न रहना ।

थिराब – (क्रि) स्वच्छ जल जो हिलता–डुलता न हो, स्थायी स्थिति ।

थिरकाउब – (सं.पु.) थिरकने वाला, नाचने वाला, नचइया।

थिरकउआ – (वि.) नाचते–थिरकते हुए चलने की शैली।

थीम्हब – (क्रि) संभालना, रोकना, थाम्हना ।

थु

थुंकनी – (सं.स्त्री.) पीकदान, थूकने का पात्र विशेष।

थुकइया – (सं.पु.) पीक मारने वाला, थूकने वाला व्यक्ति।

थुंकिआउब – (क्रि) मूर्ख बनाना, चूना लगाना, किसी को ठग लेना, थूक लगाना

थुथुआब – (क्रि) मुँह फुलाकर मौन हो जाना ।

थुथुराब – (क्रि) मारना–पीटना, मारते–मारते मुँह की आकृति बिगाड़ देना ।

थुथ्थ – (वि.) सूजन हो आना, घाव का सूज आना।

थुथुना – (सं.पु.) मुँह के लिए व्यंग्यात्मक संबोधन।

थुथुआन – (वि) फूला हुआ व्यक्ति, माँस से लदा हुआ अत्यंत मोटा तगड़ा व्यक्ति, मोटापन की भयावह स्थिति।

थुनिहर – (सं.पु.) लकड़ी के लट्ठे से बनाया गया घर व छप्पर।

थुनिहा – (सं.स्त्री.) दो मुख वाला खंभा ।

थुरबाउब – (क्रि) दूसरे से दूसरे को मरवाना–पिटवाना ।

थुरव – (क्रि) मारना, पीटना, कूटना ।

थुरबइया – (सं.पु.) जमकर पिटाई करने वाला व्यक्ति।

थुलुर–थुलुर – (अ.) दुल–दुल एवं माँसल माँसपेशियों का हिलना–डुलना।

थू

थू–थू – (अ.) घृणा करने का प्रतीक, मुख की एक ध्वनि।

थूकब – (क्रि) थूक–थूकने की क्रिया, किसी को निंदनीय सिद्ध करना।

थूथून – (सं.पु.) मुँह का दोनों ओठो वाला प्रदेश, मवेशियों के मुख का अग्रभाग।

थून – (सं.स्त्री.) नया घर बनाने के लिए शिलान्यास।

थूहा – (सं.पु.) बड़ा ढेर, मिट्टी की राशि ।

थून्ही – (सं.स्त्री.) लकड़ी का पतला लट्ठा जो दो मुँही हो।

थे

थेगरी – (सं.स्त्री.) फटे कपड़े में कपड़े की लगी हुई पट्टी।

थेगरिआउब – (क्रि) फटे पुराने कपड़े पर कपड़े की पटटी सिलाई करने की क्रिया।

थेगरिहा – (वि) थेगरी लगा हुआ, जोरा तगोरा हुआ।

थेलउरा – (सं.पु.) गोबर की बड़ी मात्रा में संचित स्थिति।

थेला – (सं.पु.) तरल पदार्थ की संचित स्थिति, मवेशी या आदमी का माल।

थेपइया – (संपु.) शरीर पर लेपन लगाने वाला व्यक्ति।

थो

थो–थो – (वि.) थोड़ा–थोड़ा, कम–कम

थोथवा – (सं.पु.) फूला शरीर वाला व्यक्ति ।

थोंथी – (सं.स्त्री.) ऐसी नारी जो देखने में अधिक मोटी हो किंतु मांसपेशी ढीली हो।

थोथा – (सं.पु.) ज्वार का बड़ा सा फल दाने वाला पूर्ण क्षेत्र।

थोपव – (क्रि) दोषारोपण करना, दूसरे के सिर पर दोष मढ़ना, मोटी–मोटी रोटी बनाने की क्रिया हेतु व्यंग्यात्मक उद्बोधन।

थोपबाउब – (क्रि) मोटी–मोटी रोटी बनवाना, शरीर पर मोटा लेपन चढ़वाना।

थोमराव – (क्रि) गुस्से के कारण मुँह फुला लेना, गाल फुला लेना।

थोभरिआन – (वि) नाराज होकर मुँह फुलाये मौन स्थिति।

थोभर – (सं.पु.) मुँह फुलायी हुई मुख की स्थिति, फूला हुआ मुख ।

थोर – (वि) थोड़ा, अल्पांश, कम, न्यून मात्रा।

थोरहत – (वि) थोड़ा ही, कम ही, अल्पांश ही, नाम मात्र का ही।

थोरका – (वि) थोड़ा सा, नाम मात्र का, अल्पांश मात्रा, थोडे समय का।

थोरू – (वि) थोड़ा सा, जरा सा ।

द

दहमरा – (संपु.) पटक दीजिए, फेंक दीजिए, छोटों के लिए प्रिय गाली।

दइजा – (सं.पु.) दहेज, दइया ।

दइया – (अ.) आश्चर्यबोधक संबोधन, कथन का तकिया कलाम, ध्यानाकर्षण का विशेष शब्द दहेज।

दइया नाहर – (ब.मु.) बहुत बड़ा शरीर वाला, आश्चर्यजनक, भयभीत करने वाली वस्तु।

दहवा – (सं.स्त्री.) दादी के लिए अनुरागात्मक संबोधन ।

दउरी – (सं.स्त्री.) बाँस की बनी एक टोकनी जिसमें चावल धोया जाता है।

दउरब – (क्रि.) दौड़ना, श्रम करना, घर के भीर अशांतिपूर्ण वातावरण, घर के लोगों को परेशान करते रहना।

दउदहन – अकारण समस्या बन जाना, परेशानी मूलक दायित्व , बिना मतलब की समस्या, तबाह करने वाली परिस्थिति।

दउगरा – (संपु.) अत्यधिक जल वृष्टि का एक दौर।

दक्खिन – (सं.पु.) दक्षिण दिशा , उत्तर की विपरीत स्थिति।

दक्खिनहा – (सं.पु.) दक्षिण दिशा में निवास करने वाला , दक्षिण क्षेत्र का निवासी।

दक्खिनायन – (अ.) दक्षिण दिशा की ओर किसी एक वस्तु व्यक्ति की स्थिति।

दकाई – (क्रि.वि.) दमरी हाँकने के कार्य की मजदूरी।

दकबाउब – (क्रि) किसी को डंटवाना, बुरा–भला सुनवाना।

दगाबाजी – (सं.स्त्री.) बदमाशी एवं बेइमानी, चतुराई एवं चालाकी, विश्वासघात।

दगाबाज – (वि.) धोखा करने या धोखा देने वाला, अविश्वासनीय प्रवृत्ति का व्यक्ति।

दगाब – (क्रि) दाग लग जाना , फल में सड़न का चिन्ह बनना।

दगान – (वि.) कलंक या दाग लगा हुआ , सड़न या दाग से युक्त ।

दगा – (सं.स्त्री.) धोखाधड़ी, बेइमानी, बदमाशी, पीठ पीछे कर लेना।

दगबाउब – (क्रि) किसी को गर्म लोहे की छड़ी से दागने में योगदान करना।

दगइला – (संपु.) कलंकित व्यक्ति, दाग लगा हुआ फल, खानदानी दोष युक्त आदमी, समाज से तिरस्कृत व्यक्ति।

दगबइया – (सं.पु.) दागने वाला व्यक्ति , जलाने वाला आदमी विशेष।

दगला – (सं.पु.) अत्यंत मुलायम , पुरानी रूई या कपास।

दगदग – (वि.) हरा–भरा चेहरा , चैतन्य मन , प्रसन्नचित मुख, चरक मन।

दच्च–दच्च – (सं.पु.) बार–बार धक्का लगना, किसी वस्तु पर सिर पटकने से उत्पन्न ध्वनि।

दच्चा – (संपु) धक्का खाना , धक्का लगना, ठोकर।

दक्षिनायन – (वि.) दक्षिण दिशा में सूर्य–चन्द्रमा की स्थिति।

दंतनिपोर – (सं.पु.) बात–बात में निरर्थक दाँत निकालकर हंसने वाला, समय पर कुसमय की बात करने वाला।

दंतब – (क्रि) बैलों के वे दांत का आना जिससे उसकी अवस्था का पता चलता है, प्रलोभन के कारण देर तक बैठे रहना।

दताउब – (क्रि) किसी के शरीर पर कोई वस्तु स्पर्श कराना, सटाकर रखना या सांट देना, अड़ा देना या छुआ देना।

दंतकढ़ा – (वि) जिसके सदैव दाँत बाहर ही निकले रहते हों।

दंतबिजुरा – (सं.पु.) जिसके सामने के दाँत बेडौल हों, बड़े–बड़े दाँतों वाला ।

दंतुरा – (वि.) जिसके दो दाँत ओंठ से बाहर निकले रहते हो।

दंतुली – (सं.स्त्री.) शिशुओं के सुंदर–सुंदर दुधिया दाँत।

दंतइया – (सं.स्त्री.) पीले रंग की बर्र, बर्र आकार का जहरीला कीड़ा ।

ददूबा – (सं.पु.) दादाभाई साहब , पितातुल्य उद्बोधन, बड़ों के लिए आदर सूचक।

ददुआई – (सं.पु.) समकक्ष आयु वाले के लिए प्यार भरा संबोधन।

दनदनान – (क्रिवि.) बिना किसी रोक–टोक एवं हिचकिचाहट के एकदम से निर्भय रहित, सीधे गतिमान।

दनादन – (अ.) एकदम सीधे–सीधे, बेहिचक, जल्दी–जल्दी।

दन्द – (वि) गर्मी के कारण अकुलाहट, ऊष्मा, ऊष्मता।

दंदबइया – (सं.पु.) किसी को गर्माहट देने वाला व्यक्ति।

दंदबाउब – (क्रि) कपड़े से ढँककर किसी को ऊष्मायुक्त करना।

दंद–फंद – (ब.मु.) झूठ का जाल,मिथ्याजाल, बदमाशी एवं बेइमानीयुक्त।

दंदकब – (क्रि) सोते–सोते उछल पड़ना,भय या डर से कूद पड़ना।

ददोर – (संपु.) शरीर में पड़े हुए चकता खुजलीयुक्त शारीरिक चर्म रोग।

ददहा – (संपु.) दाद–खाज वाला व्यक्ति,दाद के रोग से ग्रसित व्यक्ति।

दंदाब – (क्रि) गर्म होना, ओढ़ ढांककर शरीर को गर्म करना।

दनाई – (सं.स्त्री.) एक प्रकार का रोग।

दपकब – (क्रि) छिपना, ओट में होना, शरीर चुराकर बैठने की क्रिया।

दपकी – (सं.स्त्री.) चपटा पात्र जिसमें पानी गर्मी में भी ठंड रहता है।

दपकाउब – (क्रि) धमकी देना, डरवाना।

दपकउना – (क्रि) एहसान जताकर किसी को दबाने की प्रक्रिया।

दपटब – (क्रि) किसी को डांटना– फटकारना, उस पर नाराज होकर गलती एहसास कराना, भूल–सुधार की दृष्टि से डांटना।

दपटा – (सं.पु.) एक के बाद दूसरा छोड़कर तीसरा दिन।

दमनी – (क्रि.वि.) प्रशिक्षणरत बैल, हल में चलने के लिए बैल वाला प्रशिक्षण।

दमकव – (क्रि.) दबाव के कारण कंपन,धरती का दमकना।

दमटा – (सं.पु.) शरीर पर चकत्ते पड़ना, चौड़े आकार की फुड़िया–फुंसी ।

दमरी – (सं.स्त्री.) अनाज की गहराई के लिए बैलों के समूह का एक परिधि में भ्रमण क्रिया, एक दाम विशेष के लिए पर्याय।

दमदमाउब – (क्रि) पैरों से किसी वृक्ष की डाली को हिलाना।

दमना – (सं.पु.) एक प्रकार की घास, घाव सुखाने की वनस्पति, औषधि ।

दये – (क्रि) देना , दीजिएगा।

दयामन – (सं.पु.) दयनीय चेहरे वाला, जिसे देखने पर तरस आये , दया का पात्र।

दराई – (सं.स्त्री.) अनाज का छिलका , अनाज दरने के बाद निकला हुआ छिलका।

दर्राव – (क्रि) दरार पड़ना , जमीन का फटना।

दरकुचरब – (क्रि) ऐसे कुचलना कि दाल की तरह अन्न के दो–तीन टुकड़े ही हो।

दरबाउब – (क्रि) दलने का कार्य करवाना, किसी से धान से चावल बनवाना

दरबदया – (सं.पु.) दलने वाला मजदूर ।

दरा – (सं.पु.) नियत या सुनिश्चित स्थान।

दरबाई – (सं.स्त्री.) लट्ठा गाड़ने का निर्धारित छोटा गड्ढा।

दर – (सं.पु.) किसी बदनाम व्यक्ति का बार–बार नाम आना, लकड़ी गाड़ने के लिए जमीन पर खोदा गया गड्ढा।

दरबरिहा – (सं.पु.) दरबार में बैठने वाला , सदैव बराबर करने वाला, बराबरी ।

दर्रा – (सं.पु.) गड्ढा, जमीन का फटना ।

दरदापट – (क्रि) तामझाम के साथ भयभीत करना , डराकर किसी को भागना।

दरदर – (वि.) खुरदुरायुक्त, चिकनाहट रहित, द्वार–द्वार भटकना।

दरकचरब – (क्रि) पत्थर से अनाज के बड़े–बड़े टुकड़े कर देना।

दरब – (क्रि) दलना,अनाज को दो टुकड़ें में कर देना, जमीन खोदना ।

दरिया – (संस्त्री.) दलिया, एक काम चलाऊ भोजन।

दलका – (क्रि) माघ–पूस की विकराल ठंडी से शरीर का काँपना, ठंडी देकर बुखार चढ़ना।

दरेरब – (क्रि) किसी चीज से कोई चीज रगड़ना या घिसना, घिर्रा मारना।

दलथम्मन – (सं.पु.) दल को संभालने वाला, किसी दल या संगठन का मुखिया, मोटा–तगड़ा शरीरकाय व्यक्ति, वीर–बहादुर।

दलदली – (सं.स्त्री.) माघ–पूस की शरीर कंपाने वाली ठंडक, ठंड देकर चढ़ने वाली बुखार।

दलेला – (स.पु.) मोटा तगड़ा एवं सबसे जीत जाने वाला बैल।

दलबलियाउब– (क्रि) डर–डपट देकर भयभीत करना, डरवाना।

दसराहा – (सं.पु.) दशहरा त्यौहार, दशहरा का पर्व।

दसइया – (संपु.) दशवीं तिथि को जन्मा व्यक्ति, किसी व्यक्ति का नाम ।

दसदगाठ – (सं.पु.) शरीर की सुंदर एवं आकर्षक संरचना, सब प्रकार से ठीक–ठाक, सांगोपांग, सुडौल।

दसमासा – (सं.पु.) दस महीने माँ के पेट रहकर जन्म लेने वाला,पुरूषार्थी।

दसउ – (सं.पु.) दशगात्र का कर्म संस्कार, मृत्यु के दशवे दिन सम्पन्न होने वाला परंपरागत संस्कार ।

दसकत – (सं.पु.) हस्ताक्षर , अपना नाम ।

दसाउब – (क्रि) चारपाई या जमीन पर बिछौना बिछाना, कपड़ा फैलाना ।

दसबाउब – (क्रि) बिस्तर लगवाना , बिस्तर में कपड़े विछवाना।

दसबइया – (संपु.) बिस्तर लगाने वाला व्यक्ति।

दसबाई – (सं.पु.) बिस्तर बिछाने की मजदूरी या पारिश्रमिक।

दहिजार – (सं.पु.) औरतों द्वारा दी जाने वाली प्यार या आत्मीयता की गाली

दहिमास – एक प्रकार का नशा जो गर्मी में पशुओं को मार देने से लगता, व्रत रहने के पश्चात् खाना खाने से लगने वाला नशा।

दहचाल – (क्रि) घर के अंदर उत्पन्न हड़ताल, अशांतियुक्त वातावरण।

दहिबरा – (संपु.) दही और बड़ा, ऐसा बड़ा जो दही में डूबा रहता है।

दहपोंग – (संपु.) मनोविनोद स्वभाव वाला व्यक्ति, मसखरा या हँसोड व्यक्ति, सदैव हँसने–हँसाने वाला व्यक्ति।

दहकब – (अ.) लड़ने की मन्शा से ओत–प्रोत बैल की आवाज।

दहिजरा – (सं.पु.) छोटे एवं प्रिय व्यक्ति को आत्मीय गाली।

दहार – (सं.पु.) अत्यंत गहरा जलकुण्ड, गहरा जलाशय।

दहबोरब – (क्रि) पानी की धार में बार–बार डूबना, बार–बार पानी के नीचे करना।

दहपोंगी – (क्रि) हंसी–मजाक पूर्ण वार्ता करना, मजाकिया बातें।

दा

दाई–माई – (ब.मु.) दाई–माई करना (मुहावरा), जिसका अर्थ गाली देकर बेइज्जत करना।

दाईकेर माइक– (ब.मु.) बहुत पीछे या बहुत दूर तक की याद आ जाना।

दाऊ – (सं.पु.) पिता जी, शिष्ट परिवार में पिता के लिए।

दांकब – (क्रि) तेज आवाज में डाँटना, गलत कार्य के बदले डाँटना।

दाख – (सं.पु.) मुनक्का, किसमिस, ड्राई फ्रूट।

दागब – (क्रि) गर्म वस्तु से किसी के शरीर को दागने की क्रिया, गोली मारना, जलाना।

दांता – (सं.पु.) घात के चारों ओर निकले माँसपेशियों के कांटे।

दांती – (सं.स्त्री.) रोज–रोज का घरेलू वाद–विवाद, निशदिन की अशांति।

दादू – (सं.पु.) छोटे बच्चों के लिए स्नेहिल संबोधन।

दादी – (सं.स्त्री.) अन्याय, बेइमानी या बदमाशी, कुन्याय करना।

दादाभाई – (सं.पु.) बडा भाई, बड़े भाई के लिए आदरपूर्ण संबोधन।

दाबब – (क्रि) दबाना,ऊपर उठने से रोकना, किसी घर में पर्दा डालना, गला दबाने की क्रिया।

दांया – (विशे.) दाहिना, दांया अंग, दांया हाथ।

दावा – (क्रि) दबाइए या दबा दो, घटना को लुप्त करने की क्रिया।

दारा – (सं.पु.) नियत स्थान, सुनिश्चित जगह, वह स्थान जहाँ वह खड़ा था।

दाय – (सं.पु.) समस्याजन्य स्थिति, कष्टदायी क्रिया, विपत्ति मूलक, आफत, उलझना।

दार – (सं.स्त्री.) दाल–दलहन अनाज, कच्चीदाल।

दारी – (अन्य) बारी या क्रम, आक्रोश में एक तकिया कलाम।

दारि भात – (ब.मु.) पकी हुई दाल एवं चावल, अत्यंत सरल।

दासन – (सं.पु.) सतह पर बिछाया जाने वाला वस्त्र।

दि / दी

दिड़कब – (क्रि) चटकने की क्रिया, बात–बात में खीझ जाना।

दिदी – (स.स्त्री.) अम्मा, माँ, माता, गाँव की माताओं के संबोधन।

दिनदहाड़े – (ब.मु.) खुलेआम, सबके सामने।

दिन देउसे – (अ.) दिन दहाड़, दिन के उजाले में।

दिनमान – (सं.पु.) दिन के प्रकाश में, दिवस में।

दिनार – (सं.पु.) पुराना व्यक्ति,वह जो अधिक उम्र का हो और कम का दिखता हो।

दिया – (सं.स्त्री.) दीपक, प्रकाश हेतु मिटटी का बर्तन।

दियावंती – (सं.स्त्री.) दिया जलाने का काम।

दिहिराउब – (क्रि) तोड़कर दरार बना देना, दरार पड़ जाना।

दिहिन – (क्रि) दिया, दी हुई ,दी गई स्थिति।

दिनउधी – (सं.स्त्री.) आँख का वह रोग जिससे दिन में धुंधला दिखता है।

दिहिराब – (क्रि) दरार पड़ जना, चिटक जाना।

दिन परत – (अ.) आने वाले समय में, जैसे–जैसे समय आयेगा, और आगे।

दीख – (सं.पु.) सुपरचित स्थान या जगह, देखा हुआ स्थल, जाना–पहचाना ।

दीदा – (सं.पु.) दिल या आत्मा, इच्छा या मन, हिम्मत व साहस ।

दीदी – (सं.स्त्री.) माता या अम्मा, ग्रामीण पुराना उद्‌बोधन माँ के लिए, भारत माता।

दीन – (क्रि) दिया हुआ, बिना मूल्य के स्वेच्छा से प्राप्त किया हुआ ।

दु

दुअरिया – (सं.स्त्री.) दरवाजे के आकार का छोटा सा संकरा निकास द्वार।

दुआर – (सं.पु.) घर का द्वार, निकास स्थल या दरवाजा, घर का सामना।

दुआरचार – (सं.पु.) द्वार पर बारात का लगना, द्वारचार।

दुअरउठा – (सं.पु.) घर के द्वार पर नीचे भाग में लगने वाली लकड़ी की चौखट।

दुआस – (सं.स्त्री.) हिंदुओं की द्वादशी तिथि ।

दुअरा – (सं.पु.) घर का निकास द्वार, दरवाजा या सामना।

दुआरे – (सं.पु.) घर के दरवाजे का मैदान , द्वार के सामने का स्थल।

दुआह – (विशे.) जिसकी पत्नी मरने पर दुबारा विवाह हुआ हो।

दुबराब – (क्रि) दुबला होना, कमजोर हो जाना, शरीर का सूख जाना।

दुबराउब – (क्रि) किसी को दुबला एवं कमजोर करवाना।

दुबराम – (विशे.) शरीर से दुबला–पतला एवं दुबराया हुआ।

दुइबेरी – (वि.) दो बार , दो चक्र में, दो दौर, सुबह–शाम।

दुइकलिया – (सं.स्त्री.) दो जगह से गाँठ लगने वाला पुरूषों का ऊपरी वस्त्र।

दुइनली – (सं.स्त्री.) दो मुँहवाली वस्तु, दो नली बंदूक ।

दुईजन – (वि.) दो व्यक्ति , दो जन।

दुइलरी – (सं.स्त्री.) दो लड़ी से निर्मित वस्तु , ऐसा आभूषण या माला।

दुईहंथी – (सं.स्त्री.) दोनों हाथ से पकड़कर लाठी से प्रहार करना, दो हाथ लंबी हड्डी, दो हाथ से लगने वाली।

दुइकच्छी – (सं.स्त्री.) दो कांछ लगाने वाले धोती का एक विशेष पहनावा।

दुइज – (सं.स्त्री.) द्वितीया , किसी पक्ष की दूसरी तिथि।

दुकब – (क्रि) धोखा खा जाना, चूक जाना, पीछे रह जाना।

दुकेला – (वि) जो अकेला न हो, एक और साथ में साथी हो।

दुक्की – (सं.स्त्री.) दो चिन्हों वाली तास की द्वितीय पत्ती, दो मुँह या दो खण्ड वाली वस्तु।

दुकड़ा – (सं.पु.) दो कौड़ी, दो टका, दो कड़े वाली वस्तु, एक पैसे का चौथा अंश।

दुखेभा – (सं.स्त्री.) दुःख का वृतांत, व्यथा कथा, दुखद चर्चा।

दुखबइया – (सं.पु.) घाव में मारकाट, पुनः दर्द को उभार देने वाला ।

दुखहाई – (सं.पु.) अभागिन,दुर्भाग्यशाली, नारी के लिए गाली।

दुक्खम–सुक्खम–(अ.) दुख–सुख, हाल–समाचार, दिनचर्या संबंधी चर्चा।

दुगधा – (सं.पु.) दुविधा या संदिग्धता, अनिश्चितता पूर्ण परिस्थिति।

दुगुनब – (क्रि.वि.) एक का दो और दो का चार करना, सीधी दोगुना बढ़ा देना, किसी वस्तु को दो बराबर पर्त में मोड़ना।

दुतिहा – (सं.पु.) दूती करने वाला, शिकायत पहुँचाने वाला।

दुतिया – (सं.पु.) दूसरा प्राणी बोलने के लिए सहारा, दूसरा सहयोगी।

दुदधू – (सं.पु.) दूध या थन, वात्सल्य बोधक।

दुदहड़ी – (सं.स्त्री.) दूध रखने का मिटटी का पात्र।

दुदुनुआ – (सं.पु.) व्यंग्य बोधक शब्द जिसका अर्थ होता है बहुत छोटा।

दुदनिया – (संस्त्री.) एक फली में दो दाने वाली ज्वर, दो मनका वाली माला नारियों का चाँदी का आभूषण।

दुधिया – (वि.) शिशु के छोटे–छोटे प्रारंभिक दाँत, दूध के रंग का सफेद।

दुनबइया – (सं.पु.) कपड़ों को मोड़ने वाला,खेत की दो बार जुताई करने वाला।

दुनबउबा – (क्रि) खेत की दो बार जुतवाई करवाना, कपड़ा फोल्ड करवाना।

दुधारू – (सं.स्त्री.) पर्याप्त दूध देने वाली , गुणवान एवं लाभकारी भाव पर केन्द्रित।

दुनपट – (क्रि.वि.) लचीली वस्तु को बीच से मोड़ देना दो परत करना।

दुनउब – (क्रि) बीच में मोड़ देना,किसी को पकड़कर मसल देना।

दुपहरिया – (संस्त्री.) दोपहर का समय,मध्यान्ह।

दुफसली – (वि.) दोनों फसलों में उत्पन्न होने वाला।

दुफसिलिहा – (संपु.) ऐसा खेत जिसमें रबी एवं खरीफ की दोनों फसलें बोई जाती हों।

दुफराउब – (क्रि) बराबर–बराबर दो पात्रों में पदार्थ डलवाना।

दुफरब – (क्रि) किसी बर्तन के पदार्थ को दो पात्र में करना, एक से दूसरे पात्र में रखना, दो परत करना।

दुफरबइया – (संपु.) एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पदार्थ डालने वाला।

दुबरटठा – (संपु.) नितांत दुर्बल व्यक्ति, दुबला–पतला एवं कमजोर शरीर।

दुभतिहा – (संपु.) दो भाँति का व्यवहार करने वाला, मुँह देखी करने वाला।

दुरघट – (वि.) दुर्लभ बड़े मुश्किल से मिलने वाली प्रियवस्तु या व्यक्ति।

दुरदुर – (वि.) रवेदार चिकनाहट विहीन जो चिकना न हो,खुरदुरी स्थिति, कुत्ते को दुतकारने वाला एक विशेष ध्वनि संकेत।

दुरदुराउब – (क्रि) अपमानित करके घर से भगाना, अच्छा व्यवहार न करना।

दुरूर दुरूर – (वि) हाथ से स्पर्श करने पर जो रवेदार हो , चिकनापन विहीन।

दुर – (अ.) कुत्ते को हटाने का शब्द, दूर होने के अर्थ में।

दुराव – (संपु.) कसी से गुप्त रखने का भाव, कपट हल।

दुराभाव – (सं.पु.) मुनमुटाव, बुराभाव, परायापन का भाव, भेदयुक्त भाव।

दुरबीन – (सं.स्त्री.) दूरबीन,दूर तक की चीज देखने वाला यंत्र विशेष।

दुलहिन – (सं.स्त्री.) दुल्हन , तत्काल ससुराल आयी नयी औरत, पु.दुलहा।

दुलरिया – (वि.) प्राणों से प्रिय बेटी, आज्ञाकारी बहू, लाड़–प्यार से पली लड़की।

दुल्ली – (संस्त्री.) दुल्हन, कम उम्र की दुल्हन के लिए स्नेहिल संबोधन ।

दुलराब – (क्रि) बच्चों द्वारा माँ बाप के साथ वात्सल्य मय वार्ता।

दुलदुल – (सं.पु.) अपरचित या लगाव रहित आदमी,दूसरा आदमी, पराया व्यक्ति।

दुसकरम – (क्रि) किसी कार्य को पुनः करना , एक ही काम को बार–बार करना।

दुसरबार – (सं.पु.) मुण्डन संस्कार के बाद दूसरी बार सिर से बाल का घोटना।

दुही पल्हान – (ब.मु.) थन या बाल से दूध दुह लिया गया या दुल्हन शेष।

दुहबाउब – (क्रि) दोहन करवाना, दुहने में योगदान करना।

दुहबइया – (सं.पु.) दूध दुहने वाला व्यक्ति विशेष।

दुहब – (क्रि) शोषण करना,गाय–भैंस का दूध दोहन।

दुनौ – (वि) दोनों, दोनों जन, दोनों के दोनों।

दूधपीमा – (वि.) दूध पीता शिशु, छोटा सा अंजान बच्चा, दुधमुँहा।

दूसरा – (वि) कक्षा दो , दो नग, ऐसी गाय या भैंस जो दूसरी बार प्रजनन की हो।

दूबर – (वि.) शारीरिक दृष्टि से कमजोर दुबला–पतला ।

दूमब – (क्रि) निर्धारित स्थान से हिलाना–डुलाना, नियत स्थान से हटाना।

दूम दड़ाका – (ब.मु.) लंबी चौड़ी बातें करना, अब्बे– तब्बे करना, बढ़ा–चढ़ाकर।

दे

देई – (क्रि) दें, दूँ, दीजिए, दो, दे दो, दे दीजिए।

देइहौं – (क्रि) दूँगी, देऊँगी,देऊँगा।

देउनहर – (वि.) देनदार, तत्काल देने वाली प्रवृत्ति का उदारवादी व्यक्ति।

देउता – (सं.पु.) देवता, देवतुल्य, पूजनीय व्यक्ति, देवता की प्रवृत्ति वाला।

देउरानी – (सं.स्त्री.) छोटे भाई की पत्नी, छोटी बहू, देवर की पत्नी।

देखा सिखी – (अ.) दूसरों को देखकर करने का भाव, नकल।

देखाव – (क्रि) दिखना , दिखाई पड़ना।

देखनउक – (वि.) देखने लायक, दर्शनीय देखने योग्य।

देखबइया – (संपु.) देखने के लिए आये दिन आये हुए लोग, देखने वाले। देनहर दाई फटहा पइला (ब.मु.) जो उदारवाहिता के पर्याय में व्यग्यार्थ ।

देखान – (विशेष) दिख गया , देख लिया, देखने में आ गया।

देवाला – (संपु.) देवी–देवताओं का नियत स्थल, देवांगन, दिवालिया घोषित करना।

देबै – (क्रि) दूँगा, देंगे, दिया जाएगा, आप देंगे ?

देबारी – (सं.स्त्री.) दीवाली, दीपावली का त्यौहार, दीप दान का अवसर।

देवरब – (क्रि) कोई वस्तु देने की प्रवृत्ति , उदारवादी दृष्टिकोण।

देबरबा – (सं.पु.) देवर के लिए स्नेहिल संबोधन, पति का छोटा भाई।

देबरउत – (सं.पु.) देवर का पुत्र , पति के छोटे भाई की संतान।

देवी कढ़त – (क्रि) चेचक निकलना , चेचक का प्रकोप होना।

देविअन – (सं.स्त्री.) देवी का मंदिर, देवालय का परिसर, जहाँ देवी–देवता विराजे हों उस नियत जगह के लिए संबोधन।

देबरब – (क्रि) कोई वस्तु देने का मन बनाना।

देबइया – (सं.पु.) देने वाला, दाता , दानकर्ता ।

देबरउतिन – (सं.स्त्री.) देवर की पुत्री।

देवाई – (क्रि.वि.) देने की शैली, देने की उदारवादिता, देने का ढंग या भाव।

देसहा – (सं.पु.) अपने गाँव से उत्तर की दिशा में निवास करने वाला व्यक्ति, सुविकसित गाँव का निवासी।

देसहाई – (संस्त्री.) गाँव की सीमा प्रतिस्थापित होने वाली ग्राम देवी।

देसावरी – (सं.पु.) देशी वस्तु या सामान, देश के भीतर निर्मित,वस्तु।

देही – (सं.पु.) आत्मा, शरीरी जीव जन्म।

देहाती – (वि.) गाँव देहात का निवासी, ग्रामीण।

देहंगर – (वि) शरीर से हृष्ट–पुष्ट, मोटा–तगड़ा व्यक्ति, पर्याप्त मजबूत।

दो

दोअपोंअ – (अ.) आनाकानी करना, वादा खिलाफी करना।

दोऊ – (वि.) दोनों युगल, दोनों का दोनों।

दोख – (सं.पु.) अशुभ,दोषयुक्त जिसे देखने से अनिष्ट हो अशुभ संकेत।

दोखी – (सं.पु.) दोष आरोपित व्यक्ति, अशुभकारी व्यक्ति।

दोख पाप – (अ.) भूल–चूक, शरीर के विविध दोष, कलंक का पाप शारीरिक व्याधि।

दोगही – (सं.स्त्री.) घर के सामने का खुला ओसरा।

दोगी – (सं.स्त्री.) पशुओं के गले में या छोटे बच्चों के गले।

दोनिया – (सं.स्त्री.) पत्ते से बनायी जाने वाला कटोरीनुमा पात्र।

दोमा – (वि.) दूसरी बार गर्भवती हुई गाय या भैंस।

दोसी – (सं.पु.) मित्र या दोस्त,प्रिय साथी, सहेली, दोषी।

दोहरा – (सं.पु.) सुपाड़ी का छोटा सा टुकड़ा, एक साथ दो नारियल फोड़ना।

दोह – (सं.पु.) पुनर्विवाह,जिसकी पत्नी मर चुकी हो।

दोहनी – (संस्त्री.) दूध दुहने वाली मिटटी का पात्र, घी या मठा रखने वाला।

दोहपन – (सं.पु.) दोष, किसी कार्य का दोषरोपण, कलंक।

दोहराउब – (क्रि.वि.) एक घड़े के ऊपर दूसरा घड़ा रखना, पुनरावृत्ति करना।

ध

धइकार – (सं.पु.) बंसोर के समतुल्य एक जाति विशेष।

धउपट – (संज्ञा) कठोर परिश्रम, आवश्यकता से अधिक दौड़ धूप।

धउरब – (क्रि) दौड़ना , तीव्र गति से चलना।

धउराई – (सं.स्त्री.) दौड़ने का प्रतिफल, मेहनत का परिणाम।

धउरइयां – (सं.पु.) दौड़ने वाला व्यक्ति, दौड़ लगाने वाला।
धउरतियां – (अ.) दौड़ते हुए त्वरित एवं तीव्रगति से आना, तत्परता के साथ।
धउकब – (क्रि) हवा देना या हवा देने की प्रक्रिया।
धक्किआउब – (क्रि.वि.) धक्का देने की क्रिया, किसी को स्पर्श करना।
धकाउब – (क्रि) बिना किसी अवरोध के जबरदस्ती कार्य कर लेना।
धपकब – (क्रि) रूक–रूक कर चलना, लंगड़ाती हुई चाल।
धजी – (सं.स्त्री.) फीते के आकार की पुरानी धोती का एक लंबा टुकड़ा।
धड़ – (सं.पु.) कमर के ऊपर का भाग, जड़ के ऊपर का तना भाग।
धउधउ – (वि) उदार मनवाला, उदारवादिता, देने वाला।
धड़ल्ले – (अ.) बिना अवरोध या भय बाधा के, वेग से, बेधड़क।
धता – (सं.पु.) पाठ पढ़ाना, मूर्ख बनाना, झूठ बोलकर झटका मारना।
धत – (अन्य) तिरस्कार के साथ मनाही का एक शब्द।
धंधबइया – (सं.पु.) हथकड़ी लगवाने वाला, जेल में बंद करवाने वाला।
धतुरहा – (सं.पु.) शांडिल्य गोत्री ब्राम्हण की एक प्रजाति।
धतूर – (सं.पु.) कनक का एक पौधा, धतूरा।
धंधउब – (क्रि) पुलिस द्वारा किसी को बंद कराना, बंधवाना या हथकड़ी डलवाना।
धंधमल – अनिश्चित, असमंजस युक्त।
धंधोला – (सं.पु.) आग की लपट, होली, ज्वाला।
धंधकब – (क्रि) जलती लौ निकालना, गर्म लगना।
धन्नासेठ – (सं.पु.) प्रसिद्ध धनिक, बहुत धनवान व्यक्ति।
धनाब – (क्रि) मवेशियों का गर्भवती होना।
धनखर – (स.पु.) धान बोई जाने वाले खेत, एक फसली जमीन।
धन्नि – (वि.) धन्य है, धन्यवाद है।
धन्ने – (सं.पु.) धरना, हड़ताल करना, हठपूर्वक किसी के द्वार पर बैठना।
धनपनिया – (सं.स्त्री.) धान मे रूका हुआ पानी, धान के खेत में पानी का भरा रहना
धनइत – (सं.पु.) बड़ा धनवान,धन का घमण्ड दिखाने वाले के लिए व्यंग्य बोधक।
धनुकधारी – (सं.स्त्री.) धनुष–बाण धारण करने वाला, किसी व्यक्ति विशेष का नाम
धन्नी – (सं.स्त्री.) गाटर के विकल्प रूप में प्रयुक्त होने वाली चौकोर इमारती लकड़ी।
धवाई – (सं.स्त्री.) दौड़ने की चाल गति, दौड़ने की शैली।
धबइया – (सं.पु.) दौड़–धूप करने वाला व्यक्ति।
धबा – (सं.पु.) एक प्रकार की वनस्पति पौध, एक जंगली पेड़।
धमधामाउब – (क्रि) किसी की पीठ पर मुष्टिका से जल्दी–जल्दी मारना।
धम्म–धम्म – (अ.) पोलाईयुक्त सतह पर चलने से होने वाली धम्म–धम्म ध्वनि।
धम्मन – (सं.पु.) हारमोनियम वाद्य का पर्दा, हवा देने वाला वाद्य का हिस्सा।
धमाका – (सं.पु.) आघात, प्रहार, धमाका, घूँसा।
धमधूसड़ – (सं.पु.) असामान्य रूप से मोटा–तगड़ा, लेद निकला व्यक्ति।
धमकब – (क्रि) खाना खाने के लिए व्यंग्यात्मक संबोधन, मारने के लिए प्रतीक, मैथुन करना।
धमकाउब – (क्रि) धमकी देना, खाना खिलवाना।

धरपकड़ – (क्रि) दो लड़ते हुए व्यक्ति के मध्य बीच–बचाव करना, पुलिस द्वारा अपराधी को पकड़ा जाना।

धरमसंकट – (ब.मु.) अनिर्णात्मक स्थिति, निर्णय न ले पाना, बीच में लटका हुआ।

धरनहर – (सं.वि.) अवसर या उत्सव विशेष में पहनी जाने वाली साड़ी या आभूषण, झगड़ा में बीच–बचाव करने वाली।

घरबांधि – (अव्य) जबरिया किसी से कार्य करवाना , बिना मन के दबाव।

धरबाउब – (क्रि) वस्तु को रखवाना, रखवा लेना, कुत्ते से कटवाना।

धरबइया – (सं.पु.) वस्तु को रखने वाला, रखवा लेने वाला व्यक्ति।

धरनउक – (विशे) संभाल कर रखे रहने लायक।

धराउब – (क्रि) किसी के हाथ में कोई वस्तु रख देना , वस्तु दे देना।

धरभर – (क्रि.वि.) धार के बल , धार वाले हिस्से से प्रहार करना।

धरब – (क्रि) काटना या काटकर खा जाना, मार डालना।

धसब – (क्रि) पाँव धसना, अंदर हो जाना।

धा

धाई कमाई – (ब.मु) कड़ेपरिश्रम की कमाई, दौड़–धूप करके की गई संचित संपति।

धाउब – (क्रि) दौड़ना, किसी की पुकार सुनकर दौड़ पड़ना।

धाकड़ – (वि.) दबंग, दमदार, सरहग, सुविख्यात।

धाँधर – (सं.पु.) पेट का दोनों कोष्टक, पेट–पीठ के बीच का भाग।

धाये तोरा – (अ.) जल्दी–जल्दी दौड़–धूप करके की गई त्वरित व्यवस्था।

धाय–धाय – (अ.) तोप या बंदूक की ध्वनि, वायु उत्सर्जन पर होने वाली ध्वनि।

धांय – (सं.स्त्री.) तोप बंदूक के छूटने का शब्द, ऊपर से वस्तु गिरने से उत्पन्न आवाज।

धारी – (सं.स्त्री.) लकीर, लंबवत रेखा जो वस्त्र और फल पर दिखे।

धारीदार – (वि.) खड़ी लकीर युक्त वस्त्र या फल या वस्तु।

धारा – (वि.) बर्तनों की संख्या , इतने नग या इतने बर्तन।

धि

धिकब – (क्रि) गर्म होना, पक जाना, तापयुक्त होना।

धिकबइया – (सं.पु.) तपाने वाला, गर्म करने वाला।

धासब – (क्रि) दबाव देकर जमीन के अंदर कर देना, खंभा गाड़कर गड्ढे की पोलाई को मिटटी से भरना।

धिमाउब – (क्रि) रफ्तार को कम कर देना।

धिमाब – (क्रि) तेज रफ्तार को कम कर देना।

धिमान – (वि.) कराहते हुए शांति स्थिति में हुई स्थिति।

धिरउब – (क्रि) किसी की हँसी उड़ाना, परेशान करना, खिसवाना।

धिरबाउब – (क्रि) किसी से किसी को परेशान करवाना या हँसी उड़वाना।

धिरबइया – (सं.पु.) खिसवाने वाला या हँसी उड़ाने वाला व्यक्ति।

धु

धुंइधी – (सं.स्त्री.) अपच की डकार, अजीर्ण होने पर उत्पन्न गैस।

धुआस – (सं.स्त्री.) आटा की शैली में पीसने के लिए पानी से धुली व सूखी हुई उड़द की छिलका रहित दाल।

धुआंदेव – (ब.मु.) कष्ट पहुँचाना, नुकसान करना, किसी कार्य का अति करना, सीमा तोड़कर चलना।

धुइनी – (सं.स्त्री.) मोटी लकड़ी में लगाई गई आग जो बहुत दिनों तक न बुझे।

धुकुर–धुकुर – (अ.) धू–धू करके दीपक की लौ जलना, अति मंदगति से नाड़ी चलना, सांस टूटती हुई धड़कन।

धुकुर –पुकुर – (सं.पु.) दिल का धक–धक होना, जी–घबड़ाना, चित की अस्थिरता।

धुकुरब – (क्रि) पिटाई करना, पीट देना, मार पीट देना।

धुकब – (क्रि) धोखा खा जाना, चूक जाने की क्रिया, गति में रूकावट पड़ना

धुकधुकी – (सं.स्त्री.) भय लगना या डर का बना रहना, हृदय की धड़कन।

धुक – (सं.पु.) अमल का स्मरण , व्यसन की याद, नशा करने की इच्छा ।

धुक्का – (संपु) किसी आदत या व्यसन की इच्छा।

धुधुरिआन – (वि.) धूल–धूसरित शरीर, धूल से सनी वस्तु।

धुधुरिआब – (क्रि) धूल–धूसरित होना , धूल में सन जाना।

धुधुंरूक – (सं.पु.) सूर्यास्त के समय का परिदृश्य, हल्का अंधेरा छा जाना ।

धुधुआन – (विशे.) मस्त , मास से लदा हुआ , मोटा तगड़ा।

धुधुरिआउब – (क्रि.वि.) किसी के धूल लगा देना, किसी को सस्ते में ठग लेना।

धुड़ेहरी – (सं.स्त्री.) होली का दूसरा दिवस , फाग का दिन।

धुतुरूआ – (सं.पु.) शहनाई की शैली का मुँह से बजने वाला बाजा।

धुध्धा – (सं.पु.) धूल या धूलयुक्त गर्दा, उड़ती हुई धूल।

धुंधुआउब – (क्रि) व्यंग्य एवं आक्रोश में ही प्रयुक्त, आग लगाना , नष्ट कर देना।

धुधुआब – (क्रि) खा–पीकर मोटा–तगड़ा होना, मोटापा से फूल जाना।

धुन – (सं.पु.) एकाग्र मस्ती, स्थिर चित्त, लगन, अपनी गति में मस्त रहना।

धुनकबइया – (सं.पु.) रूई ओटने वाला, मारपीट करने वाला।

धुनकबाउब – (क्रि) रूई की धुनाई करवाना, भरवाना।

धुनकब – (क्रि) रूई औटना, कपास की धुनाई करने की क्रिया।

धुनब – (क्रि) जोर से सिर पर प्रहार करना, जोर से पिटाई करना।

धुनाई – (क्रि.वि.) किसी की पिटाई, मरम्मत करना, रूई की ओटाई करना।

धुपासे – (अन्य) भूखे–प्यासे रहकर कार्य करना, कड़ी धूप में।

धुरब – (क्रि) चूर्ण का छिड़काव , मन रखना या बहलाना।

धुरकब – (क्रि) घाव में पावडर छिड़कना ।

धुरिआउब – (क्रि) धूल लपेटना , धूल लगाना।

धुरचटटा – (स.पु.) एक तरफ से बिना अंतर के विशुद्ध झूठ या झूठ बोलने वाला।

धुरमुस – (सं.पु.) लोहे का एक औजार जिससे गिट्टी की कुटाई की जाती है।

धुसड़ा – (वि.) धूल से ओत–प्रोत, धूल की तरह रंग वाला।

धुसड़ाव – (क्रि) धुल–धूसरित हो जाना, शरीर की चमक उड़ जाना।

धू

धूधूर – (सं.स्त्री.) धूल–धूल का संचित समूह , सूखी मिटटी के कण ।

धूर – (सं.स्त्री.) धूल–धूल के कण, मिट्टी के महीन अंशों का समूह ।

धूरि केरि जेड़री– (ब.मु.) सफेद गप्प मारना, झूठ का पुल बाँधना।

धूसड़ – (सं.पु.) धूल के रंग, धूल से सना हुआ।

धो

धोई धाई – (अ.) साफ सुथरी, पूर्ण पवित्र, निश्कलंक स्वच्छ छवि।

धोउब – (क्रि) धोना या साफ सफाई करना।

धोखिया – (सं.स्त्री.) धोखा देने वाली, जो धोखे से पैदा हो गई हो।

धोखिआब – (क्रि) धोखा खा जाना, सही ढंग से न समझ पाना।

धोगरव – (क्रि) मारना–पीटना, टुकड़े कर देना।

धोंधा – (सं.पु.) बहुत बड़ा छिद्र, मोटा–ताजा एवं फूला व्यक्ति।

धोधाव – (संपु.) मोटा–तगड़ा, इतनी अधिक मोटाई या असामान्य मोटापन।

धोधवा – (क्रि) अच्छे मोटे–तगड़े लंबे–चौड़े आदमी के लिए मनोविनोदी उद्बोधन।

धोबाउब – (क्रि) धुलवाना, साफ करवाना, धुलने में सहयोग करना।

धोबइया – (सुं.पु.) धुलाई करने वाला, साफ करने वाला।

धोमन – (सं.पु.) किसी वस्तु के धोने से शेष निकला पानी, मैल युक्त पानी।

धोबान – (विशे.) धुला हुआ , धोया हुआ , साफ सुथरा।

धोहा – (सं.पु.) भूसा में लट्ठ मारने से उत्पन्न ध्वनि, धोह की आवाज निकलना।

धंधोला – (क्रि.वि.) लंबी लपट के साथ जलना, होली की भाँति लौ।

धौ. विधौ. – (अ.) अनिश्चितता या अनिर्णयात्मकता की स्थिति शंका या संदेह।

न

नइबा – (वि.) नवीन वस्तु, अनूठी या नयी नवेली , वाद में क्रय की गयी वस्तु।

नइहर – (सं.स्त्री.) किसी नारी का मायका, मा–बाप का गाँव।

नउगिरही – (सं.स्त्री.) नारियों का आभूषण।

नउतिआन – (क्रि) भूत–प्रेत की झाड़–फूँक करते, जादू–टोना से मुक्ति दिलाना।

नउबंधा – (सं.पु.) नया बाँध, किसी खेत विशेष का नाम, नवीन मैंड़ से युक्त बांध।

नउलखा – (सं.पु.) नौ लाख के लागत का बना स्वर्ण आभूषण।

नउपरहा – (सं.पु.) नया व्यक्ति, पूर्व से अपरिचित, जो नया–नया आया हो, जो पहले कभी भी न देखा हो।

नउपर – (सं.पु.) नया खेत जो पहली बार जोता–बोया गया हो, वह व्यक्ति जो किसी कार्य को पहली बार कर रहा हो।

नउतिहा – (सं.पु.) झाड़–फूँक करने वाला तांत्रिक विद्या का ज्ञाता।

नउठट – (क्रि) नया पुराना करना, टूटी छप्पर में नए बाँस लगाना।

नउआ – (सं.पु.) नाई नापित, स्त्री.लिंग नउनिया नाउन।

नउआन – (सं.पुं.) नाई जाति के निवासियों की बस्ती या मुहल्ला।

नउमी – (सं.स्त्री.) रामनवमी का पर्व, नवमी तिथि, कक्षा नौ किसी संख्या की नौ इकाई।

नउधरामन – (वि.) मान–सम्मान में आघात पहुँचाने योग्य कार्य, प्रतिष्ठा दाँव, में लगाने लायक कार्य, ऊँगली उठने योग्य।

नउसिखिया – (सं.पु.) नया कार्य का नया कर्ता, जो परिपक्व न हो, नया–नया, किसी कार्य का कर्ता, नया प्रशिक्षणार्थी।

नउआनार – (ब.मु.) एक साथ दो काम , आम के आम गुठलियों के दाम ।

नकनकाब – (क्रि) नाक के बल बोलना , अस्पष्ट बोलना।

नकसुर – (क्रि) नाक के बल बोलने वाला या बात करने वाला।

नकलोहू – (सं.प्र.) कुछ रक्त कुछ पीप का एक साथ निकलना।

नकुआब – (क्रि.वि.) नाक के बल स्वर निकलना, बात करते समय नाक से बोलना।

नकटा – (सं.प्र.) बेशर्म आदमी, जिसे लाज–शर्म न महसूस हो।

नकबेसर – (स.प्र.) नाक की नथुनी, वृत्ताकार आकृति में नाक में धारण करने वाला स्त्रियों का आभूषण।

नकबेल – (सं.प्र.) नाक की नथुनी , बृत्ताकार आकृति में नाक में धारण करने वाला स्त्रियों का आभूषण।

नकुआ – (सं.प्र.) नाक, सर्वोच्च वस्तु, सर्वोत्तम एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति, मुख्य भाग या प्रमुख व्यक्ति।

नकुना – (सं.प्र.) नाक की तरह नुकीले आकृति का आम।

नगेसड़ – (स.प्र.) छोटा बच्चा जो बिना कपड़े पहने स्थिति में हो या जो दिगंबरी साधू–संत मुनि, नंग–धडंग रहने वाला व्यक्ति।

नगड़ा – (सं.पु.) दुष्ट व्यक्ति, वस्त्र विहीन।

नगरा – (स.पु.) काठ के बने हल का एक अंग, कृषि औजार का एक नाम, हल का कंट्रोलर पार्ट।

नगरिया – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का नगाड़ा, छोटी नगरी, चर्मकार जाति का वाद्ययंत्र।

नगीचे – (अ.) नजदीक , समीपस्थ, पास में, आस–पास में।

नगमाचै – (सं.पु.) नागपंचमी का पर्व, श्रावण मास की पंचमी तिथि, नाग देवता को दूध पिलाये जाने वाला दिवस।

नगाड़ा – (सं.पु.) बहुत बड़े आकार का नगाड़ा, किसी गोपनीय वार्ता का प्रचार–प्रसार, नगाड़ा पीटना, बघेली मुहावरा।

नगड़ई – (विशे.) नग्न प्रदर्शन, विधि विरूद्ध एवं अशिष्ट व्यवहार।

नगाव – (क्रि) अस्वस्थ्य व्यक्ति, बीमार पशु, शिथिल मन, रोग–व्याधि ग्रसित

नगद – (विशे.) अच्छा या मजबूत, नगद।

नगिनिया – (सं.स्त्री.) नागिन नामक सर्पिणी, नग्न रहने वाली प्रजाति की साध्वी।

नचाउब – (क्रि) नचाना, घुमाना,फिराना, नृत्य कराना।

नचबाउब – (क्रि) नृत्य करवाना, किसी को परेशान करना।

नचइया – (सं.पु.) नाचने–गाने वाला, नृत्य–गान पेशे में संलग्न व्यक्ति।

नचउना – (सं.स्त्री.) मोजरा, नाचने का पारिश्रमिक, नृत्य क्रिया के बदले प्राप्त धन।

नटबा – (सं.प्र.) छोटा बछड़ा, हल में न चला हुआ बैल।

नटिया – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का पतला नाटा बैल, कम उम्र का नया बछड़ा।

नटब – (क्रि) कहकर बिलकुल बदल जाना, एक उत्तर में अड़े रहना।

नटई – (सं.स्त्री.) राग या आवाज, कण्ठ या गला, कण्ठ का स्वर।

नजरिआउब – (क्रि) नजर लगाना, डींठ लगाना।

नतपतोह – (सं.स्त्री.) नाती पत्नी, पुत्र की बहुरानी, प्रपौत्र वधू।

नतिनिया – (सं.स्त्री.) पुत्र की पुत्री, प्रपौत्री, बेटे की बेटी।

नतिअउ – (सं.पु.) नाती, पुत्र का पुत्र, प्रपौत्र, स्नेहिल आम व्यक्ति।

नतीबा – (सं.पु.) नाती, प्रपौत्र के लिए स्नेहिल संबोधन।

नथिआ – (सं.स्त्री.) नारियों के नाक का वृत्ताकार आभूषण।

नथुना – (सं.पु.) नाक, बड़े आकार की नथुनी।

नदबा – (सं.पु.) बटलोई के आकार का मिट्टी का पात्र।

नदाब – (क्रि) शांत हो जाना, झगड़ा खतम हो जाना, नाराजगी का दूर होना।

नधब – (क्रि) काम में संलग्न होना, निरंतर काम में लगे रहना।

नधबाउब – (क्रि) खेत में हल चलवाना, हल जुआ में बैल को संलग्न कराना।

नधबइया – (सं.पु.) नांधने वाला, बैल को हल जुआ में संलग्न करने वाला, हलवाहा।

ननिआउर – (सं.पु.) नाना का घर, माता का मायका।

ननदोई – (सं.पु.) पति का बहनोई, ननद का पति, ननदोय।

नन्हिआउब – (क्रि.वि.) छोटे–छोटे टुकड़ों में विभक्त करना, महीन या बारीक रूप में कटाई करना।

ननद – (सं.स्त्री.) पति की बहन।

नपिया – (सं.प्र.) जमीन नापने वाला, नाप–जोख करने वाला।

नपउना – (सं.पु.) नापने की मजदूरी, नपाई शुल्क।

नपाउब – (क्रि) नाप करवाना, सीमा का नाप–जोख कराना।

नपबइया – (संपु.) नाप–जोख करने वाला, नापने वाला।

नपना – (सं.पु.) जिससे नापने का कार्य किया गया हो, मापक यंत्र।

नबेरब – (क्रि) छांटना, मनपंसद चयन करना, उपयुक्त छंटाई।

नमाईन – (ब.मु.) बड़े मुश्किल में, नया–नया, नमाइन के तुपकदार मूड़े में गोरसी, लोकोक्ति।

नमइंहा – (सं.पु.) जो पहलीबार कोई चीज देखा हो, अंजान व अनभिज्ञ।

नरइया – (सं.स्त्री.) नाले से छोटी आकार वाली जल प्रवाहिनी अनाज जैसे गेंहूँ का शेष डंठल, नाड़े के आकार की पतली रस्सी।

नरबा – (सं.पु.) नाला, नाले के आकार की जमीन की आकृति।

नरेहटी – (सं.पु.) गला या गर्दन, कण्ठ की उभरी हड्डी।

नररब – (क्रि) किसी को अकारण परेशान करना,प्रताड़ित करना।

नरिआब – (क्रि) जोर–जोर से चिल्लाना,गला फाड़कर आवाज निकालना।

नरिबाउब – (क्रि) किसी को चिल्लाने के उत्प्रेरित कर देना।

नरई – (सं.स्त्री.) फसल का डंठल।

नरिअर – (सं.पु.) नारियल का फल, नारियल का पेड़, झुकावदार आकार के खपड़े के लिए संबोधन।

नरिया – (सां.स्त्री.) छप्पर में छाया जाने वाला खपड़ा जो ऊपर भाग में रखा जाता है।

नरिअरा – (सं.पु.) नालीनुमा शैली का खपड़ा, नारियल का पेड़।

नर – (सं.पु.) कय एवं दस्त का एक साथ होना।

नखा – (सं.पु.) वर्षा के पानी से निर्मित पतला नाला, छोटा मोटा नाला।

नरघेहिआ – (सं.स्त्री.) पानी निकास की पतली नाली, बर्तन साफ करने का जल।

नरदा – (सं.पु.) वह स्थान जहाँ निश्चित रूप से भोजन बनाने वाले बर्तनों को साफ किया जाता है।

नलही – (सं.स्त्री.) लोहे की नाल लगी जूती, नाल ठोकी वस्तु।

नसान – (विशे.) खराब प्रवृत्ति या बिगड़ी आदत, विधवा औरत।

नसाब – (क्रि) वस्तु का खराब हो जाना, बिगड़ जाना, विकृत सरंचना।

नसाउब – (क्रि) बने काम को बिगाड़ देना, बनाकर मिटा देना।

नसतड़क – (क्रिवि.) नसों का इधर–उधर हो जाना, शरीर के किसी अंग में मोच का आ जाना, अपने नियत स्थान से नस का हट जाना।

नसबइया – (सं.पु.) बिगाड़ देने वाला व्यक्ति , खराब करवाने वाला।

नहकोट – (क्रि.वि.) नाखून से बना शरीर का चिन्ह, शरीर को नाखून का छिलाव, शरीर में नाखून की रेख।

नंग धड़ंग – (विशे.) नंगा, वस्त्र विहीन, दिगंबर।

नंघा – (विशे.) नग्न व्यक्ति, वस्त्र विहीन या निपर्दा व्यक्ति, दुष्ट प्रवृत्ति वाला व्यक्ति,मुँहफट्ट एवं बदनाम आदमी।

ना

नांई – (अ.) समतुल्य, समान, तरह, भाँति, नापित।

नाउब – (क्रि) डालना,किसी वस्तु में कोई वस्तु डालना।

नाकब – (क्रि) लांघना, पार होना, ऐसा बैरियर जिसे कूदकर या लाँघकर पार हो सकें, पशुओं के प्रवेश निषेधक, अवरोधक।

नागा – (सं.पु.) नंगे वदनवाले साधु, बीमार व्यक्ति या बुखार की वेदना, खराब कार्य।

नाट – (संस्त्री.) पानी भरे बाँध से अतिरिक्त जल निकास का रास्ता, पानी का उछाल द्वार।

नाटा – (सं.पु.) ठिगने कद का प्राणी,बछड़ा या यौवनायुक्त नया बैल।

नाटर घुसुआ – (ब.मु.) इधर का उधर करना, भीतर का बाहर करना।

नातर – (अ.) नहीं तो, अन्यथा या तो फिर, बल्कि, इसके बिना, नहीं तो, फिर वैसा, नहीं फिर ऐसा।

नात – (सं.पु.) रिश्तेदार , संबंधी।

नांद – (सं.पु.) मिटटी का बना हुआ टब, पानी भरने का पात्र।

नादब – (क्रि) टिक पाना या किसी का किसी के पास रह पाना।

नादिया – (सं.पु.) मंसा मुँहवाला बैल, महादेव के प्रतीक रूप में मान्यता प्राप्ति बैल।

नाधब – (क्रि) बैलों को खेत जोतने के लिए हल में संलग्न करना।

नापब – (क्रि) नापना, नाप–जोख करना, पैमाइश करना।

नामी – (क्रि) नामजादी, मशहूर, नामधारी, माना–जाना नाम।

नार – (सं.पु.) जोर से आवाज करना, पशुओं का अविरल गति से करूण क्रंदन, लताओं की उपलताएँ।

नासब – (क्रि) काम को बिगाड़ देना, नष्ट करना, आशा में पानी फेरना।

नान्ह – (वि.) छोटे–छोटे कण, महीन या बारीक, अतिसूक्ष्म या छोटा, बहुत छोटे–छोटे अंश।

नाहर – (सं.पु.) शेर या बाघ, बहुत खतरनाक एवं भयावह कीड़ा।

नाहक – (सं.पु.) बिना मतलब के, अकारण, व्यर्थ में ।

नि

निकठउरे – (सं.पु.) खुला मैदान, बिना छाया की जगह, खुले आसमान के तले उठने बैठने लायक सममतल भूमि।

निकबर – (क्रि) विशुद्ध रूप से, पूर्णतया, शुद्ध, मिलावट रहित, एक ही राशि या प्रजाति का समूह।

निकचाब – (क्रि) काम तमाम कर डालना, थोड़ा सा बचना, स्थान या उद्देश्य के करीब, कुछ नजदीक पहुँच जाना।

निकूच – (वि.) आवश्यकता से अधिक कृपण, आवश्यक आवश्यकता के मद में भी न खर्च करने वाला।

निकहा – (वि.) सुंदर एवं अच्छा, प्रशंसनीय, कल्याणकारी कार्य।

निकाई – (सं.पु.) भलाई, अच्छापन, सुंदरता, कुशलता।

निकरबाउब – (क्रि) किसी को कहकर बाहर निकलवाना।

निकरब – (क्रि) पकड़कर घर से बाहर करना, किसी को गाँव से निकाल देना, निकालना, बाहर करना।

निकरबइया – (सं.पु.) बाहर निकालने वाला, निकाल लेने वाला।

निकास – (सं.पु.) अंदाज, परीक्षण, सत्य का ज्ञान।

निकार – (सं.पु.) निकलने का रास्ता, निकास द्वार, घर के दरवाजे एवं द्वार की दिशा,घर का सामान।

निखिद्ध – (वि.) निकृष्टि वस्तु, विचारभाव मानसिकता, क्रियाकलाप, व्यवहार, भोजन, निंदनीय एवं घृणित व्यक्ति।

निखोसा – (सं.पु.) जड़ या मूर्ख, मूल्य विहीन व्यक्ति, बिना सामर्थ्य का कार्य करने वाला, अनादर सूचक एक गाली।

निखरा – (क्रि) अंतिम निर्णय, रहस्य जानना, विवरण लेना।

निगहा – (सं.पु.) काले रंग का चीटा, एक कीड़ा–मकोड़ा विशेष।

निगही – (सं.स्त्री.) स्त्री. वाचक, चींटी काले रंग का मटा।

निघारब – (क्रि) चक्की से आटा एकदम निकाल लेना।

निचोउब – (क्रि) दबाकर या ताकत लगाकर निचोड़ना, दूध दुहना, शोषण करना, रससार चूस लेना।

निचोबइया – (सं.पु.) निचोड़ लेने वाला, निचोड़ने वाला।

निचोमन – (सं.पु.) निचोड़ने से निकलने वाला तरल पदार्थ, कपड़े से निकला गंदा पानी।

निचटटा – (वि.) बिलकुल या सामने, एकदम या एकबारगी, बिना बाधा–विघ्न के, बहुत दूर तक का दिखना।

निचटबइया – (सं.पु.) एकदम से पानी पोंछकर साफ करने वाला।

निचटब – (क्रि) बर्तन से पानी पोंछ सा लेना, जमीन से पानी साफ करना चाट सा लेना।

निचटबाउब – (क्रि) पानी पोछवाना, पोछवाकर साफ करवाना।

निचंदर – (वि.) खुला एवं निर्मल आकाशीय स्थिति, बादलरहित एवं प्रकाशयुक्त आकाश।

निछला – (वि.) स्वतंत्र एवं स्वंच्छद, विशुद्व वस्तु, वह अनाज जिसमें दूसरे अनाज के दाने न मिले हों।

निछरब – (क्रि) फली के छिलके का अलग होकर दाना निकल आना, फट जाना।

निछक्का – (क्रि.वि.) ऊपर ही ऊपर छलांग लगाना, एकदम से बिना शरीर का अंग स्पर्श हुए कूद जाना।

निछरबाउब – (क्रि) फली के दाने अलग करवाना, कपड़े फड़वा देने में योगदान करना।

निछरबइया – (सं.पु.) फली से दाने अलग करने वाला, कपड़े फाड़ने वाला व्यक्ति।

निझरिगा – (क्रि.वि.) पौधे में लगे फल का पूर्णतः झड़ जाना,फल के पककर समाप्त हो जाने की स्थिति, चुकता हो जाना।

निझररब – (क्रि) पेड़ में फले फल का खत्म हो जाना, फल पेड़ में न दिखना।

निझारब – (क्रि) फल का झड़ जाना, समाप्त हो जाना।

निझरबइया – (सं.पु.) पेड़ से फल तोड़कर पेड़ को खाली कर देने वाला।

नितलबे – (वि) ऐसा कार्य जिसके उत्पादन में स्वयं का स्वामित्व हो , जिस व्यवस्था से किसी को लेना–देना न हो।

निथारब – (क्रि) बर्तन से पानी निकाल लेना और एक बूँद भी न छोड़ना।

निथरबइया – (सं.पु.) एक–एक बूँद पानी निथारने वाला व्यक्ति।

निथरबाउब – (क्रि बर्तन से एक–एक बूँद पानी निथरवा लेना।

निदाउब – (क्रि) खेत की निराई करना, अन्न के पौधे से घास निकालना।

निदूहब – (क्रि) किसी का पूर्णरूपेण शोषण करना, किसी को ऐसे लूटना कि उसके पास कुछ न बचे।

निदबाउब – (क्रि) किसी से खेत में घास की निरवाई करवाना।

निदइया – (सं.पु.) निराई करने वाला व्यक्ति।

निदाई – (वि) निदाई की मजदूरी, मेहनताना।

निधाँस – (वि.) बिलकुल खुला बदन, शरीर के ऊपरी भाग की नग्न स्थिति, खुली पीठ, खाली पेट, बिना कुछ खाये–पीये स्थिति।

निनार – (वि.) अलग–थलग, रहन–सहन, पृथक भोजन व्यवस्था, आत्म निर्भर एवं बँटवारा करके पृथक व्यवस्था।

निधुंआ – (वि) मंद आग, धुँआ रहित अंगार।

निपटव – (वि.) काम से उबरना, किसी काम को कर लेना, किसी से झगड़ा करने की धमकी, प्रश्न के अनुरूप जबाव देने को तैयार रहना।

निपटबइया – (सं.पु.) निपटारा करने वाला, निर्णय करके मामला समाप्त करने वाला।

निपटारा – (क्रि.वि.) फैसला, निदान, निर्णय।

निपोकनंगा – (ब.मु.) जिसके और कोई न हो, धन संपत्ति बिलकुल न हो ऐसा आदमी, दिवालिया हुआ सा व्यक्ति।

निपटाउब – (क्रि) मामले का रफा–दफा करवाना, काम खत्म करवाना, निपटारा करवाना।

निपरदा – (वि.) खुल्लम–खुल्ला, पूर्णतया नग्न,वस्त्र विहीन शरीर, शर्मनाक स्थिति।

निपांग – (सं.पु.) जो पाँव से अपंग हो, संबल विहीन, चलने–फिरने में असमर्थ, साधन–सुविधा रहित।

निपोरबा – (सं.पु.) नगण्य व्यक्ति, ऐरा–गैरा आदमी, अयोग्य एवं अस्तित्व विहीन, अपमान या उलाहना जन्य गाली।

निपुरा – (सं.पु.) पुरूर्षो के लिए एक गाली, स्त्री.. निपुरी।

निपुरचुपुर – (अ.) कार्य में आना–कानी करना, अस्पष्ट एवं संदिग्ध क्रियाकलाप।

निपोरबाउब – (क्रि) किसी के द्वारा किसी को मरवा डालना, किसी से अपने मूत्रांग की चमड़ी खुलवाना।

निपोचब – (क्रि) छिलके से दाना निकाल लेना, शान दिखाना नाव का सउखि निवोचब, बघेली मुहावरा।

निपचब – (क्रि) पोल, जगह पाकर पुलक जाना, अस्त्र के मूठ का निकल जाना।

निपचबइया – (सं.पु.) पोलाई से घुसकर आर–पार हो जाने वाला व्यक्ति।

निपचाउब – (क्रि) पोलाई से निकलवाना।

निपोरब – (क्रि) निकालना, दाँत काढ़ना, मूत्रांग की चमड़ी खोलना, मार डालना।

निपोर – (क्रि) कुछ नहीं, बाँस का एक पोर , अपशब्द एवं अश्लील का पर्याय, अपशब्द, गाली (ब.मु.)।

निफारब – (क्रि) कोई नुकीली वस्तु चुभाकर आर पार कर देना।

निफरब – (क्रि) अनाज की बाल निकालना , इस पार से उस पार चुभकर निकलना।

निबहब – (क्रि) उपयोग या उपभोग, गुजारा करना,कार्य में प्रयोग करना।

निबाहब – (क्रि) अंत तक साथ निभाना, किसी का जीवन निर्वाह, दायित्व को अच्छे ढंग से पूरा करना।

निबहिबइया – (सं.पु.) निभाने वाला , सामान का प्रयोग करने वाला, निबहि करने वाला।

निबला – (सं.पु.) धन–दौलत से गरीबजन, प्राणी एवं शरीर से कमजोर जान।

निबलाब – (क्रि) दिन–प्रतिदिन कमजोर होना, सूख जाना व रोग ग्रस्त होना।

निबहुर – (विशे.) जो जाकर कभी वापस न आये।

निबलई – (सं.स्त्री.) निर्बलता, कमजोरी।

निबलान – (वि.) जो अति दुर्बल हो गया हो , दुबला हुआ व्यक्ति।

निमिया – (सं.स्त्री.) नीम का छोटा सा पेड़, किसी नारी विशेष का नाम, नीम की तरह कड़वी वाणी बोलने वाली।

नियाउ – (सं.पु.) न्याय का निर्णय , विवादित विषय का न्यायिक निपटारा, उचित–अनुचित का फैसला।

निरदंग – (सं.पु.) पूर्ण स्वतंत्र एवं स्वच्छंद , जिस पर किसी प्रकार का भार का दायित्व न हो।

नियर – (अ.) नजदीक, समीप, पास।

निरामन – (सं.पु.) खर–पतवार निकालकर रखा गया कचरा, खरीफ फसल के खेत से निकली घास।

निरजला – (वि.) निर्जल,बिना पानी के , बिना पानी पिये व्रत।

निरउही – (सं.स्त्री.) फसल से घास निकालने का पारिश्रमिक, खरीफ के पौध धान या कोदो समूह से निकली घास।

निराई – (सं.स्त्री.) निरउहीं या निरमन, निदाई।

निरहोर – (सं.पु.) घुटने और पाँव के बीच का हिस्सा, पेडूरी के ऊपरी भाग।

निरभोटब – (क्रि) समूल रूप से पत्ती या फल तोड़ना, इस तरह किसी पौधे से फल तोड़ना कि उसमें कुछ न बचे।

निरा – (वि) एकदम, बिलकुल, नितांत, बिना मिलावट के, विशुद्ध।

निरदई – (वि.) कठोर हृदय वाला, मोह ममता विहीन, जिसके दया–धर्म न हो।

निरमा – (सं.पु.) बर्तन या कपड़ा साफ करने का साबुन, विकल्प वाला चूर्ण।

निरबाह – (सं.पु.) जीवन–यापन, दैनिक दिनचर्या पूरी करना, गुजारा चलाना, पार लगाना या वचन निभाना।

निरमोहिल – (वि) जिसके हृदय में मोह–ममता का अंश तक न हो।

निरवंसी – (वि.) जिसके वंश में कोई न बचा हो।

निरबारब – (क्रि) विवादित वस्तुस्थिति को सुलझा देना, जान से मार डालना, उलझन से मुक्त करना।

निरबरबइया – (संपु) उलझन से मुक्त कराने वाला, विवाद से सुलझाने वाला।

निल्लोह – (वि) मुख में बिना दाना पानी डाले की स्थिति, पूर्णतः खाली पेट, सुध खबर न लेने वाला।

निलज्ज – (वि.) जिसके लज्जा–शर्म न हो।

निसोच – (वि.) बिना चिंता के सोच–विचार रहित, विघ्न–बाधा विहीन।

निहुरइयां – (अ.) निहुरें–निहुरे, झुके–झुके, लुके–लुके।

निहाई – (संस्त्री.) लोहा पीटने वाला लोहार का लोहे का औजार, धार निकालने वाला लोह का गुटका।

निहुरब – (क्रि) किसी के सामने किसी व्यक्ति का झुकना।

निहुराउब – (क्रि) किसी वस्तु को अपनी ओर झुकाना, अपने आगे झुकाना, अपने अधीन या काबू में करना, अपनी ओर लटकाना।

निहुरबइया – (अ.) हमेशा सामने झुक जाने वाला, किसी को झुकाने वाला।

निहरबइया – (सं.पु.) देखने वाला, दूसरे को समझने व देखने वाला।

निहारब – (क्रि) देखना, नजर टिकाये रखना, दृष्टि लगाना, मुँह ताकना।

निहरबाउब – (क्रि किसी से दिखवाने के लिए दबाव बनाना।

नी

नीक – (वि) अच्छा या शुभलायक, उत्तम स्वभाव व उच्च विचार वाला हितकर, सुंदर तथा साफ–सुथरी छवि युक्त।

नीक नागा – (ब.मु.) भला–भला, ऐन–केन प्रकारेण, अच्छा–बुरा जैसा बन पड़ा, (ब.मु.) किसी प्रकार से कोटा पूर्ति।

नीके – (अ.) अच्छे ढंग से स्वस्थ्य एवं सानंदपूर्वक, सकुशल एवं प्रसन्नचित, अच्छी तरह से।

नीछब – (क्रि) छिलका छीलना, फली से दाने निकालना, पहने कपड़े फाड़ देना, रूई से बिनौला अलग करना।

नीचे – (अ.) नीचे की ओर तले, घटकर, कम।

नीदब – (क्रि) उगी फसल के पौधें से घास छीलना, खरपतवार निकलना।

नउनाउब – (क्रि) किसी वस्तु को बनाते–बनाते या सजाते–संवारते समय बिगाड़ देना, व्यंग्य की दशा में प्रयोग।

ने

नेउन – (सं.पु.) गुणवान या जानकर, विशेषज्ञ या गुणी व्यक्ति।

नेउतब – (क्रि) निमंत्रित करना, निमंत्रण देना, किसी विद्या विशेष में पारंगत।

नउता – (सं.पु.) आमंत्रण, निमंत्रण।

नेउतहरी – (सं.पु.) आमंत्रित या निमंत्रित व्यक्ति, अतिथि गण।

नेगनहरी – (सं.स्त्री.) उत्सव विशेष में हक लेने वाली, विवाहोत्सव में पारंपरिक ढंग दायित्व विशेष के लिए निर्धारित नारीपात्र।

नेग – (सं.पु.) किसी उत्सव विशेष में प्रचलित परंपरागत हक किसी दायित्व के बदले प्रोत्साहन अंश।

नेबार – (सं.पु.) पलंग बुनने का सूत का पट्टा, नेवाड़।

नेमी – (वि.) धर्म–कर्म करने वाला, नियम का पालन करने वाला।

नेम – (स.पुं.) नियम दस्तूर परंपरा धर्म रीति रिवाज का पालन।

नेमुआ – (सं.पु.) निब्बू, नींबू।

नेबुआ अरापक– (ब.मु.) एकदम भूखे, दाना–पानी खाये बिना।

नेरिआब – (कि.) जोर–जोर से चिल्लाना, गला फाड़–फाड़कर पुकारना, चीखना, चिल्लाना।

नेरिबाउब – (क्रि) किसी के द्वारा जोर–जोर से चिल्लवाना।

नेरा जोरा – (ब.मु.) हिसाब–किताब फैसला, पूर्ण निर्णय, बघेली मुहावरा।

नेरिबइया – (सं.पु.) जोर–जोर से चिल्लाने वाला आदमी।

नेरूआ – (सं.पु.) किसी फल को पौध के अंग से जोड़ने वाला डंठल, फल का वह निश्चित भाग जड़ा डंठल जुड़ा रहता है।

नेरभर – (अ.) नजदीक तक पास तक, बहुत पास।

नेरे – (अ.) नजदीक या पास में, साथ में या करीब।

नेरा – (सं.पु.) हरे बाँस की पतली लंबवत खपच्ची, हरे लंबे बाँस को पतले–पतले परत में विभक्त खण्ड विशेष।

नेव – (सं.पु.) नींव या आधार, किसी वस्तु की बुनियाद।

नो

नोई – (सं.स्त्री.) पशु दोहन के समय पैरों में बाँधी जाने वाली रस्सी।

नोउब – (क्रि रस्सी से गाय का पाँच दुहने हेतु बाँधना।

नोकड़ी – (सं.पु.) नौकरी, मजदूरी, सेवा।

नोकड़ – (सं.पु.) नौकरी करने वाला, पराधीन व्यक्ति, अधीनस्थ या सेवक, नौकर।

नोकड़िहा – (सं.पु.) नौकरी करने वाला व्यक्ति।

नोकब – (क्रि) टोकना, चुनौती देना,पानी चढ़ाना, अशगुन करना।

नोखे – (सं.पु.) तेज या जोरदार , तेज व्यक्ति बनने की दशा में व्यंग्य बोधक, किसी व्यक्ति का नाम।

नोकइया – (सं.पु.) रोकने–टोकने वाली प्रवृत्ति का व्यक्ति।

नोचइया – (सं.पु.) तोड़ने वाला या छीनने वाला, लूट–खसोट करने वाला।

नोचब – (क्रि) तोड़ लेना, लपटकर छुड़ा लेना।

नोचबाउब – (क्रि) किसी से तुड़वा लेना, चमड़ी निकलवा लेना।

नोन – (सं.पु.) नमक, नोन, पानी केर कान, बघेली मुहावरा।

नोनखर – (वि.) नमकीन स्वाद।

नोनचा – (सं.पु.) नमक मिलाकर धूप में सुखाया गया आम का छिलका।

नोनहा – (सं.पु.) खारा या नमकीन स्वाद का पदार्थ, नमक रखने वाला पात्र।

नोये – (ब.मु.) प्रतिबंधित या अनुबंधित।

नोहर – (वि.) अच्छी एवं सुंदर वस्तु, स्वादिष्ट एवं ताजा पदार्थ।

प

पइना – (सं.पु.) चबेना भूनने वाला मिट्टी का बड़ा कटोरानुमा पात्र।

पइजामा – (सं.पु.) पजामा।

पइरब – (क्रि.) पानी पर तैरना, यहाँ–वहाँ मन दौड़ाना।

पइराउब – (क्रि.) किसी कौ तैरवाना, तैरने के लिए प्रेरित करना।

पइरा – (सं.पु.) पुआर, पिअरा, तैरा, तैरिए।

पँइती – (सं.स्त्री.) पूजा–पाठ में धारित घाँस की अँगूठी, पैंती।

पइनारी – (सं.स्त्री..) हलवाहे की कील लगी लाठी।

पइसरम – (सं.पु.) परिश्रम, मेहनत, प्रयास।

पइला – (सं.पु.) एक किलो की क्षमता का काष्ठ का पात्र।

पइजनी – (सं.स्त्री..) घुँघुरू लगी बड़ी पायल।

पइसुनी – (सं.स्त्री.) गंगा नदी, भव सागर।

पइलगी – (सं.स्त्री.) दुआ–सलामी, चरण स्पर्श, अभिवादन।

पइराँव – (विशे.) तैरने योग्य पानी की मात्रा या गहराई।

पइरी – (सं.स्त्री.) नारियों के पाव का गहना, एक दौर में होने वाली गहाई की फसल डंठल।

पइहेय – (क्रि.) पाओगे, पा लोगे, पा जाओगे।

पइहौं – (क्रि.) पाऊँगा, पाऊँगी, पा जाउँगी।

पइरबेय – (क्रि.) तैरोगे, तैरोगी, पहरोगी।

पइरबू – (क्रि.) पहरोगी, तैरोगी।

पइसा – (सं.पु.) पैसा, धन–सम्पत्ति।

पउहाउब – (क्रि.) जलाशय में प्रवाहित करना, विसर्जन करना।

पउठा – (सं.पु.) बरसात में पाँव रखने के लिए प्रयुक्त पत्थर के टुकड़े।

पउठिआब – (क्रि.) वर्षा के बाद आँगन में पाँव रखने जगह की मिट्टी का ठोस हो जाना।

पउन – (विशे.) एक चौथाई, कम मात्रा।

पउठी – (सं.स्त्री.) आधा पाव का काष्ठ का नपना, पुराना ग्राम्य पैमाना।

पउली – (सं.पु.) पाँव का तलवा।

पउँद – (सं.स्त्री.) मण्डप के नीचे वर–कन्या के चलने के लिए बिछी धोती या वस्त्र।

पउँदर – (सं.पु.) जमीन पर इधर–उधर अव्यवस्थित फैली हुई वस्तुस्थिति। 'पउदर परब' बघेली मुहावरा।

पउसरा – (सं.पु.) निःशुल्क प्याऊ, 'पउसरा खुलब' बघेली मुहावरा।

पउलब – (क्रि.) टुकड़े–टुकड़े काटना, खण्डित करना।

पउलबाउब – (क्रि.) किसी से टुकड़े–टुकड़े कटवाना।

पउलबइया – (सं.पु.) टुकड़े–टुकड़े काटने वाला व्यक्ति।

पउलबाई – (सं.पु.) काटने के बदले प्राप्त पारिश्रमिक, मेहनताना।

पउढब – (क्रि.) पड़ना या सोना, समतल लेट जाना।

पउढाउब – (क्रि..) किसी को पड़ाना या लेटाना।

पउढबइया – (सं.पु.) किसी को पड़ाने या लेटाने वाला व्यक्ति, पड़ने या लेटने वाला।

पउरूख – (सं.पु.) पौरूष, क्षमता, पुरूषार्थ।

पउनिआउब – (क्रि.) किसी वस्तु का तीन भाग एक तरफ इकट्ठा कर देना।

पउनेआठ – (ब.मु.) पउने आठ होना अर्थात् न समझ या मंद अक्ल का।

पउआ – (सं.पु.) एक पाव का बाट, एक पाव का बर्तन, पहुँच होना, शराब का प्रतीक, पउआ जमाउब, बघेली मुहावरा।

पउनीपरजा – (सं.पु.) किसान के सहयोगी जैसे बढ़ई, लुहार, नाई, कुम्हार।

पउलीबुडाँव – (विशे.) पाँव का तलवा डूबने भर के पानी की गहराई।

पउतहा – (सं.पु.) कहीं से निशुल्क पाया हुआ, प्राप्त हुआ सामान, दान या दहेज में मिली वस्तु।

पकब – (क्रि.) पकना, परिपक्व होना, समर्थ बनना, पक जाना।

पकउब – (क्रि.) पकाना, परिपक्व बनाना।

पकबाउब – (क्रि.) किसी से पकवाना, पूरा बनवाना।

पका – (विशे.) पूर्ण परिपक्व, पका हुआ।

पकरान – (विशे.) पका हुआ, पीलापन लिए हुए।

पकपकाब – (क्रि.) घाव का पककर बहना, पानी से गीला होकर कीचड़ उभर आना, क्रोधित होकर वार्ता करना।

पकऊँ – (विशे.) पकने योग्य स्थिति, पकने वाली स्थिति।

पकबइया – (सं.पु.) परिपक्व बनाने वाला, पकाने वाला।

पकरा – (विशे.) सूखी तम्बाकू–चूना, पके बालों वाला व्यक्ति।

पकती – (सं.स्त्री..) पसुली, पीठ की पतली पसलियाँ।

पकराब – (क्रि.) कुछ–कुछ पकना, पकने की स्थिति में आना या होना।

पकड़ब – (क्रि.) पकड़ना।
पकड़ाउब – (क्रि.) किसी से पकड़वाना, किसी के हाथ में वस्तु देना।
पकड़बाउब – (क्रि.) किसी से कोई वस्तु पकड़वाना, पकड़ने में सहयोग।
पकड़बइया – (सं.पु.) पकड़ने वाला व्यक्ति।
पकड़ँऊ – (विशे.) किसी वस्तु का पकड़ में आने योग्य स्थिति।
पकउड़ी – (सं.स्त्री..) पकौड़ी, भजिया, व्यंजन।
पक्खान – (ब.मु.) टसमस न होना, आसन जमाकर जम जाना।
पखा – (सं.स्त्री.) कमी, कलंक, दाग, कमजोरी, दोष, गड़बड़ी।
पखउरा – (सं.पु.) भुजा का जोड़ स्थल, कधे के नीचे का पृष्ठ भाग।
पखिआरी – (सं.स्त्री.) पतिंगा, बरसाती कीड़ा।
पखुरी – (सं.स्त्री.) पंखुरी, फूल की कली, पतली हड्डी या पसली।
पखना – (सं.पु.) पंख, पखना खोंसब, बघेली मुहावरा।
पखारब – (क्रि.) पछारना, कपड़ा साफ करना, पाँव पूजना।
पखरबाउब – (क्रि.) पछरवाना, कपड़ा धुलवाना, पाँव पुजवाना।
पखरबइया – (सं.पु.) पछारने वाला, पाँव पूजने वाला, कपड़ा धुलने वाला।
पखरबाई – (सं.स्त्री.) कपड़ा पछारने का पारिश्रमिक या मेहनताना।
पखबरिया – (सं.पु.) पखवारा, पंद्रह दिवस का एक पक्ष।
पगँब – (क्रि.) किसी के प्रति आकर्षित हो जाना, आसक्त होना।
पगँउब – (क्रि.) किसी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेना।
पगॅबाउब – (क्रि.) आकृष्ट करवाना।
पॅगबइया – (सं.पु.) आकर्षित कर लेने वाला व्यक्ति।
पगड़ी – (सं.स्त्री.) सिर पर कपड़े की बँधी मुरेठी, पुलिंग 'पगड़ा'।
पगहा – (सं.पु.) मेहमानी में साथ गया अतिरिक्त व्यक्ति।
पगुराब – (क्रि.) पशुओं का प्रवृत्तिगत मुँह चलाना, पशुओं की पाचन प्रक्रिया।
पगरइत – (सं.पु.) जिसके घर मांगलिक कार्य हो रहा हो वह मुखिया, स्त्री.लिंग 'पगर इतिन'।
पगिया – (सं.स्त्री.) मौर को सिर पर कसने वाला पतला गमछा।
पगडंडी – (सं.स्त्री.) आदमी के आने जाने हेतु गॉव की पतली गैल, सँकरा रास्ता।
पंगति – (सं.स्त्री.) भोजन के लिए पंक्तिबद्व बैठे लोग, पाँत।
पगरा – (सं.पु.) बाउण्ड्री वाल, नग्न दीवाल।
पगबाउब – (क्रि.) आटे के व्यंजन पर गुड़ या शक्कर का लेप चढ़वाना।
पगबइया – (सं.पु.) पाग या शक्कर का लेप लगाने वाला व्यक्ति।
पगड़िहा – (सं.पु.) जिसके सिर पर पगड़ी बंधी हो वह व्यक्ति।
पच्छघात – (सं.पु.) शरीर के पृष्ठभाग का घाव, न दिखने वाला शरीर का फोड़ा।
पच्छू – (अव्य.) पीछे की ओर, पश्चिम दिशा में, पृष्ठ भाग।
पच्छिम – (अव्य.) पश्चिम दिशा, पाश्चात्य सभ्यता।

पच्छिमायन – (अव्य.) पश्चिम दिशा में सूर्य के नक्षत्र की स्थिति, पश्चिम दिशा से बहने वाली हवा।
पच्छिमही – (सं.स्त्री.) पश्चिम दिशा से चलने वाली एक हवा, पछुआ।
पचड़ब – (क्रि.) पचड़ी से ढीली पोलाई कसना।
पचड़ी – (सं.स्त्री.) कसाव के लिए प्रयुक्त लकड़ी की छोटी–छोटी टुकड़ियाँ, घाव की पट्टी।
पचड़ा – (सं.पु.) माथा–पच्ची वाली उलझन, विवादित एवं समस्या मूलक वस्तु।
पचड़िआउब – (क्रि.) लकड़ी की पचड़ी से कुल्हाड़ी के बेट को कसना।
पचउरी – (सं.स्त्री.) बिना मतलब की पंचायत रोपना, अनावश्यक उत्प्रेरणा।
पचपेंड़िया – (सं.स्त्री.) एक जगह पर लगे हुए पाँच पेड़, स्थान का नाम।
पचकब – (क्रि.) तुचक जाना, फूली हुई वस्तु का तुचकना, मोटापा कम होना।
पचब – (क्रि.) पच जाना, हजम हो जाना।
पचकाउब – (क्रि.) सूजन कम कराना, फूली वस्तु का तुचकवाना।
पचउब – (क्रि.) हजम कर लेना, पचा लेना।
पचबाउब – (क्रि.) पचवाना, पाचन क्रिया ठीक करवाना, किसी का पानी पचवाना।
पचबइया – (सं.पु.) पचाने वाला, जो हजम कर लिया हो।
पचँहड – (सं.पु.) पाँच बर्तनों का समूह, दान के पाँच नग बर्तन विशेष।
पचहँथी – (विशं.) अच्छी ऊँची पूरी वस्तु, पाँच हाथ की लम्बी।
पचपचाब – (क्रि.वि.) पककर पिघल जाना, पके घाव का विकसना।
पचपचान – (विशे.) पककर एकदम पिलपिली हुई, अति पकी हुई।
पचक्का – (सं.पु.) थूँक की पिचकारी, उछला हुआ तरल का छींटा।
पँचमासा – (विशे.) पाँच महीने में ही जन्मा हुआ, पाँच महीने।
पच्च पच्च – (अव्य.) थूकने की ध्वनि विशेष, पाँव से निकला मवाद।
पंचाइत – (सं.स्त्री.) पंचायत, निर्णय हेतु एक बैठक।
पंचइतहा – (सं.पु.) समझौता करने वाले लोग, पंचायत कर्ता।
पंचा – (सं.पु.) पाँच हाथ की धोती, धोती का आधा टुकड़ा।
पछरब – (क्रि.) पीछे रह जाना, पिछल जाना, दूर रह जाना।
पछहुत – (अव्य.) पीछे–पीछे पहुँच जाना, पीछे से प्रहार, पीछे की ओर।
पछलग – (संपु.) आने के तुरंत बाद, पीछे–पीछे किसी का पहुँचना, पीछे लगे रहना।
पछताब – (क्रि.) पश्चाताप करना, कार्य करके सोच–विचार करना।
पछरबाउब – (क्रि.) किसी से कपड़े साफ करवाना, कपड़ा धुलवाना।
पछारब – (क्रि.) पटककर कपड़ा धुलना, कपड़ा धोना व साफ करना।
पछरबइया – (सं.पु.) कपड़ा साफ करने वाला, कपड़ा धुलने वाला।
पछिआब – (क्रि.) किसी का पीछा करना, प्रश्रय लेकर बढ़ना, अनुकरण करना।
पछिबाउब – (क्रि.) अपने पीछे–पीछे घुमवाना, पीछे पीछे चलवाना।

पछिबइया — (सं.पु.) जो अपने पीछे–पीछे किसी को चलवाता हो, जिसके पीछे लोग रहे आते हों।

पंछर — (विशे.) अति पतला तरल पदार्थ, दूध में पानी की अधिक मात्रा।

पंछरिआब — (क्रि.) जी मिचलाना, जी घुमाना, मुँह में पानी आना।

पंछरउँ — (विशे.) पतला एवं अस्वादिष्ट, स्वाद रहित, जिसका कोई स्वाद न हो।

पछिलीखेड़ा — (अव्य.) सबसे पीछे, अंतिम दौर में, सबके बाद।

पछेला — (अव्य.) उलटी गति, पीछे की ओर चलना, पीछे पॉव बढाने की शैली।

पछोरब — (क्रि.) सूप द्वारा अनाज से कूड़ा कर्कट अलग करना।

पछिआन — (विशे.) पीछा किये हुए, पीछा रहे हुए।

पछिलब — (क्रि.) पीछे हटना, शिथिल पड़ जाना, निष्क्रिय होना।

पछेलब — (क्रि.) पीछे कर देना, प्रतिस्पर्धा में बढ़ जाना।

पछोरबाउब — (क्रि.) किसी से अनाज साफ करवाना।

पछोरबइया — (सं.पु.) सूप से अनाज और कंकड अलग–अलग करने वाला।

पछलग्गू — (विशे.) पीछे–पीछे लगे रहने वाला, पीछे–पीछे रहकर कार्य करने वाला।

पछाडब — (क्रि.) परास्त कर देना, जमीन पर उठाकर चारों खाना चित्त कर देना।

पछूहा — (सं.पु.) पछलगा, अनुयायी, पीछे चलने या खाने वाला, जो पिछड़ जाये वह।

पछितिया — (सं.स्त्री.) पछीत, पृष्ठ भाग, घर के पीछे का भाग।

पछारी — (सं.पु.) पीछे का हिस्सा, पृष्ठ भाग, बाद का।

पछिलबइया — (सं.पु.) वस्तु को पीछे हटाकर रखने वाला, दौड़कर पीछे कर देने वाला।

पछारीदार — (विशे.) अन्त में, अन्तिम दौर में, सबके बाद में।

पँजरब — (क्रि.) ताना मारना, हॅसी उड़ाना, व्यंग्य कसना, उल्टमासी कथन।

पजबाउब — (क्रि.) कन्दमूल पैदा करवाना, प्याज की पैदावार बढ़ाना।

पजबइया — (सं.पु.) अधिक संतान पैदा करने वाला, कन्दमूल की पैदावार बढ़ाने वाला।

पँजरबाउब — (क्रि.) किसी को किसी से व्यंग्य करवाना, ताना मरवाना।

पँजरबइया — (सं.पु.) व्यंग्य या ताना मारने वाला व्यक्ति।

पजाँन — (विशे.) पर्याप्त मात्रा में पैदा हुई स्थिति।

पजाब — (क्रि.) प्याज की गाँठ का बड़ी–बड़ी पैदावार होना।

पंजीरी — (सं.स्त्री.) गुड़ मिश्रित आटा भुना चूर्ण, पंजीरी बाँटना बघेली मुहावरा।

पटउब — (क्रि.) कर्ज चुकाना, उधारी भरकर पूरा करना।

पटपर — (सं.पु.) पथरीली व पड़ती भूमि, अपुष्ट दाने युक्त धान, कान के नीचे का कपोल प्रक्षेत्र, स्त्री. लिंग 'पटपरी'।

पटदर — (सं.पु.) उपमा देना, दृष्टान्त देना, उदाहरण बताना, बराबरी।

पट्ट – (विशे.) जमीन पर पेट के बल लेटा हुआ, दोनों आँख की अंधी स्थिति।

पट्ट परब – (क्रि.वि.) जमीन पर पेट के बल पर पड़ना, आँखों का फट जाना।

पटरा – (सं.पु.) चपटी आकृति वाली लकड़ी, चारों ओर पैर फैलाकर पशु की स्थिति।

पटउँहा – (सं.पु.) पटावदार घर का कमरा, अटारीदार कक्ष।

पटब – (क्रि.) तालमेल होना, निराकरण हो जाना, आपसी समझौता होना, उधारी समाप्त होना, कर्ज मुक्ति होना।

पटाउब – (क्रि.) तालमेल बिठाना, मिलाना, पटाना।

पटबाउब – (क्रि.) विवादित मामले का समझौता कर देना, गढ्ढे को पटवाना।

पटाब – (क्रि.) समाप्त हो जाना, शान्त हो जाना, बन्द या दूर हो जाना।

पटान – (विशे.) समाप्त हो चुका हुआ, समस्या से उबर जाना।

पटोन्तरा – (सं.पु.) आपस में समझाइस हो जाना, मामला पट जाना।

पटा – (सं.पु.) लकड़ी का पीढ़ा, बैठने का काष्ठ पात्र।

पटउहल – (सं.पु.) आपसी समझौते से पटने योग्य मामला।

पटिया – (सं.स्त्री..) लकड़ी या पत्थर की पटिया, खेत का चौकोर अंश।

पटिआउब – (क्रि.) पाटी पारना, केश व्यवस्थित करना।

पटाव – (सं.पु.) लकड़ी से पटा हुआ अटारीदार घर।

पटपटाब – (क्रि.) आँखों का पूर्णतः फूट जाना, समूल नष्ट होना।

पटपटाउब – (क्रि.) आँख तिलमिलाना, बार–बार अधिक पलक पटकना।

पटोहा – (सं.पु.) छप्पर में प्रयुक्त बाँसनुमा पतली लकड़ी।

पटइन – (क्रि.) पटाया, शान्त कराया, निपटारा करा दिये।

पटहेरिया – (सं.स्त्री.) घर के अन्दर दीवाल पर डाली गई छोटी छत।

पटबइया – (सं.पु.) पटोत्तरा कराने वाला, समझौता कराने वाले लोग।

पट्टीदार – (सं.पु.) हिस्सेदार, परिवार के लोग, स्त्री.लिंग पट्टीदारिन।

पट्टी – (सं.स्त्री.) प्रजाति विशेष का वंश, जातिगत पहिचान या गोत्रवंशज।

पटाढा – (सं.पु.) पशुओं के मल में पड़ने वाले लम्बे श्वेत कृमि।

पटनहा – (सं.पु.) पटना गाँव का निवासी, पटना से आकर बसा हुआ व्यक्ति, स्त्री.लिंग पटनहाईन'।

पट – (सं.पु.) मंदिर के किवाड़, देवताओं के द्वार का परदा।

पटुआ – (सं.पु.) अमारी या बकौड़ की एक लट।

पटनई – (सं.स्त्री.) घर के कमरे का पटाव, कच्चे घर में बनी अटारी।

पटपरा – (सं.पु.) छप्पर में प्रयुक्त समतलाकृति वाला खपड़ा।

पटिअइत – (सं.पु.) वंश परिवार के जन, हिस्सेदार।

पट्ट पट्ट – (अव्य.) शरीर पर पड़े प्रहार की ध्वनि, जल्दी–जल्दी।

पठउब – (क्रि.) भेजना, विदा करना।

पठबाउब – (क्रि.) भेजवाना, किसी से कोई वस्तु भेजना, दूर तक पहुँचाना।

पठउनी – (सं.स्त्री.) मेहमान को दी गई विदाई की सामग्री, दुल्हन की तीसरी बार की विदाई।

पठरिया – (सं.पु.) पठारी जाति का कोई व्यक्ति, किसी का नाम।

पठबइया – (सं.पु.) भेजने वाला, भेजवाने वाला, विदा करने वाला।

पठबाई – (सं.पु.) भेजने–भेजवाने के बदले प्राप्त मेहनताना।

पठबउबे – (क्रि.) भेजोगे, भेजवाओगे।

पठबायेउतै – (क्रि.) भेजा था, भेजवाया था, भेजवायी थी।

पठबइहौं – (क्रि.) भेजवाऊँगा, भेजवाऊँगी, पहुँचाऊँगी।

पढबाती – (सं.पु.) निरन्तर रट लगाये रहने वाला, पढबाती होब बघेली मुहावरा।

पढब – (क्रि.) पढ़ना, लिखावट वाँचना, अध्ययन करना।

पढबाउब – (क्रि.) दूसरे से पढ़वाने का कार्य कराना, पढ़वाने का कार्य कराना।

पढइया – (सं.पु.) विद्यार्थी, पढ़ने–लिखने वाला छात्र।

पढबइया – (सं.पु.) पढ़ाने–लिखाने वाला व्यक्ति, शिक्षक, पढ़वाने वाला।

पढिना – (सं.स्त्री.) एक मछली विशेष का नाम, तंदुरूस्त युवती के लिए गाली।

पढिहौं – (क्रि.) पढूँगी, पढूँगा।

पढइहौं – (क्रि.) पढ़वाऊँगी, पढवाऊँगा, पढ़ाँऊँगी।

पढनउक – (विशे.) पठनीय, पढ़ने लायक, पठन करने योग्य।

पढोखर – (सं.स्त्री.) जवानी भरी लड़की के लिए अश्लील गाली।

पड़िया – (सं.स्त्री.) भैंस की जवान बच्ची, पुलिंग 'पड़वा'।

पड़ेरू – (सं.पु.) छोटे–छोटे भैंस के बच्चे।

पड़ा – (सं.पु.) भैंस का नर बच्चा, स्त्री.लिंग 'पड़ी'।

पड़ाक – (विशे.) गदेली का प्रहार, तत्काल।

पड़ाका – (सं.पु.) पटाखा, सुन्दर युवती के लिए मनचलों का प्रतीक।

पड़ोख – (क्रि.) अलसी का डंठल विष रहित करना।

पड़ोरा – (सं.पु.) एक हरी वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

पतउखी – (सं.स्त्री.) पत्ते की कटोरी, दोना, पत्ते की चिलम।

पतरोई – (सं.पु.) सूखी पत्तियों का समूह, बिखरी हुई सूखी पत्तियाँ।

पतरइला – (विशे.) एकहरे वदन वाला, दुबली–पतली काया वाला, स्त्री.लिंग पतरइली।

पतरसुट्टा – (विशे.) लम्बा एवं दुबला–पतला, स्त्री.लिंग 'पतरसुट्टी'।

पतरिआब – (क्रि.) पतला होना, वर्षा की बूँदों का विरल हो जाना।

पतरिआउब – (क्रि.) मोटी चीज को पतली करने की किया।

पतरिआन – (विशे.) वर्षा का कम हो जाना, बारिश का थम जाना।

पतनिआब – (क्रि.) उलझनों के कारण परेशान हो जाना।

पतनिआउब – (क्रि.) किसी को समस्याग्रसित करना, परेशान करना।
पतनिआन – (विशे.) परेशान, समस्या ग्रसित, उलझा हुआ।
पतरी – (सं.स्त्री.) पत्तल, पत्तल की थाली।
पतरंघा – (विशे.) बिल्कुल दुबला–पतला अंगों वाला, स्त्री.लिंग पतरंघी।
पतुआब – (क्रि.) हल्की वजन वाली वस्तु का हवा में डगमगाना, पीछा करना,।
पतनि – (सं.स्त्री.) पतन, दुर्गति, परेशानी।
पतीला – (सं.पु.) चौड़े मुख का गंजापात्र, स्त्री.लिंग पतीली।
पतुरिया – (सं.स्त्री.) वेश्या, मनचली नारी।
पतुरछेमन – (ब.मु.) कभी कुछ कभी कुछ बताना या कहना, नाटकबाज।
पत्ताल – (सं.पु.) पाताल, धरती के नीचे की असीमित गहराई।
पत्तुर – (सं.पु.) इसी लायक, इसी प्रकार के व्यवहार योग्य।
पतरेगंबा – (सं.पु.) पत्तों में रहने वाला हरे रंग का एक कीड़ा।
पतरमुही – (विशे.) जिसका मुँह पतला हो, पुलिंग 'पतरमुहा'।
पथब – (क्रि.) पथ्य भोजन देना, स्वस्थ्य बनाने हेतु पौष्टिक आहार देना।
पथबाउब – (क्रि.) पाथने का कार्य करवाना, पाथने में सहयोग करना।
पथहा – (सं.पु.) जिसे बीमारी के बाद पथ्य भोजन दिया जाता हो।
पथरी – (सं.स्त्री.) पत्थर की टुकडी, पत्थर का कटोरीनुमा पात्र, पथरी रोग।
पथरिआउब – (क्रि.) पत्थर से मार करना, पत्थर फेंककर मारना।
पथरिहाब – (क्रि.वि.) पत्थरों से मार का दौर, पत्थर से प्रहार होना।
पथरा – (सं.पु.) पत्थर, एकदम सख्त व ठोस, बर्फ।
पथरहा – (विशे.) पत्थरों से ओतप्रोत, जिस जमीन में कंकड पत्थर हों।
पथ पथ – (अव्य.) बार–बार, समझा–समझा कर, निखार कर बताना।
पथरील – (विशे.) पथरीली, ककड़ीली, पत्थरोंयुक्त।
पथनउक – (विशे.) पथ देने योग्य, जो पथ्य लायक हो गया हो।
पथरब – (क्रि.) प्रसारित होना, फैलना, फैल जाना, जुते खेत का पट जाना।
पथरा पूजब – (ब.मु.) मनौती करना, देवी–देवताओं का पूजन करना।
पदनी – (सं.स्त्री.) नारी के लिए एक अभद्र गाली।
पदनों – (सम्बो.) नारी को इशारा या सम्बोधनयुक्त अश्लील गाली।
पदरब – (क्रि.) परेशान हो जाना, वायु का उत्सर्जित हो आना।
पदाउब – (क्रि.) अकारण परेशान करना, परास्त करना, खेल में खूब दौड़ाना।
पदाब – (क्रि.) हिम्मत टूट जाना, दबाव के कारण वायु निकल आना।
पदरक्का – (क्रि.वि.) जोर–जोर से दौड़ना, आँख मीचकर पूरी ताकत से दौड़ना।
पदलेंहड़ी – (सं.पु.) छोटे–छोटे बच्चों का बहुतायत संख्या में समूह।
पदरिआउब – (क्रि.) कार्य कराकर कृतज्ञ न होना, खाकर तत्काल भुला देना।

पदनिआउब – (क्रि.) नारी वर्ग को बुरा भला कहना, नारी के लिए अश्लील गाली।
पदनहेठ – (सं.पु.) नारी के लिए सांकेतिक अश्लील गाली।
पदर्रा – (सं.पु.) दिन भर पादते रहने वाला, बहुत अधिक पादने वाला।
पदोड़ा – (सं.पु.) कार्य के बदले परिहास पाना, कार्य का उलटा प्रतिफल।
पधारब – (क्रि.) पधारना, आगमन होना, बैठना।
पधारी – (क्रि.) पधारिए, बैठिये, आइये।
पदहिआइन – (विशे.) पादने की दुर्गंध की भाँति गन्ध, गैस जैसी गन्ध।
पनपिआई – (सं.स्त्री.) गले की उभरी हुई गाँठ, गला, जलपानयुक्त स्वागत, वधू को प्रथम बार देवर द्वारा पानी पिलाने की एक रीति।
पनचुचही – (विशे.) पतला एवं कम मीठा रस, पुलिंग 'पनचुचहा'।
पनीहा – (सं.पु.) पानी में रहने वाला जन्तु, पानी, प्याला, एक अचार।
पनघोट्टा – (विशे.) अति पतलारू, दाल या सब्जी में जरूरत से अधिक पानी का होना।
पना – (सं.पु.) कच्चे आम का भुना हुआ रस, पना करब बघेली मुहावरा।
पनही – (सं.पु.) जूती, देशी चमड़े के जूते।
पनहिआव – (कि.वि.) जूतों से मार–पीट का होना या मारपीट का दौर।
पनहिआउब – (क्रि.) किसी को जूते–चप्पल से पीटना।
पनपना – (सं.पु.) पनपना काँपना (बघेली मुहावरा), हिम्मत या कलेजा।
पनिआउब – (कि.वि.) खुशामदी करना, चापलूसी करके खुश करना।
पनीहा – (सं.पु.) पानी वाली वस्तु, पानी में रहने वाले जन्तु–जीव।
पन्नी – (सं.स्त्री..) चमकीला व चिकना एक विशेष किस्म का कागज।
पन्निहा – (सं.पु.) पानी में रहने वाला सर्प, ब्राम्हण की एक प्रजाति।
पनबिरिया – (सं.स्त्री..) पान, विकल्प में खाई जाने वाली एक पत्ती।
पनघटी – (कि.वि.) पानी घट जाना, बेइज्जती होना, अपमानित हो जाना।
पनिभरा – (सं.पु.) पानी भरने व पिलाने वाला घरेलू नौकर।
पनहा – (सं.पु.) पान खाने व बेचने वाला, किसी कपड़े की चौड़ाई।
पनसोख – (सं.पु.) अधिक या बार–बार प्यास लगने वाला एक रोग।
पन – (सं.पु.) चरण, अवस्था का क्रम, उम्र का हिस्सा।
पन्चा – (सं.पु.) पुरुष धोती का आधा टुकड़ा।
पनारा – (सं.पु.) कमल फूल की जड़, कमल का पानी वाला डंठल।
पनिहा – (सं.पु.) पानी में रहने वाला एक सर्प, पानी वाली वस्तु या अचार।
पपड़ी – (सं.स्त्री.) पापड़, रोटी की ऊपरी परत, जमीन की ऊपरी पतली परत।
पपिआब – (क्रि.) किसी पर शंका–संदेह करना, अविश्वास का होना।
पपेला – (सं.पु.) पानी की बहती मोटी धार, अंदर ही अंदर पानी का बहाव।

पपरी – (सं.स्त्री.) पतली, पापड़, पुलिंग 'पपरा'।

पपड़िआब – (क्रि.) गीली जमीन या घाव का सूखकर पतली परत जम जाना।

पबस्त – (सं.पु.) पौरुष, घरेलू व्यवस्था, हिम्मत, मजबूती व सम्पन्नता।

पबाई – (सं.स्त्री.) शासनाधीन गाँव, एक पहलू, एक भाग।

पबइया – (सं.पु.) पाने वाला, प्राप्तकर्ता, भोजन करने वाला, छू लेने वाला।

पबरब – (क्रि.) प्राप्त कर लेना, प्रयास के कारण पा लेना।

पबाउब – (क्रि.) भोजन कराना, प्रयास करके किसी वस्तु को किसी वस्तु तक पहुँचाना।

पबरित – (सं.पु.) पवित्र, साफ सुथरा।

पमान – (सं.पु.) जूते का तल्ला, चप्पल का तला।

पमारा – (सं.पु.) विस्तृत वर्णन, अलग–अलग वर्णन, पूर्ण विवरण।

पम्पा – (सं.पु.) हैण्डपम्प, पम्प, नल।

पय – (यो.) किन्तु, पर, परंतु, कमी, खामी, कलंक, खोट।

परसाल – (अव्य.) बीता वर्ष, आने वाला वर्ष।

परसोरथ – (सं.पु.) परस्वार्थ, परोपकार, दूसरे का उपकार।

परौं – (अव्य.) परसों, कल के बाद, कल के पहले।

परसँउ – (अव्य.) बीते कल के पूर्व का दिन, आने वाले कल के बाद की तिथि।

परिखाउब – (क्रि.) प्रतीक्षा कराना, इन्तजार करवाना, किसी को रोकवाना।

परिखाव – (सं.पु.) प्रतीक्षा, इन्तजारी, ठहराव व रूकावट।

परथन – (सं.पु.) रोटी प्रसारण में प्रयुक्त सूखा आटा, घूस का लॉच, कार्य पूर्णता के लिए व्यय किया गया धन।

परपंची – (सं.पु.) जो हमेशा बहानेबाजी बताता हो।

परपन्च – (सं.पु.) प्रपंच, बहाना, भिड़ने–भिड़ाने वाली बातें।

परब – (क्रि.) पड़ना, आराम करना, लेटना, सोना।

पराउब – (क्रि.) पड़ाना, सुलाना, लेटाना।

परबइया – (सं.पु.) सुलाने या लिटाने वाला व्यक्ति, पड़ाने वाला।

परबरिस – (सं.पु.) परोपकार, मदद, सहयोग, असहाय की व्यवस्था।

परेंठ – (सं.पु.) पडती भूमि, प्रजनन न करने वाले दुधारू पशु।

परबन्ध – (सं.पु.) प्रबंध, देख–रेख, रख–रखाव, व्यवस्था।

परदनी – (सं.स्त्री.) पुरुषों की धोती।

परान – (सं.पु.) प्राण, प्राणप्रिय, पुत्र, जान।

परेनुआ – (सं.पु.) प्राण पखेरू, प्राणों से प्यारा।

परेबा – (सं.पु.) एक सुंदर पक्षी का नाम।

परई – (सं.स्त्री.) मिट्टी की बड़ा सा दीया, घड़े का मुख ढ़कने वाला पात्र।

परिखब – (क्रि.) प्रतीक्षा करना, इंतजार करना, राह देखना।

परसाल – (अव्य.) बीते वर्ष, पिछले साल, अगले वर्ष।

परेम – (सं.पु.) प्रेम, लगाव, प्यार, स्नेह।

परेमी – (सं.पु.) प्रेमी, स्नेही, नेमी प्रेमी।
परगापादन – (ब.मु.) तिकड़म करने में निपुण, दन्द–फंद बताने में सिद्ध।
पराभंस – (सं.पु.) परहेज रहित, छुआछूत न मानने वाला, सबके घर सब कुछ खा लेने वाला।
परसब – (क्रि.) परोसना, पारूस करना।
परसाउब – (क्रि.) परोसवाना, पारूस करने में सहयोग करना।
परसबइया – (सं.पु.) परोसने वाला, पारूस कर्ता।
परछी – (सं.स्त्री..) कच्चे घर की ओसार, घर के सामने की दलान।
परछन – (सं.पु.) वधू प्रवेश के समय पानी फेरने की परम्परागत रीति।
परगसिया – (सं.स्त्री..) छोटे आकार की कड़ाही।
परगासब – (क्रि.) चन्द्रोदय, चन्द्रमा निकलना, चन्द्रमा का प्रकाशित होना।
परगासी – (कि.वि.) चन्द्रोदय की स्थिति, चन्द्रमा निकलने के पूर्व का वातावरण।
परिया – (सं.स्त्री..) बगिया की क्यारी, लम्बे समय से बीमार व्यक्ति।
परायठ – (सं.पु.) जो हमेशा पड़ती पड़ी रहती हो वह भूमि, जिस दुधारू पशु के कभी प्रजनन न हुआ हो।
परपराब – (कि.वि.) कपड़ा फाड़ने पर होने वाली ध्वनि, पेड़ का कटना।
परपराउब – (क्रि.) ओर–छोर फाड़ देना, दो टुकड़े फाड़कर कर देना।
परती – (सं.स्त्री.) घास–फूस व पत्ते से बना टाट, पड़ती भूमि।
परतब – (क्रि.) मोड़–मोड़ कर तह पर तह जमाना।
परी – (सं.स्त्री.) तेल निकालने वाली लोहे की हुकदार कटोरी।
परीबा – (सं.स्त्री.) पूर्णमासी के बाद की तिथि।
परन्गत – (सं.पु.) हिम्मत टूटना, हौसला टिकना, पूर्णता पाना।
परमान – (सं.पु.) प्रमाण, दृष्टान्त, सबूत, गवाह।
परनाम – (सं.पु.) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन।
परिनाम – (सं.पु.) परिणाम, प्रतिफल, निष्कर्ष।
परसोतिया – (सं.पु.) बच्चों को होने वाला पीला रोग।
परेत – (सं.पु.) प्रेत, भूत, डरावना प्रतीक, स्त्री.लिंग परेतिन।
परेतहा – (सं.पु.) जो व्यक्ति प्रेत बाधा से ग्रसित हो, जहाँ पर प्रेत रहता हो वह जगह।
पर्र पर्र – (कि.वि.) कपड़ा फाड़ने पर होने वाली ध्वनि, वायु उत्सर्जन के समय की आवाज, पर्र–पर्र करना, बघेली मुहावरा।
पलगरिया – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का बच्चों वाला पलंग।
पलथी – (सं.स्त्री.) दोनों पैर मोड़कर एक दूसरे पर रखी हुई स्थिति, आसन।
पलथिआउब – (क्रि.) दोनों पैर मोड़कर आसन जमाकर बैठना।
पलथिआन – (विशे.) पलथी मारकर बैठा हुआ, स्थायी रूप से जमा हुआ।

पलथिआब – (क्रि.) पलथी मारकर बैठ जाना।

पलानी – (सं.स्त्री.) मेड़ पर पीछे से चढ़ाई गई अतिरिक्त मिट्टी।

पल्ली – (सं.स्त्री.) ओढ़ने पर पीछे से चढ़ाई गई अतिरिक्त मिट्टी।

पलागों – (सं.पु.) अभिवादन, छोटों द्वारा बड़ों के लिए सम्मान सूचक प्रणाम।

पलानब – (क्रि.) उलाहना से भर देना, गाली देना, घोड़े पर सवार होना, घोड़े के पीठ पर।

पलसाउब – (क्रि.) कृषि पौध को इधर–उधर करना।

पलिया – (सं.स्त्री.) साग सब्जी के लिए बनाई गई क्यारी।

पलिआब – (क्रि.) पाला व तुषार से कृषि का ग्रसित होना।

पलिआन – (विशे.) खा–पीकर हृष्ट– पुष्ट एवं तैयार हुई नारी, मोटी तगड़ी।

पलाब – (क्रि.) पाला मार जाना, पाला लग जाना, ठंड लगना।

पलान – (सं.पु.) खा–पीकर हृष्ट–पुष्ट, पाला लगा हुआ खेत व कृषि।

पलटव – (क्रि.) वाहन का दुर्घटना ग्रस्त होना, कहकर मुकर जाना, अदला–बदली करना, दिशा व स्थिति बदल कर वस्तु को रखना, पलटाना।

पलटाउब – (क्रि.) पलट देना, जबाव दे देना, इधर से उधर कर देना।

पलटा – (कि.वि.) अदल–बदल की क्रिया, बदलना, विनिमय।

पलई – (सं.स्त्री.) पँसुली, शरीर की पतली हड्डियाँ, पलई चलना, ब.मु।

पलपलाउब – (क्रि.) आवाज के साथ पतली टट्टी करना।

पल्टबइया – (सं.पु.) बदला करने वाला, कहकर बदल जाने वाला, इधर से उधर–पलट देने वाला।

पलझा – (अव्य.) इस ओर, इस तरफ, इस पहल।

पल्ला – (कि.वि.) इस ओर, वस्तु का एक पहलू, द्रुतगति से दौड़ना, धोती का एक छोर।

पल्हाब – (क्रि.) थनों का दूध–दुहने योग्य हो जाना।

पल्हान – (विशे.) दूध–दुहने की स्थिति में थन का होना, दूध उतरा हुआ बाल।

पल्हबाउब – (क्रि.) दूधारू मवेशी को दूध–दुहने योग्य बनाना।

पल्हवइया – (सं.पु.) थनों को सहलाकर दुहने लायक करने वाला।

पलहुआउब – (क्रि.) पिघलाकर खुश कर लेना, मिलाना, पटाना, मक्खन पालिश करना।

पलटन – (सं.पु.) प्लाटून, फौज या सेना, अधिक संख्या में लोग।

पलँइचा – (विशे.) मोटी तगड़ी, मोटापा पर केन्द्रित नारी हेतु गाली।

पल्लेप – (सं.पु.) औपचारिकता, नाममात्र का, कोटापूर्ति, रस्म पूरी हो जाना।

पलहा – (सं.पु.) बेर की पत्ती कूटने वाले लोग, पाल लगा हुआ खेत।

पलटी – (कि.वि.) बदलने की क्रिया, विनिमय, अदल–बदल, बारी।

पलरा – (सं.पु.) तराजू, तराजू के दोनों पहलू, पलड़ा।

पलेबा – (सं.पु.) जुताई–बुवाई के पूर्व खेत में सींचा गया पानी।

पसारब – (क्रि.) फैलाना, प्रसारित करना, विस्तृत करना।

पसरबाउब – (क्रि.) फैलवाना, प्रसारित करवाना।

पसरबइया – (सं.पु.) हाथ फैलाने वाला, मारकर जमीर पर गिरा देने वाला।

पसरब – (क्रि.) जमीन पर ओर–छोर पड़ जाना, फैल जाना, विस्तृत होना।

पसाउब – (क्रि.) चावल पकाकर माड़ अलग करना या निकालना।

पसडबाउब – (क्रि.) पके चावल से अतिरिक्त पानी किसी से निकलवाना।

पसबइया – (क्रि.) पके चावल से माड़ निकालने वाला व्यक्ति।

पसंघा – (ब.मु.) असामान्य, अतुलनीय, तौल व वजन में बहुत कम।

पसीझब – (क्रि.) पानी भरे घड़े के पेंदी से पानी या पसीना का झलकना, मन अनुरूप कर लेना।

पसिनान – (विशे.) पसीने से सना हुआ, पसीने से लथपथ।

पसिनहा – (सं.पु.) पसीने से गीला वस्त्र, पसीने से सना कपडा।

पसनी – (सं.स्त्री.) शिशु का पुंसवन संस्कार, अन्न–प्रासन।

पसनिहा – (सं.पु.) जिसका अन्न प्रासन हो रहा हो वह शिशु।

पस – (सं.पु.) मवाद, पीप, घाव से निःसृत प्ररस।

पसही – (सं.स्त्री.) अपने आप रेशे वाली एक धान विशेष।

पसहिया – (सं.पु.) ऐसा खेत जिसमें पसही जमी हुई हो।

पंसोख – (सं.पु.) बार–बार या अधिक पानी पीने वाला एक रोग।

पसइहौं – (क्रि.) चावल से माड अलग करूँगी।

पसट – (सं.पु.) हल एवं जुए में प्रयुक्त होने वाली एक रस्सी।

पसोटा – (सं.पु.) कोड़ा, लोचदार मारने का उपकरण।

पसोटब – (क्रि.) कोड़े से मारना, जमकर पीटना।

पसोटइया – (सं.पु.) कोड़े से मार लगाने वाला व्यक्ति।

पसोटिआउब– (क्रि.) किसी को पसोटे से मारपीट की क्रिया करवाना।

पसुरी – (सं.स्त्री.) पंसुली, पतली हडिड्याँ।

पसुहाई – (सं.स्त्री.) पशुओं के काम आने वाली, पशुओं का व्यापार।

पसर – (सं.पु.) एक गदेली भर अनाज की मात्रा।

पहल – (सं.पु.) पकने हेतु पलास के पत्तों से ढककर रखे गये आम।

पहलब – (क्रि.) पत्तों के बीच में आम के फल रखकर पकाना।

पहिलउठी – (विशे.) प्रथम बार, प्रथम दौर में, पहले पहल।

पहिलेव – (अव्य.) पहले भी, पूर्व में भी, इसके पहले।

पहला – (सं.पु.) रूआ, कपास, अति मुलायम (विशे.)

पहकब – (क्रि.) पानी से खेत का ढीलों का लथपथ हो जाना।

पहिरब – (क्रि.) पहनना, वस्त्र धारण करना।

पहिराउब – (क्रि.) पहनाना, वस्त्र धारित करवाना।

परिहरबइया – (सं.पु.) पहनाने वाला व्यक्ति।

पहिरबाई – (क्रि.वि.) पहनने का तौर–तरीका, पहनाने की मजदूरी।

पहरहा – (सं.पु.) लकड़ी काटने पहाड़ जाने वाले लोग।

पहरहाई – (क्रि.वि.) जंगल जाकर कटाई करना और लकड़ी लाने का कार्य।

पहरिया – (सं.स्त्री.) पहाड़ी, छोटी–छोटी पहाड़ियाँ।

पहरूआ – (सं.पु.) पहाड़ में लकड़ी काटने आने–जाने वाले लोग।

पहर – (अव्य.) दिन की एक अवधि, दोपहर या शाम।

पहँसुल – (सं.स्त्री.) साग–सब्जी काटने की हँसिया।

पहुँची – (सं.स्त्री.) शिशुओं के लिए धागे की चूड़ी।

पहुना – (सं.पु.) दामाद, बेटी का पति।

पहटब – (क्रि.) मवेशियों को पीटकर दूर भगाना।

पहटा – (सं.पु.) ऐसी काठ की पटरी जिससे ढीले सपाट किये जाते हैं।

पहटबाउब – (क्रि.) मवेशियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचवाना।

पहिलौपहिल – (अव्य.) सबसे पहले, पहलीबार, सर्वप्रथम।

पहटबइया – (सं.पु.) मवेशियों को दूर भगाने वाला व्यक्ति।

पहटी – (सं.स्त्री.) जोता खेत समतल करने वाली चपटी पटरी।

पहिरन – (सं.पु.) कमर के नीचे का भाग, पहनकर उतारा हुआ वस्त्र।

पहुआ – (सं.पु.) मेहमान के साथ आने वाले अन्य लोग।

पहीहा – (सं.पु.) मुख्य घर के बजाय सहायक घर आकर रहने वाला व्यक्ति।

पा

पाई – (सं.स्त्री.) चावल के कीड़े, मात्राएँ, रत्ती से छोटा पुराना पैमाना, मिली हुई, भोजन लीजिए।

पाई पुरिया – (ब.मु.) इधर से उधर आना– जाना लगा रहना, यहाँ का संदेश वहाँ और वहाँ का यहाँ पहुँचाना।

पाइक – (सं.पु.) क्षत्रिय की एक प्रजाति, चावल में पड़े कीट।

पाउब – (क्रि.) दौड़कर छू लेना, बराबरी करना, पा जाना, भोजन करना।

पाकब – (क्रि.) पकना, घाव का पक जाना, परिपक्व होना।

पाकठ – (विशे.) पका हुआ, अनुभवी, पुराना।

पाका – (सं.पु.) मुँह का घाव, मुँह में फोड़ा।

पाख – (सं.पु.) पखवारा, महीने का एक पक्ष, मेंड़ का पृष्ठ भाग, घर की छप्पर का चौड़ाई वाला प्रक्षेत्र।

पाखा – (अव्य.) उस तरफ, दूसरा पहलू, उस पार, खेत का उच्च भाग।

पाखर – (सं.सु.) खेत का उच्च वाला हिस्सा, खेत का ऊपरी छोर।

पाग – (सं.पु.) शक्कर या गुड़ का सिरा, व्यंजन में चढ़ा शक्कर का लेपन।

पागब – (क्रि.) आटे बनी वस्तु पर शक्कर का पारा चढ़ाना।

पाँगब – (क्रि.) किसी को अपने बस में कर लेना, अपनी ओर किसी को आकर्षित कर लेना।

पागुर – (सं.पु.) जुगाली, पशुओं द्वारा मुँह चलाने की पाचन प्रक्रिया।

पागा – (सं.पु.) सिर में बंधी पगड़ी, लम्बा साफा।

पाँच – (सर्व.) लोग बाग, समूह बोधक संख्या।

पाँचा – (सं.पु.) पाँच कगूरे का कृषि औजार, बाँस का ग्राम्य कृषि उपकरण।

पाँचउ – (विशे.) पाँचों के पाँचों, पाँच के पाँच, पाँच लोग।

पाछू – (अव्य.) पीछे, बाद में, अन्त में, पश्चात्।

पाछ – (सं.पु.) चले जाने के बाद का समय, मरने के बाद का समय, पीछा।

पाछे – (अव्य.) पीछे, बाद में, अन्त में, उपसंहार में।

पाछू पाछू – (ब.मु.) किसी के पीछे–पीछे दौड़ते रहने के भाव में।

पाँजर – (सं.पु.) जंघा का प्रक्षेत्र, बिल्कुल बगल में।

पाँजी – (विशे.) नदी में पाँव डूबने भर की जल स्थिति या जल स्तर।

पाट – (सं.पु.) नदी का किनारा, नदी की चौड़ाई, विवाहोत्सव में प्रयुक्त काठ पर रखा पत्थर का पटरा।

पाटब – (क्रि.) गढ्ढा भरना, मिट्टी से ढकना, उथल करना, जमीन में गाड़ना।

पाटी – (सं.स्त्री.) खेत की छोटी सी टुकड़ी, काठ का स्लेट, बाल संभालना, चारपाई की लम्बवत् लकड़ी।

पाटिस – (क्रि.) पाट दिया, ढक दिया, गढ्ढा भर दिया।

पाठ – (सं.पु.) अपने गाँव से दक्षिण के गाँव, पारायण, पाठ पढाना, बघेली मुहावरा।

पाढ़ – (सं.पु.) कमर के पीछे की माँसपेशी, बाजी मार लेना।

पाढ़ा – (सं.पु.) दाने रहित धान के पौध, अपुष्ट धान के दाने।

पाढ़िन – (सं.स्त्री.) एक मछली विशेष, युवती के लिए गाली।

पातर – (विशे.) पतली, दुबला–पतला, तरल में पानी की अधिकता।

पातपुआ – (विशे.) एकदम पतला वस्त्र, बिल्कुल सड़ा हुआ पुराना वस्त्र।

पाँत – (सं.पु.) पंगति, पंक्तियों में बैठने की शैली।

पाथब – (क्रि.) हाथ से उखली बनाना, थपकी देकर गाली वस्तु को प्रसारित करना।

पाद – (सं.पु.) गुदा द्वार से उत्सर्जित वायु।

पादब – (क्रि.) पाद निकलना, हिम्मत छूट जाना।

पापिठ्ठ – (विशे.) पापी एवं कुकर्मी, शंकालु एवं संदेह करने वाला।

पापर – (सं.पु.) बेसन का पापड़।

पापलीन – (सं.पु.) एक विशेष कपड़ा की किस्म।

पाबा – (सं.पु.) चारपाई या कुर्सी का एक पहलू, पुल का एक खम्भा।

पामन – (सं.पु.) हक में लगना, सेवकों द्वारा परम्परागत ढंग से त्यौहार में मांगे गये व्यंजन।

पायेन – (क्रि.) पा गये, पा लिये, जो पाँव के बल जन्मा हो (वि.) प्राप्त कर लिया।

पायगयेंब – (क्रि.वि.) प्राप्त कर लिया, पा चुकी, दौड़कर छू ली।

पाँयलागी – (सं.पु.) प्रणाम सूचक अभिवादन विशेष।

पार – (सं.पु./अव्य) किसी का पक्ष, वादा निभाकर पूरा करना, एक तरफ का पहलू, पार लगाना, एक छोर से दूसरे छोर।

पारब – (क्रि.) पड़ाना या लेटाना, सुलाना, खपड़ा विकसित करना, पिण्डा पारब बघेली मुहावरा।

पारूस – (क्रि.) पंगत में भोजन का परोसा जाना, भोजन परोसने का कार्य।

पारन – (सं.पु.) उपवास के बाद प्रथम अन्न ग्रहण।

पाल – (सं.पु.) टहनियों से अलग की गई बेर की पत्तियाँ।

पालब – (क्रि.) पालना–पोषना, पाल लेना।

पाला – (सं.पु.) ओस, तुषार, दबाव में फँस जाना, मैदान का आधा भाग, खेल की पाली, अधिक ठंड का होना।

पालकी – (सं.स्त्री.) काठ की बनी स्थायी डोली।

पालटी – (सं.स्त्री.) पार्टी, प्रीतभोज, दलबन्दी, विशेष समारोह।

पालट – (कि.वि.) अदला–बदली, वस्तु विनिमय।

पालस – (विशे.) जमीन की सतह पर पड़ाकर रखी हुई वस्तु की स्थिति।

पाँसा – (सं.पु.) कुल्हाड़ी के धार का पिछला भाग, चौपर खेल, चंदन के चौकार टुकडों।

पाही – (सं.स्त्री.) मुख्य घर छोड़कर जहाँ किसान दूसरे सहायक घर में रहता हो।

पि

पिअइहौ – (क्रि.) पिलाऊँगी, दुग्धपान करवाऊँगी।

पिअउबे – (क्रि.) पिलाओगे, पिलाओगी, क्या पिलाओगी।

पिअक्कड – (सं.पु.) खूब दारू–शराब पीने वाला, नसेड़ी, नसाखोर।

पिअसहा – (सं.पु.) प्यासा, प्यास से ग्रसित व्यक्ति।

पिआग – (सं.पु.) शराबी, नशाखोर, दारूबाज, दारूखोर।

पिअरा – (सं.पु.) धान का दानेयुक्त डंठल, पुआल।

पिआस – (सं.स्त्री.) प्यास, पानी–पीने की व्याकुलता।

पिआसा पिआर–(विशे.) प्यासा, प्यास की चाहत वाला व्यक्ति, पिआसी।

पिआर – (विशे.) प्यारा, अतिप्रिय, प्रिय लगने वाला, स्त्री.लिंग 'पिआरी'।

पिअर – (विशे.) पीला, पीले रंग का।

पिअरई – (विशे.) पीलापन, पीले रंग से युक्त।

पिअरिया पिआर– (विशे.) पीले वस्त्र धारण करने वाला विशेष व्यक्ति।

पिअराब – (क्रि.) पीला होना, पीला पड़ जाना।

पिअरी – (सं.स्त्री.) विवाह के समय धारित पीले रंग की धोती विशेष।

पिअरिआन – (विशे.) पीली हुई, पीली पड़ी हुई, पीले रंग में तब्दील।

पिअरियाबाबा– (विशे.) पीले वस्त्रों वाला सन्त या महात्मा।

पिआज – (सं.पु.) प्याज।

पिअब – (क्रि.) पीना, ग्रहण करना, चूसना, दुग्धपान करना।

पिअतुआ – (सं.पु.) दुधपिया, दुधमुँहा, जो अभी दूध पर आश्रित हो।

पिअनी – (सं.स्त्री.) मजदूरी के साथ दिया गया बोनस, प्रोत्साहन धन।

पिअना – (सं.पु.) दूधारू पशुओं का आहार, खली।

पिआगी – (सं.पु.) दारूखोर, शराब के नशे में धुत रहने वाला।

पिआउब – (क्रि.) पिलाना, पिलवाना, दुग्धपान कराना।

पिअबइया – (सं.पु.) पिलाने वाला, दुग्धपान कराने वाली।

पिअइया – (सं.पु.) पीने वाला, दुग्धपान करने वाला।

पिअइहैं – (क्रि.) पिलायेंगे, पिलायेंगी, जरूर पान करायेगी।

पिआ – (आज्ञा.) पिओ, पी लो, पी लीजिए।

पिकपिकाब – (क्रि.) बिना अर्थ का बड़बड़ाते रहना, निरर्थक बोलना।

पिकपिकबइया– (सं.पु.) दिनभर बिना मतलब के बोलते रहने वाला।

पिकपिकहा – (सं.पु.) हमेशा जो अस्पष्ट व्यर्थ की बाते बड़बड़ाता हो।

पिच्ची – (सं.स्त्री.) कुचली हुई, दबकर जो कुचल गई हो, माथा पच्ची।

पिचपिचाब – (क्रि.) पके घाव से पश या मवाद का बहना।

पिचपिचान – (विशे.) घाव जो पककर मावाद से खूब भरा हो, सडे भोजन से द्रवित पानी।

पिचक्का – (क्रि.वि.) घाव का छींटा, वेग के साथ फोड़े से निकला प्ररस।

पिछलग्गू – (सं.पु.) पीछे–पीछे लगे रहने वाला व्यक्ति, अनुयायी।

पिछउरा – (सं.पु.) विवाह के समय दाम्पत्य को गठबंधन करने वाला चादर।

पिछउरी – (सं.स्त्री.) चादर, विस्तर पोश, बेड शीट।

पिट्ट–पिट्ट– (अव्य) जल्दी–जल्दी आँख की पलकें पटकना।

पिटबाउब – (क्रि.) किसी की पिटाई कराना, पिटवाना।

पिटबइया – (सं.पु.) पीटने वाला, पिटाई करने वाला।

पिटरब – (क्रि.) पिट जाना, मार खाना, पीछे हो जाना।

पिटाई – (क्रि.वि.) मारने पीटने के कार्य का दौर।

पिटपिटाउब – (क्रि.) आँख की पलक पिट्ट–पिट्ट करना।

पिटइलहा – (सं.पु.) जो हमेशा मार खाता हो, मार खाने का आदती व्यक्ति।

पिटउँआ – (विशे.) पीटने की शैली में प्रहार।
पिठाँह – (सं.पु.) पीठ, पृष्ठ भाग।
पिढ़बा – (सं.पु.) बैठने के लिए काष्ठ का पीढा या पटा।
पिढ़ई – (सं.स्त्री.) हल की एक पतली लकड़ी, लिखने वाली काष्ठ की स्लेट।
पिण्डा पारब – (ब.मु.) पिण्डदान, एक गाली विशेष।
पितरा – (सं.पु.) पितृ देव, पितृ देवता।
पितरपख – (सं.पु.) पितृ पक्ष।
पितरहाइन – (सं.स्त्री.) पितृ पक्ष के दिन, पितृ आगमन के दिवस।
पितिआनी – (सं.स्त्री.) चाची, चाचा की पत्नी।
पितिआउत – (सं.पु.) चचेरा, चचेरी।
पिधुलब – (क्रि.) पिघला कर चटनी कर देना, घाव का पिस जाना।
पिधुलरान – (विशे.) पके घाव का दबकर, पिघला हुआ।
पिघलरा – (विशे.) पककर जो पिघल गया हो, मवाद युक्त घाव।
पिन्ना – (विशे.) पिनपिनाकर बोलने वाला, नाक से बोलने वाला, स्त्री.. 'पिन्नी'।
पिनपिनिहा – (सं.पु.) नाक के बल स्वर निकालने वाला व्यक्ति।
पिनपिनाब – (क्रि.) नाक से बोलना, पिनापिनाकर बोलना, पिनपिनाना।
पिनिन पिनिन– (अव्य.) रोवन प्रवृत्ति, नाक के बल बोलने का आदती।
पिपिहिरी – (सं.स्त्री.) बाँसुरी, सीटी, सुरीला वाद्ययंत्र।
पिबाउब – (क्रि.) पिलाना, पिलवाना, दुग्ध पान कराना।
पिबइया – (सं.पु.) पिलाने वाला, दुग्धपान कराने वाला व्यक्ति।
पिबायेन – (क्रि.) पिला दिये, पिला चुके, पिला लिये।
पिबइहेय – (क्रि.) पिलाओगे, पिलाओगी, क्या दुग्ध पान कराओगे।
पिबइहौं – (क्रि.) पिलाऊँगी, पिलाऊँगा, दुग्ध पान कराऊँगी।
पिरकी – (सं.स्त्री.) दानेदार छोटी–छोटी फुड़िया या फुन्सी।
पिरकिहा – (सं.पु.) जिसके दानेदार फुड़िया पड़ी हो वह व्यक्ति।
पिराब – (क्रि.वि.) दर्द होना, पीड़ा करना, वेदना की अनुभूति होना।
पिरबाउब – (क्रि.) पीड़ा पहुँचाना, दर्द उभारना।
पिरबइया – (सं.पु.) दर्द देने वाला, पीड़ा बढ़ाने में सक्रिय व्यक्ति।
पिरवाई – (विशे.) प्रसव की पीड़ा से ग्रसित।
पिलबा – (सं.पु.) कुत्ते का बच्चा, पिल्ला, स्त्री.लिंग 'पिलइया'।
पिल्ला – (सं.पु.) किसी वस्तु का एक पहलू, किवाड़े का एक भाग।
पिलन्टा – (सं.पु.) छोटे कद का आदमी, किसी व्यक्ति का नाम।
पिलउब – (क्रि.) गढ़्ढे में गोट डालना, एक ग्रामीण खेल।
पिलबाउब – (क्रि.) गढ़्ढे में गोटी डलवाना।
पिलबइया – (सं.पु.) गोट गढ़्ढे में डालने या पिलाने वाला।
पिलोरा – (सं.पु.) नवजात शिशु, छोटा सा बच्चा, अबोध बालक।
पिल्होट – (सं.पु.) हाल का जन्मा शिशु, दुधमुँहा बच्चा, छोटा सा शिशु।

पिलपिल – (विशे.) पककर अत्याधिक गुल–गुला हुआ फल।

पिसान – (सं.पु.) आटे का चूर्ण, आटा।

पिसना – (सं.पु.) पिसाई के निमित्त रखा हुआ अनाज, पिसाई का शुल्क।

पिसबाउब – (क्रि.) पिसाई का कार्य करवाना, पीसने में मदद करना।

पिसबइया – (सं.पु.) पीसने का कार्य करने वाला व्यक्ति, तास फेटने वाला।

पिसरब – (क्रि.) कुचल जाना, पिस जाना, दबकर चूर्ण हो जाना।

पिसाई – (सं.पु.) आटा पीसने की मजदूरी या मेहनताना।

पिसाप – (सं.पु.) पेशाब, मूत्र।

पिसापा – (विशे.) जिसे पेशाब लगी हो, पेशाब से ग्रसित व्यक्ति।

पिसनही – (सं.स्त्री.) जिस पात्र में पिसान या आटा रखा जाता हो।

पी

पीका – (सं.पु.) बाँस से प्रस्फुटित नये पौध, पौध की जड़ से निकली कोपले।

पीड़ा – (सं.पु.) प्रजनन के बाद घी–गुड़ से बना लड्डू।

पीटब – (क्रि.) पीटना, पिटाई करना।

पीठी – (सं.स्त्री.) पीसी हुई गीली दाल का समूह।

पीढ़ा – (सं.पु.) बैठने के लिए बना काष्ठ का पात्र।

पीती – (सं.पु.) बड़े पिता जी, चाचा, पिता के भाई।

पीप – (सं.स्त्री.) मवाद, पके फोड़े का पानी।

पीपर – (सं.स्त्री.) पीपल, पीपल औषधि, छाती के पीपर बघेली मुहावरा।

पु

पुकाँदूध – (विश.) बहुत अधिक खट्टा, अति खट्टा स्वाद।

पुचपुची – (सं.स्त्री.) आँख में लगाई जाने वाली ट्यूब (दवाई), व्यर्थ की वार्ता।

पुखा – (सं.पु.) बरसात का एक नक्षत्र।

पुचुराब – (क्रि.) चुपके–चुपके बिना मतलब की बातें करना।

पुचुरामन – (ब.मु.) एक ही बात को बार–बार बताना, बिना प्रयोजन के वही–वही कार्य करना।

पुचुर पुचुर – (अव्य.) आँखों का मिचमिचाना, पककर अति ढीली एवं गीली स्थिति।

पुचारब – (क्रि.) प्रोत्साहित करना, पानी चढ़ाना, चने के झाड़ में चढ़ाना।

पुचकारब – (क्रि.) पुचकारना, रोते को स्नेह प्रदर्शित कर चुप कराना।

पुचरबइया – (सं.पु.) पुकारने वाला, प्रोत्साहित व उत्प्रेरित करने वाला।

पुचरबाउब – (पानी) पानी चढ़वाना, किसी को उत्प्रेरित करवाना।

पुछइया – (सं.पु.) कही बात को पूछने वाला, प्रश्नकर्ता।

पुछटेब – (क्रि.) दोनों टाँग से पीछे की ओर पूँछ करके पकड़ना, पीछा किये रहना।

पुंजमनिया – (विशे.) वितरण की वह प्रणाली जिससे सबको मिल जाय, बहुत कम मात्रा, वस्तु की काम चलाऊ उपलब्धता।

पुजमान – (सं.पु.) पूजनीय, जिसका पाँव पूज लिया गया हो।

पुजरब – (क्रि.) अस्त्र से कट जाना, पूजा का हो जाना, पूरा पड़ जाना।

पुजाउब – (क्रि.) माँग के अनुसार पूर्ति कर लेना, पाँव की पूजा करा लेना।

पुजबाउब – (क्रि.) अपनी पूजा करवाना, पूर्ति करा लेना।

पुजबइया – (सं.पु.) पूर्ति करने वाला, पूजा या पूजन कर्ता।

पुजउब – (क्रि.) मात्रा पूरा करना, आवश्यकता के अनुसार पूरा कर देना।

पुँजिगर – (विशे.) पूँजीपति या धनवान, पूँजी से समृद्ध एवं मजबूत।

पुँजिआब – (क्रि.) पूँजी संचित करना, पूँजी की दृष्टि से सम्पन्न होना।

पुजहाई – (सं.स्त्री.) पूजा सामग्री वाली झोली, पूजालय।

पुजाई – (कि.वि.) घर देवता या ग्राम्य देवता की परम्परागत पूजा।

पुजिगा – (कि.वि.) पूर्ण हो गया, सबको मिल गया, पूरा पड़ गया।

पुजेरी – (सं.पु.) पुजारी, मंदिर का पुजारी, पूजा–पाठ करने वाला।

पुट्ठा – (सं.पु.) कापी–किताब का कवर, कमर के पीछे का माँसल भाग।

पुट्ठ – (विशे.) पुष्ट, मजबूत, ताकतवर।

पुट्ठाब – (क्रि.) पुष्ट होना, खाकर तन्दुरुस्त बनना।

पुटपुर – (सं.पु.) ऊँची भूमि, कम उपजाऊ जमीन, कंकरीला–पथरीला खेत।

पुटकी – (सं.स्त्री.) पोटली।

पुटकिहा – (सं.पु.) पोटली बनाने वाला कपड़ा विशेष।

पुटकिआउब – (क्रि.) पोटली में खाद्यान्न को बाँधना।

पुदुर–पुदुर – (अव्य) बिना प्रयोजन के अनावश्यक मुंह चलाते रहना।

पुट्ट–पुट्ट – सूखी लकड़ी तोड़ने से होने वाली ध्वनि, अति कमजोर का प्रतीक।

पुटिआउब – (क्रि.) मिला–जुलाकर किसी को अपने पक्ष में कर लेना।

पुन – (अव्य) फिर से, पुनः, दुबारा, अनन्तर।

पुनि – (अव्य) पुनः, फिर से, अगेन।

पुन्न – (सं.पु.) पुण्य, कल्याणकारी।

पुन्नेठ – (विशे.) छोटा मुँह बड़ी बातें, बड़ों जैसा बच्चों की वार्ता।

पुनिया – (सं.स्त्री.) पिनपिनाते हुए बोलने वाली नारी, पूर्णिमा को जन्मी स्त्री.।

पुन्नमासी – (सं.स्त्री.) पूर्णमासी।

पुन्नियाई – (सं.स्त्री.) पुण्यदायी, दान–पुण्य के निमित्त प्रदत्त।

पुन्ना – (सं.पु.) पिनपिना कर बोलने वाला, पूर्णिमा को जन्मा बालक।

पुन्नहा – (सं.पु.) दान–पुण्य में प्राप्त वस्तु, दान–पुण्य हेतु संचित वस्तु।

पुतरिया – (सं.स्त्री.) पुतली, खिलौना, पुतली जैसी सुन्दर नारी।

पुतरी – (सं.स्त्री.) आँख की पुतली, अतिप्रिय, गुड़िया का खिलौना।

पुतउ – (सं.स्त्री.) पुत्र वधु, पतोहू।

पुतहिया – (सं.स्त्री.) पतोहू, पुत्र वधू।

पुतहुआब – (क्रि.) पुत्र वधू के आने की लालसा का होना।

पुतउहाई – (सं.स्त्री.) जिस नारी के घर पुत्र वधू आ चुकी हो, पुत्र वधू वाली नारी।

पुपुआब – (क्रि.) प्रलोभन बस पीछे–पीछे घूमना, कह–कह कर प्रचारित करना।

पुरइन – (सं.स्त्री.) जलाशय का फूल, पुरैन, बेसन का व्यंजन, दीवाल का चित्र।

पुरहर – (सं.पु.) पूरी, ऊँची पूरी, पूर्ण परिपक्व, सार्मथ्यवान।

पुरब – (क्रि.) गढ्ढा का भर जाना, घाव का भर जाना।

पुरबाउब – (क्रि.) गढ्ढे को भरवाना व पूरा कराना।

पुरायँठ – (सं.पु.) पूर्वजों की भाँति बातें करने वाला, पुराना व्यक्ति।

पुरनमा – (सं.पु.) पुराना वस्त्र या घर, पुरानी वाली वस्तु, पुराना हीं।

पुरनिहा – (सं.पु.) पुराने चाल–चलन व परम्परा का पोषक।

पुरपुराब – (क्रि.) कागज या कपड़ा को फाड़ना, पुर–पुर की आवाज होना।

पुरपुराउब – (क्रि.) पुर–पुर की आवाज कराते हुए फाड़ना।

पुर पुर – (सं.पु.) वायु उत्सर्जन के समय की एक ध्वनि, फाड़ने से उत्पन्न ध्वनि।

पुरखा – (सं.पु.) पूर्वज, पूर्व पुरूष, कुलवंश का बडा बूढ़ा।

पुरखातूँ – (कि.वि.) छोटी मुँह बड़ी बातें करना, बच्चे द्वारा बूढ़ों जैसी बातें करना।

पुरबइया – (सं.स्त्री.) पूर्व दिशा से बहने वाली हवा।

पुरबायेन – (अव्य) पूर्व दिशा से आने वाली हवा विशेष, पूर्व की ओर।

पुरबा – (सं.पु.) वर्षा का एक चरण, एक नक्षत्र।

पुरचुल – (सं.पु.) अति दीन–हीन एवं दैन्यता प्रदर्शित करने वाला।

पुरिया – (सं.स्त्री.) पुड़िया, जहर की पुड़िया, बघेली मुहावरा।

पुरिहाव – (सं.पु.) पूड़ी बनने या खाने का दौर।

पुरियानदंन – (ब.मु.) जहर का खजाना, गुड़ का बाप कोल्हू।

पुरिआउब – (क्रि.) पुडिया बनाना, पुड़िया लगाना।

पुलकब – (कि.वि.) संकीर्ण क्षिद्र से पार हो जाना, पोलेपन से प्रवेश कर निकल जाना, छूट जाना।

पुलकाउब – (क्रि.) निकलवाना, पोलेपन से प्रवेश कराकर भगा देना।

पुलुकबइया – (सं.पु.) संकीर्ण क्षिद्र से प्रवेश कर आगे निकल जाने वाला।

पुल्ली – (सं.स्त्री.) हिस्सा बाँट का दस्तावेज, पेन का ढक्कन, आभूषण की कील, वंश विवरण पत्रिका।

पुलुलुआ – (सं.पु.) एकदम पानी जैसी पतली टट्टी।

पुल्लाउब – (क्रि.) खो–खो के खेल में खिलाड़ी को बढ़ाना व गतिमान करना।

पुलपुलिया – (सं.स्त्री.) पतली टट्टी, कढ़ी जैसा पतला मैला।

पुलइया – (सं.पु.) अतिप्रिय शिशु के लिए स्नेहिल उद्बोधन।

पुसउल – (सं.पु.) पूस मास की परीवा की तिथि व त्यौहार।

पुसपरीबा – (सं.पु.) पूस महीने की परीवा को होने वाला ग्राम्य त्यौहार।

पू

पूँक – (सं.स्त्री.) गुदा, गुदा द्वार की लाल माँसपेशी।

पूकमारी – (सं.स्त्री.) गुदा पर केन्द्रित नारी के लिए अश्लील गाली।

पूँछब – (क्रि.) पूछना, प्रश्नोत्तर करना, जानकारी लेना।

पूँछी – (क्रि.) पूछिए, पूँछ लीजिए, पूँछ लो, पूछो।

पूजब – (क्रि.) आवश्यकता की पूर्ति हो जाना, अस्त्र से गला उतार लेना।

पूठी – (सं.स्त्री.) एक वनपौध जिसके छिलके से रस्सी बनती है।

पूरब – (सं.पु.) पूर्व, पूर्व दिशा, घाव को भरना (कि.वि.)

पूरा – (संपु.) ढोलक में मढ़ा चमड़ा, वधू विदाई में प्राप्त रीतिगत पूड़ियाँ मिष्ठान।

पूरी – (सं.स्त्री.) दाल वाली पूडी, धान के ठंडलों का बँधा गठ्ठा।

पूरपार – (विशे.) पूरी–पूरी मात्रा, आवश्यकता एवं पूर्ति एक बराबर, न कम न ज्यादा मात्रा।

पूरन – (विशे.) सभी चीजों की पूर्णता व सम्पन्नता, पूर्णतः पूर्ति।

पूरन पात – (सं.पु.) पूजा–पाठ व धार्मिक अनुष्ठान में थाल में दिया गया आरती हेतु चावल।

पे

पें – (सं.पु.) रोते समय की एक ध्वनि विशेष।

पेउँदी – (सं.स्त्री.) बड़े आकार की एक मीठी बेर की किस्म।

पेउला – (सं.पु.) अनाज रखने का बडा सा मिट्टी का पात्र, कुठिला।

पेंउसरी – (सं.स्त्री.) पेंउस, प्रजनन के बाद वाले दूध का जमाया गया व्यंजन।

पेउहा – (सं.पु.) दुग्धपान के लिए भूखा शिशु, दुधपिहा बच्चा।

पेंगा – (सं.स्त्री.) जबड़े तक फटे मुँह वाली एक चिड़िया, पेंगा कस मुँहु फाट, बघेली मुहावरा।

पेंगल – (सं.पु.) पोंगा आदमी, दन्तविहीन बूढ़ा व्यक्ति।

पेंच – (सं.पु.) दांव पेंच, मशीन के पुर्जे।

पेंचहा – (सं.पु.) दांव पेंच व नियम कानून जानने वाला।

पेज – (सं.पु.) प्याज।

पेजहा – (सं.पु.) प्याज का खेत, प्याज खरीदने–बेचने वाला।

पेज पानी – (ब.मु.) रूखा–सूखा भोजन।

पेजहाई – (सं.स्त्री.) प्याज का व्यापार, प्याज वाली जमीन व पात्र।

पेटभराँव – (अव्य) पेटभर, भरपेट, तृप्ति होने की मात्रा।

पेटपकन – (ब.मु.) पेट का पानी पचा देने वाला, समस्या मूलक जन।

पेटहा – (विशे.) जिसे मात्र अपने पेट की चिंता हो, दूसरे का हक छीनकर खाने वाला, स्त्री.लिंग 'पेटही'।

पेटागिन – (सं.स्त्री.) भूखों मरने वाला, भूख के मारे चिपका हुआ पेट।

पेटपोछना – (अव्य) अन्तिम संतान, जिसके जन्म के बाद संतानोपत्ति बन्द हो गई हो।

पेटका – (अव्य) पेट के बल लेटा हुआ, पीठ ऊपर की ओर करके पड़ना।

पेटकुँइया – (अव्य) जमीन पर पेट सटाकर पड़ने की स्थिति।

पेटारथू – (ब.मु.) जो अपना पेट भरने के चक्कर में रहता हो।

पेटुआ – (सं.पु.) बकौड़ा का रेशा, अमारी का छिलका।

पेटलण्डी – (विशे.) आँख चुराकर खाने वाली, पुलिंग 'पेटलण्डा'।

पेटबइठा – (विशे.) भूख के कारण पेट के प्रकोष्ठ जिसके बैठे ले।

पेटकढ़ा – (विशे.) जिसका लेद निकल आया हो।

पेडहरा – (सं.पु.) जड़वाला लकड़ी का हिस्सा।

पेंडा – (सं.पु.) पौधे का जड़ वाला तना, नीचे का हिस्सा।

पेडाब – (क्रि.) पेड़ से शाखाओं का फूटना, वृक्ष का मोटा होना, जेल में बंद होना, अन्दर होकर बन्द कर लेना।

पेडान – (विशे.) पेड़ में प्रस्फुटित शाखायें, मोटा हुआ पेड़।

पेढबा – (सं.पु.) पेड़, वृक्ष।

पेंढा – (सं.पु.) वृक्ष का निचला भाग, पौध का जल वाला अंश।

पेंदर – (सं.स्त्री.) नाभि के नीचे का उच्च भाग।

पेंदरब – (क्रि.) मारना–पीटना।

पेदराउब – (क्रि.) किसी से किसी कोमरवाना–पिटवाना।

पेंदरइया – (सं.पु.) मारने–पीटने वाला व्यक्ति।

पेंदी – (सं.स्त्री.) बर्तन का निचला वाहय तल, वस्तु का निचला भाग।

पेन्हाब – (क्रि.) गाय–भैंस के थनों का दुहने योग्य होना।

पेन्हबाउब – (क्रि.) दुधारू पशु के बाल को दुहने लायक बनाना।

पेन्हबइया – (सं.पु.) थनों में दूध उतारने वाला व्यक्ति।

पेन्हान – (विशे.) थनों में दूध की उतरी हुई अवस्था।

पेरब – (क्रि.) पेरना, रस निकालना, परेशान करना।

पेरबाउब – (क्रि.) पेरने का कार्य करवाना।

पेरबइया – (सं.पु.) रस निकालने वाला, पेरने वाला व्यक्ति।

पेररब – (क्रि.) बीच में दबकर पिस जाना, दो पाटों के बीच फँसना।

पेराब – (क्रि.) पिस जाना, तिलहन से तेल निकल आना।

पेराई – (सं.पु.) पेरने के बदले प्राप्त मजदूरी, पेरने का दौर।

पेरबाई – (सं.स्त्री.) पेराई का मेहनताना, तेल निकालने की मजदूरी।

पेरँउसा – (सं.पु.) पुआल की भूसानुमा टुकड़ियाँ।

पेरूआ – (सं.पु.) चारपाई के पावे, पेरूआ कस मुँहु, बघेली मुहावरा।

पेलब – (क्रि.) ताकत लगाकर डाल देना, खाना खा लेना।

पेलबाउब – (क्रि.) किसी से डलवाना, दूसरे से पेरने का कार्य करवाना।

पेलइया – (सं.पु.) ताकत के साथ डालने वाला, खाने वाला।

पेलाई – (सं.पु.) पेलने की मजदूरी, पेलने का दौर।

पेलचब – (क्रि.) नुकीली कील डाल देना, जमकर डालना–निकालना।

पेलचाउब – (क्रि.) किसी से डलवाना।

पेलिपराब – (ब.मु.) प्राण बचाकर भागना, भयवश मैदान छोड़कर भाग जाना।

पेल्हर – (सं.पु.) अण्ड–कोश।

पेल्हउरी – (सं.स्त्री.) छोटे आकार का अण्डकोष, बच्चों का अण्ड–कोश।

पेल्हड़ब – (क्रि.) अण्डकोश के प्रक्षेत्र में मार करना।

पेल्ला – (सं.पु.) दिनभर खाने वाला, स्त्री.लिंग 'पेल्ली'।

पेलिआब – (क्रि.) आँख मींचकर जबरिया घुस जाना।

पेसब – (क्रि.) नुकीली कील चुभा देना, घुसेड़ना या चुभाना।

पेसुआ – (सं.पु.) पशुओं के शरीर पर पड़ने वाले श्वेत जूँ।

पेसुआब – (क्रि.) पशुओं के शरीर में जूँ का पड़ जाना।

पेसुआन – (विशे.) जूँ पड़ा हुआ पशुओं का शरीर।

पेहंटा – (सं.पु.) छोटेकद का आदमी, अबोध शिशु, स्त्री.लिंग 'पेहटी'।

पो

पोई – (सं.स्त्री.) एक प्रकार की भाजी, साग की एक विशेष पत्ती।

पोइसा पोइस– (ब.मु.) बिना अर्थ के पीछे–पीछे घूमना, अनावश्यक चक्कर काटना, दौड़कर आना– जाना।

पोइलहा – (सं.पु.) ब्राम्हण जाति का एक गोत्र विशेष।

पोउब – (क्रि.) गदेली के सहारे रोटी बनाना, पोउब पाथब ब. मु।

पोकबा – (सं.पु.) बाँस का एक मोटा सा डंडा।

पोक्किआउब– (क्रि.) बाँस के मोटे डंडा से मार करना।

पोक्का – (सं.पु.) बाल छोटा किया हुआ, चिकनी मुण्डी का।

पोकहट – (सं.पु.) अतिवृद्व एवं जर्जर हुआ बूढ़ा व्यक्ति।

पोंकब – (क्रि.) पतला दस्त जाना, पतली टट्टी करना।

पोंकाउब – (क्रि.) पतला दस्त निकलवा लेना।

पोकइया – (सं.पु.) पतली–पतली टट्टी या दस्त करने वाला।

पोकना – (सं.पु.) दस्त के दौरान निकला हुआ तरलीय मैला।

पोंकास – (सं.पु.) बार–बार दस्त आने की अनुभूति या इच्छा।

पोंकासा – (विशे.) जिसे पतली टट्टी करने की इच्छा जागृति हो गई हो।

पोकपोकाब – (क्रि.) बिना मतलब की बातें, बक–बकाते रहना।

पोकनहा – (सं.पु.) जो हमेशा पतली टट्टी करता रहता हो।

पोक्क–पोक्क– (अव्य) पोली चीज में धक्का देने से होने वाली आवाज।

पोखरी – (सं.स्त्री.) पोखर, जलाशय।

पोंगा – (सं.पु.) जिसे लाभ–हानि का ज्ञान न हो।

पोगरी – (सं.स्त्री.) पोलदार बाँस की टुकड़ी, पोगड़ी खाद्य सामग्री।

पोंगर – (सं.पु.) घुटने के नीचे की मोटी हड्डी वाला भाग।

पोचहा – (सं.पु.) बिना बीज की फली, चना विहीन फली, लपोचड़ा किस्म का व्यक्ति, स्त्री.लिंग 'पोचही'।

पोंछब – (क्रि.) पोंछना, पोछाई करना।

पोंछबाउब – (क्रि.) किसी दूसरे से पोंछवाना, साफ करवाना।

पोछना – (सं.पु.) पोछने वाला कपड़ा, पोंछा का कपड़ा।

पोछबइया – (सं.पु.) पोंछने वाला, पोंछा लगाने वाला।

पोछाब – (क्रि.) सफाई हो जाना, साफ–सुथरा बना देना।

पोछान – (विशे.) पोंछकर बिल्कुल साफ–सुथरा किया हुआ।

पोटा – (सं.पु.) नाक से निकला हुआ अधिक प्ररस, छोटे–छोटे बच्चे।

पोटरी – (सं.स्त्री.) पोटली, कपड़े में बंधी अनाज की गठरी।

पोड़र – (विशे.) पोलापन, पोलाईयुक्त, पोलनुमा, अठोस।

पोड़िलाब – (क्रि.) गला फाड़कर जोर–जोर से चिल्लाना।

पोड़िलाउब – (क्रि.) छिलाई करके लकड़ी के एक सिरे को नुकीला बनाना।

पोड़िका – (सं.पु.) कृषि कार्य की संविदा, बैल और मजदूरों की साझेदारी।

पोड़िकहरू – (सं.पु.) किसी के हल में अपना बैल संलग्न कर कृषि कार्य करने वाला।

पोड़की – (सं.स्त्री.) एक विशेष चिड़िया की किस्म।

पोता पोती – (ब.मु.) एकदम लीप–पोत देना, मिटा देना, चिन्ह नष्ट कर देना।

पोतिआउब – (क्रि.) भोजन पकाने वाले बर्तन में मिट्टी का लेपन लगाना।

पोतहड़ी – (सं.पु.) पोतने के लिए प्रयुक्त बड़ा पात्र विशेष।

पोतब – (क्रि.) पोतना, पुताई करना।

पोतबाउब – (क्रि.) किसी से पोतवाना, पुतवाई का कार्य कराना।

पोताब – (क्रि.) पोतने का कार्य होना।

पोतान – (विशे.) पुताई का हो चुकना, पोता हुआ साफ सुथरा।

पोतबइया – (सं.पु.) पुताई का कार्य करने वाला।

पोताई – (सं.पु.) पुताई का चलता हुआ कार्य, पोतने की मजदूरी।

पोत्ता – (सं.पु.) स्लेट के अक्षर मिटाने वाला गीला कपड़ा।

पोतना – (सं.पु.) फर्श की पुताई में प्रयुक्त गीला कपड़े की टुकड़ी।

पोती – (सं.स्त्री.) भोजन पकाने के बर्तन में लगाया गया मिट्टी का लेप।

पोत – (सं.पु.) धन–दौलत, सम्पत्ति या पूँजी, पूर्वज की पूँजी।

पोथा – (सं.पु.) अण्डकोश।

पोटरा – (सं.पु.) उँगुली के नाखूनों के ठीक नीचे का माँसल भाग।

पोथी – (सं.स्त्री.) प्याज की एक गाँठ, लहसुन की गाँठ।

पोथन्ना – (सं.पु.) बड़ी एवं भारी पुस्तक, पुस्तक के लिए व्यंग्य कथन।

पोथीहा – (सं.पु.) पुस्तक लेकर चलने वाला, पुस्तक वाला कक्ष।

पोंद – (सं.पु.) चूतड़, हिप।

पोदासी – (सं.स्त्री.) बड़े–बड़े चूतड़ वाली नारी, नारी के लिए एक गाली।

पोंदाड़िया – (सं.पु.) बड़े–बड़े पोंद वाला व्यक्ति, स्त्री.लिंग 'पोदाड़ी'।

पोंदीपँइया – (क्रि.वि.) सहारा देकर ऊपर उठाना, प्रोत्साहन देकर बढ़ाना।

पोदाइस – (क्रि.) किसी की खुशामदी पूर्ण व्यवस्था बनाना।

पोंदासे – (का.) पोंद में, पोंद पर।

पोन्डा – (विशे.) जो अठोस हो, पोलनुमा, स्त्री.लिंग पोन्डी।

पोन्डहा – (सं.पु.) ऐसा पौध जिसका तना पोलाईयुक्त हो।

पोपरी – (सं.स्त्री.) पपड़ी, बेसन का पापड़।

पोबाउब – (क्रि.) गदेली के सहारे रोटी प्रसारित करवाना।

पोबाब – (क्रि.) रोटी का बन जाना, रोटी का प्रसारित हो चुकना।

पोबाई – (सं.स्त्री.) रोटी पोने का चल रहा कार्य, (कि.) रोटी बनाने का मेहनताना।

पोबइया – (सं.पु.) रोटी बनाने वाला व्यक्ति विशेष।

पोबउबेय – (क्रि.) रोटी बनवाओगी, पोने का कार्य कराओगी।

पोबइहौं – (क्रि.) रोटी बनवाऊँगी, बनवाने में सहयोग करूँगी।

पोमन – (सं.पु.) रोटी बनाने के पश्चात शेष बचा हुआ आटा।

पोंय पोंय – (अव्य) भैंस के चिल्लाने की एक प्रवृत्तिगत आवाज, ध्वनि।

पोर – (सं.पु.) दो गाँठों के बीच का बाँस का भाग।

पोरसा – (सं.पु.) हाथ खड़ा करने पर नीचे से ऊपर तक की उँचाई का माप।

पोरहा – (सं.पु.) पोर–पोर वाली लाठी या गन्ना का डंठल।

पोलबा – (सं.पु.) छड़ी में बँधा हुआ धातु का छल्ला, पेन का ढक्कन।

पोलखर – (विशे.) पोलाईयुक्त जगह, जिस वस्तु के नीचे पोलापन हो।

पोलका – (सं.स्त्री.) पुराने प्रचलन की औरतों की ब्लाउज।

पोलपट्टी – (ब.मु.) रहस्य, कमजोरी, गड़बड़ी, कमी, भेद।

पोलिंदा – (सं.पु.) कागजों का लपेटा हुआ बन्डल या गट्ठा।

पोलइया – (सं.पु.) शिशुओं के लिए स्नेहित सम्बोधन।

पोसाब – (क्रि.) पसन्द आना, मन में अच्छा लगना, रूचि के अनुरूप।

पोसता – (सं.पु.) किवाड़े के पल्लू में लगने वाली बेड़ी पटरी, एक ड्राई फ्रूट।

पोस्मान – (सं.पु.) किवाड़े में लम्बी लगी हुई मजबूती हेतु एक लकड़ी।

पोहब – (क्रि.) पोली जगह में डाल देना, अन्दर कर देना।

पोहबाउब – (क्रि.) किसी को भरपेट भोजन करवाना, डलवाना।

पोहइया – (सं.पु.) डालने वाला, भोजन करने वाला।

पोहानंदन – (ब.मु.) जो खाने–पीने में हमेशा आगे रहता हो।

पोहगर – (सं.पु.) होशियार, चतुर चालाक, व्यंग्य प्रहार।

पोहकड़ – (सं.पु.) छोटे बच्चों के लिए मनोविनोदी सम्बोधन।

पोहन्दा – (सं.पु.) खूब खाने वाला, बड़ी–बड़ी चूतड़वाला, स्त्री.लिंग 'पोहन्दी'।

फ

फइल – (विशे.) पर्याप्त जगह, विस्तृत स्थान।

फइलबार – (विशे.) पर्याप्त स्थान, विस्तृत जगह।

फइलब – (क्रिया) फैलना, प्रसारित होना, प्रचार हो जाना।

फइलाउब – (क्रिया) फैलाना, प्रसारित कर देना, प्रचारित करना।

फइलान – (विशे.) फैला हुआ, चारों तरफ जानकारी हुई स्थिति।

फइलइया – (सं.पु.) प्रचार–प्रसार करने वाला, फैलाने वाला।

फइलबाउब – (क्रिया) फैलवाना, फैलाने मे योगदान करना, प्रचार करवाना।

फइले – (विशे.) किनारे, दूर, एकदम एकान्त, स्वतंत्र, अलग।

फइसला – (सं.पु.) निर्णय, फैसला, निपटारा, निराकरण।

फँइकब – (क्रिया) फेंकना, फेंक देना, घर से दूर कर देना।

फँइकाउब – (क्रिया) किसी से फेंकवाना, फेंकने के लिये प्रेरित करना।

फँइकबइया – (सं.पु.) फेंकने वाला, फेंकवाने वाला, दूर हटाने वाला।

फउद – (सं.पु.) फौज या सेना, घर में बच्चों की अधिक संख्या।

फउलेंद – (संपु) अधिक संख्या मेंअनावश्यक बच्चे।

फकइता – (सं.पु.) जमीन में गड़ी नुकीली कील, फसल का सख्त डंठल।

फकरा – (सं.पु.) वर्षा के पानी की मन्द–मन्द फुहार।

फक्क – (विशे.) स्वच्छ, सफेद, एकदम ध ावल, साफ–सुथरा, निर्दाग।

फँकिआउब – (क्रिया) गदेली द्वारा दूर से ही मुँह में डाल लेना।

फकइया – (सं.पु.) फाँक कर खाने वाला, लम्बी– चौड़ी हांकने वाला।

फँकिया – (सं.स्त्री..) कद्दू के उबाले हुये टुकड़े।

फँकनी – (सं.स्त्री..) फाँक कर खाने वाली औषधि चूर्ण।

फगुनहट – (सं.पु.) फाल्गुन मास के दिन या ऋतु।

फगुना – (सं.पु.) फाल्गुन मास में जन्मा व्यक्ति विशेष।

फगुआ – (सं.पु.) होली का त्यौहार, फाग, होली गीत।

फगुआउब – (क्रिया) फाल्गुन का रंग चढ़ जाना, मजाकिया शैली में बोलना।

फगुहार – (सं.पु.) फाग गाने वाले लोग, फाग की टोली।

फटहा – (विशे.) फटा पुराना, फटा हुआ, स्त्री.लिंग फटही।

फटाफट – (अव्य.) तत्काल, एकदम से, जल्दी–जल्दी।

फटहाई – (विशे.) दूसरे की बुराई, दूसरे के खिलाफ अनाप–सनाप बयान।

फटब – (क्रिया) फटना, फट जाना, दूध बिगड़ जाना, दिल फटना, दो टुकड़ेहोना।

फटबाउब – (क्रिया) फड़वाना, फाड़ने में सहयोग करना।

फटफटाब – (क्रिया) फट–फट की आवाज होना, घबड़ाहट युक्त आतुरता।

फटफटाउब – (क्रिया) फट–फट की आवाज करना।

फटर–फटर – (अव्य.) फट–फट की आवाज का निकलना या होना।

फट्टी – (सं.स्त्री..) टाट या कपड़े की बैठकी, पुलिंग फट्टा।

फटफटबइया – (सं.पु.) फट–फट की ध्वनि करने वाला व्यक्ति।

फटिकब – (क्रिया) फेंकना, फेंक देना, अनाज पछोरना।

फटिकाउब – (क्रिया) फेंकवाना, फेंकवा देना, पछोरवाना।

फटकबइया – (सं.पु.) अन्न पछोरने का कार्य करने वाला।

फटका – (सं.पु.) बाँस का बना फाटक, किवाड़ा, स्त्री.. फटकी।

फटिकाब – (क्रिया) धक्का लगने से उछल कर दूर गिरना, दूर स्थानान्तरण।

फटकदलाल – (ब.मु.) गैर जिम्मेदार, फक्कड़ी, जिसे कोई चिन्ता न हो।

फटकारब – (क्रिया) डाँट–फटकार लगाना, अनाज का कूड़ा–कर्कट अलग करना, हाथ मार लेना, गीला कपड़ा झटकारना।

फटकरबाउब – (क्रिया) दूसरे से डाँट–फटकार दिलवाना, पछोरवाना।

फटकन – (सं.स्त्री..) फटक कर अन्न से निकाली गई भूसी व कचड़ा।

फटनहा – (सं.पु.) जल्दी फट जाने वाला कमजोर वस्तु, स्त्री.. फटनही।

फटकाई – (सं.पु.) पछोरने की मजदूरी, फटकने का मेहनताना।

फड़फड़ाब – (क्रिया) पंख फड़फड़ाना, घबड़ाना, आतुर हो उठना।

फड़फडाउब – (क्रिया) पंख का फड़–फड़ करना, किसी को घबड़वा देना।

फड़फड़िहा – (सं.पु.) घबड़ा जाने वाला, आतुर होकर कार्य कर बैठने वाला।

फड़मबाज – (सं.पु.) तिकड़मी व्यक्ति, बेइमानी व बदमानी बताकर कार्य सिद्ध करने वाला, नामाजादी धोखेबाज।

फड़मबाजी – (क्रि.वि.) उलटी–सीधी बातें, धोखा–धड़ी पूर्ण, झटका मारने वाली बातें।

फड़ – (सं.पु.) तेंदूपत्ती का टाल, जुआ–तास का मजमा।

फतँइया – (सं.पु.) फटेहाल स्थिति वाला, अस्तित्व विहीन, वक्त का मारा हुआ, फतइयाँ कस घोड़ी, ब.मु.।

फतांही – (सं.स्त्री..) पुराने चाल की कमीच, बिना बाँह की शर्ट।

फदफदान – (विशे.) अव्यवस्थित ढंग से पूरे घर में फैला हुआ।

फदफदाउब – (क्रिया) पूरे घर में बेतरकीब ढंग से फैला देना।

फदफदइया – (सं.पु.) वस्तु को इधर–उधर फैला देने वाला व्यक्ति।

फदफदाब – (क्रिया) वस्तु का अव्यवस्थित ढंग से फैला हुआ होना।

फदर–फदर – (विशे.) फद्–फद् की आवाज करते हुये दौड़ की शैली।

फद्द–फद्द – (अव्य.) गीली जमीन पर पाँव पटकने से उत्पन्न ध्वनि।

फना – (सं.पु.) करछुल का चौड़ा मुखौटा, सर्प का फन।

फन्नी – (सं.पु.) तामसी व स्वाभिमानी, ताव न सहने वाला।

फन्ने खाँ – (ब.मु.) किसी की न सुनने व बातें न सहने वाले के लिये व्यंग्यार्थ सूचक।

फनफनाब – (क्रिया) आवेशित होकर बोलना, नाराज होना, फन फैलाकर फुसकारना।

फनफूटब – (ब.मु.) बुद्धि खुल जाना, गले में सरस्वती का बैठ जाना, स्वर निकालना।

फफाब – (क्रिया) कोयलों से भरा हुआ, एकदम हरा–भरा, पत्तों से पौध का लद जाना।

फब – (सं.पु.) स्मरण, याद, सुधि, दिमाक में युक्ति।

फबब – (क्रिया) उचित लगना, शोभा देना, उपयुक्त होना।

फम्फा – (विशे.) एकदम हलका, बहुत ही पतला, हवा में उड़ जाने लायक।

फर – (सं.पु.) फल।

फरब – (क्रिया) फलना, फल लगना, फल का फलना।

फरी – (विशे.) फल से लदी हुई, पर्याप्त फल लगा हुआ।

फरफराब – (क्रिया) फड़फड़ाना, पंख का फड़–फड़ होना।

फरबाउब – (क्रिया) फड़वाना, किसी से फड़वा देना, दो टुकड़े करवाना।

फरबइया – (सं.पु.) फाड़ने का कार्य करने वाला।

फरुहा – (सं.पु.) फल, फावड़ा।

फरुही – (सं.स्त्री..) जमकर फलने वाली, प्रतिवर्ष फल देने वाली।

फरकाउब – (क्रिया) नाक फड़काना, नाक सिकोड़ना, नाक फरकाउब, ब.मु।

फरकइया – (सं.पु.) नाक फरकाते रहने वाला आदमी।

फरगब – (क्रिया) औजार को धारदार बनाना, पैनी धार बनाने हेतु माँजना।

फरगाउब – (क्रिया) औजार को धारदार बनवाना, मुँह फरगाउब, ब.मु.।

फरगबइया – (सं.पु.) औजार को धारदार बनाने वाला, औजार मंजवाने वाला।

फरिका – (सं.पु.) दरवाजे के सामने की आरक्षित भूमि।

फराँक – (सं.पु.वि.) फैला हुआ भू–भाग, विस्तृत क्षेत्र, पर्याप्त स्थान का होना।

फराँके – (अव्य.) दूर–दूर, एकान्त में, कट–कट कर।

फरिया – (क्रिया) लड़कियों की फ्राक, फ्राक की तरह एक वस्त्र।

फरफंद – (सं.पु.) दंद–फंद, बहाने बाजी, झूठ–फरेबयुक्त वार्ता।

फरफंदी – (विशे.) हमेशा तीन–पाँच करने वाला, इधर–उधर की जोड़गाँठ करने वाला।

फरा – (सं.पु.) महुए के रस से बनी खीर, गर्मी की दानेदार पड़ी फुड़िया।

फरचंट – (विशे.) होशियार, तेज–तर्राक, चतुर चालाक।

फरफरान – (विशे.) फहराती हुई, फड़फड़ाकर आती हुई।

फरिआब – (क्रि.) दिखाई पड़ने लगना, हल्का–हल्का अंधकार का कम होना।

फरेंदा – (सं.पु.) फाड़कर तैयार की गई जलाऊ लकड़ी, फलदार वृक्ष, फलदार वनस्पति।

फरथाला – (सं.पु.) बीच से फाड़ी हुई वस्तु का एक टुकड़ा।

फरहर – (विशे.) पके चावल का चावल से न चिपके रहने की स्थिति।

फरकब – (क्रिया) फड़काना, विकार से अंग का कूदना।

फर्र–फर्र – (विशे.) देखते–देखते उड़ जाना।

फर्राब – (क्रिया) फरफराते हुये उड़ जाना, फर–फर की आवाज करना।

फर्रउहन – (सं.पु.) फड़फड़ाते हुये शैली में।

फरदा – (सं.पु.) बीच से फाड़कर दो टुकड़ा लकड़ी का एक हिस्सा।

फरहार – (सं.पु.) व्रत में लिया गया फल, फलाहार।

फराहारी – (सं.पु. फलहारी, जो फल का सेवन करता हो।

फलाने – (सर्व.पु.) अमुक, एक तकिया कलाम।

फलिहाउब – (क्रि.) भरे पानी में बर्तन या कपड़ा डालकर हिलोरना व साफ करना।

फलिआउब – (क्रिया) किसी को उलाहना से बुरा–भला कहना।

फलदान – (सं.पु.) वरीक्षा की एक रस्म, विवाह की संविदा।

फलगट्टा – (सं.पु.) अति ढीला–ढाला, साया, चलते समय फट्फटाने वाला वस्त्र।

फलब – (क्रिया) सूट करना, फलदायी होना, लाभदायक होना।

फलनिया – (सर्व.स्त्री..) अमुक नारी, एक तकिया कलाम।

फला – (सर्व.) अमुक, ये।

फलनमा – (सर्व.) अमुक, ये।

फसकब – (क्रिया) माँस लद जाना, मोटा होना जाना, माँस फूल आना।

फसकाउब – (क्रिया) पदार्थ को फैला देना, भूसा को फैला देना।

फँसब – (क्रिया) उलझ जाना, फँस जाना, चक्कर में पड़ जाना।

फसबाउब – (क्रिया) किसी को फँसा देना, सहयोग करके फँसवाना।

फसबइया – (सं.पु.) फसाने वाला, मामले में फँसा देने वाला।

फँसा – (विशे.) किसी से संलग्न, किसी में फँसा हुआ।

फँसाब – (क्रिया) अपने आप चक्कर में फँस जाना।

फसही – (सं.स्त्री..) खेत में अपने आप उग आने वाली एक धान।

फँसउहल – (सं.पु.) फँसने–फँसाने वाला प्रकरण।

फसर्रब – (क्रिया) गहरी निद्रा में निश्ंचित होकर सोना।

फसफसान – (विशे.) उभर कर ऊपर दिखता हुआ, फैला व उभरा हुआ।

फसिल – (संस्त्री..) फसल, अनाज का उत्पादन।

फहराब – (क्रिया) फहरवाना, आरोहित कराना, उड़ जाना।

फहरबइया – (सं.पु.) फहराने वाला, आरोहणकर्ता।

फा

फाँकब – (क्रिया) गदेली में उठाकर सीधे मुँह में फेंक लेना।

फाँका – (सं.पु.) फल का एक आधा भाग, गदेली भर अनाज।

फाँकी – (सं.स्त्री..) ककड़ी की एक टुकड़ी, फल का आधा हिस्सा।

फाटन – (सं.पु.) हाथ–पाँव में कटने का दर्द, एक रोग।

फाटब – (क्रिया) फटना, फट जाना, खण्डित होना।

फाँदब – (क्रिया) लांघ जाना, कूद जाना, नये कार्य का शुभारंभ, किसी को फँसा लेना।

फाफट – (ब.मु.) सक्रिय होने का दिखावा, हाथ–पाँव फड़फड़ाना, फाफट कूटना, ब.मु.।

फाँफी – (सं.स्त्री..) भूसे का अनुपयोगी महीन कण, एकदम हलकाव, कमजोर।

फार – (सं.स्त्री..) हल की लोहे की फाल।

फारब – (क्रिया) फाड़ना, फाड़ देना, दो टुकड़े करना, फैलाना।

फाँस – (सं.स्त्री..) बाँस या लकड़ी की पतला रेखा, फाँस ठोकना, ब.मु.।

फाँसब – (क्रिया) किसी को फाँस लेना, बन्धनबद्ध करना।

फि

फिकिर – (सं.स्त्री..) फिक्र, चिन्ता, सोच, परवाह।

फिचबाउब – (क्रिया) कपड़े पछरवाना, कपड़े धुलवाना।

फिंचाब – (क्रिया) कपड़ों का धुल जाना, वस्त्र साफ होना।

फिचान – (विशे.) धुले हुये कपड़े, साफ किये गये वस्त्र।

फिचबइया – (सं.पु.) कपड़े धुलने वाला, कपड़ा साफ करने वाला।

फिटिकब – (क्रिया) फेंकना, फेंक देना, उठाकर फेंक देना।

फिटिकाउब – (क्रिया) फेंकवाना, किसी को फेंकने को प्रेरित करना।

फिटकइया – (सं.पु.) दूर फेंकने वाला व्यक्ति।

फिटिका – (विशे.) फेका हुआ, जमीन पर पड़ा हुआ।

फिटिर–फिटिर– (अव्य.) फंटे बाँस के पटकने से उत्पन्न ध्वनि।

फिटकिरी – (सं.स्त्री..) एक प्रकार की नमक के रंग की औषधि।

फिट्ट–फिटान– (ब.मु.) आवश्यकता के अनुरूप, चाहत के अनुसार पूर्ति, बात तय हो जाना।

फिन – (अव्य.) फन, फिर से।

फिफिआब – (क्रिया) परेशान होकर भटकना, तलाश में इधर–उधर भटकना।

फिफिआउब – (क्रिया) किसी को परेशान करके भटकवाना।

फिरब – (क्रिया) घूमना, फेरी लगाना, चारों तरफ भ्रमण करना, चक्कर काटना।

फिरबाउब – (क्रिया) घुमाना, चक्कर कटवाना, फेरी लगवाना।

फिरबइया – (सं.पु.) फिराने वाला, घुमाने वाला, चक्कर लगाने वाला।

फिराउब – (क्रिया) चारों तरफ घुमाना, चक्कर कटवाना।

फिरंगी – (सं.स्त्री..) एक खिलौना, चक्कर काटने वाला लट्टू।

फिटिहिरी – (क्रि.वि.) वेग के साथ चारों ओर वृत्ताकार भ्रमण।

फिराक – (सं.स्त्री..) फ्रॉक, लड़कियों का वस्त्र, तलाश या खोज।

फिरियाद – (सं.पु.) उलाहना से ओत–प्रोत शिकायत।

फिरियादब – (क्रि.) उलाहना देकर शिकायत सुनाना।

फिरता – (सं.पु.) वापस पैसा लेना, शेष वापसी, वस्तु की कीमत देखकर बच रहे शेष राशि को वापस लेना।

फिरेबिल – (सं.स्त्री..) साइकल का एक पुरजा, फ्रेबिल।

फिसड्डी – (विशे.) ऐसी–वैसी वस्तु, अस्तित्व विहीन व औचित्यहीन।

फिंसमाफास – (ब.मु.) छोटी बात को बड़ी बनाना, तर्क में तर्क करना।

फिस्स – (क्रि.वि.) खत्म करना, चर्चा का समाप्त हो जाना।

फिसलब – (क्रिया) फिसलना, फिसल जाना, छूट जाना, सरक जाना।

फिसलाउब – (क्रि.) फिसलाना, फिसलवाने में सहभागिता निभाना।

फिसलइया – (सं.पु.) फिसलवाने का कार्य करने वाला।

फु

फुइया – (सं.स्त्री..) फुफू, बुआ, पिताजी की बहन।

फुकबाउब – (क्रिया) फूँक मरवाना, झाड़–फूँक कराना, आभूषण कसवाना।

फुकबइया – (सं.पु.) फूँकने वाला, नष्ट करने वाला व्यक्ति।

फुकहाई – (ब.मु.) दिवालिया हो जाना, घर में कुछ न बचना।

फुकनी – (सं.स्त्री..) हवा फूँकने वाली बाँस की पोलदार नली।

फुकुर–फुकुर – (विशे.) मंद लव, कम प्रकाश देती हुई बाती के जलने का ढंग।

फुचड़ा – (सं.पु.) कपड़े का फूल, नारी के केश के जूड़े का फूलवाला फीता।

फुटकब – (क्रिया) प्रस्फुटित होना, अंकुरित होकर उग आना, सूखे घाव का फिर से पक आना।

फुटफइल – (ब.मु.) दूर–दूर होना, विरोध के कारण अलग–अलग हो जाना।

फुटहा – (सं.पु.) टूटा–फूटा बर्तन, फूटा हुआ खण्डित पात्र, स्त्री.. फुटही।

फुटहाई – (सं.स्त्री..) विरोध, तोड़ने–फोड़ने वाली बातें, बुराई पूर्ण वार्ता।

फुटबँधवा – (सं.पु.) फूटी मेड़ वाला बाँध, जिसकी मेड़ फूटी हुई हो वह बाँध।

फुदुकब – (क्रिया) चुनना या चुगना, चिड़ियो द्वारा बाल से दाने चुगना।

फुदुकबाउब – (क्रिया) चिड़ियों से दाने चुगवाना।

फुदुकबइया – (सं.पु.) चिड़ियों को दाना चुगाने वाला, चुगने या चुनने वाला।

फुदकँबइया – (क्रि.वि.) कूदते हुये चलना, हलके पाँव से उछल–उछल कर बढ़ना।

फुदुर–फुदुर – (अव्य.) फुदुक–फुदुक कर चलना, मेढ़क सी चाल।

फुनई – (सं.स्त्री..) वृक्ष की चोटी, किसी वस्तु का ऊपरी छोर।

फुन्नी – (सं.स्त्री..) पौध का सर्वोच्च शिखर, फसल का बाल वाला हिस्सा।

फुफ्फा – (सं.पु.) फूफा जी, पिता जी के जीजा, बुआ के पति।

फुफुआउर – (सं.पु.) फूफा जी का गॉव–घर, बुआ की ससुराल।

फुर – (सं.स्त्री..) सत्य, सही, सच्चाई, यथार्थ।

फुरिन – (विशे.) एकदम सही, सच मायने में, वास्तव में।

फुरिन–फुर – (अव्य.) सच–सच, सही–सही, एकदम सत्य, पूर्णतः सही।

फुरकब – (क्रिया) अघुलित पदार्थ को जीभ के सहारे मुह से फेकना।

फुरा जमोकी – (ब.मु.) यथार्थ सत्यापन, आमने–सामने प्रमाणित करना, गवाह द्वारा कथन को उसके मुख पर कहलवा देना।

फुरफुरी – (सं.स्त्री..) बुखार आने के पूर्व ठंड की अनुभूति, रोमांचित स्थिति।

फुरबाउब – (क्रिया) कथन का आमने–सामने पुष्ट करवाना, कथन को सत्यापित– प्रमाणित करवाना, कही बातें को फिर से कहलवाना।

फुरबोलिया – (सं.पु.) सदा सत्य बोलने वाला, स्पष्ट व सही बोलने वाला।

फुरहूँ – (विशे.) सही–सही में, वास्तव में, सच मायने में।

फुर्र–फुर्र – (सं.स्त्री..वि.) चिड़िया के पंख की उड़ते समय की आवाज, जल्दी–जल्दी।

फुर्राब – (क्रिया) फुर्र–फुर्र करके उड़ जाना, नोटों को उड़ा देना।

फुर्रा – (सं.पु.) बच्चों का एक ग्राम्य खेल, फुर्रा बोलबा, ब.मु.।

फुर्राउब – (क्रिया) नोटों को हवा मे फुर्रा देना, फैलाना व उड़ाना।

फुरसतिहा – (सं.पु.) जो काम से बिल्कुल फुरसत हो, एक दम खाली।

फुलउब – (क्रिया) पानी में कपड़ा भिगोना, वस्त्र गीत करना।

फुलबाउब – (क्रिया) कपड़े को पानी में गीला करवाना, भिगवाना।

फुलाउब – (क्रिया) फुलाना, प्रशंसा करके प्रोत्साहित करना, झाड़ पर चढ़ाना।

फुलबइया – (सं.पु.) फुलाने वाला या पानी चढ़ाने वाला।

फुलइया – (सं.पु.) पानी से कपड़ों को भिगोने वाला व्यक्ति।

फुलाब – (क्रिया) फूल लगना, फूल का विकसित होना, फूल जाना।

फुलान – (विशे.) फूल लगा हुआ, फूला हुआ।

फुलहा – (सं.पु.) फूल धातु से बने बर्तन, स्त्री. फुलही, फूलों का बाग।

फुलहाई – (सं.स्त्री..) काँस के धातु वाली थाली या कटोरी।

फुलेहरा – (सं.पु.) फूलों से सजायी गई झाँकी, देवाला में बोया गया जौ–पौधा।

फुलउरी – (सं.स्त्री..) मात्र बेसन की बनी अमिश्रित पकौड़ी या भजिया।

फुलउटा – (ब.मु.) भ्रम पूर्ण घमण्ड, थोथा गर्व, फूला न समाना।

फुलनी – (संस्त्री..) शरीर फूलने वाला एक रोग, फूलने वाली किन्तु न फलनें वाली।

फुलिया – (सं.स्त्री..) नारी के नाक का आभूषण।

फुलकब – (क्रिया) मुँह के पदार्थ को जीभ के सहारे उगल देना।

फुलकँइया – (अव्य.) हलके पाँव, धीरे–धीरे चलना, दबे पाँव वाली चाल।

फुलमन – (सं.पु.) भिगोने के लिये पानी में डाला गया अनाज।

फुलझरिया – (सं.स्त्री..) फूल–फूलने वाली झाड़ियाँ, फूलने वाली वनस्पति।

फुलउरिहाव – (क्रि.वि.) फुलउरी बनाने का दौर, फुलउरी।

फुलेल – (सं.पु.) सुगंधित तेल, इत्र, अँतर, फूलों का प्ररस।

फुलसुँघना – (ब.मु.) बहुत कम खाने के आर्थ में व्यंग्य बोधक, ब.मु.।

फुलपन्ट – (सं.पु.) फुल पैण्ट, पैण्ट, पतलूम।

फुलबा – (विशे.) पानी से गीला किया हुआ, भिगोया हुआ।

फुसुन्नव – (क्रि.वि.) नाक से लम्बी साँस आवेशवस निकालना, लड़ने के लिये अकड़कर उद्यत होना, शिशकी भरकर रुदन करना।

फुसलाउब – (क्रिया) पुचकार कर बहलाना, लेपन करके मिला–पटा लेना।

फुहराउब – (क्रिया) गाली–गलौज करना, अश्लील गालियाँ देना।

फुहरइया – (संपु.) अश्लील गाली देने वाला व्यक्ति।

फुहुरान – (विशे.) सूखे बालों का तितिर–बितिर व अव्यवस्थित ढंग।

फुहराब – (क्रिया) बालों का पूरे सिर में बेतरतीब फैलना।

फुहउना – (सं.पु.) इत्र सना रुई का फूहा, कपास या रुई।

फू

फूँका परब – (ब.मु.) घर में धन–सम्पत्ति का शून्य हो जाना।

फूँकब – (क्रिया) फूकना, नष्ट करना, बर्बाद होना, फूँक मारना।

फूटा – (सं.पु.) भुना हुआ चबेना, ज्वार का प्रस्फुटित दाना।

फूदा – (सं.पु.) घड़े के गले का फन्दा, मवेशी के गले में बधी रस्सी का गाँठ नुमा छोर।

फूटब – (क्रिया) फूट जाना, टूट जाना, फल का विकसित होना, नयी कोपले उग आना।

फूलब – (क्रिया) फूलना, फूल उठना, भीग जाना, सूजन हो आना।

फूली – (सं.स्त्री..) आँख में पड़ी हुई फुड़िया, मोतिया बिन्दु से आँख में पड़ी गाँठ।

फूल – (सं.पु.) काँसा धातु।

फूली–फाली – (ब.मु.) एकदम मोटी–तगड़ी, गर्भवती।

फूलब–फरब – (ब.मु.) पुष्पित एवं पल्लवित होना, विकास करना एवं बढ़ना।

फूसड़ – (संपु) गुदा द्वारा बाहर निकली हुई लाल माँसपेशी, फूसड़ कढ़ब, (ब.मु)।

फूहर – (विशे.) बुरी–भली गाली, अश्लील एवं अभद्र, अशोभनीय एवं खराब।

फूहा – (सं.पु.) कपास या रुई का अल्पांश, इत्रयुक्त फूहा।

फे

फेंकब – (क्रिया) फेंक देना, हटा देना, दूर भगा देना, फैला देना।

फेंकबाउब – (क्रिया) फेंकवाना, फेकने के लिये प्रेरित करना।

फेकइया – (संपु.) फेंकने वाला, फैला देने वाला।

फेकाब – (क्रिया) धक्का से जाकर दूर गिरना।

फेकँउआ – (विशे.) फेंकने योग्य वस्तु, फेंकते हुये शैली में।

फेकरब – (क्रि.) स्याल का बोलना, स्याल की चीत्कार।

फेकारे – (सं.पु.) नग्न सिर, खुले बाल, मूड़ फेकारे, ब.मु.।

फेटा – (सं.पु.) कमर में बँधा पुरुष धोती का एक छोर, कमर में बँधा गमछा।

फेटब – (क्रिया) तरल पदार्थों को मिलाना, फेंटकर एकाकार करना, मथ डालना।

फेटबाउब – (क्रिया) मथवाना, फेंटकर आपस में मिलवा देना।

फेटबइया – (सं.पु.) मथकर दो तरल पदार्थों को मिलाने वाला।
फेटाब – (क्रि.) मिश्रित हो जाना, मथा जाना।
फेंड़ – (सं.पु.) कमर के चारों ओर का प्रक्षेत्र।
फेनकुट – (सं.पु.) मुँह से निकला हुआ फेनदार थूक।
फेन – (सं.पु.) दूध का फेन, पानी का फेन।
फेनाब – (क्रिया) फेन का उभर आना, फेन उठ आना।
फेनहा – (सं.पु.) फेन वाला दूध, जिसमें फेन उठ आया हो ऐसी वस्तु।
फेनान – (विशे.) दूध में फेन का उभार।
फेना – (सं.पु.) दूध, दूध का फेन, फेनयुक्त दूध।
फेनिअर – (सं.पु.) फेनियल, फिनायल का तेल।
फेफरी – (सं.स्त्री..) ओंठ में जमी सूखी पपड़ी, थूक सूखी स्थिति।
फेफरिआन – (विशे.) सूखी पपड़ी जमे हुये ओंठ।
फेफरिआब – (क्रिया) ओंठ पर फेफरी या सूखी परत का जम जाना।
फेफरी लागब – (ब.मु.) अभाव के कारण मुँह में फेफरी जम जाना।
फेफसा – (सं.पु.) अठोस लकड़ी, किसी वस्तु का छोटा सा कण।
फेरब – (क्रिया) फिराना, घुमाना, लौटा देना, वापस करना, इधर से उधर कर लेना।
फेरबाउब – (क्रि.वि.) घमवाना, लौटवाना, बदलवाना, वापस कराना, आभूषण को तपवाना।
फेरबइया – (सं.पु.) बदलने वाला, वापस करने वाला।
फेरि – (अव्य.) पुनः, फिर से, दुबारा।
फेरमनिया – (क्रि.वि.) आंशिक फेर–बदल, खपड़ें का छप्पर में नया–पुराना करना।
फेरबा – (सं.पु.) छल्लेदार सोने का एक आभूषण या अँगूठी।
फेरी – (क्रि.वि.) दौरा, परिक्रमा, चक्कर, कई बार आना–जाना, पुनर्आगमन, पुलिंग फेरा।
फेरीहा – (सं.पु.) फेरी करने वाला, दौरा में आने वाला।
फेर – (अव्य.) बाद में, फिर से, पुनः।
फेरिहौं – (क्रिया) लौटाऊँगी, बदलूँगी, वापस करूँगी।

फो

फोकला – (सं.पु.) रोटी की परत, लकड़ी का छिलका, दलहन की छिलका।
फोकलइया – (सं.स्त्री..) दलहन की फोकली या छिलकी, दाने रहित फली।
फोकट – (विशे.) निःशुल्क, बिना लागत की, बिना श्रम की, बिना मूल्य की।
फोकटहा – (सं.पु.) बिना कीमत दिये वस्तु को मुफ्त में लेने वाले, अस्तित्व विहीन आदमी, निर्धन एवं दरिद्र व्यक्ति।
फोक्का – (सं.पु.) कंघी की हुई बालों का उठाव, बालों में लगा फीते का फूल।
फोक्क पचीस – (ब.मु.) खाली हाथ हो जाना, स्तर विहीन, शून्य उपलब्धि।
फोक्कस – (सं.पु.) सजा–धजा बनावटी चेहरा, ताम–झाम नुमा सौन्दर्य।
फोंका – (सं.पु.) एक गदेली भर अन्न की मात्रा, इस अवधि में।
फोंकिआउब – (क्रिया) गदेली में अनाज लेकर मुँह में फाँक लगाना।

फोंकिबइया – (सं.पु.) गदेली से अनाज का फाँका मारने वाला।

फोदहटि – (सं.स्त्री..) परेशानी युक्त उलझन, आपत्ति युक्त कार्य।

फोफली – (सं.स्त्री..) जिसके सारे दाँत टूट गये हों, पुलिंग फोफला।

फोफलब – (सं.पु.) जिसके दाँत टूटने से गाल चिपक गये हों।

फोर – (ब.मु.) दौड़–धूप करना, जोर कसना, अथक प्रयास करना।

फोरब – (क्रिया) फोड़ना या तोड़ना, मन मोटाव करा देना, फूट डालना।

फोरबाउब – (क्रिया) किसी से चोट पहुँचवाना, फोड़वाना।

फोरबइया – (सं.पु.) फोड़ने वाला, मतभेद डालने वाला, फूट डालने वाला।

फोरे–फारे – (अव्य.) तोड़ने–फोड़ने से, ऐन–केन–प्रकारेण ढंग से।

फोरिया – (सं.स्त्री..) फुड़िया व फुंसी, पुलिंग फोरा।

फोहा – (सं.पु.) खुली अँगुली की मुष्टिका।

फोहाका – (सं.पु.) खुली अँगुली की गदेली–प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

फोहकिआउब– (क्रिया) खुली हथेली से पीठ पर प्रहार करना।

फोह–फोह – (अव्य.) जल्दी–जल्दी खुली हथेली के प्रहार से उत्पन्न आवाज।

ब

बइतब – (क्रिया) पाँव की नस का इधर–उधर हो जाना, पाँव का मोच जाना।

बइहाब – (क्रिया) भाव–विभोर के कारण पगला जाना।

बइहा – (सं.पु.) झक्की एवं मूडी मिजाज का व्यक्ति, अर्द्ध रूप से विक्षिप्त प्रवृत्ति वाला।

बइहरा – (सं.स्त्री..) हवा, वायु, समीर, रीति एवं प्रचलन।

बइठव – (क्रिया) आसन ग्रहण करना, बैठ जाना, दीवाल का धंस जाना, उभरे फोड़े का दब जाना, चुनाव में प्रत्याशी का निष्क्रिय हो जाना।

बइठाउब – (क्रि.) किसी को बैठाना, मोचे पाँव की हड्डी को सही जगह कर देना।

बइठइया – (सं.पु.) हमेशा बैठे रहने वाला, बैठने वाला आदमी।

बइठोल – (सं.पु.) जो काम न करके हमेशा बैठा रहता हो, अपंग एवं असमर्थ, पत्नी के पास मायके में रहने–बसने वाला।

बइगन – (सं.पु.) बन्टी फल वाले टमाटर के पौध, भाँटा।

बइठकी – (सं.स्त्री..) बैठने की छोटी सी चटाई, छोटे आकार की आँसनी।

बइरी – (सं.पु.) दुश्मन, बैर करने वाला, अनभल सोचने वाला।

बइरबाछी – (सं.पु.) समस्या उत्पन्न कर देने वाला, अड़चन डालने वाला।

बइर – (सं.स्त्री..) बेर, एक वनस्पति फल।

बइकलाब – (क्रिया पगला जाना, पागल बन जाना, देखकर सुध–बुध खो देना।

बइकल – (विशे. एकदम पागल, मूर्ख एवं पगला।

बइकलान – (विशे.) पगलाया हुआ, पागलपन से ग्रसित।

बइकलिया – (सं.स्त्री..) पगली या पागल नारी, पुलिंग बइकलहा।

बइकलबाउब– (क्रिया) पगलवा देना, किसी को भ्रमित करवा देना।

बइकलही – (ब.मु.) पागलपन सवार हो जाना, ना समझी का घेर लेना।

बइँता – (सं.पु.) बायां हाथ, बांये हाथ से प्रमुख कार्य करने वाला।

बइसखही – (सं.स्त्री..) बैसाख महीने में होने वाली ककड़ी या फल।

बइना – (सं.पु.) विवाहोपरान्त विदाई में दी गई परम्परागत पूड़ी व मिठाई।

बइला – (सं.पु.) बैल, बरदा।

बइजहाई – (सं.स्त्री..) गर्भवती नारी के मरने से तैयार पिशाचनी।

बइया – (सं.स्त्री..) बड़ी बहन, बहन के लिये ग्राम्य उद्‌बोधन।

बइपारी – (सं.पु.) व्यापरी, लाद–व्यापार करने वाला।

बइझुकहा – (सं.पु.) अर्ध रूप से विक्षिप्त, झटका आने पर झूल जाने वाला।

बइझुक – (सं.पु.) झक्की मिजाज का, मूड़ी एवं झक्की प्रवृत्ति का व्यक्ति।

बइझुकाब – (क्रिया) अर्ध पागल सा होना, विक्षिप्त होना।

बउरिआब – (क्रिया) पागल हो जाना, घमण्ड में चूर हो जाना।

बउरिआन – (विशे.) पागलपना से ओत–प्रोत एवं ग्रसित।

बउरही – (सं.स्त्री..) जो बाउर हो, जो गूंगी हो ऐसी नारी।

बउराही – (सं.स्त्री..) पागलपन, पागलपना सवार हुई स्थिति।

बउँकब – (क्रिया) हाथ बढ़ाकर पकड़ना, पकड़कर हाथ से ले लेना।

बउकबाउब – (क्रिया) हाथ से बढ़ाकर किसी के हाथ में पकड़ाना या देना।

बउकाँब – (सं.पु.) पहुँच या पकड़ में होना, नजदीक वस्तु का होना।

बउकबइया – (सं.पु.) हाथ बढ़ाकर दूर रखी वस्तु को पकड़ने वाला।

बउगरिआब – (क्रिया) गीली जमीन का हवा से हल्की–हल्की सूख जाना।

बउसिआब – (क्रिया) प्रदर्शनकारी शौक–शान करना, शौक चढ़ना।

बउराउब – (क्रिया) किसी को पगलवा देना, किसी को इतना भरना कि आतुर बना देना।

बउरबइया – (सं.पु.) पगलवा देने वाले, मूर्ख बना देने वाले लोग।

बउजड़ – (विशे.) एकदम जड़ एवं सठ प्रवृत्ति का, किसी का कहना न मानने वाला।

बउरी – (सं.स्त्री..) बाउर प्रवृत्ति की नारी, पुलिंग बउरा, जो न बोलता हो।

बउराब – (क्रिया) पागल हो जाना, सुध–बुध खो देना, नशा चढ़ जाना।

बँउड़ी – (सं.स्त्री..) वृक्षों में लिपटने वाली एक लता जो रस्सी के विकल्प में प्रयुक्त होती है।

बउँड़ब – (क्रि.) गिल्ली की तरह कठिन पेड़ में भी चढ़ जाना, लिपट जाना।

बउखर – (विशे.) जलवृष्टि के पश्चात् आकाशीय वातावरण का खुल जाना।

बउगर – (विशे.) हवा में सूखी हुई गीली जमीन की स्थिति, चावल के पके दाने का अलग–अलग रहने की दशा।

बउली – (सं.स्त्री..) बावड़ी, चौड़े आकार का कूप या जलाशय।

बउछार – (सं.स्त्री..) वर्षा के पानी के छींटे।

बउरि – (सं.स्त्री..) बौर, आम्र की बौर।

बउड़ाउब – (क्रिया) लता को सहारा देकर अग्रेषित करवाना।

बउड़बइया – (सं.पु.) पेड़ पर चढ़ने वाला आदमी, वृक्ष पर लिपटकर बढ़ने वाला।

बउल – (सं.स्त्री..) बौर, लता।

बक – (योजक) बल्कि, नहीं तो फिर, या तो फिर, या फिर।

बकुरब – (क्रिया) बड़े मुश्किल से स्वर फूटना, दबी जुबान बोलना।

बकसोठिल – (विशे.) कच्चे अमरूद का स्वाद, अरहर की पत्ती का स्वाद।

बकसीस – (सं.स्त्री..) परितोषिक, आशीष के साथ प्रदत्त राशि या वस्तु।

बकसाँइध – (सं.पु.) कसैलानुमा गन्ध आना।

बकउड़ा – (सं.पु.) बकौड़, पलास की जड़ के रेशे।

बकोटा – (सं.पु.) पाँचों उँगुलियों से एक बार में उठाई गई वस्तु की मात्रा।

बकलेल – (विशे.) मन्द अकल वाला, कान न देखकर कौए के पीछे दौड़ने वाला।

बकचोद – (विशे.) अक्ल से कमजोर, ना समझ, मूर्ख मिजाज का।

बकचोदहा – (सं.पु.) जिसकी बुद्धि पथरायी हो, बिना दिमाग का आदमी।

बकचोदी – (सं.स्त्री..) नारियों के लिये एक अभद्र गाली।

बकटोंटब – (क्रिया) रोक–टोक करना, टोक देना।

बकतब – (क्रिया) कलपते रहना, बड़बड़ाना, कलपना।

बकचेंचर – (विशे.) कम चतुर चालाक, अर्ध बुद्धि वाला व्यक्ति।

बकतन्नी – (सं.स्त्री..) टेढ़ी–मेढ़ी एवं मुड़ी हुई हंसिया।

बकताउब – (सं.पु.) तड़फड़ाते हुये जीने वाला व्यक्ति।

बक्कबिक्क – (अव्य.) निरर्थक बकवास, जो मुँह में आये बोलना।

बकबकाब – (क्रिया) अनाप–सनाप बोलते रहना, निरर्थक बड़बड़ाना।

बकबकइया – (सं.पु.) अपने आप अनावश्यक बातें बोलते रहनें वाला।

बकबास – (क्रिया) अर्थहीन बहस, जिस चर्चा का कोई औचित्य न हो।

बकचन्दी – (ब.मु.) दुर्भाग्य पूर्ण कुसमय का घेरा, बकचन्दी चढ़ब, ब.मु.।

बकुला – (सं.पु.) तालाब में रहने वाला श्वेत पक्षी, बगुला।

बकुली – (सं.स्त्री..) हुकदार छड़ी।

बकसाब – (क्रिया) अरहर के पौध का अफलित होना, फूल व पत्तों का सिकुड़ जाना।

बकरबिकिर – (अव्य.) जो मुँह में आये निरर्थक बातें बोलते रहना।

बकाइन – (सं.स्त्री..) वह पौध जिसके छिलके से रस्सी बनाई जाती है।

बकेन – (सं.स्त्री..) बच्चा विहीन लगती गाय व भैंस एक वर्ष पूर्व प्रजनित दुधारू पशु।

बकसुआ – (सं.स्त्री..) बेल्ट में लगी हुई लोहे की क्लिप।

बकी – (सं.स्त्री..) नोटों में लगने वाली एक दीमक, कागजों का घुन।

बक्सा – (सं.पु.) पेटी, सन्दूक या बड़ा सा बाक्स।

बखर – (सं.पु.) जुताई के बाद ढेलों को समतल व जुताई करने वाला कृषि उपकरण।

बखोरब – (क्रिया) वार्ता के बीच में ही टोक देना, तर्क–वितर्क करना।

बखरी – (सं.स्त्री..) किसान का चारों तरफ से बना कच्चा किन्तु बड़ा घर।

बखारी – (सं.स्त्री..) घर के भीतर अनाज रखने का बनाया गया पात्र।

बखिया – (सं.स्त्री..) सिलाई, के धागों, टाँका, दो टाँकों के बीच की दूरी।

बखिआउब – (क्रिया कपड़े की सिलाई करना, सिलाई की बखिया चलाना।

बखान – (क्रिया) यशोगान, बड़ाई, तारीफ, वर्णन एवं व्याख्या।

बखेड़ा – (क्रि.वि.) झंझटनुमा वार्ता, आपत्तिदायी वार्ता या समस्या।

बखरिहा – (सं.पु.) बड़ी बखरी में रहने वाला, जिसकी बखरी मशहूर हो।

बखरबाउब – (क्रिया) खेत में बखर चलवाना, बखर से जुताई करवाना।

बगराउब – (क्रिया) फैलाना, प्रचारित करना, शोर कर देना, फैला देना।

बगरब – (क्रिया) फैल जाना, हवा उड़ जाना, बात का प्रचार–प्रसार हो जाना।

बगबाउब – (क्रिया) घुमाना, बगवाना, रिश्तेदारों को साथ–साथ भ्रमण कराना।

बगबइया – (सं.पु.) बागने–घूमने वाला, भ्रमण करते रहने वाला।

बगाउब – (क्रिया) घुमाना, भ्रमण कराना, चक्कर कटवाना।

बगबू – (क्रिया) घूमोगी, टहलोगी, भ्रमण करोगी, क्या घूमो–फिरोगी?

बगजा – (सं.पु.) जलेबी के आकार का ग्राम्य व्यंजन, बिना फल की सिकुड़ी अरहर की फूल–पत्तियाँ।

बगजाब – (क्रिया) अरहर की फूल–पत्तियों का सिकुड़कर फल न देना, बगजा खाने की इच्छा होना।

बगजान – (विशे.) अरहर की खेती को अफलित हुई स्थिति।

बगनउरा – (क्रि.वि.) बिना मतलब की घुमाई, भ्रमण कार्य।

बगई – (सं.स्त्री..) एक प्रकार का कीड़ा जो पशुओं के कान में प्रवेश कर जाता है, रस्सी बनाई जाने वाली एक प्रकार की लम्बी घास।

बगइआब – (क्रिया) बराई नामक कीड़े से कुप्रभावित होना, बेचैनी से ग्रसित होना।

बगइआन – (विशे.) बगई कीड़े से ग्रसित पशुओं की स्थिति।

बगइहा – (सं.पु.) बगई लगा हुआ पशु, जिस खेत या जगह में बगई घास उगी हो।

बगइची – (सं.स्त्री..) छोटे प्रक्षेत्र का फलदार वृक्षों का बाग, बगीचा, पु. बगइचा।

बगइचहा – (सं.पु.) जिसके पास बड़े–बड़े बगीचे हों, जिसका घर बगीचे में बना हो।

बगार – (सं.पु.) न जोता–बोया जाने वाला खेत का उच्च भाग, पड़ती भूमि।

बँगली – (सं.स्त्री..) पुराने प्रचलन की पुरुषों की कुर्ती, पुराने चाल की कमीज।

बगन्ता – (सं.पु.) हमेशा घूमते–भागते रहने वाला, घूमने का आदी व्यक्ति।

बगदर – (सं.पु.) बड़े आकार के मच्छर, मच्छर बिरादरी के कीड़े।

बगरी – (सं.स्त्री..) धान से निकला हुआ बिना साफ किया गया खड़ा चावल।

बघउब – (सं.पु.) आदिवासियों का बघउत देवता।

बघेलान – (सं.पु.) बघेल क्षत्रियों की बस्ती या मुहल्ला।

बघउना – (सं.पु.) बाघ, शेर, सिंह।

बघारब – (क्रिया) सब्जी में बघार लगाना, दाल को फ्रॉई करना, मसााला छौंककर बनाना।

बघरबाउब – (क्रिया) मसाले का छौंक लगवाना, दाल को फ्राई करवाना, तलाई करवाना।

बघरबइया – (सं.पु.) मशाला से बघार देने वाला रसोइया।

बघम्बर – (सं.पु.) मृत बाघ का चमड़ा, बाघ की चमड़ी की बैठकी।

बघार – (सं.पु.) छौंके देकर पदार्थ को मसालेदार तलना।

बघँऊ – (विशे.) बाघ की तरह बोलने बताने वाला, गुर्राकर बोलने की शैली।

बँचब – (क्रिया) बच जाना, सुरक्षित रह जाना, छूट जाना।

बचबाउब – (क्रिया) वाचन करवाना, छुड़वा देना।

बचइया – (सं.पु.) पुस्तक पढ़कर सुनाने वाले, कथा वाचक।

बचबइया – (सं.पु.) बीच–बचाव करने वाला।

बच – (सं.पु.) एक औषधीय वनस्पति विशेष।

बचइहौं – (क्रिया) बचा लूँगी, बचाऊँगी, वाचन कराऊँगी।

बचर–बचर – (अव्य.) जबरिया, जिदपूर्वक जल्दी–जल्दी बोल जाना।

बछबा – (सं.पु.) बछड़ा, स्त्री.लिंग बछिया।

बछार – (क्रि.वि.) कृत्रिम लाड़–प्यार, लाड़–प्यार का प्रदर्शनकारी वात्सल्य।

बजबजाब – (क्रिया सड़े भाव से बुलबुले निकलना।

बजड्‌डी – (सं.स्त्री..) प्रजनन करने वाली, रूप रंग रहित बेडौल नारी।

बजाउब – (क्रिया) बाजा बजाना, बजाने का कार्य करना।

बजबाउब – (क्रिया) किसी से बाजा बजवाना, चोट लगवा लेना।

बजबइया – (सं.पु.) बजाने वाले, बाजा बजाने वाला।

बजगीर – (सं.पु.) बाजा बजाने वाले लोग।

बजनहा – (सं.पु.) वाजगीर, वाद्य यंत्र विशेषज्ञ।

बजरा – (सं.पु.) बाजरा अनाज, खरीफ की एक फसल।

बजरी – (सं.स्त्री..) कंकड़–पत्थर का चूर्ण, कंकड़ी वाली मोटी बालू या रेत।

बज्ज बज्ज – (अव्य.) सड़े भात को दबाने पर पानी निकल आना,अति गीली जमीन।

बजरहा – (सं.पु.) बाजार से वापस आने वाले लोग, बाजार के रहने वाले।

बजिन्दा – (सं.स्त्री..) बदचलन नारी, नारी के लिए अश्लील गाली।

बजरिया – (सं.स्त्री..) अति छोटी बाजार, थोड़ी सी दुकानों की बाजार।

बजउबेय – (क्रिया) बजाओगे, बजाओगी।

बजुल्ला – (सं.पु.) बांह में पहना जाने वाला नारी का एक गहना।

बजड़ब – (क्रिया) किसी को मारपीट देना।

बझब – (क्रिया) नली का क्षिद्र बन्द हो जाना।

बँटबाउब – (क्रिया) बँटवारा करवाना, वितरण करवाना, हिस्सा बाट करवाना।

बटबइया – (सं.पु.) हिस्सा–बाट करने वाला, शिलवट में पिसाई करने वाला।

बटारौ – (सं.पु.) बंटवारा का एक अंश, हिस्सा बाट का एक भाग।

बटोरब – (क्रिया) झाडू लगाकर कचरा साफ करना, समेट लेना।

बटोरबाउब – (क्रिया) कूड़ा–कर्कट बुहरवाना, समेटकर संचय करवाना।

बटोरबइया – (विशे.) झाडू लगाने वाला, संग्रह करने वाला व्यक्ति।

बटोरन – (विशे.) साफ–सफाई से प्राप्त कूड़ा–कर्कट या कचरा।

बटुइया – (सं.स्त्री..) छोटे आकार की धातु वाली बटलोई।

बटुआ – (सं.पु.) बड़े आकार का धातु का पात्र।

बटहरा – (सं.पु.) बाट जिससे वजन तौला जा सके।

बटिहा – (सं.पु.) सूखे उप्पल का व्यवस्थित ढेर।

बटुरा – (सं.पु.) मटर, मटरफली।

बटुरहा – (सं.पु.) वह अनाज जिसमें मटर मिश्रित हो।

बटुलइया – (सं.स्त्री..) छोटे आकार की बटलोई।

बट्टी – (सं.स्त्री..) गुड़ की एक भेली, एक साबुन की बट्टी।

बटखरा – (सं.पु.) तौलने का बाट।

बट्टा – (सं.पु.) मैल या खोट, एक घास विशेष का नाम।

बटइया – (सं.पु.) पत्थर की गोटी, दाल बाटने वाला, सिलवट में पिसाई करने वाला।

बटरब – (क्रिया) सिल में पिस जाना, हिस्सा–बाट हो जाना।

बड़ा – (सं.पु.) एक प्रकार का पक्षी, तोता।

बड्डा – (विशे.) बड़ा–बड़ा, ज्येष्ठ, नाप से बड़ा या लम्बा, भले आदमी।

बड्डी – (विशे.) बड़ी–बड़ी, ज्येष्ठ नारी, नाप से लम्बी।

बढ़ब – (क्रिया) बढ़ना, वृद्धि करना, विकास होना, आगे हो जाना।

बढ़ाब – (क्रिया) वस्तु की मात्रा खत्म हो जाना, मर जाना, हल का उपकरण टूट जाना।

बढ़बाउब – (क्रिया) वस्तु की मात्रा चुकवा देना, अवधि बढ़वा लेना।

बढ़नउक – (विशे.) वृद्धि एवं विकास करने लायक, होनहार, प्रगतिशील।

बढ़नी – (सं.स्त्री..) झाडू, काँस की झाडू विशेष।

बढ़बइया – (सं.पु.) आगे बढ़ाने वाला, वस्तु की मात्रा खतम कर देने वाला।

बढ़िके – (विशे.) वस्तु की तुलना में एक का सबल होना, अधिक या आगे।

बढ़इन – (सं.स्त्री..) कारपेन्टर या बढ़ई की पत्नी, पुलिंग 'बढ़ई'।

बड़बड़ाब – (क्रिया) निरर्थक आक्रोश वस अकेले ही जोर–जोर से बात करना।

बड़ेरी – (सं.स्त्री..) कच्चे घर के मध्य में लगाने वाली लम्बी मोटी लकड़ी।

बडमंसी – (सं.स्त्री..) मान–मर्यादा, इज्जत, कुल की कानि, परिवार की शान।

बड़कीबा – (सं.स्त्री..) बड़ी वाली वस्तु, रिश्ते में बड़ी नारी को सम्बोधन।

बड़कऊ – (सं.पु.) ज्येष्ठ पुत्र के लिए स्नेहिल सम्बोधन।

बड़की – (सं.स्त्री..) बड़े पिता जी की पत्नी, बड़ी माँ।

बड़गइयाँ – (सं.पु.) ब्राम्हण जाति की एक उपजाति या गोत्र।

बड़किया – (सं.स्त्री..) बड़प्पन पूर्ण व्यवहार, बड़ी वाली ज्येष्ठ नारी।

बड़र–बिड़िर – (अव्य.) पागलों जैसा अर्थहीन बोलते रहना।

बँड़बा – (विशे.) अपने माँ–बाप की इकलौती संतान, पूंछ कटा हुआ पशु।

बड़बारी – (सं.स्त्री..) बड़ाई, यशोगान, तारीफ, महत्व, बड़प्पन।

बड़बार – (विशे.) पर्याप्त बड़ा, मजबूत एवं सम्पन्न, बड़े आकार की वस्तु।

बड़हरि – (सं.स्त्री..) महुए की भाँति फलने वाली वनस्पति।

बड़ेबर – (सं.पु.) नृत्य करती वृत्ताकार घूमती जमीन पर हवा।

बड़ेरा – (सं.पु.) धूलयुक्त ऊपर उठी हवा का जमीन पर बढ़ाव।

बड़कउना – (सं.पु.) किसी ज्येष्ठ या बड़े पुत्र के लिए सम्बोधन।

बड़इँचा – (विशे.) माँ–बाप की अकेली संतान, स्त्री.लिंग बड़ँइची।

बड़कुर – (सं.पु.) ज्येष्ठ व्यक्ति हेतु आदर सूचक सम्बोधन।

बतहा – (सं.पु.) वात रोग से पीड़ित व्यक्ति।

बतउरा – (सं.पु.) शरीर पर मृत माँस की बड़ी सी गुलथी।

बताब – (क्रिया) बातें करना, वार्तालाप होना, बातचीत करना।

बताउब – (क्रिया) बतलाना, समझाना, सूचित करना।

बतबाउब – (क्रिया) संदेश कहलवाना, दूसरे के माध्यम से अवगत कराना।

बतबइया – (सं.पु.) बताने वाला, राय देने वाला।

बतूसन – (सं.स्त्री..) सीधी–साधी सुन्दर दुधारू गाय।

बतहाई – (सं.स्त्री..) वात रोग के काम में आने वाली।

बतबढ़ामन – (सं.पु.) वार्ता का उग्र रूप ले लेना, बातों का अधिक बढ़ जाना।

बतब – (क्रिया) वात व्याधि से ग्रसित हो जाना, अंगों का अचल होना।

बतकहा – (सं.पु.) बढ़–चढ़कर बातें करने वाला, लम्बी–चौड़ी एवं खूब बोलने वाला।

बतक्कड़ – (ब.मु.) व्यर्थ का वार्तालाप, खूब बातें करने वाला।

बतिया – (सं.स्त्री..) प्रारम्भिक शिशु फल, कच्चा एवं कोमल फल।

बतिआउब – (क्रिया) बाँस की लकड़ी लगाकर बाता बाँधने की क्रिया।

बतसहा – (सं.पु.) बतासा रखा जाने वाला विशेष पात्र।

बतंगड़ – (सं.पु.) बात को बढ़ा देना, तिल का ताड़ बनाई गई वार्ता।

बतलबरी – (क्रि.वि.) वादा खिलाफी,बातों का पूरा न हो पाना,वचनों का झूठ हो जाना।

बतकहाव – (सं.पु.) वार्तालाप, बात करने का तौर तरीका।

बतकही – (सं.स्त्री..) वार्तालाप, बातचीत, आपस में बातें तय हो जाना।

बत्ती – (सं.स्त्री..) बिजली, दीपक की बाती, चाक या पत्थर की लेखनी।

बत्तीसी – (सं.स्त्री..) दाँत, दाँत की चमक, बत्तीसी रँगब ब.मु.।

बदरा – (सं.पु.) अनाज के अपुष्ट दाने, ज्योति चली गई आँख।

बदरी – (सं.स्त्री..) बदली, बादल, पुलिंग बदरा।

बदि – पक्षपात, तरफदारी।

बदर बदर – (अव्य.) गीली धरती पर कूदने से उत्पन्न ध्वनि।

बदरऊँ – (अव्य.) बन्दरों की तरह क्रियाकलाप व ढंग।

बँदरिया – (सं.स्त्री..) बन्दर की बच्ची, मादा बन्दर।

बदब – (क्रिया) चेतावनी पूर्ण चुनौती, मनौती मानना, मानूँगा या कहूँगा, स्थान निर्धारित करना, मवेशियों के खुर में वाद रोग हो जाना।

बदना – (सं.पु.) अनोखा सिद्धि हेतु मनौती, भगवान से प्रार्थना।

बदी – (सं.स्त्री..) कृष्णपक्ष के पन्द्रह दिन, बुराई या अनभल, दोषारोपड़।

बदलब – (क्रिया) अदला–बदली करना, कहकर मुकर जाना, परिवर्तन करना।

बदलाउब – (क्रिया) बदलवाना, वापस लौटाना, परिवर्तन करवाना।

बदलबइया – (सं.पु.) बदलने वाला, अदला– बदली करने वाला, परिवर्तनकर्ता।

बदलँउक – (विशे.) जो बदल देने लायक हो, परिवर्तन योग्य।

बदाब – (क्रिया) वाद रोग से पशुओं के पैर में सड़न हो जाना।

बदना बिचरना– (ब.मु.) कष्ट के समय की मान– मनौती।

बँदरमुहा – (सं.पु.) बन्दरों की तरह जिसका मुँह हो।

बदरिआब – (क्रिया) बादल हो जाना, बादल से वातावरण का घिर जाना।

बदइया – (सं.पु.) झगड़े के लिए जगह निर्धारित करने वाला।

बधना – (सं.पु.) बांधने वाली रस्सी, अनाज बांधने का पात्र।

बधनबार – (सं.पु.) घास की रस्सी में गुंथे आम के पत्ते जो मण्डप में लगाया जाता है।

बधाउब – (क्रिया) बँधवाना, हथकड़ी लगवाना, बांधने में सहयोग करना।

बधवइया – (सं.पु.) बाँधने वाला।

बँधाब – (क्रि.) बँध जाना, बँधना।

बधाव – (सं.पु.) बधाई, जन्मोत्सव की एक खुशी।

बधनहाई – (सं.स्त्री..) बांधने वाली रस्सी विशेष।

बधाँन – (विशे.) बंधा हुआ, बांधने की शैली।

बधुआब – (क्रिया) पकते खाद्य पदार्थ में धुँए की गन्ध आ जाना।

बँधबाई – (सं.स्त्री..) फूटी मेड़ बाँधने का मेहनताना, मजदूरी।

बँधबाउब – (क्रिया) बँधबा देना, हथकड़ी लगवा देना, बंधनयुक्त करवाना।

बधइहौं – (क्रिया) बधवाँऊँगी, हथकड़ी लगवाऊँगी, बन्द करा दूँगी।

बँधिया – (सं.स्त्री..) छोटे आकार का खेत, खेत की एक टुकड़ी, पुलिंग बँधबा।

बनउक – (विशे.) विकास करने योग्य, होनहार, जिसके बनने की संभावना हो।

बनब – (क्रिया) बन जाना, बनना, सुधर जाना, हल निकल आना।

बनाउब – (क्रिया) बनाना, रच डालना, निर्माण करना।

बनबाउब – (क्रिया) बनवाना, निर्माण करवाना, किसी से बनाने का कार्य लेना।

बनबइया – (सं.पु.) बनाने वाला, निर्माणकर्ता, निर्माण करवाने वाला।

बनउका – (सं.पु.) बनावट, रूप–रंग–आकार, आकृति एवं ढाँचा, बनाव, बनाई हुई या रची हुई बातें।

बनाव – (विशे.) ढाँचा एवं आकार, रूप–रंग की बनावट।

बनगब – (क्रिया) विकृत आकार का होना, पहले बड़ा फल फिर छोटा होकर फलना।

बनरा – (सं.पु.) वैवाहिक लोकगीत।

बनबरिया – (सं.स्त्री..) नारियों की कलाई का खुदाईयुक्त मोटा चूड़ा।

बनडी – (सं.पु.) जिसकी पूंछ कटी हो, पुराने प्रचलन की आधे बांह वाली शर्ट।

बन्डा – (सं.पु.) छोटा दिखना, जिसके आधी पूछ हो, मिट्टी का अनाज रखने का पात्र।

बनिहार – (सं.पु.) मजदूर, मजदूरी करने वाले श्रमिक।

बनबाई – (सं.स्त्री..) निर्माण करने के बदले प्राप्त मजदूरी।

बनिआन – (सं.पु.) वैश्य या गुप्ता समाज का मुहल्ला व टोला।

बनी – (सं.स्त्री..) अनाज रूप में प्राप्त मजदूरी, सिन्दूरवती नारी।

बनउहल – (विशे.) बनाई हुई बात, कृत्रिम, दिखावापन।

बनबिरई – (सं.पु.) जंगल में पाई जाने वाली औषधि एवं जड़ी–बूटी।

बन बिलार – (सं.पु.) जंगली विलार, बड़े आकार की बिल्ली।

बन्ना – (सं.पु.) वर, जिसका विवाह हो रहा हो,वैवाहिक लोकगीत, स्त्री. बन्नी।

बनइला – (सं.पु.) वन में हमेशा काम करने वाला व्यक्ति।

बनरोझ – (सं.पु.) जंगल में रहने वाला एक हिंसक जानवर।

बन्सलोचन – (सं.पु.) बाँस के अन्दर मिलने वाली श्वेत औषधि।

बन्सराखन – (सं.पु.) जिसके जन्म के कारण वंश चलने लगा हो।
बनिया – (सं.पु.) सेठ, गुप्ता, वैश्य, दुकानदार।
बपंस – (सं.पु.) पैतृक सम्पत्ति, पैतृक गुण–लक्षण।
बपबा – (सं.पु.) बाप, पिताजी, अनादर सूचक।
बपुरी – (सं.स्त्री..) बेचारी, वक्त की मारी, लाचार नारी के लिए प्रतीक।
बपइया – (सं.पु.) पिताजी, स्नेहिल शब्द।
बपउना – (सं.पु.) बाप, पिताजी, अनादर सूचक।
बफउब – (क्रिया) भाप से उबालना, भाप से वाष्पित करना।
बफाब – (क्रिया) वाष्पित हो जाना, भाप–युक्त होना।
बफान – (विशे.) भाप से पका हुआ या पकाया गया।
बफइया – (सं.पु.) वाष्पित करने वाला, भाप देने वाला।
बबा – (सं.पु.) बाबा, पिताजी के पिताजी, दादा।
बबरा – (ब.मु.) फूला न समाना, प्रशंसा से खूब फूल जाना, बबरा होब, ब.मु.।
बबाइन – (सं.स्त्री..) साधवी, जो नारी जटा–जूट रखकर साध्वी हो गई हो।
बमूर – (सं.पु.) बबूल।
बमुरिहा – (सं.पु.) ऐसा खेत जहाँ बबूल ही बबूल के पेड़ उगे हों।
बमचक – (ब.मु.) शोर–शराबा, दंगा–फसाद मच जाना, अफरा–तफरी मचना।
बयऊ – (सं.स्त्री..) बहिन, बहना।
बरकेटा – (सं.पु.) झाड़ू, अरहर की सूखी टहनियाँ।
बरबराब – (क्रिया) अपने आप बुरा भला कहना, स्वप्न में बातें करना।
बराबर साइत– (सं.पु.) वट वृक्ष पूजने का एक त्यौहार।
बरूक – (योजक) बल्कि, या तो।
बरकब – (क्रिया) बचना, वितरण पश्चात् बच जाना, बचकर रहना।
बरकाउब – (क्रिया) मारपीट से बीच बचाव करना, दूसरे के लिए बचा रखना।
बरकबइया – (सं.पु.) बचकर चलने वाला, बचाव करने वाला।
बरूकन – (सं.पु.) बालू या रेत वाली जमीन, बालू मिश्रित।
बरब – (क्रिया) आग से जलना, जलन होना, रस्सी ऐंठना।
बरबाउब – (क्रिया) जलवाना, आग प्रज्जवलित करवाना।
बरबइया – (सं.पु.) जलाने वाला, आग लगाने वाला।
बरकसनहा – (सं.पु.) मृतक के वर्ष के अन्तिम दिन संस्कार दान लेने वाला।
बरिहा – (सं.पु.) सफेद कद्दू।
बरिआरी – (सं.स्त्री..) पशुओं की एक पौष्टिक घास।
बरऊ – (सं.पु.) केवट, पानी पिलाने वाला, घर में पानी भरने वाला।
बरिखायन – (सं.पु.) ऐसा प्राणी जो वर्ष भर में बच्चा देता हो।
बरिख – (सं.पु.) वर्ष, साल, सम्वत्।
बरसब – (क्रिया) जलवृष्टि होना, किसी पर आवेश वस उलाहना की वर्षा करना।

बरसाउब – (क्रिया) जलवृष्टि करवाना, प्रहार करवाना।

बरथनी – (सं.स्त्री..) सुअरी, बारह थनों वाली।

बरिआय – (विशे.) बड़ी मुश्किल से, किसी तरह से, ऐनकेन प्रकारेण।

बरिअत्तन – (विशे.) लम्बे प्रयास के बाद, किसी कदर से।

बरमसिहा – (सं.पु.) बारों महीना फलने वाला।

बर्राब – (क्रिया) वात रोग के कारण अनाप–शनाप शब्द निकलना, स्वप्न में बोल निकलना।

बररब – (क्रि.वि.) शरीर ऐंठना, मुँह चमकाना, अपंग की हँसी उड़ाना, नकल उतारकर चिढ़ाना।

बरराउब – (क्रि.वि.) मुँह चमकाना, किसी वस्तु को मरोड़ देना।

बररबइया – (सं.पु.) ऐंठने वाला, मुँह चमकाने वाला।

बरिल – (सं.स्त्री..) दही बड़ा, दही में डुबोया हुआ बरा।

बरा – (सं.पु.) बरगद का वृक्ष, दही बड़ा।

बराउब – (क्रिया) छाँटकर अच्छा–अच्छा लेना, चुनाव करना, क्यारी में पानी लगाना, छाँटना।

बरम – (सं.पु.) ब्रम्ह देव, प्रेत योनि के ब्रम्ह देवता।

बर्रोह – (सं.पु.) बरगद की डालियों से निकली जड़, दीवाल पर बना पानी का चिन्ह।

बरूहाई – (सं.स्त्री..) व्रतबन्ध वाली सामग्री, बालू मिश्रित मिट्टी।

बर्रइया – (सं.स्त्री..) बर्र कीड़ा, बर्रइया खोदना, ब.मु.।

बरूआ – (सं.पु.) व्रतबंध संस्कार, सवारी वाला नया पण्डा।

बरतोर – (सं.पु.) बालतोड़ फोड़ा, एक जखम विशेष।

बरा बिहाउत – शादी–सम्बन्ध, विवाह योग्य बिरादरी।

बरा बिआहा – शादीशुदा व्यक्ति, जिसकी शादी–गवना हो चुका हो।

बरउका – (विशे.) चुनिन्दा, सर्वोत्कृष्ट, समूह में से एक छटा हुआ।

बरोठ – (सं.पु.) घर के प्रमुख द्वार वाला कमरा।

बरजब – (क्रिया) रोक–टोक करना, मना करना, रोकना।

बरजाउब – (क्रिया) किसी से किसी कार्य के लिए मना करवा देना।

बरजबइया – (सं.पु.) मना कराने वाला, रोक–टोक करने वाला।

बरिया – (सं.पु.) प्रण–प्रतिज्ञा, दृढ़ संकल्प, कसम खाकर प्रण करना, बरिया बाँधना, (ब.मु.), पत्तल बनाने वाली एक जाति।

बरदबोंग – (सं.पु.) जड़ व लन्ठ व्यक्ति, मूर्ख व नासमझ।

बरन – (सं.पु.) शरीर में हुई जलन, बनावट, व्रतबन्ध में प्राप्त वस्त्र दान।

बरहँउ – (सं.पु.) जन्मोत्सव के बारहवें दिन मनाया जाने वाला संस्कार।

बरदा – (सं.पु.) बैल, साँड़।

बरदाब – (क्रिया) गाय का ऋतुमती होना, गाय का गर्भवती होना।

बरदउल – (क्रि.वि.) ऋतुमती गाय के पीछे मैथुन हेतु बैलों का दौड़ना।

बरदहाई – (सं.स्त्री..) बैल का व्यापार, बैलों की बिक्री–खरीदी।

बरेदी – (सं.पु.) मवेशी चराने वाला मजदूर, लगुआ।

बरहाइन — (सं.स्त्री..) पशुओं के बाल से बना गेरमा विशेष।
बरउनी — (सं.स्त्री..) आँख के पलकों के रोये, बरौनी, कहारिन।
बरायन — (सं.स्त्री..) विवाहोत्सव में वर पक्ष की ओर से जाने वाला परम्परागत सजावट पूर्ण घड़ा, पाँव तक लम्बी कोट।
बर्रोझ — (सं.पु.) एक हिंसक जंगली जानवर, बर्रोझ जैसा लपटना, ब.मु.।
बरउद — (सं.पु.) एक जंगली शिकारी जानवर, पूँछ के बाल प्रक्षेत्र।
बरई — (सं.पु.) पान लगाने वाली एक जाति, चौरसिया।
बरोबर — (विशे.) एक बराबर, समकक्ष या समतुल्य, एक जैसी स्थिति।
बरबटी — (सं.स्त्री..) दलहन की फसल, बरबटी कस मुरेरब, ब.मु.।
बरमा — (सं.पु.) लकड़ी में छिद्र करने वाला लौह औजार।
बरिक्षा — (सं.पु.) विवाह पक्का हो जाने पर वर पक्ष को प्रदत्त बयाना की राशि।
बरहा — (सं.पु.) बैलों को बांधने के लिए बाल का गेरमा, कई क्यारियों का समूह, हल–जुए की रस्सी।
बरखी — (सं.स्त्री..) मृतक का वर्ष बाद होने वाला संस्कार।
बर्रबा — (सं.पु.) पुलिंग बर्र, मछली फंसाने वाली वंशी में लगी लोहे की हुक।
बरिअउरा — (सं.पु.) साग–सब्जी की लगी बगिया।
बरदिहार — (सं.पु.) बैलों की भाँति अनपढ़ व मूर्ख, बैल चराने वाला।
बरनन — (सं.पु.) विवरण, वर्णन, व्याख्या, तारीफ।
बरी — (सं.स्त्री..) बड़ी, दाल पीसकर कद्दू मिश्रित एक ग्राम्य तरकारी।
बलाव — (सं.पु.) आमंत्रण, बुलावा।
बलकब — (क्रिया) खौलना, पदार्थ का उबलना, घाव का दर्द होना।
बलकाउब — (क्रिया) पानी को खौलाना।
बलउआ — (सं.पु.) बुलाव, आमंत्रण।
बलभर — (अव्य.) पूरी ताकत भर, खूब, जमकर, पर्याप्त, जोर से।
बल्ली — (सं.स्त्री..) लकड़ी का लम्बा लठ्ठा, लम्बी लकड़ी।
बलुरी — (सं.पु.) धान की बाल, मक्का के शीर्ष की बल्लरी, नीचे झूलती हुई कपड़े की चिथड़ी।
बलाउब — (क्रिया) बुलाना, आने के लिए बुलावा देना, आमंत्रित करना।
बलबइया — (सं.पु.) बुलाने वाला, आमंत्रण देने वाला, विदाई कराने आया हुआ व्यक्ति।
बसइया — (सं.पु.) देख–रेख करने वाला, रखवाली करने वाला, आकर आबाद हो जाने वाला।
बसब — (क्रिया) बस जाना, मन में जम जाना, रखवाली व रक्षा हेतु पड़ना।
बसाउब — (क्रिया) किसी को आबाद करवा लेना।
बसाब — (क्रिया) गन्ध देना, बदबू करना।
बसिअउरा — (सं.पु.) एक दिन पहले का बना खाद्य पदार्थ, बासी खाना।
बसीहा — (सं.पु.) बासी खाना खाने का आदती, जिसे बासी खाना दिया जाता हो।

बँसबा – (सं.पु.) बड़ा या बाँस का लठ्ठा।
बसनिहा – (सं.पु.) कमर में बसनी बाँधकर चलने वाला।
बंसधारी – (सं.पु.) जिसके जन्म लेने से उस वंश का नाम चलने लगा हो।
बसनी – (सं.पु.) रूपये की सुरक्षा हेतु कमर में बांधी जाने वाली पट्टी।
बस्ता – (सं.पु.) कापी–किताब बाँधने का कपड़ा, विद्यार्थी का झूला।
बसाँइध – (विशे.) चमड़ी जलने से उत्पन्न दुर्गन्ध।
बसुला – (सं.पु.) लकड़ी छीलने वाला बढ़ई का बसूला, लौह औजार।
बंसराखन – (सं.पु.) वंश की इज्जत बचाने वाला, वंश का पौध।
बसिहा – (सं.पु.) उलटी के पश्चात् खाना खाने से उत्पन्न एक रोग।
बहब – (क्रिया) बह जाना, जलधार में गतिमान हो जाना।
बहाउब – (क्रिया) बहा देना, जलाशय में विसर्जित करना।
बहबइया – (सं.पु.) विसर्जन करने वाला, जलाशय में बहाने वाला।
बहाब – (क्रिया) पानी के तेज से बह जाना।
बहरा – (विशे.) बधिर, जो कानों से न सुन पाता हो।
बहिलाउब – (क्रिया) फुसलाना या मन बहलाना, केन्द्रित विषय से हटा देना।
बहिला – (विशे.) बच्चा न प्रजनन करने वाली पशु, बांझ, बन्ध्या पशु।
बहिलबइया – (सं.पु.) बहलाने वाला।
बहल्ला – (विशे.) चारों ओर से असुरक्षित, खुला हुआ।
बहरी – (सं.स्त्री..) काँस की झाडू, बढ़नी।
बहरिआउब – (क्रिया) झाड़ू लगाकर साफ करना।
बहारब – (क्रिया) झाड़ू से बुहारना, कूड़ा–कर्कट साफ करना।
बहारन – (विशे.) बुहारने से निकला हुआ कचरा या कूड़ा।
बहरबइया – (सं.पु.) झाड़ू लगाकर कूड़ा कर्कट साफ करने वाला।
बहड़ोर – (सं.पु.) वह साड़ी जिसमें कन्या का सिर ढककर बुआ द्वारा कन्या का माँग सिन्दूर से भरने की रस्म किया जाता है।
बहा–विलान – (ब.मु.) भूला–भटका, गुमशुदा, जिसकी देखरेख करने वाला न हो।
बहिनआउर – (सं.स्त्री..) बहन का घर, बहन की ससुराल।
बहिर – (विशे.) बधिर, जो बहरा हो, स्त्री.लिंग बहिरी।
बहिराब – (क्रिया) बधिर हो जाना, बधिर बन जाना, बहरा बनना।
बहिरबा – (सं.पु.) बधिर व्यक्ति के लिए कड़क उद्‌बोधन।
बहिरे – (अव्य.) बाहर, घर से बाहर, बाहर की ओर।
बहिरहा – (सं.पु.) बाहरी व्यक्ति, मेहमान, घर के बाहर का आगन्तुक।
बहनोय – (सं.पु.) बहन का पति, बहनोई, जीजा।
बहटिआउब – (क्रिया) सुनकर अनसुना कर देना, देखकर अनदेखी कर देना।
बहटिबइया – (सं.पु.) अनसुना व अनदेखी करने वाला व्यक्ति।
बहुँटा – (सं.पु.) नारियों द्वारा धारित बांह का गहना।

बहुरा – (सं.पु.) श्रेष्ठ बैल, स्वच्छ विचरण हेतु छोड़ा गया बैल या बिजार।
बहुरी – (सं.स्त्री..) ज्वार के भुने हुए प्रस्फुटित दानें।
बहुरब – (क्रिया) लौट आना, वापस होना, पुनः जाकर आ जाना।
बहोरब – (क्रिया) जाते हुए को वापस लौटा लेना, खाली हाथ वापस कर देना, ली गई वस्तु को लौटाना।
बहुरबइया – (सं.पु.) लौटाने वाला, वापस करने वाला।
बहोरबइया – (सं.पु.) जाते हुए को वापस बुला लेने वाला,उधारी लौटाने वाला व्यक्ति।
बहुरी बरात – (सं.स्त्री..) बारात की वापसी, विदा कराकर लौटी हुई बारात।
बहेला – (विशे.) जो कभी भी गर्भधारण न की हो, जो प्रजनन योग्य न हो।
बहरा – (सं.पु.) मौसमी नाला।
बहिआउब – (क्रिया) मवेशी को भीड़ से अलग–अलग छांटना।
बहुरिया – (सं.स्त्री..) नयी नवेली दूल्हन, सम्मानित बहू।
बहुरीखेढ़ा – (अव्य.) लौटती बार, वापसी के समय।
बँहजोटिया – (सं.पु.) बांह पकड़कर चलने वाला, सम उम्र के।

बा

बाइत – (सं.स्त्री..) खेत की जुताई–बुवाई,जितनी मात्रा पड़ना चाहिए उतनी ही।
बाई–बाबा – (ब.मु.) साधु–सन्त, सन्त–महात्मा, दादी–दादा।
बाउ – (सं.पु.) बच्चों के मुह पर फोड़ा–फुन्सी पड़ने वाला एक मर्ज।
बॉका – (विशे.) बहुत बढ़िया, बहुत स्वादिष्ट, बहुत सुन्दर, बहुत अच्छा।
बाकस – (विशे.) कसैला स्वाद।
बाकाहरन – (सं.पु.) मरणासन्न स्थिति, मरते समय मुख से स्वर न निकलना, बोल बन्द हो जाना।
बाँकी – (सं.स्त्री..) घटाने की गणितीय क्रिया, बाँस छोलने वाला औजार, शेष मात्रा का बच जाना, शेष रह जाना।
बाँख – (विशे.) लड़ाकू एवं झगड़ालू, तेज–तर्राट, लड़ाई रोपने वाला।
बाखा – (सं.पु.) पेट के दोनों कोठा, पेट का प्रकोष्ठ।
बाँगर – (विशे.) अचल व्यक्ति, अति जीर्ण–शीर्ण एवं वृद्ध।
बाँचनकूँचन – (अव्य.) उपभोग के बाद बचा हुआ, खाने से बची जूँठी मात्रा।
बाँचब – (क्रिया) बच जाना, छूट जाना, जीवित रहना, लेखन को पढ़ना।
बाछी – (सं.स्त्री..) बछड़ी, गाय की बच्ची।
बाजब – (क्रिया) किसी वस्तु का प्रहार, चोट लग जाना, ठोकर लगना।
बाँझ – (सं.पु.) बिना संतान की नारी, सूनी कोख वाली औरत, बच्चा न देने वाली गाय–भैंस।
बॉटा चोटा – (अव्य.) बंटवारा शुदा, अलग–अलग हिस्सा का होना।
बाटी – (सं.स्त्री..) साड़ी का किनारा, रोटी का किनारा, थाली की बाट।

बाढ़ी – (सं.स्त्री..) उधार देने पर मिलने वाला अधिक अन्न, बढ़ाव, अधिकता।

बॉड़ा – (सं.पु.) पूंछ कटा पशु, इकलौती संतान, अर्ज में ओछा कपड़ा।

बॉड़ी–बूची – (सं.स्त्री..) इकलौती बेटी, अकेली एक नग कोई चीज।

बाती – (सं.स्त्री..) कपास की बनी बत्ती, दीपक जलाने वाली ज्योति, बाँस की चिमटीनुमा बंधन, संध्या–वन्दन।

बात – (सं.पु.) शरीर में होने वाला एक रोग, बातें या वार्तालाप।

बाद – (सं.पु.) तास के पत्ते का बादशाह, एक प्रकार के पशुओं का रोग, इन्कार किया हुआ, बात में कायम न रहकर बदल जाना।

बादब – (क्रिया) किसी बात को कहकर बदल जाना, झूठ बोलना।

बादीगीर – (सं.पु.) नट या बेड़िया, एक घुमक्कड़ जाति।

बाधा–छोरी – (अव्य.) किसी वस्तु को बॉधना एवं गाँठ खोलना, चलने की तैयारी करना।

बाना – (सं.पु.) लोहे की छड़ का नुकीला भाग, संकल्प या दृढ़ विचार।

बान – (सं.पु.) बाण, आदत या टेक, किसी जाति का गोत्र।

बानी – (सं.स्त्री..) वाणी, बोली–भाषा, मुख की आवाज, गुप्ता की जाति।

बापा पूती – (ब.मु.) किसी के पिता जी का अधिकार, बापाइती अरझब, ब.मु.।

बाप – (सं.पु.) पिता या तात, जन्म देने वाला।

बापू – (अव्य.) बाप रे, बोलने की एक टेक, अरे बाप।

बाबी – (सं.स्त्री..) बड़े घर की बेटी, राजकुमारी, राजघराने की कन्या।

बाँमा – (सं.पु.) बाँया अंग, बाँयी ओर।

बामी – (सं.स्त्री..) सर्प का बिल, सौगन्ध एवं संकल्प।

बाम्हन – (सं.पु.) ब्राम्हण, भोज के लिए आमंत्रित अतिथि, महापात्र।

बामारूपी – (सं.पु.) छोटे कद का आदमी, बामारूपी, बघेली मुहावरा।

बाय – (सं.पु.) विपत्ति, दुर्भाग्य, कष्ट या तकलीफ।

बाँयड़ – (सं.पु.) अंकुश विहीन व्यक्ति, आवारा किस्म का आदमी।

बाँयमां – (सं.पु.) कही–सुनी में, उनके चक्कर में, किसी चक्कर में, किसी गलत चाल–ढाल में पड़ना।

बारी – (सं.स्त्री..) कान की बाली, खेत में लगी बाड़, घर में पास की सब्जी लगी बगिया, दोना–पत्तल बनाने वाला।

बाराजोरी – (अव्य.) उपयुक्त जोड़ी, समान लम्बाई–चौड़ाई एवं उम्र।

बारा – (सं.पु.) हल में संलग्न किया गया रस्सी के सहारे बैल।

बारे से – (अव्य.) छोटी उम्र से, जन्म से या बचपन से।

बाँसा – (सं.पु.) नाक, बीज बोया जाने वाला बाँस का डंडा, किसी गाँव विशेष का नाम, बाँसा फरकाना, (ब. मु.)।

बाँस गाड़ब – (ब.मु.) अड़ जाना, जम जाना, द्वार न छोड़ना।

बासन – (सं.पु.) भाड़ा–बर्तन, धातु के भोजन संबंधी पात्र।

बासी – (सं.पु.) एक दिन पूर्व का बना भोजन, बीते दिन की वस्तु।

बाँहीं – (सं.स्त्री..) कमीज का बाँह वाला हिस्सा, हाथ का उच्च भाग।

बाँहा जोटी – (अव्य.) बाँह पकड़कर चलना, साथ–साथ आगे बढ़ना।

बाहर भीतर – (अव्य.) मरने जीने की स्थिति, टट्टी मैदान करना, अति घरेलू व्यक्ति।

बाहबाह – (विशे.) तारीफ, वाहवाही, प्रशंसा, स्तुति निन्दा का प्रतीक।

बाँह – (सं.पु.) भुजा, सगा भाई, नाड़ी।

बि

बिअँउआ – (विशे.) जो तत्काल में बच्चा जन्मने की स्थिति में हो।

बिअहबइया – (सं.पु.) शादी–विवाह कर देने वाला व्यक्ति।

बिआरी – (सं.स्त्री..) रात्रिकालीन भोजन, हलवाहा को दिया गया खाना।

बिआ – (सं.पु.) बीज, खेत में बोया जाने वाला बीज।

बिआह – (सं.पु.) विवाह या शादी, वैवाहिक लोकगीत।

बिआहा – (ब.मु.) संवैधानिक एवं संस्कारगत पति, बिआहा, ब.मु.।

बिआहब – (क्रि.) विवाह करना, व्याहना, व्याह कर देना।

बिआउर – (सं.स्त्री..) प्रजनन कक्ष में पड़ी नारी, प्रसव की हुई नारी।

बिआब – (क्रिया) प्रजनन करना, बच्चा जन्मना।

बिकनब – (क्रिया) बेचना, बेंच डालना, बेंच देंगे, बेचूँगा।

बिकब – (क्रिया) बिक जाना, बिक्री होना, किसी के बस में हो जाना।

बिकबाउब – (क्रिया) बिक्री करवा देना, बेचने में सहयोग करना।

बिकान – (क्रिया) बिका हुआ सामान, जो बिक चुका हो।

बिकबइया – (सं.पु.) बेचने वाला, बिक्री करने वाला मालिक।

बिकँउआ – (विशे.) बिक्री करने योग्य, बिकने हेतु वस्तु।

बिकाब – (क्रिया) बिक्री हो जाना, वशीभूत हो जाना, बिक जाना।

बिकसब – (क्रिया) पककर फूट जाना, पानी पड़ने पर चूना का चूर्ण हो जाना।

बिकसा – (विशे.) फूटा हुआ, पककर फैला हुआ।

बिकसनहा – (सं.पु.) जो पककर फूट जाने वाला होता हो।

बिक्क–बिक्क– (अव्य.) व्यर्थ की बकवास, बेवजह बोलते रहना।

बिकनहा – (सं.पु.) बेंची जाने वाली वस्तु, बिकाऊ सामान।

बिकरूरब – (क्रिया) रूठ जाना, बिगड़ जाना, नाराज होना।

बिक्खा – (विशे.) विष, जहर, कड़वा।

बिक्खी – (सं.स्त्री..) जहरीली बातें या भाषा बोलने वाली, पुलिंग 'बिक्खा'।

बिक्खऊँ – (विशे.) जहर की तरह, विष घुली सी।

बिक्खहा – (सं.पु.) जहर उगलने वाला, जिसके अन्दर जहर भरा हो।

बिगड़ब – (क्रिया) बिगड़ जाना, नाराज होना, नाखुश हो जाना।

बिगड़बाउब – (क्रिया) नाराज करवा देना, नाखुश कराने में सहभागिता निभाना।

बिगड़इया – (सं.पु.) बिगड़ने वाला, नाराज हो जाने वाला।

बिगड़इल – (सं.पु.) बात–बात में नाराज हो जाने वाली प्रवृत्ति का व्यक्ति।

बिगड़ँउआ – (विशे.) जो बिगड़ जाने की स्थिति में पहुँच गया हो, बिगड़ने ही वाली स्थिति।

बिगाड़ब – (क्रिया) किसी को बिगाड़ देना, खराब कर देना, गड़बड़ करना।

बिगाड़ – (सं.पु.) बैर–विरोध, अनबन एवं अनबोल, नाराजगी।

बिगुर – (सर्व.) बिना, बल्कि, बगैर, सिवाय, छोड़कर।

बिघबा – (सं.पु.) बीघा, शेर, चीता, बाघ आदि का प्रतीक।

बिघुन – (सं.स्त्री..) विघ्न–बाधा, व्यतिक्रम होना, अवरोध उत्पन्न हो जाना।

बिचबाइक – (सं.पु.) मध्यस्थता करने वाला, बीच–बचाव करने वाला।

बिचबिचा – (अव्य.) बीचोबीच, एकदम मध्य में।

बिचकब – (क्रिया) डर के कारण छिटक जाना, चौक पड़ना,कट–छट कर रहना।

बिचकाउब – (क्रिया) किसी को चौकाकर भयभीत कर देना।

बिचकनहा – (सं.पु.) जो प्रवृत्तिगत रूप से चौंक उठता हो वह।

बिचकबँइया – (सं.पु.) छरकाने वाला, छरक पकड़ लेने वाला।

बिचरब – (क्रिया) मन पसार भ्रमण करना, निश्चिन्त होकर विचरण करना।

बिचबिच – (विशे.) निरर्थक बातें, फंसाने वाली बात।

बिचबिची – (क्रि.वि.) तर्क–वितर्क युक्त अशांतिदायक वार्ता।

बिचबिचाब – (क्रिया) बिना मतलब की बीच में बातें व बहस करना।

बिचबिचिहा – (सं.पु.) बात बहस अधिक काम कम करने वाला।

बिचिर–बिचिर– (अव्य.) अस्तित्वविहीन बातें, बिना अर्थ की वार्ता।

बिचाब – (क्रिया) बिकना, बिक जाना, बिक्री होना।

बिचान – (विशे.) बिका हुआ, जो बिक चुका हो।

बिचारा – (विशे.) बेचारा, दीन–हीन, असहाय, दया का पात्र।

बिछाउब – (क्रिया) बिस्तर लगाना, बिस्तर में वस्त्र फैलाना।

बिछाब – (क्रिया) फैल जाना, गिर जाना, जमीन में लेट जाना।

बिछबइया – (सं.पु.) बिस्तर लगाने वाला, बिछौना बिछाने वाला।

बिछउना – (सं.पु.) बिछावन, दासन, चारपाई पर बिछा कपड़ा, पलंग पोश।

बिछबाउब – (क्रिया) बिस्तर बिछाने में सहयोग करना।

बिछान – (विशे.) फैला हुआ, गिरकर अधिक मात्रा में जमीन पर पड़ा हुआ।

बिछिया – (सं.स्त्री..) नारियों का गहना जो पाँव की उँगुली में पहनी जाती है।

बिछुआ – (सं.स्त्री..) नारियों द्वारा कमर में धारित झूलनदार साकल।

बिजहा – (सं.पु.) बीज, खेत में बोया जाने वाला अन्न का बीज।

बिजमरी – (ब.मु.) खेत में बीज तक फसल उत्पादन में न मिल पाना।

बिजार – (सं.पु.) सबको हरा देने वाला पशु, अधिक ताकतवर साँड़, मारपीट करने वाला व्यक्ति।

बिजुरी – (सं.स्त्री..) बिजली, विद्युत, बादल की चमक।

बिजाँयठ – (सं.पु.) अमृत, दुर्लभ पदार्थ, जिसको खाने से आदमी अमर हो जाय।

बिटीबा – (सं.स्त्री..) बिटिया, बेटी।

बिटान – (सं.स्त्री..) बेटी या बिटिया, लाड़ली बेटी।

बिढ़उब – (क्रिया) आपत्ति पैदा कर लेना, कष्ट कारक काम बना लेना।

बितूतब – (ब.मु.) बीत जाना, समय निकल जाना, आतुरता का उभार।

बितुनब – (क्रिया) वस्तु को उलट–पलट देना, स्थायी वस्तु को तितर–बितर कर देना।

बितुनबाउब – (क्रिया) किसी से वस्तु की अफरा–तफरी करवा देना।

बितुनवान – (विशे.) वस्तु की फैली हुई अव्यवस्थित हुआ रूप।

बितुनबइया – (सं.पु.) सामान को उलट–पुलट कर फैला देने वाला।

बिताउब – (क्रिया) व्यतीत करना, बिता देना, खपा देना।

बितनिया – (सं.पु.) अति छोटे कद के आदमी के लिए सम्बोधन।

बिथराउब – (क्रिया) वस्तु को तितर–बितर व फैला देना।

बिथराब – (क्रिया) जमीन पर वस्तु का फैल जाना, वस्तु का बिखर जाना।

बिथरान – (विशे.) अव्यवस्थित ढंग से जमीन पर फैला पड़ा हुआ।

बिथरबइया – (सं.पु.) फैलाकर जमीन पर रख देने वाला।

बिथरँउआ – (अव्य.) फैलाते हुए शैली में वस्तु का बिखराव।

बिथा – (सं.स्त्री..) व्यथा, घाव व कष्ट, रोग या बीमारी।

बिथोलब – (क्रिया) तरल पदार्थ में हाथ डालकर खराब कर देना।

बिथोलबाउब– (क्रिया) हाथ डलवाकर दूध–दही को हिलोरवा देना।

बिथोलबइया– (सं.पु.) तरल पदार्थ को खराब कर डालने वाला।

बिथहा – (सं.पु.) व्यथा वाला, रोगी या पीड़ित व्यक्ति।

बिदबिदाउब – (क्रिया) जलती आग को हिला डुलाकर बुझा देना, व्यवस्थित व्यक्ति को अव्यवस्थित कर देना।

बिदबिदान – (विशे.) इधर–उधर, अव्यवस्थित स्थिति।

बिदबिदबइया– (सं.पु.) तितिर–बितिर करने वाला व्यक्ति।

बिदाहब – (क्रिया) खेत की दो बार दो तरफ से जुताई करना।

बिदहबाउब – (क्रिया) खेत की जुताई दो बार घन शैली में करवाना।

बिदहबइया – (सं.पु.) खेत की आड़ी एवं खड़ी जुताई करने वाला।

बिधाब – (क्रिया) लड़ जाना, भिड़ पड़ना, गन्दगी लग जाना।

बिधाउब – (क्रिया) भिड़ा देना, फँसा देना, झगड़ा करा देना।

बिधबइया – (सं.पु.) लड़ा–भिड़ा देने वाला, झगड़े में फँसा देने वाला।

बिनब – (क्रिया) जमीन पर पड़ी वस्तु को उठाना, चारपाई की बुनाई करना।

बिनबाउब – (क्रिया) बुनाई करवाना, गिरी वस्तु को उठवाना।

बिनिया – (सं.पु.) कटाई के समय खेत में छूटी हुई रबी फसल की बालें।

बिनबइया – (सं.पु.) बीनने वाला व्यक्ति, बुनने वाला।

बिनाव – (सं.स्त्री..) बुनावट की शैली या ढंग।

बिन्नहाये – (सं.पु.) बिना स्नान किये हुए, बिना नहाये–धोये।

बिनास – (सं.स्त्री..) गर्मी के कारण नाक से खून फूटने का रोग।

बिनतिहा – (सं.पु.) विनती–प्रार्थना करने वाला व्यक्ति।

बिबुरिया – (सं.पु.) रोते बच्चे का ओंठ जुड़कर आगे निकल आना, बिबुरिया लेना ब.मु.।

बिमरिहा – (सं.पु.) मरीज, बीमारी से ग्रसित रोगी।

बिर्रब – (क्रिया) चमकना, मुँह चमकाना, नकल उतारना।

बिरई – (सं.स्त्री..) औषधीय वनस्पति, जड़ी–बूटी।

बिरझब – (क्रिया) बच्चों का रूठना, हठधर्मिता करना, मचल जाना।

बिरान – (सं.पु.) पराया व्यक्ति, निर्जन स्थान, आबादी रहित जगह।

बिराउब – (क्रिया) किसी की ओर मुँह चमकाकर चिढ़ाना।

बिरबाउब – (क्रिया) किसी के द्वारा किसी को चिढ़ाने को प्रेरित करना।

बिरबइया – (सं.पु.) नकल दिखाकर चिढ़ाने वाला, खिझाने वाला व्यक्ति।

बिरहा – (सं.पु.) एक प्रकार का अहीरों का लोकगीत।

बिरथा – (सं.पु.) वृथा, व्यर्थ में, बेमतलब हो जाना।

बिरकाउब – (क्रिया) समूह से अपने पशु को अलग कर लेने की क्रिया।

बिरकबइया – (सं.पु.) पशुओं को समूह से अलग कर लेने वाला।

बिरखउआ – (सं.पु.) पान बीड़ा।

बिरूआब – (क्रि.वि.) नाखून लगने से सूखे घाव का पुनः पक आना।

बिरहुला – (सं.पु.) हरे चने की फली से निकाले गये दाने।

बिरबा – (सं.पु.) वृक्ष या पेड़, अनाज के पौधे, वंश परिवार के सदस्य।

बिरबाही – (सं.स्त्री..) बगिया में लगी सब्जी–तरकारी के पौधे, फल–फूल के पेड़।

बिरछा – (सं.पु.) वृक्ष, पेड़।

बिराजब – (क्रिया) बैठना, पधारना, पधार जाना।

बिरजबाउब – (क्रिया) बैठाना, पधरवाना, आसन ग्रहण करवाना।

बिरजबइया – (सं.पु.) पधारने वाला आगन्तुक, बैठने वाला।

बिराजी – (क्रिया) पधारिये, बैठ जाइए, बैठिये।

बिलॅहुटी – (सं.स्त्री..) बिल्ली की नवजात बच्ची, पुलिंग बिलहुँटा।

बिल्लाब – (क्रिया) असमंजस में फँस जाना, परेशान हो जाना।

बिल्लबाउब – (क्रिया) किसी को परेशान कर देना, पेरशानी में फंसा देना, असमंजस में डाल देना।

बिल्लबइया – (सं.पु.) परेशानी में फंसाने वाला आदमी।

बिलरिया – (सं.स्त्री..) बिलारी–पुलिंग बिलार या बिलरा।

बिलरबा – (सं.पु.) बिलार–स्त्री.लिंग बिलरिया।

बिला – (सं.पु.) बिल, जमीन पर बनाया गया छिद्र।

बिलाइत – (सं.पु.) बहुत दूर, विलायत, बिलाइत, ब.मु.।

बिलिल बिलिल–(अव्य.) अस्पष्ट बोली, अस्पष्ट स्वर।

बिलउनी – (सं.स्त्री..) आँख की पलकों में पड़ने वाली फुड़िया।

बिलाब – (क्रिया) गुम हो जाना, लापता होना, लुप्त हो जाना।

बिलोरब – (क्रिया) बने काम को बिगाड़ देना, हिला–डुलाकर मिला देना।

बिलबिलाब – (क्रिया) परेशान हो जाना, अव्यवस्थित होना, घबड़ा जाना।

बिलन्टा – (सं.पु.) छोटे कद वाले आदमी के लिए प्रतीक।

बिसनी – (सं.पु.) शौकीन व्यक्ति, व्यसन में पारंगत।

बिसाँइध – (सं.पु.) आम की एक विशिष्ट महक।

बिसुआस – (सं.पु.) विश्वास, भरोसा।

बिसोरथ – (सं.पु.) किसी काम का नहीं,उद्देश्य रहित, बिना स्वाद का, व्यर्थ।

बिसुनब – (क्रिया) भोजन करते समय कण का नाक में चढ़ जाना, पानी पीते समय पानी का नाक में चला जाना।

बिसहा – (सं.पु.) बीस नाखूनों वाला कुत्ता, जिसके काटने से जहर फैल जाय।

बिहबल – (विशे.) पाने के लिए आतुर, छूट जाने पर बेचैन, एकदम परेशान।

बिहफै – (सं.पु.) वृहस्पतिवार, गुरूवार का दिन।

बिहफँइया – (सं.स्त्री..) वृहस्पति नामक आकाश का एक तारा।

बिहीहा – (सं.पु.) अमरूद खाने वाले लोग, बृक्ष से अमरूद तोड़ने वाले।

बिहराउब – (क्रिया) पशुओं को पृथक करके गतिमान करना।

बिहतुइया – (सं.स्त्री..) छिपकिली, गिरदान, गिरगिट, घिरघोरी।

बिहाने – (अव्य.) कल सुबह, दूसरे दिन।

बिहन्ने – (अव्य.) एकदम सुबह, प्रातः काल।

बीकब – (क्रिया) बेचना या बिक्री करना, बेंच देना।

बी

बीघा – (सं.पु.) एक बीघा पैमाना, शेर, बाघ।

बीनब – (क्रिया) बुनाई करना, जमीन से वस्तु उठाना।

बीबुर – (सं.पु.) रोते समय बच्चों के दोनों ओंठ आगे को उठ आना।

बीनाछाना – (अव्य.) धुला हुआ, कंकड़–पत्थर निकाला हुआ अनाज।

बीरा – (सं.पु.) पान का बीड़ा, डिठौना, बीरा उठाना, ब.मु.।

बीसर – (सं.पु.) अग्रहणीय दुर्गन्ध, चमड़ी जलने से उत्पन्न दुर्गन्ध।

बीहर – (सं.पु.) एकान्त एवं घना जंगल, पशुओं को अलग करने की सांकेतिक ध्वनि।
बीही – (सं.स्त्री..) अमरूद।

बु

बुइया – (सं.स्त्री..) बुआ, पिताजी की बहन।
बुकना – (सं.पु.) नमक पीसने वाला पत्थर या शिल।
बुकाब – (क्रिया) पिस जाना, पिसकर चूर्ण हो जाना।
बुकबइया – (सं.पु.) पीसने वाला, महीन करने वाला।
बुक्की – (सं.स्त्री..) लम्बा गला, सकरे मुँह वाली लोटिया, बकरी।
बुकबुकाब – (क्रिया) बिना मतलब की बक्क– बक्क बातें करना।
बुकुर बुकुर – (अव्य.) जल्दी–जल्दी बातें करना, जल्दी–जल्दी बोलना।
बुचबुची – (सं.स्त्री..) तथ्यहीन वार्ता, बिना अर्थ की बातचीत।
बुचबुचाब – (क्रिया) अपने आप आक्रोश बस बुदबुदाते रहना।
बुचबा – (विशे.) एक हाथ कटा व्यक्ति, पूँछ कटा पशु।
बुचड़ा – (विशे.) जिसका एक हाथ विकलांग हो।
बुचिया – (सं.पु.) एक हाथ से हीन व्यक्ति।
बुजबुजाब – (क्रिया) पानी से बुलबुला निकलना, पता लगना, आहट या संकेत मिलना, सड़े पदार्थ से पानी निकलना।
बुजरी – (सं.स्त्री..) एक तकिया कलाम, नारियों के लिए गाली।
बुटउआ – (सं.स्त्री..) बूटी, प्रिय बेटी।
बुटुनी – (सं.स्त्री..) छोटे कद की नारी।
बुटहा – (सं.पु.) बूट पहने हुए पाँव, बूट रखने वाली जगह।
बुटब – (क्रिया) भाग जाना, बुट जाना, ब.मु।
बुटबइया – (सं.पु.) भाग जाने वाला।
बुड़ाउब – (क्रिया) डुबाना, पानी में वस्तु को डुबा देना।
बुड़इया – (सं.पु.) डुबकी लगाने वाला, डूबने वाला व्यक्ति।
बुड़ार – (सं.पु.) खेत का जो भाग पानी में डूबा रहता हो।
बुढ़ऊ – (सं.पु.) वयोबृद्ध व्यक्ति के लिए स्नेहिल सम्बोधन।
बुढ़ाब – (क्रिया) वृद्ध हो जाना, बुढ्ढा होना।
बुढ़ान – (विशे.) जो वृद्ध हो चुका हो।
बुढ़ीबा – (सं.स्त्री..) जीर्ण–शीर्ण वयोवृद्ध नारी।
बुढ़हन्डा – (सं.पु.) एकदम बूढ़ा एवं बृद्ध व्यक्ति।
बुत – (योजक) कि, या कि, तो फिर, एक टेक।
बुताउब – (क्रिया) बुझाना, बुझा देना।
बुतबाउब – (क्रिया) आग बुझवाना, बुझाने में मदद करना।
बुतबइया – (सं.पु.) आग बुझाने वाला व्यक्ति।
बुतान – (विशे.) जलकर बुझी हुई, जो बुझ चुकी हो।
बुताब – (क्रिया) बुझ जाना, समाप्त हो जाना।
बुदुर–बुदुर – (अव्य.) अस्पष्ट बातें निकालना, ओंठ के भीतर ही बातें करना।
बुदबुदाब – (क्रि.) ओंठ के भीतर–भीतर बोलते रहना।

बुँदबा – (सं.स्त्री..) बेंदी, बेंदा, रंगीन बिन्दी, एक आभूषण।

बुँदइया – (सं.स्त्री..) बेदी, रंगीन बिन्दी।

बुधइया – (सं.स्त्री..) मन्द अक्ल वाले बुद्धू के लिए प्रतीक।

बुन्द – (विशे.) एक बूँद, अति अल्प मात्रा।

बुन्दी – (सं.स्त्री..) शून्य, बिन्दु, गणितांक।

बुन्दा – (सं.पु.) बड़े आकार की बिन्दी,किसी व्यक्ति पर नजर टिकी रहना, मुख्य उद्देश्य का केन्द्र बिन्दु।

बुरछउना – (सं.पु.) छोटा सा शिशु, नवजात शिशु।

बुलुट – (सं.पु.) लोहे का नट–बोल्ट।

बुलाकि – (सं.स्त्री..) नाक में धारित नारियों का स्वर्ण आभूषण।

बुल्ला – (सं.पु.) बुलबुला, छिद्र से निकला पानी का बुलबुला।

बुसहा – (सं.पु.) जिस पात्र व स्थान में भूसा रखा हो।

बुसउला – (सं.पु.) भूसा रखने वाला कमरा या घर।

बुसउना – (सं.पु.) भूसा।

बुसउलब – (क्रिया) भूसे की तरह किसी की कुटाई–पिटाई करना।

बुसिआउब – (क्रिया) मिला–पटाकर सामान लूट लेना।

बू

बूँकब – (क्रिया) ठोस वस्तु को चूर्णाकार करना, पीसना, गप्प मारना, लम्बी चौड़ी बातें करना।

बूँची – (सं.स्त्री.. / वि.) इकलौती संतान, अपने माँ–बाप की अकेली, हथेली विहीन नारी।

बूटी – (सं.स्त्री..) छोटी बहन, छोटी बच्चियों के लिए प्रतीक।

बूड़ा – (सं.पु.) अत्यधिक जलवृष्टि से उत्पन्न जलामयी स्थिति।

बूड़ब – (क्रि.वि.) डूब जाना, अस्त होना।

बूढ़ा – (सं.स्त्री..) बुढ़िया, बुढ्ढी नारी के लिए उद्बोधन।

बूत – (क्रिया) पुताई का कार्य, झाड़ू–पोंछा का काम।

बूँदी – (सं.स्त्री..) पानी की बूँद, एक मिष्ठान व्यंजन।

बूँदाबादी – (सं.स्त्री..) जलवृष्टि, विरल एवं हल्की बारिश की बूँदें।

बूसा – (सं.पु.) भूसा, दबकर चूर्ण होना।

बूसी – (सं.स्त्री..) धान का छिलका, बूसी निकलना ब.मु.।

बूही – (सं.स्त्री..) अनाज के बदले कृषि कार्य हेतु बैल लेना।

बूहा–बूह – (विशे.) वस्तु का पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता।

बे

बेउहार – (सं.पु.) व्यवहार, स्वागत सत्कार, आमंत्रण का उपहार।

बेउँतब – (क्रिया) कपड़ा सिलने के लिए नाप–जोख, मोच आ जाना।

बेउँत – (सं.पु.) व्यवस्था, तैयारी।

बेउगब – (क्रिया) छोटे जूते में बड़ा पाँव डालकर बढ़ा देना, साँचा से बढ़ा देना।

बेउताउब – (क्रिया) कपड़े सिलवाने के लिए कपड़े की नाप देना।

बेउतबइया – (सं.पु.) कपड़े की नाप–जोख लेने वाला, दर्जी।
बेउड़ा – (सं.पु.) कच्चे घर की दीवाल की नींव में चढ़ाई गई मिट्टी।
बेउरब – (क्रिया) निगरानी पूर्वक खोजना,खोजकर वस्तु को तितिर–बितिर करना।
बेउरबाउब – (क्रिया) वस्तु को इधर–उधर फैलवा डालना।
बेउरबइया – (सं.पु.) कपड़ों में खोजबीन करने वाला व्यक्ति।
बेउँगा – (सं.पु.) आपत्ति आना, संकट पड़ना, बेउँगा पड़ना, ब.मु.।
बेगा – (अव्य.) नहीं जी, देखो भाई, माना कि।
बेगार – (विशे.) बिना मन का कार्य, औपचारिकता, बिना शुल्क का काम।
बेगरहा – (सं.पु.) औपचारिकता पूर्ति के लिए किया गया कार्य।
बेचब – (क्रिया) बिक्री करना, बेंचना।
बेचबाउब – (क्रिया) बिक्री करवाना, बेचवा देना।
बेंचबइया – (सं.पु.) बेचने वाला व्यक्ति, बिक्री करने वाला।
बेंचा – (सं.पु.) बर्तन भर दूध के बदले दिया गया अनाज।
बेंचउआ – (सं.पु.) बिक्री हेतु, बिकने वाली चीज।
बेजाँय – (विशे.) बेजा, बुरा, अनुचित, अमानवीय।
बेजहा – (सं.पु.) ब्याज में ली गई या दी गई वस्तु।
बेजहाई – (विशे.) ब्याज के लोभ से दी गई राशि।
बेटउना – (सं.पु.) बेटा, पुत्र।
बेंट – (सं.पु.) कुल्हाड़ी में लगी लकड़ी, चाकू का मूठ।
बेटबा – (सं.पु.) बेटा या पुत्र, सपूत एवं पुरुषार्थी।
बेड़ब – (क्रिया) कमरे के अंदर बन्द करना, थाने या जेल में बन्द कर देना।
बेड़बाउब – (क्रिया) बन्द करवा देना, भीतर करवा देना।
बेंड़बइया – (सं.पु.) बन्द करने वाला, बन्दी बनाने वाला व्यक्ति।
बेड़ाब – (क्रिया) बन्द हो जाना, जेल चले जाना।
बेड़हा – (सं.पु.) दो के बीच तीसरे का दखल, दो की लड़ाई में तीसरे की एकतरफा सहभागिता।
बेंड़ा – (विशे.) वस्तु की आड़ी स्थिति, बेड़ा पार होना, ब.मु.।
बेंड़उर – (सं.पु.) दीवाल की नींव पर मिट्टी चढ़ाना।
बेड़ना – (सं.पु.) द्वार पर लगा हुआ मोटा आड़ा लठ्ठा।
बेढ़ – (सं.पु.) एक गाली, आँख से दूर, काला पानी, दुरूह एवं दुर्गम।
बेढ़ब – (क्रिया) किसी को उजाड़ना, लूट लेना या ठग लेना।
बेदुली – (सं.स्त्री..) जिस गाय के मस्तक पर सफेद रंग की बिन्दी लगी हो।
बेंदिया – (सं.पु.) ऐसा बैल जिसके सिर पर बेंदी हो।
बेदम्म – (विशे.) बिना दम के, परास्त, बेहोश, मरणासन्न।
बेधि – (सं.स्त्री..) व्याधि, कष्टदायी, विघ्न– बाधा डालने वाली।

बेधर – (विशे.) जिसे आँख से न दिखता हो, सूरदास।

बेना – (सं.पु.) बाँस का बना हुआ पंखा।

बेनमा – (सं.पु.) हवा धौंकने वाला बाँस का ग्राम्य पंखा।

बेनउरी – (सं.स्त्री..) पशुओं का पौष्टिक आहार, बर्फ के टुकड़े।

बेनिया – (सं.स्त्री..) किवाड़ की लम्बी–खड़ी पटरी, वैवाहिक कार्य में प्रयुक्त मिट्टी का लोटिया जैसा पात्र।

बेबथ्था – (सं.स्त्री..) अव्यवस्था, परेशानी, झंझट, आफत।

बेबन्द – (सं.पु.) अवारा, बिना दबाव व अंकुश के, स्वतंत्र व निर्द्वद।

बेमा – (सं.पु.) फैले हुए दोनों हाथ की लम्बवत् दूरी, एक ग्राम्य पैमाना।

बेमार – (सं.पु.) बीमार, रोगी, मर्ज से ग्रसित, बुखार से पीड़ित।

बेमरा – (सं.पु.) बिन्दुवार विवरण, व्याख्या व ब्यौरा।

बेमाई – (सं.स्त्री..) आड़ा–तिरछा पाँव का फटना, बेमाई फटना ब.मु.।

बेमइहा – (सं.पु.) बेमाई फटा हुआ पाँव, बेमाई वाला पैर।

बेर–बेर – (अव्य.) बार–बार, लौट–फिरकर, पुनरावृत्ति।

बेराउब – (क्रिया) छांटना, अच्छा–अच्छा अलग करना।

बेर्री – (सं.स्त्री..) चना मटर मिश्रित गेहूँ, अनेक अनाजों का मिश्रण,पुलिंग 'बेर्रा'।

बेर्रिहा – (सं.पु.) बेर्री वाला अनाज।

बेरा – (सं.पु.) बेला, समय, बारी, स्त्री.लिंग 'बेरिया'।

बेरउका – (विशे.) अच्छा–अच्छा छांटकर प्राप्त की हुई।

बेलमब – (क्रिया) विलम्ब करना, रूकना, ठहरना, कुछ देर तक आराम करना।

बेलमबइया – (सं.पु.) रूकने एवं ठहरने वाला, विलम्ब करने वाला।

बेल – (सं.पु.) बेल का फल, बराबर की जोड़, बेल अटकब, ब.मु.।

बेलिहा – (विशे.) हमउम्र का, बराबर की जोड़ी, समतुल्य।

बेली गादी – (विशे.) समुचित जोड़ी या बैल, बराबरी का आदमी।

बेलना – (सं.पु.) रोटी बनाने वाला लकड़ी का बेलन।

बेलनहाई – (विशे.) बेलन से बनाई गई रोटी, पूड़ी बेलने का लोकगीत।

बेलहरा – (सं.पु.) पान–सुपाड़ी रखने वाला बाँस का पात्र।

बेलब – (क्रिया) बेलन से रोटी बेलना।

बेलबाउब – (क्रिया) रोटी बेलवाने में सहयोग करना, बेलवाना।

बेलबइया – (सं.पु.) रोटी बेलने का कार्य करने वाला।

बेलहाई – (सं.स्त्री..) जो बेला से आकर बस गई हो, जिसका मायका बेला गाँव में हो।

बेसाहब – (क्रिया) क्रय करना, मोल लेना, खरीदी करना।

बेसाह – (सं.पु.) क्रय किया गया सामान, खरीदकर लायी गई वस्तु।

बेसहनी – (सं.स्त्री..) बाजार से खरीदकर लायी गई सामग्रियाँ।

बेसहबाउब – (क्रिया) खरीदी करवाना, क्रय करवाना।

बेसहबइया – (सं.पु.) खरीदी करने वाला बाजार गया व्यक्ति।

बेसर – (सं.स्त्री..) नाक में धारित नारियों का स्वर्ण आभूषण,बेसर गढ़ाना ब.मु.।

बेसहूर – (विशे.) बिना अक्ल एवं बुद्धि का, मूर्ख एवं धूर्त।

बेसनहाई – (सं.स्त्री..) बेसन से बनी सामग्री, बेसन रखा पात्र।

बेसन – (सं.पु.) चने की दाल का आटा।

बेसी – (विशे.) अधिक, जरूरत से ज्यादा, अधिक लम्बा या वजनी।

बेंहड़ा – (सं.पु.) लकड़ी से बनी बाउण्ड्री, पौधों का आरोपित होना, पौधों में मिट्टी चढ़ाना।

बेहन – (सं.पु.) पौधों का रोप, शिशु पौध।

बेंहदब – (क्रिया) मारना–पीटना, मुष्ठिका से प्रहार करना।

बेहदाउब – (क्रिया) किसी की पिटाई दूसरे व्यक्ति से करवाना।

बेहदबइया – (सं.पु.) मारने–पीटने वाला व्यक्ति।

बेहनब – (क्रिया) रूई की तरह धुनाई करना, जमकर पिटाई करना।

बेहनइया – (सं.पु.) रूई की तरह किसी की धुनाई करने वाला।

बेहना – (सं.पु.) रूई धुनकने वाला, गद्दा–रजाई की भराई–तिगाई करने वाला व्यक्ति।

बेहबल – (विशे.) किसी को पाने के लिए उदास रहना, किसी के लिए खूब आतुर हो जाना।

बो

बोइहौं – (क्रिया) बोनी करूँगी, जमीन पर फैलाऊँगा, बात को सबसे बतलाऊँगी।

बोउब – (क्रिया) बीज की बोनी करना, जमीन पर फैलाना, बात को चारों ओर प्रचारित करना।

बोकरी – (सं.स्त्री..) बकरी, अधिक दब जाना, बोकरी बनना, ब.मु.।

बोकरिहा – (सं.पु.) बकरी पालने वाला व्यक्ति।

बोकराब – (क्रि.वि.) बकरी का गर्भधारण कर लेना, गर्भधारण की क्रिया।

बोकरबाउब – (क्रिया) बकरे द्वारा बकरी को गर्भवती करवाना।

बोकबोकाब – (क्रिया) बोक्क–बोक्क करके गहरे पानी में डूब जाना।

बोक्क–बोक्क– (अव्य.) डूबतेसमयपानी पीलेनेसे बोक्क–बोक्क की ध्वनि का निकलना।

बोक्की – (सं.स्त्री..) बकरी, बकरी की बच्ची, पुलिंग बोक्का।

बोकला – (सं.पु.) वृक्ष की छाल, फल का छिलका, बोकला खींचना, ब.मु।

बोकलइया – (सं.स्त्री..) फली काछिलका, लकड़ी की वाह्य परत, अनाज का छिलका।

बोकलिआउब– (क्रि.) किसी की ऐसी पिटाई करना किएक परत चमड़ी निकाल लेना।

बोकरामन – (सं.पु.) बकरा जैसे मुँह वाले व्यक्ति के लिए प्रतीक।

बोकँइया – (अव्य.) घुटनों और हथेली के बल चलना, झुककर या छिपकर चलना।

बोकचब – (क्रिया) समूल नष्ट कर देना, दो टुकड़े कर देना, पोले स्थान से घुसकर उस पार हो जाना।
बोखा – (सं.पु.) बर्तन का टूटा हुआ किनारा, सामने के टूटे दाँतों वाला।
बोखब – (क्रिया) लकड़ी को खण्ड–खण्ड करना।
बोखइया – (सं.पु.) लकड़ी को टुकड़े–टुकड़े करने वाला आदमी।
बोखबाउब – (क्रिया) लठ्ठे को छोटे–छोटे टुकड़ों में कटवाना।
बोखबा – (सं.पु.) जिसके सामने के दाँत टूटे हों, स्त्री.लिंग बोखिया।
बोखऊ – (सं.पु.) सामने के दात जिसके टूटे हों उसको सम्बोधन।
बोखीबा – (सं.स्त्री..) सामने के टूटे दाँतों वाली महिला।
बोखारि – (सं.स्त्री..) बुखार, ज्वर।
बोखरहा – (सं.पु.) जिसे ज्वर चढ़ी हो, जिसे बुखार आ रही हो।
बोखरिआन – (विशे.) बुखार से ग्रसित एवं पीड़ित।
बोखरँऊ – (सं.पु.) बोखार सी चढ़ी तबियत की अनुभूति।
बोंग – (सं.पु.) मोटी लाठी, मोटा सा डंडा।
बोंगा – (सं.पु.) आधी बाह की कमीज, हाफ शर्ट।
बोंगब – (क्रि.) टुकड़े–टुकड़े काटना, खण्डित करना।
बोंगबाउब – (क्रि.) मोटी लकड़ी को टुकड़े में कटवाना।
बोंगइया – (सं.पु.) लकड़ी को टुकड़ों में काटने वाला व्यक्ति।
बोगदा – (सं.पु.) पुल के नीचे से बना आने–जाने का रास्ता, कीचड़ से भरा हुआ रास्ता।
बोंगी – (सं.स्त्री..) मोटी लकड़ी की एक टुकड़ी, मालगाड़ी का डिब्बा।
बोगाब – (क्रि.वि.) जोर–जोर से चिल्लाना, गला फाड़कर बोलना।
बोंगहा – (सं.पु.) हमेशा लाठी लेकर चलने वाला लठ्ठबाज।
बोचर – (विशे.) मन्दबुद्धि का, कम चतुर–चालाक, कमजोर दिमाग का।
बोचबोचाब – (क्रिया) बिना मतलब की बातें करते रहना।
बोजब – (क्रि.) ठूंस–ठूंसकर खाना खाना, अन्दर डाल लेना।
बोजइया – (सं.पु.) ठूंसकर खा लेने वाला, अन्दर डालने वाला।
बोजबोजाब – (क्रिया) पानी में डूबकर तल में डूब जाना।
बोझा – (सं.पु.) घास या फसल के डंठल का गठ्ठा, भार।
बोझइया – (सं.स्त्री..) कम डंठलों की बनी गठ्ठी।
बोटहाई – (सं.स्त्री..) वोट डालने का वातावरण, वोट डालने या मांगने के दिन, चुनावी समय।,
बोड्डा – (सं.पु.) बड़ी एवं उभरी नाभि वाला, स्त्री.लिंग बोड्डी।
बोड़री – (सं.स्त्री..) नाभि, नाभि का प्रक्षेत्र, बोड़री भर बोजब, ब.मु.।
बोड़रा – (सं.पु.) दीपक की बाती से टपकने वाला गर्म तेल, बोड़ा।
बोड़की – (सं.स्त्री..) मिट्टी या काठ की बनी दवातनुमा पात्र।

बोथब – (क्रिया) कीचड़ से लतपथ कर देना, कीचड़ लपेट देना।

बोथबइया – (सं.पु.) कीचड़ लपेटने वाला।

बोथबाउब – (क्रिया) किसी दूसरे से कीचड़ लगवा देना।

बोथान – (विशे.) कीचड़ से एकदम लतपथ हुई स्थिति।

बोथरब – (क्रिया) कीचड़ से सन जाना, शरीर में कीचड़ लग जाना।

बोदारि – (सं.स्त्री..) खेत की गीली मिट्टी जिसमें पाँव धस जाय, कीचड़ उभरा हुआ स्थान।

बोदहरा – (सं.पु.) जहाँ बहुत अधिक कादौं–कीच हो, पाँव धँसने लायक गीली जमीन।

बोनी – (क्रि.वि.) अनाज की बुवाई, खेत में बीज की छिटाई।

बोबा – (विशे.) बोया हुआ खेत, फैलाओ, तितिर–बितिर करिए।

बोबाई – (सं.स्त्री..) बीज बोने की क्रिया या भाव।

बोबाब – (क्रिया) खेत में बीज की बुवाई पूर्ण हो जाना।

बोबान – (विशे.) जो खेत बोया हुआ हो।

बोबइया – (सं.पु.) खेत में अनाज या बीज की बोनी करने वाला।

बोबइहौं – (क्रिया) बोनी कराऊँगी, बोने में सहयोग करूँगी।

बोबरब – (क्रिया) बुवाई का कार्य पूरा हो जाना, जमीन पर वस्तु का बिखराव।

बोबहरा – (सं.पु.) बीज बोया हुआ खेत, फसल उगी हुई जमीन।

बोम – (सं.पु.) पशुओं की चिल्लाहट, पीटने के कारण पशुओं का क्रन्दन।

बोरब – (क्रिया) पानी में पात्र डालकर पानी निकालना, पानी भरे पात्र में डुबा देना।

बोरबाउब – (क्रिया) पानी में डुबाने में सहयोग करना।

बोरबइया – (सं.पु.) पानी में डुबाने वाला, पात्र में पानी निकालने वाला।

बोरिया – (सं.स्त्री..) छोटे आकार का बोरा।

बोरिया–बिस्तर–(अव्य.) घर की धन–सम्पति, बोरिया–बिस्तर बाँधना, ब.मु.।

बोलब – (क्रिया) बोलना, बोलने की क्रिया, बोल निकलना।

बोलबाउब – (क्रिया) किसी से आवाज निकलवा लेना, बोलवाना।

बोलइया – (सं.पु.) बोलने वाला, बोलकर कार्य करने वाला।

बोलीहा – (सं.पु.) हँसी–मजाक के रिश्ते वाला व्यक्ति।

बोलारब – (सं.पु.) अनबन के बाद आपसी बोलचाल का होना, तालमेल, मेलमिलाप।

बोलकरिआउब–(क्रिया) बोलने के लिए विवश करके बोलवा लेना।

बोली – (सं.स्त्री..) हँसी–मजाक, वाणी या भाषा, बोल, नीलामी।

बोलकारब – (क्रिया) नाराज व्यक्ति से बोलने की उत्प्रेरणा युक्त बोल।

बोलिआब – (क्रिया) किसी से हँसी–मजाक करना।

बोलाउब – (क्रिया) बुलाना, आने के लिए आमंत्रित करना।

बोहिथा – (सं.स्त्री..) एक धान की प्रजाति।

भ

भइ – (क्रिया) हुई, पैदा हो गई, जन्म ली।
भइलो – (सर्व.) भाई लोगों, भाइयों।
भइपहा – (सं.पु.) भाईचारा निभाने वाले प्रतिबंधित लोग, आमंत्रण पर भोजन लेने व देने वाले।
भइबाद – (सं.पु.) भाई–परिवार, रिश्ते का भाई।
भइपहाई – (ब.मु.) भाईचारा का रिश्ता निभाने के लिए आना– जाना।
भइसोखर – (ब.मु.) भैंस की तरह मोटी–तगड़ी, जवान लड़की के लिए एक गाली।
भइँसिहार – (सं.पु.) भैंसों को चराने वाला, भैंस का चरवाहा।
भँइसी – (सं.स्त्री..) भैंस, किसी नारी के लिए एक गाली।
भँइसा – (सं.पु.) भैंसा, भइसा कस मोट, ब.मु।
भइसासुर – (सं.पु.) खेतों का एक ग्राम्य देवता।
भइसिआब – (क्रिया) भैंस का गर्भधारण कर लेना।
भइसबाउब – (क्रिया) भैंस को गर्भधारण कराने की क्रिया।
भँइसान – (विशे.) गर्भधारण करने की स्थिति में होना।
भँइसिहा – (सं.पु.) जिसके पास भैंस हों, भैंस की देखभाल करने वाला।
भइने – (सं.पु.) भान्जा, बहन का पुत्र।
भइन पुतऊ – (सं.पु.) भान्जा की पत्नी जो रिश्ते में बहू लगे।
भँइहौ – (क्रि.) चक्की घुमाऊँगी, चकरी चलाने में मदद करूँगी।
भउँह – (सं.पु.) भौंह, भउँह बनाउब, ब.मु.।
भउजी – (सं.स्त्री..) भौजी, भाभी, बड़े भाई की पत्नी।
भउजीजू – (सं.स्त्री..) किसी भी नारी की सास, ब.मु.।
भउकी – (सं.स्त्री..) बाँस की टोकनी।
भउरा – (सं.पु.) मन्द आग में भुना हुआ चबेना।
भउरब – (क्रिया) चने के दाने मन्द आग में भूनना।
भउरी – (सं.स्त्री..) मन्द आग से भुनी ज्वार, चक्कर आने वाला एक मर्ज, बहते पानी का भ्रमण करना।
भउसा – (सं.पु.) मनमानी, भीड़भाड़, जिसका जैसा मन चाहे वैसा करे।
भउसिआब – (क्रि.) शौक–शान दिखाना, शौक में आकर काम न करना।
भउखिआब – (क्रिया) अन्जान बनकर रहस्य जानना, जानते हुए भी अंजान बनकर जानने का प्रयास करना।
भउनी भद्रा – (ब.मु.) बीच में अवरोध आ जाना, हानिकारक नक्षत्र।
भउसागर – (सं.पु.) बिना मालिक की फौज, कोई रोक–टोक न होना।
भकसब – (क्रि.) पशुवत् भक्षण करना, जल्दी–जल्दी बड़े निवाले डालना।
भकुआब – (क्रि.) नाराजगी के कारण जल–भुन जाना, गाल फुला लेना।
भक्का भदइँया–(ब.मु.) मोटी अक्ल का मोटा आदमी, लुंज–पुंज सोच वाला।

भकभकी – (क्रि.वि.) पेट के अन्दर से घबड़ाहट उत्पन्न होना, भय लगना।

भकभकाब – (क्रिया) घबड़ाहट बस पेट भड़भड़ाना, पेट के अन्दर वायु का उफान उठना।

भकराँइछ – (सं.स्त्री..) अन्न के सड़ने या घुन जाने से उत्पन्न दुर्गन्ध।

भकुआ – (सं.पु.) भोला–भाला व्यक्ति, मूढ़, मूर्ख व नसमझ व्यक्ति।

भक्खू – (सं.पु.) बिना किसी परहेज के खा लेने वाला, जो मिले वही खा लेने वाला।

भकुअई – (क्रि.वि.) नादानी एवं नासमझी, जानते हुए मूर्खता कर बैठना।

भखाब – (क्रिया) ठूंस–ठूंस कर खाना, दोनों हाथ से खाने का प्रयास करना।

भखाउब – (क्रि.) ठूंसकर किसी को खिलवाने की पहल करना।

भखइया – (सं.पु.) जल्दी–जल्दी बड़े–बड़े निवाले मुँह में डालने वाला।

भखरहा – (सं.पु.) अपने गाँव से सुदूर दक्षिण दिशा में रहने वाला।

भखार – (सं.पु.) दक्षिण दिशा की ओर स्थित सुदूर वाले गाँव।

भगाउब – (क्रिया) भगाना, भगा देना, हटाकर दूर करना।

भगबइया – (सं.पु.) भगाने वाला, हटा देने वाला।

भगाब – (क्रिया) भाग जाना, भागकर अन्यत्र चले जाना।

भगान – (विशे.) भागकर आई हुई, भागी हुई।

भगँउआ – (विशे.) भाग जाने वाली या भागने की लक्षण वाली।

भगन्ता – (सं.पु.) मैदान छोड़कर भागने वाला, काम पड़ने पर गायब रहने वाला, भागते रहने की प्रवृत्ति का।

भगमनिया – (सं.स्त्री..) वह नारी जो हर दृष्टि से भाग्यशाली हो।

भगउती – (सं.स्त्री..) भगवती, देवी, चण्डी, आदिशक्ति।

भगरी – (सं.स्त्री..) बिना धुली हुई कोदई का बना भात।

भगदर – (सं.स्त्री..) भीड़ में खलबली मच जाना, भाग–दौड़ मच जाना।

भगोड़ा – (सं.पु.) भागकर आया हुआ, काम पड़ने पर भाग जाने वाला।

भग – (क्रिया) भगो, भाग जाओ, हटो, हट जाओ।

भगइहौ – (क्रिया) भगाऊँगी, हटाऊँगी, हटा दूँगी।

भगाय देब – (क्रिया) भगा दूँगा, हटा दूँगा, दूर भगा देंगे।

भगउहल – (सं.पु.) भगाकर लायी हुई, भागते–दौड़ते हुए, एकदम भागते हुए।

भगउना – (सं.पु.) भोजन पकाने वाला चौड़े मुख का पात्र, पतीला या गंजा।

भगहा – (सं.पु.) निश्चित लाभांश की संविदा के साथ दिया गया खेत।

भँजब – (क्रिया) लड़खड़ाना, इधर–उधर चलते समय घूम जाना, डगमगा जाना।

भँजबाउब – (क्रिया) बैर का बदला लेना, पैसे का फुटकर करवाना, रस्सी की लड़ी एक में करवाना।

भँजबइया – (सं.पु.) फुटकर या खुदुरा पैसा कराने वाला, गेरमा की लड़ी को लपेटने वाला।

भँजबाई – (सं.स्त्री..) गेरमा बनाने के बदले प्राप्त मजदूरी।

भँजररब – (क्रिया) रस्सी की लड़ों का आपस में मिलकर एकाकार हो जाना।

भँजउना – (सं.पु.) खुदरा करने के बदले लिया गया अतिरिक्त लाभांश।

भजिया फारब–(ब.मु.) किसी की ऐसी–तैसी करना, किसी का नुकसान करना, किसी को संकट में डाल देना।

भजीहा – (सं.पु.) चना के खेते से भाजी की कोपले काटने वाले लोग।

भजिहाई – (सं.स्त्री..) भाजी से बनाई गई पकौड़ी, भाजी रखने वाला पात्र विशेष।

भजनिहा – (सं.पु.) गीत गाना व भजन करने वाली टोली या लोग।

भँजइहौ – (क्रि.) नोट को फुटकर पैसों में कराऊँगी, बदला चुकाऊँगी।

भजाये – (क्रि.) खुदरा या फुटकर करा लिये, भँजाय लिहे, ब.मु.।

भँजाउब – (क्रिया) बदला चुका लेना, बँधी नोट का खुल्ला कराना।

भँटहा – (सं.पु.) भाँटे के पौध लगी हुई जगह या बगिया।

भटभटाउब – (क्रिया) हाथ से भटभट करके आवाज करना।

भटभटाब – (क्रिया) भटभट की आवाज का होना, परेशान होना।

भटभटबइया– (सं.पु.) भटभट का संकेत करने वाला,घबड़ाहट उत्पन्न कर देने वाला।

भटभटउँआ – (विशे.) भटभट की आवाज करते हुए शैली में।

भँटकटइया – (सं.स्त्री..) कांटेदार एक औषधीय पीले फल वाली झाड़ी।

भटकब – (क्रिया) भटकना, दर–दर की ठोकर खाना, भटक जाना, बेकार में आना–जाना व परेशान होना।

भटकाउब – (क्रिया) व्यर्थ में किसी को परेशान करना, भटकवा देना।

भटकबाह – (सं.पु.) अनावश्यक आने–जाने से उत्पन्न परेशानी।

भटकबइया – (सं.पु.) गलत रास्ता प्रशस्त कर गुमराह करने वाला व्यक्ति।

भटकत–भटकत– (अव्य.) भटकते–भटकते, खोजते–खोजते, भ्रमण करते हुए।

भट्ट–भट्ट – (अव्य.) किवाड़े बन्द करने पर होने वाली एक विशेष ध्वनि।

भटर–भटर – (अव्य.) भटभट की आवाज का होना।

भटाभट्ट – (विशे.) एकदम से, लगातार बिना रूके, अविरल गति से।

भठब – (क्रिया) गढ्ढे का मिट्टी से भर जाना, खाली जगह भर जाना।

भठाउब – (क्रिया) जमीन के गढ्ढे को बंदकर समतल करवाना।

भठबइया – (क्रिया) गढ्ढा की भराई करने वाला व्यक्ति।

भठाब – (क्रिया) गढ्ढे का पट जाना, खाली जमीन की भराई हो जाना।

भठान – (विशे.) पाटा गया गढ्ढा, भरायी गयी खाली जमीन का पूर्ण होना।

भठबाई – (सं.स्त्री..) जमीन पाटने या मिट्टी भराई का मेहनताना।

भठ्ठी – (सं.स्त्री..) लौह तपाने की अंगीठी, चबेना भूनने का चूल्हा, दारू बेचने का कक्ष।

भंडाफोर – (सं.पु.) पोल खोलना, काले कारनामें उजागर करना, रहस्य खोलना।

भंडासराध – (ब.मु.) बना बनाया काम बिगाड़ देना, सारी मेहनत मिट्टी में मिल जाना।

भंडारा – (सं.पु.) सार्वजनिक प्रसाद वितरण, उत्सव के बाद सहभोज।

भँड़बा – (सं.पु.) बर्तन, धातुओं एवं मिट्टी के पात्र।

भड़ुआ – (सं.पु.) नाचने–गाने वाला पुरुष।

भँड़मजना – (सं.पु.) बर्तन माँजने के लिए बना निर्धारित स्थान विशेष।

भड़कूहुर – (सं.पु.) कमरे में रखे छोटे–बड़े बर्तनों की भीड़।

भड़भड़ – (विशे.) जो देखने में भारी– भरकम दिखाई पड़े, भीड़–भड़क्का।

भड़कील – (विशे.) बड़े आकार के कारण वस्तु का भारी भरकम दिखना।

भड़रहा – (सं.पु.) भण्डार कक्ष, घर का सामान रखने वाला कमरा।

भड़ाँर – (सं.पु.) भण्डार, घर–गृहस्थी की विविध उपयोगी सामग्री।

भड़ारी – (सं.पु.) भण्डार का मालिक, भण्डार प्रभारी।

भड़कइसा – (सं.पु.) खेत में गड़ा मजबूत खूँटा,जमीन पर गाड़ी गयी मोटी लकड़ी।

भँड़भेरा – (सं.पु.) अकस्मात् आमना–सामना हो जाना, भूले–भटके मिलन हो जाना।

भड़भड़ाब – (क्रिया) कार्य की अधिकता के कारण घबड़ाहट युक्त आतुरता होना।

भड़भड़िआउब– (क्रिया) किसी को भयभीत करके आतुर कर देना।

भड़ुहाई – (अव्य.) परायी स्त्री. के साथ सत्संग या मैथुन करने की पहल।

भँड़फोर – (क्रि.वि.) घर में तोड़फोड़ करना, तहस–नहस करना, आपस में भिड़ाकर झगड़ा करा देना।

भँड़बाउब – (क्रिया) बना काम बिगड़वा देना, कार्य खराब कर देना।

भँड़बइया – (सं.पु.) काम बिगाड़कर रख देने वाला तीसरा व्यक्ति।

भड़र–भड़र – (अव्य.) भटभटाने की निरन्तर ध्वनि का होना।

भतखउआ – (ब.मु.) खानाबदोश, खाने में आगे काम में पीछे, खाये–पिये और खिसके, ऐरे गैरे नत्थू खैरे, ब.मु.।

भतहा – (सं.पु.) भात वाला बर्तन, भात खाने वाले लोग, जिनसे भात खाने का रिश्ता हो।

भतहाई – (सं.स्त्री..) भात–दाल की पारूस का होना, भात वाली बटलोई।

भतखबाई – (सं.पु.) भात खाने की रस्म, भात खाने की रस्म में प्राप्त नेंग या पैसा।

भतखबउहीं – (सं.स्त्री..) भात खाने के बदले मिला हुआ उपहार या राशि।

भतउहाई – (सं.स्त्री..) जिस बटलोई में प्रायः भात बनाया जाता हो।

भतार – (सं.पु.) किसी नारी का पति, नारी के लिए एक गाली।

भथुरी – (सं.स्त्री..) गेहूँ के साथ उगने वाली एक घास विशेष।

भदँउही – (सं.स्त्री..) भादौं में उफान में आने वाली सभी चीजें।

भदँउहा – (सं.पु.) भादौं महीने का जन्मा शिशु, भदउँहा गूलर, ब.मु.।

भदइली – (सं.स्त्री..) भादौं मास में पकने वाली जिन्श, भादौं में जन्मी बच्ची।

भदर–भदर – (अव्य.) जोर–जोर से भद–भद करते हुए भागना।

भनभनाब – (क्रि.वि.) तीव्र गति के साथ चक्कर काटना, भंवरे की आवाज होना।

भन्ना – (क्रि.) वर का व्याह करने के बदले कन्या पक्ष से लिया गया पैसा।

भन्नाब – (क्रि.वि.) भनभनाना, वेग के साथ घूमना, आग बबूला हो जाना।

भन्नउहन – (विशे.) एकदम बहुत तेज के साथ, वेग से घूमते हुए।

भन्निहा – (सं.पु.) भन्नी गाँव से आकर बस जाने वाला आदमी।

भन्न–भन्न – (अव्य.) हमेशा भुनभुनाते रहना, भौंरे की विशेष आवाज।

भनन–भनन – (अव्य.) नाराज होकर नाक के बल प्रायः बोलते रहना।

भपउब – (क्रिया) भाप दिलाना, भाप से वाष्पित करना।

भपाउब – (क्रिया) किसी को भाप देकर तापयुक्त करना, भाप सुघाना।

भपान – (विशे.) वाष्पित, भाप दी हुई, भाप लिया हुआ।

भभरिआब – (क्रि.) हल्की–हल्की मुँह में सूजन आ जाना।

भभरिआन – (विशे.) मुँह का सूजा हुआ, सूजन से ग्रसित चेहरा।

भब्भा – (सं.पु.) धूल के महीन कण, भूसा की महीन टुकड़ियाँ।

भभक्का – (क्रि.वि.) जोर से आग जलना, आग की लपटें, ऊँचाई तक जाना।

भभकब – (क्रिया) पेट में जलन उठना, ऊष्मायुक्त वातावरण बनना।

भभूती – (सं.स्त्री..) राख, झाड़ने के लिए प्रयुक्त राख, सन्तों के शरीर में लिपटी हुई राख।

भभ्भड़ – (विशे.) सघन भीड़, आकार में अधिक बड़ा दिखना।

भभ्भ – (सं.पु.) भूसा की महीन भूसी, कूड़ा–कर्कट एवं धूल।

भमब – (क्रिया) फिरना, घूमना, भ्रमण करना, इधर–उधर होना।

भमाउब – (क्रिया) चक्करदार वस्तु को घुमाना, घुमा देना।

भमरी – (सं.स्त्री..) एक चक्कर आने वाला रोग, सिर पर घुमावदार बाल, मण्डप में फेरा लगाना, भमरी का लोकगीत।

भमरि – (सं.स्त्री..) बड़े आकार की मधु–मक्खी, मक्खी की एक किस्म।

भमरा – (सं.पु.) श्यामवर्णी भौंरा, बच्चों का खिलौना, लट्टू, कशीदानुमा लकड़ी।

भमरहा – (सं.पु.) किसी गाँव विशेष का नाम।

भमरहबा – (सं.पु.) भमरहा गाँव का जन्मा, भमरहा गाँव से आकर बसा हुआ।

भमरिहा – (सं.पु.) जिसके सिर पर छल्लेदार बालों की उपस्थिति हो वह व्यक्ति।

भमरहाइन – (सं.स्त्री..) भमरहा गाँव में जन्मी नारी, जिसका मायका भमरहा में हो।

भयऊ – (सं.स्त्री..) भयाहू, छोटे भाई की पत्नी।

भयार – (सं.पु.) भालू, मादा भालू, एक जंगली जानवर।

भयामन – (विशे.) डरावनी, डरावना, वीभत्सपूर्ण।

भरता – (सं.पु.) भुरता, दुर्घटना में शरीर का कुचल जाना।

भरमारि – (सं.स्त्री..) आधिक्य, बहुतायत, अधिकता।

भरीमा – (सं.पु.) पानी से ढकी जमीन, पलास के पत्तों के ताप से पकी वस्तु।

भरिया – (सं.पु.) बैगा, पनिका, एक आदिवासी जाति।

भरेंठ – (सं.पु.) रबी की फसल वाला बाँध, पानी भरा रहने वाला खेत।

भरभेंडा – (सं.पु.) अकस्मात् सामना पड़ जाना, विरोधी के फंदे में फँस जाना।

भरदरिआब – (क्रिया) आम का पर्याप्त मात्रा में फल आना, फूल–फल का सघन रूप से लगना।

भरकत – (सं.पु.) क्षतिपूर्ति, नुकशानी देना, कमी को पूरा कर देना।

भरभण्ड – (सं.स्त्री..) मस्तिष्क, खोपड़ी, दिमाग वाली जगह।

भरब – (क्रिया) भरना, भराई का कार्य करना, पानी खींचना।

भरबाउब – (क्रिया) भरवाना, किसी से भरवाने का कार्य करवाना।

भरबइया – (सं.पु.) भराई करने वाला, भरने वाला।

भरान – (विशे.) भरा हुआ, भराई की सम्पन्न हुई स्थिति।

भराधि – (सं.पु.) बड़ा कुकर्मी, मजाकिया मिजाज वाला, गयी–गुजरी मानसिकता का व्यक्ति।

भरसारी आग – (सं.स्त्री..) भुँजवा की भट्ठी, जलता चूल्हा।

भरेभाँदव – (सं.पु.) भरी बरसात में, भादौं महीने की वर्षा में।

भरूही – (सं.स्त्री..) किसानों का एक औजार, लोहे का कृषि उपक्रम।

भरहरा – (सं.पु.) आग भरे बर्तन में मिर्च डालकर गन्ध सुंघाना।

भरसररब – (क्रिया) पानी पड़ने से लकड़ी का सड़ जाना।

भरम – (सं.पु.) भ्रम, भ्रान्ति, संदेह, संशय।

भल – (सं.पु.) काम चलाऊ, कुछ ठीक, ठीक–ठाक।

भला – (विशे.) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, ऐसा।

भले – (अव्य.) ठीक हुआ, ठीक किया, भलीभाँति, अच्छी तरह से।

भल्ल–भल्ल – (अव्य.) खून का तुल्ला, घड़े से पानी गिराने पर उत्पन्न ध्वनि।

भलभलाब – (क्रि.वि.) लड़खड़ाती जबान की बोली, अस्पष्ट स्वर, अंदर ही अंदर शब्दों का रह जाना।

भलभलइया – (सं.पु.) भलभलाते हुए बात करने वाला व्यक्ति।

भलमनसाहत– (सं.स्त्री..) बड़प्पन, मानवीयता, भले आदमी का व्यवहार।

भलधर – (विशे.) विशेष रूप से, अधिकांशतः, मुख्य रूप से।

भसकब – (क्रिया) भूसे का ढेर फैल जाना, दीवाल का गिरना।

भसभसाब – (क्रिया) दीवाल का ढह जाना, अन्दर ही अन्दर नाराज होना।

भसकबइया – (सं.पु.) भूसे का ढेर फैलाने वाला, दीवाल धराशायी करने वाला।

भसकनहा – (सं.पु.) छूते ही गिर जाने वाली कमजोर वस्तु।

भसकाउब – (क्रिया) भूसे के ढेर को फैला देना, दीवाल को गिरा देना।

भहर–भहर – (क्रिया) बहुत अच्छा, सुन्दर सुकोमल, आराम से।

भा

भाइप – (सं.पु.) भाईचारा,आत्मीयता पूर्ण सम्बन्ध, उत्सव व दुख की सहभागिता।

भाई हरे – (सम्बो.) भाइयों, भाई लोगों, महानुभावों।

भाई लोगो – (सम्बो.) भाइयों, महानुभावों।

भाइल – (सम्बो.) भाइयों, भाई लोगों।

भाँउब – (क्रिया) घुमा देना, मोड़ देना, विचार बदल देना, चक्की फिराना।

भाकुल – (विशे.) अति घुलनशील, मुँह में डालते ही जो गल जाय।

भाखा – (सं.पु.) भाषा, मुख की आवाज, स्वर, बोली, वाणी।

भाखब – (क्रिया) प्रतिक्रिया व्यक्त करना, निर्णय सुनाना, अपना विचार स्पष्ट कर देना।

भागब – (क्रिया) भागना, भाग जाना, अदृश्य होना।

भाग – (विशे.) भाग्य, सौभाग्य, किस्मत।

भागमानी – (विशे.) भाग्यशाली, सौभाग्यशाली, भागमानी केहर, ब.मु.।

भागत–भागत– (अव्य.) एकदम दौड़ते हुए, दौड़ते–दौड़ते।

भाँज – (सं.स्त्री..) वस्तु विनिमय, नोट के बदले फुटकर पैसे।

भाँजब – (क्रि.) रस्सी की लड़ियों को एक करना, अस्त्र को घुमाना– फिराना।

भाजी – (सं.स्त्री..) सब्जी, साग, तरकारी, भाजी खाये चौहानी, ब.मु.।

भाँजी – (सं.स्त्री..) काम में विघ्न बाधा डालने वाली बातें, भाँजी मारब, बघेली मुहावरा।

भाठा – (सं.पु.) चूल्हे के विकल्प में जमीन परखुदा गढ्ढा, ईंट पकाने का भट्ठा।

भाठब – (क्रि.वि.) गढ्ढे को मिट्टी से पाटना, जमीन में खोदकर गाड़ देना।

भाठ – (सं.पु.) ऊबड़–खाबड़ व पथरीली भूमि, बहुत दिनों की पड़ती जमीन, कम उपजाऊ खेत।

भाँड़ा – (सं.पु.) बर्तन, भोजन बनाने में उपयोगी पात्र।

भाँड़ब – (क्रिया) बिगाड़ देना, गड़बड़ करना, भ्रष्ट कर डालना।

भाँड़ि – (सं.स्त्री..) गुदा के अन्दर की लाल मांशपेशी।

भाड़ – (सं.पु.) भठ्ठी में जाना, जलती भठ्ठी में जाओ, ब.मु.।

भात – (सं.पु.) पानी में उबालकर पकाया गया चावल।

भादँउ – (सं.पु.) भादौं मास, भाद्रपक्ष।

भाय – (सं.पु.) भाई, भइया, घर–परिवार का सदस्य।

भाँय–भाँय – (अव्य.) वायु उत्सर्जन की ध्वनि, निर्जन स्थल की शब्द–गूँज, रूई धुनकने से उत्पन्न आवाज।

भाये भोरे – (ब.मु.) इसी बहाने, इसी आड़ में, इसी मौके पर।

भारब – (क्रिया) पत्ते की तह के बीच में फलों को रखकर पकाना, कपड़े में लपेटकर किसी को तापयुक्त करना।

भास – (विशे.) गुण या गुणवत्ता, योग्यता व सामर्थ्य, संभावना।

भि

भिखहारी – (सं.पु.) भिखारी, भीख मागने वाला आदमी।

भिंजउब – (क्रिया) पानी में भिगोना, पानी से गीला करना।

भिजबाउब – (क्रिया) किसी के द्वारा गीला करवा देना।

भिजबइया – (सं.पु.) पानी में भिगोने वाला, गीला करने वाला।

भिजही बिलारी–(ब.मु.) किसी को देखकर छिप जाना या दब जाना।

भिंजउरा – (सं.पु.) पानी या दही में भिगोया हुआ मगौड़ा।

भिंजाउब – (क्रिया) स्वयं कपड़ा गीला करना, भिगोना।

भिंजाब – (क्रिया) भीग जाना, पानी से गीला हो जाना।

भिटबा – (सं.पु.) नदी तालाब का घाट, जलाशय का उच्च भाग।

भिड़ब – (क्रिया) किसी से लिपट पड़ना, भिड़ जाना, कचड़ा लिपट जाना।

भिड़बाउब – (क्रिया) किसी से किसी को लड़ा देना, किसी के कीचड़ लपेटवाना।

भिड़न्त – (क्रि.वि.) दो पक्षों के बीच टक्कर हो जाना।

भिड़ि परब – (क्रिया) भिड़ पड़ना, कार्य में लग जाना, कीचड़ से सन जाना।

भिड़बइया – (सं.पु.) कीचड़ लपेटने वाला, भिड़ा देने वाला।

भिड़ान – (विशे.) कीचड़ से सना हुआ, दो के बीच भिड़ाव।

भिड़ाईखोर – (सं.पु.) हमेशा इसको–उसको लड़ाते रहने वाला।

भिड़ाउब – (क्रिया) स्वयं दो लोगों को आपस में लड़ा देना।

भितरिहा – (सं.पु.) आन्तरिक व्यक्ति,घरेलू सदस्य, घर के अन्दर आने–जाने वाला।

भितरिआब – (क्रिया) जाकर किसी के भीतर चले जाना और फिर न निकलना।

भितरिआन – (विशे.) भीतर ही गुप–चुप हो जाना, बाहर न निकलना।

भितरे – (अव्य.) घर के भीतर की ओर, अन्दर ही।

भितरहा – (सं.पु.) जो घर के अन्दर–बाहर आने–जाने को अधिकृत हो।

भितिहर – (सं.पु.) कच्ची दीवालों से बना कच्चा घर।

भितरगुल्ल – (विशे.) भीतर ही भीतर योजना बनाने वाला, गुपचुप रहने वाला, चुप्पा बदमास, पत्तों की आड़ में फलों का छिपा रहना।

भितिया – (सं.स्त्री..) भीत, दीवाल, बाउण्ड्रीवाल।

भितिहाई – (सं.स्त्री..) भीत वाला घर, भीत के खम्भेदार घर।

भिदब – (क्रिया) शरीर में तेल का शोषित हो जाना, मेल खा जाना।

भिदाउब – (क्रिया) शरीर में मालिश करके तेल को अवशोषित करा देना।

भिदबइया – (सं.पु.) शरीर में तेल मिलाने वाला व्यक्ति।

भिन्सरहा – (सं.पु.) सूर्योदय के पूर्व, प्रातःकाल, भोर में।

भिन्सार – (सं.पु.) सुबह, प्रकाश, दिनमान, सवेरा, सूर्योदय।

भिन्सारे – (अव्य.) प्रातःकालीन बेला, एकदम सुबह, कल

भिनभिनाब – (क्रिया) नाक सिकोड़ना, नफरत करना, घृणा करना।

भिनभिनाउब– (क्रिया) मन न करना व दिल गवाह न देना।

भिनिन–भिनिन– (अव्य.) मक्खियों का उड़ना, मन में घृणा होना, भिनिन–भिनिन करना, ब.मु.।

भिनभिनिहा – (सं.पु.) हमेशा घृणा करते रहने वाला व्यक्ति।

भिभिक – (सं.स्त्री..) भय दूर होना, नजर खुलना, अक्ल व बुद्धि आना।

भिमब – (क्रि.वि.) चारों तरफ घूमना, परिक्रमानुमा फिरना।

भिमाउब – (क्रि.वि.) किसी को पकड़कर चारों ओर वृत्ताकार घुमाना।

भिमइया – (सं.पु.) पकड़कर गिराने वाला व्यक्ति।

भिम्मसेनी – (सं.स्त्री..) जेठ मास की प्रतिष्ठित व्रतवाली एकादशी तिथि।

भिम्महाई – (सं.स्त्री..) भिम्मा जाति का एक प्रिय लोकगीत।

भिम्मा – (सं.पु.) बसदेवा की एक जाति, घुमक्कड़ गायक।

भिरहाई – (सं.स्त्री..) बाँस के पौधे वाली जमीन।

भिरेंठ – (सं.पु.) बहुत अधिक मात्रा में खड़ी फसल, बाँस की टहनियों का समूह।

भिरिआउब – (क्रिया) बाँस की टहनियों को एक–दूसरे के ऊपर रखकर व्यवस्थित ढेर बनाना।

भिरिहाउब – (क्रिया) किसी को प्रलोभन देकर अपने वशीभूत कर लेना, मिला–पटा लेना, आकृष्ट कर लेना।

भिल्ल – (ब.मु.) अत्याधिक गन्दगी का आलम, गंदगी का साम्राज्य।

भिस्टा – (सं.पु.) मैला या टट्टी, अस्तित्वविहीन गंदा पदार्थ।

भिस्टहा – (सं.पु.) हमेशा मैला खाने वाला जीवधारी।

भिसभिसाब – (क्रिया) घृणा के कारण मन का गवाह न देना,मन का खराब हो जाना।

भिसभिसाउब– (क्रिया) किसी के मन को घृणा उत्पन्न करके खराब कर देना।

भी

भीखी – (सं.स्त्री..) व्रतबंध संस्कार के अवसर पर दी जाने वाली रीतिगत भिक्षा।

भींजब – (क्रिया) पानी से भीग जाना, जहर का शरीर में भिदना।

भींजि – (विशे.) पानी से गीली हुई, ओत–प्रोत, भीगी हुई।

भीठा – (सं.पु.) जलाशय की उच्च भूमि, टीलेदार जगह।

भीती – (सं.स्त्री..) दीवाल, भित्त, कच्ची भीत विशेष।

भीरा – (सं.पु.) बाँस के पौधे, बाँस की झाड़ी का समूह।

भु/भू

भुअरी – (सं.स्त्री..) भूरे रंग की, भूरे बालों वाली, किसी का नाम, स्त्री.. भुअरा।

भुआँर – (सं.पु.) ग्राम्य देवता का पुजारी, देवाला का पण्डा, जिस मुखिया को देवी–देवताओं की सवारी आती हो, स्त्री.. भुआरिन।

भुँइ – (सं.स्त्री..) भूमि, जमीन, पृथ्वी, धरती।

भुइँया – (सं.स्त्री..) धरती, जमीन, भूमि, एक ग्राम्य देवता।

भुँइडोल – (सं.पु.) पृथ्वी का हिलना– डुलना, भूकम्प या भूचाल।

भुँइफोर – (सं.पु.) जिसके माँ–बाप का सही पता न हो।

भुँइयाबाबा – (सं.पु.) गाँव की सीमा में रक्षार्थ प्रतिस्थापित ग्राम्य देवता।

भुइधरा – (सं.पु.) भूमि के अन्दर बना घर या तल।

भुकुआ – (सं.पु.) गीली मिट्टी की दिया, गीली मिट्टी का खिलौना।

भुकुरब – (क्रि.वि.) नाराज हो जाना, अरुष्ट होना, मन बिगड़ जाना।

भुकुरबाउब – (क्रिया) किसी को नाराज करवा देना, अरुष्ट करना।

भुकुरा – (विशे.) नाराजगी से ग्रसित, बिल्कुल रूठा हुआ।

भुकुरबइया – (सं.पु.) नाराज होने वाला, अरुष्ट हो जाने वाला व्यक्ति।

भुकुनू – (विशे.) अत्याधिक बारीक व महीन, चूर्ण की तरह चूर–चूर।

भुकुड़ी – (सं.स्त्री..) पदार्थ या वस्तु में पपड़ी या फफूँद लग जाना।

भुकुड़िआब – (क्रिया) पदार्थ में भुकुड़ी का लग जाना।

भुकुड़िआन – (विशे.) फफूँद लगी हुई स्थिति, रोटी में सफेद काई लगी हुई।

भुकतब – (क्रिया) भोगना, भुगतान करना, जैसी करनी वैसी भरनी।

भुकताउब – (क्रिया) किसी को प्रताड़ित करना, भोग भोगवाना।

भुकतबइया – (सं.पु.) कर्मों का फल भोगने वाला, आपत्ति झेलने वाला।

भुक्क–भुक्क – (अव्य.) हवा लगने से दीपक की लौ का भुक्क–भुक्क होना, बाल्टी में लोटा डालने से उत्पन्न ध्वनि।

भुँखाब – (क्रिया) भूख लग आना, भूख की अनुभूति होना।

भुँखान – (विशे.) भूख से पीड़ित, भूख लग आना।

भुँखहा – (सं.पु.) भूखा व्यक्ति, भूख से ग्रसित व्यक्ति।

भुँखमरी – (सं.स्त्री..) अभाव या अकाल, दीन– हीन स्थिति, भूख से मरने की स्थिति।

भुँखजर – (सं.पु.) भूख के कारण हुई बुखार, खाली पेट वाली बुखार।

भुच्च – (विशे.) एकदम निरा मूर्ख, जिसके जरा भी अक्ल न हो।

भुच्चड़ – (विशे.) मूर्ख, नासमझ, अज्ञानी, मूर्ख।

भुँजरब – (क्रिया) आग में भुन जाना, ताप से पक जाना, जल जाना।

भुँजाउब – (क्रिया) भुनवाना, किसी को जलवाना।
भुँजान – (विशे.) एकदम जला हुआ, आग में तला हुआ।
भुँजाब – (क्रिया) जल जाना, भुन जाना।
भुँजबइया – (सं.पु.) जलाने वाला, भूनने वाला व्यक्ति।
भुँजिया – (सं.स्त्री..) तेल से पकी हुई सूखी सब्जी, एक चावल की किस्म।
भुजंगी – (सं.स्त्री..) गहरे फन वाली एक करछुल।
भुँजबा – (सं.पु.) चना या चबेना भूनने वाली एक विशेष जाति व व्यक्ति।
भुँजबाई – (सं.स्त्री..) भूनने के बदले मिली हुई मजदूरी, पारिश्रमिक।
भुजी भुजी – (अव्य.) टुकड़े–टुकड़े, छोटे–छोटे खण्डों में, महीन–महीन टुकड़ी।
भुजदण्ड – (सं.पु.) एकदम मोटे–मोटे भुजाओं वाला व्यक्ति।
भुट्ट–भुट्ट – (अव्य.) धक्का देने पर किवाड़ों से उत्पन्न एक ध्वनि।
भुटभुटाउब – (क्रि.वि.) किवाड़ा हिलाकर संकेत करना।
भुट्टाब – (क्रिया) भुट्–भुट् की आवाज का होना।
भुट्टा – (सं.पु.) मक्का या ज्वार, जलकर गुस्से से खाक हो जाना।
भुट्टहा – (सं.पु.) जिस खेत में मक्का या ज्वार बोया हुआ हो।
भुटानी – (सं.पु.) छोटे कद का बामारूपी आदमी।
भुड़केरब – (क्रिया) आग में हलका हलका भूनना, कम दूध में अधिक चावल डालकर मिलाना।
भुतहा – (सं.पु.) जिसे भूत लगा हो, जिस जगह में भूत रहता हो वह स्थान।
भुतहाई – (सं.स्त्री..) भूतों की भाँति काम करना, भूतों की झाड़–फूँक।
भुतछल – (क्रि.वि.) भूतों की तरह छल करना, अस्थिर वार्ता करना।
भुनभुटी – (सं.स्त्री..) अति छोटे आकार की एक मक्खी विशेष।
भुनभुनाब – (क्रिया) मक्खियों जैसा अस्पष्ट स्वर, किसी पर नाराज होना।
भुनुन–भुनुन – (अव्य.) मक्खियों जैसा भुनभुनाना, मक्खियों की ध्वनि।
भुन्डा – (सं.पु.) धान के साथ होने वाली एक घास।
भुन्डी – (सं.स्त्री..) थैली के धागे में बनी गाँठ, एक घास का बीज।
भुन्नाब – (क्रिया) नाराज होना, आवेशित होना।
भुरकुट – (विशे.) जल–भुन जाना, जलकर खाक होना, चूर्णाकार होना।
भुरूर–भुरूर – (अव्य.) बुरादानुमा मिट्टी, भुरभुरी मिट्टी, सूखे बालों का तितिर–बितिर उड़ना।
भुरबा – (सं.पु.) भूरे रंग का आदमी, भूरे बाल वाला, भूरी चमड़ी का।
भुरकुन्डा – (सं.पु.) किसी वस्तु का चूर्ण बन जाना, अति बारीक कणों में विभक्त होना।
भुरभुरी – (विशे.) बुरादानुमा मिट्टी, सड़ी–गली मिट्टी।
भुसभुसाब – (क्रि.) अन्दर ही अन्दर नाराज होना, भीतर–भीतर कुछ कहना।

भुसन्ड – (विशे.) एकदम, पूर्णरूपेण, पूर्णतः काला।
भूँजब – (क्रिया) किसी वस्तु को भूनना, आग में जलाना।
भूभुँर – (सं.स्त्री..) बहुत अधिक गर्म धूल, अशोभनीय एवं अव्यवहारिक कार्य।
भूसी – (सं.स्त्री..) दलहन या अन्न का निकला हुआ छिलका।
भूही – (सं.स्त्री..) बहुत सारे लोगों की भीड़, ऐरे–गैरे नत्थू खैरे लोगों का समूह।

भे

भेउ – (सं.पु.) रहस्य, भेद, गुप्त बात।
भेउब – (क्रिया) भिगोना, गीला करना, पानी में डुबाना।
भेख – (सं.पु.) वेशभूषा, बनावटी चेहरा, रूप रंग आकार।
भेखलाब – (क्रिया) जानते हुए अन्जान बनकर पूँछना, मजा–मौज लेना।
भेजरी – (सं.स्त्री..) खरीफ की कुटकी, एक मोटा अनाज।
भेटब – (क्रिया) भेंट करना, गले मिलन की क्रिया।
भेंटइया – (सं.पु.) भेंट करने वाला, भेंटने वाला व्यक्ति।
भेटभलाई – (ब.मु.) दो नारियों का गले मिलकर रूदन की रीति।
भेंटाई – (सं.पु.) किसी से भेंट करने पर मिलने वाला नेग।
भेड़बा – (सं.पु.) जिसके एक आँख में फूली पड़ी हो वह।
भेंड़ा – (सं.पु.) भिण्डी का फल, एक आँख से तिरछा।
भेभा – (विशे.) हित–अनहित को न समझने वाला, असामान्य व मन्द अक्ल का आदमी।
भेमरा – (विशे.) एक आँख में फूली पड़ी स्थिति, तिरछी आँख वाला।
भेला – (सं.पु.) गुड़ की बड़ी सी डली, नारियल की गरी, स्त्री.. भेली।
भेलमा – (सं.पु.) एक जंगली वृक्ष, गर्दन में फोड़ा–फुन्सी का पकना।
भेसुड़ – (विशे.) कम चतुर चालाक, अति भोला–भाला, ढीला एवं शिथिल।

भो

भों – (सं.पु.) भोंकते हुए कुत्ते की वाणी, कुत्ते की आवाज।
भोंकब – (क्रिया) भोंकना, भोंक देना, चाकू डाल देना।
भोंकबइया – (सं.पु.) भोंकने वाला, चाकू मारने वाला व्यक्ति।
भोगब – (क्रिया) भोग करना, भुगतना, कष्ट को झेलना।
भोग – (सं.पु.) भगवान को चढ़ाया गया प्रसाद।
भोंगा – (सं.पु.) बहुत बड़ा छिद्र।
भोंगार – (सं.पु.) बड़ा सा, तीव्रगति से वृद्धि करने वाला।
भोंचू – (विशे.) अल्प समझ वाला, हित–अनहित न समझने वाला।
भोड़िया – (सं.पु.) दो रंगों का बैल, चितकबरा पशु।
भोंड़ – (सं.स्त्री..) लम्बी किस्म की एक घास, एक दौर, चरण (अव्य.)
भोड़ंहा – (सं.पु.) जहाँ पर भोड़ घास बहुत उगी हो वह स्थान।

भोथा – (सं.पु.) हाथ की मुष्टिका, मिट्टी के तेल की मशाल।

भोथलाब – (क्रि.) पैनीधार का मुड़ जाना, अपैनी होना।

भोथलान – (विशे.) धार का मुड़ा हुआ।

भोथिल – (विशे.) जिस फल को खाने से जीभ ठिठुर सी जाय।

भोथलब – (क्रि.) मुष्टिका से पिटाई करना, पिटाई करना।

भोथिआउब – (क्रिया) मुष्टिका से प्रहार करना व पीटना, मारना।

भोंदूँ – (विशे.) मूर्ख, सीधा–सादा, भोला–भाला, उलटा–सीधा न समझने वाला।

भोभर – (सं.पु.) ओंठ का फूल आना, चेहरे में हल्की सूजन आ जाना।

भोलइया – (सं.पु.) भोले बाबा का एक लोकगीत।

भोसड़ – (विशे.) लाभ–हानि न समझने वाला, मूर्ख किस्म का आदमी।

भोसड़ी – (सं.स्त्री..) नारी के लिए एक अश्लील गाली।

भोसड़िआउब– (क्रिया) किसी को गाली देकर अपमानित करना।

भोसड़इया – (सं.पु.) गाली देने वाला व्यक्ति विशेष।

भोहाका – (सं.पु.) बड़े आकार की वस्तु, मुष्टिका का प्रहार।

भोह–भोह – (अव्य.) लाठी से पिटाई करने पर उत्पन्न ध्वनि।

भोहब – (क्रिया) अधिक मात्रा में कोई वस्तु पात्र में डालना, जुआ के खेल में दाँव लगाना।

भोंह – (अव्य.) एक बार, एक दौर, रंग बदरंग होना।

म

मइर – (सं.स्त्री..) दोमट मिट्टी,मृत सर्प का अकड़ना,सर्प काटे व्यक्ति की बेहोशी।

मइरा – (सं.पु.) खेत में बना मचान।

मइलाब – (क्रिया) गन्दा हो जाना, मैल जम जाना, पुराना हो जाना।

मइलान – (विशे.) गन्दगी पूर्ण, जो मैल से गन्दा हो चुका हो।

मइके – (सं.पु.) मायके में, नारी के माँ–बाप का घर गाँव।

मइकब – (क्रिया) फेंकना, दूर करना, फेंक देना।

मइकाउब – (क्रिया) किसी से फेकवा देना, फेंकने के लिए दबाव देना।

मइकइया – (सं.पु.) फेंकने वाला, फेंक देने वाला।

मइभा – (सं.स्त्री..) शौतेली माँ, किसी की दूसरी माता।

मइनहाई – (ब.मु.) अत्याधिक जागरण करने वाला उत्सव या तिथि।

मइनहर – (सं.स्त्री..) एक वनौषधि का फल।

मइलखोर – (विशे.) मैल छिप जाने वाला रंग, मटमैला रंग का कपड़ा।

मइला – (सं.पु.) मैला, टट्टी, पाखाना।

मइनी – (सं.स्त्री..) सींग टूटी गाय, एक चिड़िया की प्रजाति।

मइकहाई – (सं.स्त्री..) जो बार–बार मायके जाने का मन बनाती हो।

मइल – (विशे.) मैला, गन्दगी पूर्ण, गन्दा, कृपण, निकूच।

मउरी – (सं.स्त्री..) कन्या के विवाह की मौर, गर्दन का ऊपरी भाग,जलाऊ लकड़ी का बड़ा सा गट्ठा।

मउरि – (सं.स्त्री..) मौर, मुकुट, विवाह के समय का वर का मुकुट।

मउहार – (सं.पु.) वह बगीचा जहाँ महुए के अधिक वृक्ष उगे हों।

मउहरहा – (सं.पु.) महुआ बीनने के लिए मौहार जाने वाले लोग।

मउताज – (विशे.) दवाई की एक निश्चित मात्रा, दवाई का एक चरण।

मउसम – (सं.पु.) मौसम, ऋतु, वातावरण, माहौल।

मउसी – (सं.स्त्री..) मौसी, माँ की बहन।

मउसिया – (सं.पु.) मौसा, मौसी के पति, माँ के जीजा।

मउसिआउर – (सं.पु.) मौसी या मौसा का गाँव घर।

मउनी – (सं.स्त्री..) मौन रहने वाली नारी, मूक नारी, हरतालिका की प्रभात में मौन रहकर नहाने की रस्म।

मउहरी – (सं.स्त्री..) महुए एवं आटे से बनी पूड़ियाँ।

मउन – (विशे.) मौन, चुप्पी साधे हुए, गुप–चुप, अवाक।

मउहाइन – (विशे.) महुआ की तरह गंध, महुआ की महक।

मउजि – (विशे.) मौज, आनन्द, आराम, सुख।

मउजा – (सं.पु.) गाँव, ग्राम्य, निवास स्थान।

मकुना – (सं.पु.) जिस वयस्क के मूँछ–दाढ़ी न जमी हो।

मकाइन – (सं.स्त्री..) एक वनौषधि, रस्सी बनाने वाली वनस्पति।

मकोड़ा – (सं.पु.) काठ में छिद्र बनाने वाला एक कीड़ा।

मकरी – (सं.स्त्री..) मकड़ी, पुलिंग 'मकरा'।

मखमखाब – (क्रिया) नाराज होकर किसी पर लाल–पीला होना।

मगनी – (सं.स्त्री..) उधार, थोड़े समय हेतु किसी से ली गई वस्तु।

मगनिहा – (सं.पु.) उधारी की चीज, माँगकर लाई हुई वस्तु।

मगाउब – (क्रिया) आपात करना, कहीं से बुलवाना, बाजार से लाना।

मगबाउब – (क्रिया) किसी से कोई समान बुलवाना, आयात करना।

मगन्ता – (विशे.) जो हमेशा इससे–उससे माँगने का आदी हो।

मगइया – (सं.पु.) माँगने वाला, याचक, भिखारी।

मँगिआउब – (क्रिया) एक तरफ से लेना, एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचना।

मँगुआ – (सं.पु.) माँग, बाल सहित सिर की खोपड़ी,नारी के सिर का मध्य भाग।

मगरूरब – (क्रिया) अप्रसन्न होकर रुष्ट हो जाना, मुकर जाना।

मगरोहन – (सं.स्त्री..) मण्डप के नीचे विवाहोत्सव में गाड़ी जाने वाली कलात्मक लकड़ी।

मगरगोह – (सं.पु.) मगरमच्छ, स्थल या बिल में रहने वाला छिपकली के आकार का बड़ा जन्तु।

मगरबा – (सं.पु.) मगर, जलाशय का मगरमच्छ।

मघहा – (सं.पु.) माघ मास में होने वाली धूप, उपज एवं फसल।

मघउटे – (अव्य.) माघ महीने में, माघ के दिनों में।

मघा – (सं.पु.) माघ महीने का एक नक्षत्र।

मघमघाउब – (ब.मु.) बाल्टी में गाय–भैंस का पर्याप्त दूध दुहना।

मघनी – (सं.स्त्री..) मन्दगति से कार्य करने वाली नारी, बहुत कम बोलने वाली लड़की, हमेशा मुँह फुलाये रहने वाली।

मचिया – (सं.स्त्री..) बैठने वाली छोटी सी मचिया, एक बैठने का पात्र।

मचबा – (सं.पु.) चारपाई जिसके पावे कशीदानुमा हों।

मचोलबा – (सं.पु.) बच्चों के लिए छोटे आकार का मचोला।

मचीहा – (सं.पु.) जो हमेशा मचिया में बैठता हो।

मचिकब – (क्रिया) फेंकना, दूर करना, फैला देना।

मचिकाउब – (क्रिया) फैलवा देना, फेंकने के लिए उत्प्रेरित करना।

मचिकाब – (क्रिया) धक्का से दूर गिर जाना, फैल जाना।

मचिकइया – (सं.पु.) फेंकने वाला, फैलाने वाला व्यक्ति।

मचमचाउब – (क्रि.वि.) हाथ से पकड़कर चारों ओर हिलाना–डुलना।

मचाउब – (क्रिया) कीचड़ मचाना, दहचाल मचाउब, ब.मु.।

मचाब – (क्रिया) पानी कीचड़ का एकाकार होकर उभर आना।

मचबाउब – (क्रिया) पानी भरे खेत में मिट्टी उभारना।

मचबइया – (सं.पु.) खेत में कीचड़ करके धान बोने वाला।

मचान – (सं.पु.) शिकार करने के लिए बना हुआ ऊँचा मंच।

मचब – (क्रिया) अस्पष्ट, हठ करना, मचलना।

मछिमन्ना – (सं.पु.) मच्छरों को मारने वाली दवाई।

मछिमरबा – (सं.पु.) मच्छर मारने की दवा का छिड़काव करने वाला।

मछेंह – (सं.पु.) मधुमक्खी, शहद का छत्ता।

मछरी – (सं.स्त्री..) मछली, जल सेम।

मछरिहा – (सं.पु.) मछली मारने वाले लोग, जिस पानी में मछली हो।

मछरिआइध – (विशे.) मछली की गंध जैसी महक।

मजबाउब – (क्रिया) किसी से बर्तन धुलवाना, अस्त्र में धार निकलवाना।

मजाब – (क्रिया) माजने का कार्य, मज जाना, मजाई होना।

मजान – (विशे.) साफ किये गये बर्तन, धार निकाली गई औजार।

मजबइया – (सं.पु.) बर्तन साफ करने में, औजार की धार तेज करने वाला।

मजाउब – (क्रिया) धारदार औजार पैना कराना, बर्तन साफ करवाना।

मजड़ी – (विशे.) मंजी आँखों वाली, पुलिंग–मजड़ा।

मजीरा – (सं.पु.) झाँझ, खंझनी,कटोरीनुमा धातु का वाद्य यंत्र।

मजे–मजे – (अव्य.) शनैः–शनैः, धीरे–धीरे, आराम से।

मजे मां – (अव्य.) आनन्द में, प्रसन्नता पूर्वक, कुशलता पूर्वक।

मजहिया – (सं.पु.) बीच–बीच में खुश कर देने वाला, हास्य पैदा कर देने वाला।

मजी — (सं.स्त्री..) मौज, आनन्द, खुशी, पुलिंग मजा।

मजूर — (सं.पु.) मजदूर, काम कर्ता, कामदारी।

मजूरी — (सं.स्त्री..) कार्य के बदले ली गई मजदूरी व मेहनताना।

मजुरिहा — (सं.पु.) दैनिक मजदूरी से बनाया गया घर या अन्य।

मजरेटी — (सं.स्त्री..) मजिस्ट्रेटी, मजिस्ट्रेट की अदालत।

मजरेट — (सं.पु.) मजिस्ट्रेट, न्यायधीश।

मझकिनकी — (सं.स्त्री..) पके भात के बीच में न चुरे चावल के कण।

मझलेड़ा — (अव्य.) जो दूसरी संतान के क्रम में पैदा हुआ हो।

मझिलबा — (सं.पु.) दूसरे क्रम के सन्तान के लिए सम्बोधन।

मझिलऊ — (सं.पु.) दूसरे नम्बर के भाई के लिए स्नेहिल नाम।

मझिलिया — (सं.स्त्री..) दूसरे क्रम के पुरुष की पत्नी विशेष।

मझानी — (अव्य.) मध्यान्ह का भोजन, दोपहर का खाना।

मझोलबा — (सं.पु.) न बहुत बड़ा न बहुत छोटे आकार का खेत।

मझोल — (विशे.) मध्यम आकार का, बड़ा और छोटा के बीच का।

मटा — (सं.पु.) पीले रंग का (कीड़ा) चींटा जो फलदार बृक्षों में रहते हैं।

मटहा — (सं.पु.) मटा से भरा हुआ फलदार वृक्ष।

मटमटाउब — (क्रिया) अस्थिर करना, हिलाना– डुलाना, इधर–उधर कर देना।

मटिअउरा — (सं.पु.) अनाज में मिश्रित मिट्टी के कण।

मटिआउब — (क्रिया) मिट्टी लगाकर हाथ धोना, मिट्टी से बर्तन धुलना।

मटीहा — (सं.पु.) मिट्टी खोदकर मेड़ डालने वाले मजदूर, मिट्टी मिश्रित अनाज।

मटकब — (क्रि.वि.) अंग प्रदर्शन करना, चमकना, अंग हिलाना–डुलाना, नृत्य करना, जानकर अन्जान बनना।

मटकबइया — (सं.पु.) चमककर चलने वाला, हिला–डुला देने वाला।

मटकनही — (सं.स्त्री..) मटक मटक कर चलने वाली नारी।

मटरा — (सं.पु.) मटर, रबी का एक अन्न, स्त्री.लिंग मटरी।

मटरहा — (सं.पु.) जिस खेत में मटर की खेती की गई हो।

मटरहाई — (सं.स्त्री..) गेहूँ के साथ मटर मिला हुआ मटरहाई बेर्री।

मटकँउआ — (विशे.) अंग हिलाते हुए, चमकते हुए, अभिनय करते हुए।

मटुक — (सं.पु.) मुकुट, मौर, शीर्ष–कवच।

मटिमगरा — (सं.पु.) मण्डप के बाद मिट्टी खोदने का एक संस्कारगत रस्म–रिवाज।

मटकाउब — (क्रिया) अंग हिलाना–डुलाना, मुँह चमकाना, आँख के सामने वस्तु को नचाना, इधर–उधर करना।

मटियामेंट — (ब.मु.) सत्यानाश कर देना, एकदम गड़बड़ हो जाना।

मटनिआउब — (क्रि.) सुनकर टाल–मटोल कर देना और काम न करना।

मठहा – (सं.पु.) मठा रखने वाला बर्तन, मठहा बिलार, ब.मु.।

मठहाई – (सं.स्त्री..) वह घड़ा या दोहनी जिसमें मठा रखा जाता हो।

मठुली – (सं.स्त्री..) कशीदाकारी युक्त बघेली व्यंजन का मीठा पापड़।

मठघोन्ना – (सं.पु.) दही मथने के लिए मथानी बाँधने का खम्भा।

मठर्रा – (विशे.) सदैव गुप–चुप रहने वाला, मन मारे रहने वाला।

मठहारिन – (सं.स्त्री..) मठा लेने आई हुई औरतें।

मठिया – (सं.स्त्री..) नारियों के कलाई में धारित मोटा चाँदी का चूड़ा।

मठीहा – (संस्त्री..) मठिया आभूषण पहनने वाली नारियाँ।

मढ़ब – (क्रिया) मढ़ना, मढ़ देना, बात में बातें साज देना, ढोलक में चमड़ा चढ़ाना।

मढ़बाउब – (क्रिया) मढ़वाने का कार्य करा लेना।

मढ़ाब – (क्रिया) मढ़ने का कार्य पूरा हो जाना।

मढ़बइया – (सं.पु.) मढ़ने का कार्य करने वाला व्यक्ति।

मढ़उहल – (विशे.) असत्य एवं कृत्रिम बातें, बनाई गई बातें।

मढुली – (सं.स्त्री..) छोटे आकार की खुली द्वार वाली मंदिर।

मड़बा – (सं.पु.) मण्डप, मण्डापाक्षादन, किसी गाँव का नाम।

मड़हाई – (सं.स्त्री..) मण्डप तैयार करने में लगाई गई सामग्री–साज।

मड़इचा – (सं.पु.) खेत में बनाया गया ऊँचा मचान।

मड़इया – (सं.स्त्री..) घास–फूस की कुटिया, लकड़ी से बना घरौंदा।

मड़ई – (सं.स्त्री..) छोटी सी लकड़ी की कुटिया, मण्डी, दुकान।

मड़ीहा – (सं.पु.) माड़ी लगा हुआ कपड़ा, आरा रोड संलग्न वस्त्र।

मड़हा – (सं.पु.) माड़ संयुक्त खाद्य पदार्थ।

मड़उही – (सं.स्त्री..) मण्डप डालने के लिए प्रयुक्त सामग्री।

मड़इहा – (सं.पु.) घास–फूस की कुटिया में रहने वाला आदमी।

मड़बाउब – (क्रिया) गुंथवाना, आटे का मर्दन पानी डालकर करवाना।

मड़ाब – (क्रिया) आटे का मर्दन हो जाना, गुंथ जाना।

मड़बइया – (सं.पु.) आटा गूंथने वाला, आटा का मर्दन करने वाला।

मतामन – (सं.पु.) किसी पदार्थ के सेवन से हल्का नशा हो आना।

मताउब – (क्रि.) धान की फसल बोने के लिये पानी भरे खेत में मिट्टी उभारना।

मतबाउब – (क्रि.) किसी से खेत में धान बोने के लिये मिट्टी उभरवाना।

मतबइया – (सं.पु.) धान बोने के लिये खेत में मिट्टी उभारने वाला।

मतबार – (सं.पु.) नशाखोर, शराबी, नसेड़ी, दारुखोर।

मतब – (क्रि.) नशा करके धुत हो जाना, नशा का चढ़ जाना।

मतलबी – (सं.पु.) अपनी स्वार्थपरता सिद्ध करने वाला।

मताब – (क्रि.वि.) पानी भरे खेत की जुताई करके मिट्टी को उभारना।

मतरोग – (सं.पु.) आकाश की ओर, स्वर्ग, अदृश्य एवं अज्ञात।

मतमनिहा – (सं.पु.) हलका नशा कर देने वाला अनाज जैसे कोदई।

मतहा – (सं.पु.) हमेशा नशे में धुत रहने वाला व्यक्ति।

मति मरब – (ब.मु.) बुद्धि नष्ट हो जाना, अक्ल मर जाना, ज्ञान का ह्रास होना, गलत निर्णय ले लेना।

मथब – (क्रिया) मथना, मथने का कार्य करना, पानी–तेल एक में मिलाना।

मथबाउब – (क्रिया) मथने का कार्य करना एवं करवाना।

मथबइया – (सं.पु.) दही मथने वाला, मंथन करने वाला।

मथानी – (सं.स्त्री..) चार पाँव की दही मथने वाली लकड़ी का उपकरण।

मथीका – (सं.पु.) पहाड़ या पहाड़ी की चोटी, पर्वत का सर्वोच्च शिखर।

मथेल – (सं.पु.) ज्वार के पौधों से निकला दानों का समूह–पुंज।

मदक्की – (सं.पु.) शराबी, मद पीने वाला, दारुखोर।

मधनी – (सं.स्त्री..) हमेशा गाल फुलाए मौन रहने वाली नारी।

मन जानी के जाना– (ब.मु.) मन में मलाल का होना, मन मोटाव होना।

मन तक – (सं.पु.) मन के भीतर ही सीमित, चुपचाप, मन ही मन में।

मनमानी – (विशे.) अपने मन का, स्वतंत्र मन का, जो जी में आये वह गतिविधि।

मनमान – (विशे.) मन रागने लायक, सामान्य तौर की वस्तु, काम चलाऊ।

मनई – (सं.पु.) आदमी, हलवाहा या चरवाहा, मजदूर, आम आदमी।

मन्सेरू – (सं.पु.) जवान आदमी, पुरुष, किसी महिला का पति।

मन्सेरूअई – (सं.स्त्री..) मर्दगीरी, पौरुष एवं पराक्रमपूर्ण कार्य, पुरुषार्थी व्यक्ति।

मनुस – (सं.पु.) पति, मनुष्य, पुरुष या मर्द।

मनुसमारी – (ब.मु.) पति की तरह शासन जमाकर मारपीट करना।

मनिहरा – (सं.पु.) चूड़ी बेचने वाला, चूड़ी पहनाने वाला।

मनिहारिन – (सं.स्त्री..) चूड़ी पहनाने वाली।

मनुहाब – (क्रिया) आकर्षित होना, रजामन्द होना, मन का मोहित हो जाना।

मनुहाउब – (क्रिया) किसी का मन बदलकर उसे अपने पक्ष में आकृष्ट कर लेना।

मन्साब – (क्रिया) पति के द्वारा मैथुन कराने की इच्छा होना,विवाह की आकांक्षा।

मनमेजा – (ब.मु.) तालमेल बैठना, राय–बाट एक होना, मन–विचार का मिलना।

मनसुविया – (सं.पु.) सपूत व्यक्ति, कर्मठ आदमी, पौरुषवान।

मन्थरा – (सं.स्त्री..) मोटी–तगड़ी औरत, बैठी रहने वाली, गलत राय बताने वाली नारी।

मनगिरिया – (सं.स्त्री..) ऐसी नारी जो हमेशा निराश व उदास मना रहती हो।

मन्तर – (सं.पु.) मंत्र, तन्त्र, मन्तव्य एवं विचार।

मन्तरी – (सं.स्त्री..) मंत्री, सलाहकार, परामर्शदाता।
मनइहाई – (सं.स्त्री..) मनुष्यकृत कार्य, आदमी के द्वारा व्यक्त कथन।
मनाही – (सं.स्त्री..) नहीं, रोक, निषेध, मना हो जाना, इंकार कर देना।
मन्नुख – (सं.पु.) मनुष्य, आदमी, मानव जाति।
मनमोटाव – (क्रि.वि.) आपसी कलह के कारण नाराजगी, मन में द्वेष आ जाना।
मनडारे – (सं.पु.) गिरा हुआ मन, निराश मन वाली स्थिति, उदास मना।
मनमऊजी – (सं.पु.) अपने मन का राजा, जो मन में आये वही करने वाला।
मनबोधी – (सं.पु.) संतोषी आदमी, किसी का नाम।
मनबढ़ – (सं.पु.) ऊँचे मन वाला, बढ़–चढ़कर डींग मारने वाला।
मनाउब – (क्रिया) रूठे व्यक्ति को मनाना, कामना करना।
मनबाउब – (क्रिया) किसी से किसी को मनाने का कार्य कराना।
मनबइया – (सं.पु.) रूठे व्यक्ति को मनाने वाला व्यक्ति।
मनउती – (सं.स्त्री..) देवी–देवताओं से मांगी गई मन्नत।
ममा – (सं.पु.) मामा, मामा जी।
ममरी – (सं.स्त्री..) तुलसी की भाँति औषधीय एक पौधा।
ममिआउर – (सं.पु.) माता जी का मायका, मामा जी का घर–गाँव।
ममिआ ससुर– (सं.पु.) पत्नी के मामा, सास का भाई।
मया – (विशे.) ममता, मोह, प्रेम।
मयागुर – (सं.स्त्री..) ममता–मोह वाला, मोह एवं प्रेम करने वाला।
मरथल – (विशे.) अति वृद्ध, अपंग या अचल, मरणासन्न व्यक्ति।
मरभुखहा – (विशे.) भूखों मरने वाला, बहुत अधिक भूखा, भुक्कड़।
मरमराब – (क्रिया) मन ही मन गुस्सा होकर रह जाना।
मरगा – (विशे.) चक्कर में, फन्दा में, फंसाव में, पकड़ में।
मरदमारी – (सं.स्त्री..) मर्दगारी, पौरुष एवं पुरूषार्थ।
मरकहा – (विशे.) मारने–पीटने वाला, मारिया मिजाज का बैल।
मरजादा – (विशे.) मर्यादा, सीमा, रीति, हद, प्रतिष्ठा।
मरसान – (सं.पु.) औजार की धार पैनी करने वाला पत्थर का संयंत्र, तेली की जगाई हुई खोपड़ी।
मरूआ – (सं.पु.) घर की ओरमानी के खूँटे विशेष।
मरहा – (विशे.) दुबला–पतला, मरणासन्न, मरीज व्यक्ति।
मरी – (सं.स्त्री..) मरे हुए गाय–भैंस या पशु का शरीर।
मरबाउब – (क्रिया) किसी से मरवाना– पिटवाना।
मरबइया – (सं.पु.) मारने–पीटने वाला, मारिया।
मरब – (क्रिया) मरना, मर जाना।
मरबउँआ – (विशे.) मरने लायक, मरने योग्य, मरने की स्थिति में।
मरदन सम्मारी– (सं.स्त्री..) मुनादी, सूचना, जनगणना।

मरिखम – (सं.पु.) मृत मनुष्य, मरने लायक, मरणासन्न।

मरिच – (सं.स्त्री..) काली मिर्च, सब्जी का मशाला।

मरचा – (सं.पु.) मिर्चा, मिर्च, स्त्री.लिंग 'मिरची'।

मरियल – (विशे.) अनमन मन वाला, मन मारे रहने वाला।

मरइया – (सं.पु.) मरने वाले लोग, मारपीट में अग्रणी।

मरन – (सं.पु.) परेशानी, आफत, मरने जैसी स्थिति को झेलना।

मर्राब – (क्रिया) सूखकर चमड़ी या छिलका का सिकुड़ जाना।

मर्रान – (विशे.) सूखकर जिसका छिलका सिकुड़ गया हो।

मरबू – (क्रिया) मारोगी, मरोगी।

मरिहौं – (क्रिया) मारूँगी, मारपीट करूँगी, मर जाऊँगी।

मरइहौं – (क्रि.) मरवाऊँगी।

मरचुटहा – (विशे.) अति दुर्बल व्यक्ति, जीर्ण–शीर्ण एवं कमजोर।

मलगा – (सं.पु.) छप्पर पर खड़े गोले पर रखी आड़ी–पतली लकड़ी।

मलागिर – (सं.पु.) कोमल छिलके वाला एक गन्ने की प्रजाति।

मलदहिया – (सं.स्त्री..) बड़े–बड़े मीठे आम के फल की एक किस्म।

मलुआ – (सं.पु.) लाल मुँह का बन्दर, एक बन्दर विशेष।

मलपट – (सं.पु.) कान और दाढ़ी के मध्य का कपोल प्रक्षेत्र।

मलहइती – (क्रिया) पहलवानी, आये दिन मारपीट करते रहना।

मसकब – (क्रिया) चुपचाप खा लेना, किसी चीज को दबा देना, नुकीली वस्तु भेद देना, मैथुन क्रिया करना।

मसकाउब – (क्रिया) मैथुन करवाना, दबवाना, अन्दर करवा लेना।

मसकबइया – (सं.पु.) दबाने वाला, डालने वाला।

मसहा – (सं.पु.) जिसके चेहरे पर मशा हों, जिसके कपड़ों में स्याही लगी हो।

मस – (सं.पु.) स्याही।

मसिआनी – (सं.स्त्री..) दवात, स्याही रखने का पात्र।

मसकहा – (ब.मु.) दबाव के कारण माँस का दब जाना, भीतरी चोंट आ जाना।

मसमसाब – (क्रिया) गुस्सा पीकर रह जाना, दाँत पीसकर अन्दर ही अन्दर क्रोध बर्दाश्त करना।

मसक्कत – (सं.स्त्री..) अथक परिश्रम करना, भारी कठिनाई, बहुत अधिक मेहनत।

मसा – (सं.पु.) बड़ा सा काला तिल, माँस की उभरी गाँठ।

मसकल्ला – (ब.मु.) मजा मौज मारना, ऐश करना, मतलब साधना।

मसकारब – (क्रिया) आँख बचाकर चुपचाप किसी की वस्तु ले लेना, धीरे से छुपाकर चुरा लेना।

मसखरी – (सं.स्त्री..) मजाक, हँसी, दिल लगी।

मसखरा – (सं.पु.) हमेशा हँसी–मजाक करने वाला व्यक्ति विशेष, हँसोड़, मजाकिया आदमी।

मसुरी – (सं.स्त्री..) मसूर, दलहन, एक रबी की दलहन।

मसकँइया – (अव्य.) चुपचाप, दबे पाँव या धीरे से, धीरे–धीरे चुपचाप।

मसखानि – (सं.स्त्री..) मसक्कत या परेशानी, मन न बन पाना।

महर – (सं.पु.) पानी भरने वाला, चौका–बर्तन करने वाला, एक सेवक जाति।

महातिम – (सं.पु.) महत्व, मान्यता, मूल्य, औचित्य।

महिनबारी – (सं.स्त्री..) माहवारी, मासिक धर्म, मासिक वेतन।

महिदल – (सं.स्त्री..) काफी मोटी–तगड़ी भैंस।

महाउत – (सं.पु.) हाथी का स्वामी, हाथी का रक्षक व चालक।

महमाई – (सं.स्त्री..) महामारी का प्रकोप, एक प्रचलित गाली।

महतारी – (सं.स्त्री..) माँ, माता, जननी, मातु।

महूँ – (सर्व.) मैं भी, मैं ही, हम भी।

महिन – (सर्व.) मैं ही, हम ही।

महरनिहाब – (सं.स्त्री..) चेचक का प्रकोप।

महाउर – (सं.पु.) महावर, नारियों के पैर में लगाने वाला रंग।

महजिद – (सं.स्त्री..) मस्जिद, इस्लाम देवालय।

महबाम्हन – (सं.पु.) महापात्र, एक प्रचलित गाली।

महेर – (सं.पु.) मक्खन से घी बनाते समय जला हुआ अनुपयोगी पदार्थ।

महतिमाना – (ब.मु.) साधु–सन्तों का कृत्य, चतुराई या चालाकी।

महमहाब – (क्रिया) महकना, महक उठना, सुगन्धित होना।

महन्ता – (सं.पु.) महन्त, मोटा–तगड़ा आदमी, खा–पीकर दिन भर पड़े रहने वाला, मठाधीश।

महतौ – (सं.पु.) बहन का श्वसुर, स्वयं का श्वसुर, समधी।

महतइन – (सं.स्त्री..) बहन की सास, स्वयं की सास।

महिपर – (सं.स्त्री..) शहद या मधु, मधु–मक्खी का प्ररस।

महुला – (विशे.) हलका लाल एवं भूरे रंग का, महुए के रंग का।

महोखा – (सं.पु.) कौआ या काग, इसी बिरादरी का पक्षी, महोखाकस आंखी, ब.मु.।

महेरी – (सं.स्त्री..) मठा से बनाई गई नमकीन खीर।

महुहाइन – (विशे.) महुए की गन्ध जैसी गन्ध आना।

महट्टर – (सं.पु.) मास्टर, अध्यापक, शिक्षक।

महजनी – (सं.स्त्री..) लेन–देन में पुष्ट, क्रेडिट।

महाजन – (सं.पु.) श्रेष्ठ व्यक्ति, लेन–देन में सही व्यक्ति।

महराजिन – (सं.स्त्री..) ब्राम्हण की औरत, महराज–गुरु की पत्नी।

मा

माँ – (अव्य.) मैं, शायद, हो सकता है, पर।

माइक – (सं.स्त्री..) मायका, माँ–बाप का घर गाँव।

माई – (सं.स्त्री..) आदि शक्ति देवी, जन्म देने वाली माँ।

माँई – (सं.स्त्री..) मामा की पत्नी, मामी जी।
माँख – (सं.पु.) बुरा, अपमान, खराब।
माँगब – (क्रिया) मांगना, याचना करना।
माँजब – (क्रिया) जूठे बर्तन साफ करना, अस्त्र–शस्त्र साफ करना।
माजड़ा – (सं.पु.) मामला, कारण, रहस्य, वातावरण।
माँझा – (सं.पु.) गर्दन के ऊपर का भाग, मवेशी बाँधे जाने वाले गेरमा।
मांठा – (सं.पु.) मठा, छाछ।
माँड़ – (सं.पु.) पके चावल से निकाला गया चिपचिपा प्ररस।
मॉड़ब – (क्रिया) मर्दन करना, आटा गूंथना।
माड़ी – (सं.स्त्री..) कपड़े में चढ़ा हुआ लेपन, नये वस्त्र का कलप।
माथे – (अव्य.) सहारे, भरोसे, हमारे विश्वास में, माथ पर।
माथमाथ के – (ब.मु.) रुष्ट होकर पड़ जाना, कोप भवन में बैठ जाना।
मादर – (सं.स्त्री..) एक विशेष प्रकार का ढोल।
मानू – (सर्व.) मानो, मान लीजिए, एक तकिया कलाम।
माँमू जी – (सं.स्त्री..) बदनामी, अपमान, तौहीन होना, बेइज्जती।
माय – (सं.स्त्री..) वैवाहिक कार्यक्रम में घर के प्रधान देवता के नाम पर रखा गया परम्परागत प्रसाद।
मायन – (सं.स्त्री..) मण्डप पड़ने के बाद का दिन, एक पूजन की रीति।
मारब – (क्रिया) किसी को मारना, मारना–पीटना, प्रताड़ित करना।
मारिया – (सं.पु.) मारपीट करने में फुर्त, मारपीट करने वाला व्यक्ति।
मालटाल – (सं.पु.) घर के मवेशी एवं पशुओं के लिए संकेत।
माही – (अव्य.) में, पर, ऊपर।
माहिर – (विशे.) भिड़ाऊखोर व्यक्ति, चुगुली करने वाला, तोड़–फोड़ एवं तोड़वाने वाला आदमी।
माहुर – (सं.स्त्री..) जहर या विष, छोटे–छोटे कणनुमा फलों के कीड़े।
माहू – (सं.पु.) काले रंग के कीट, फल व लता में लगने वाले कीट।

मि

मिचकब – (क्रिया) किसी वस्तु को फेंक देना, दुधारू पशु का गर्भपात होना।
मिजड़ा – (सं.पु.) मंजी आँखों वाला, मेहर प्रवृत्ति का व्यक्ति।
मिन्ना – (सं.पु.) जो नाक के बल स्वर निकालता हो, दिन भर रोते रहने वाला शिशु।
मिजाजी – (विशे.) घमण्डी, अभिमानी।
मिजाउब – (क्रिया) पैर चपवाना, अंग में दबाव लगवाना, मालिश कराना।
मिठहा – (विशे.) मीठे स्वाद वाला, मिठास युक्त।
मिठखोर – मठा से बनाई गई मीठी खीर।
मिरचॅइया – (सं.पु.) मिर्च जैसा एकहरा व्यक्ति, तेज–तर्राट एवं नटखट।
मिठुलाब – (क्रि.) ठुनुक–ठुनुक कर बातें करना, मीठी–मीठी बातें करना।
मिताई – (सं.स्त्री..) दोस्ताना, मित्रता, स्त्री. की दोस्ती, दोस्ती।
मिधिर मिधिर– (अव्य.) बहुत धीरे–धीरे चलना, चींटी की तरह चाल।

मिनमिनहा – (वि.) नाक के बल बोलने वाला, अस्पष्ट बोलने वाला।

मिमिआब – (क्रिया) में–में करना, बकरी की बोली।

मिरजाई – (सं.स्त्री..) पुराने समय की प्रचलित कमीज।

मिरचहा – (सं.पु.) मिर्च के पौधों वाली बगिया।

मिर्रा – (विशे.) शुष्क शरीर वाला, दुबला– पतला।

मिरगी – (सं.स्त्री..) मादा मृग, आकाश के विशेष तारे, असाध्य रोग।

मिलनुआ – (सं.पु.) मिलनसार प्रवृत्ति का व्यक्ति, सबसे घुलने–मिलने वाला।

मिल्लस – (सं.पु.) मेल–मिलाप, प्रेम– व्यवहार, आपसी एकता, ताल मेल।

मिलमिलाउब– (क्रिया) आँख तिलमिलाना, आँख की पलकें बराबर पटकना।

मिलब – (क्रिया) मिलना, मिलन होना, मिल जाना।

मिलाउब – (क्रिया) मिलाना, मेल–मिलाप कराना।

मिलबइया – (सं.पु.) मिलाने वाला, मेल–मिलाप कराने वाला।

मु

मुआरि – (सं.स्त्री..) वंश विहीन घर से मिली धन –सम्पत्ति एवं घर।

मुकताउब – (क्रि.) गहन रखी वस्तु को मुक्त कराके पुनः प्राप्त करना।

मुकताब – (सं.पु.) गहन वस्तु के बदले दी गई धनराशि।

मुकुतबइया – (सं.पु.) गहन रखी वस्तु को उधारी चुकाकर मुक्त कराने वाला।

मुकुइयाँ – (सं.स्त्री..) एक वनस्पति का फल, दानेदार चाँदी का गहना।

मुकती – (विशे.) पर्याप्त, खूब, अधिक, आवश्यकता से ज्यादा।

मुकुइयाँ दाना– (सं.स्त्री..) नारियों द्वारा नाड़ी में धारित चाँदी का दानेदार गहना।

मुखारी – (सं.स्त्री..) दातून, मंजन, ब्रश।

मुगउरा – (सं.पु.) मूँग की दाल का भाजी बड़ा।

मुँगबा – (सं.पु.) मूँगा, एक राशि का नग, हाड़ा का मुगबा, ब.मु.।

मुघुन – (सं.पु.) जो कम बोलता हो, मौन सा रहने वाला व्यक्ति।

मुछाड़िया – (सं.पु.) बड़ी–बड़ी मूछों वाला आदमी।

मुजुनिआब – (क्रिया) कुम्हला जाना, अप्रसन्न होना, निराश मन होना।

मुजुनिहा – (सं.पु.) जिसके चेहरा कुम्हलाया रहता हो, निराश रहने वाला।

मुजुन मुजुन – (विशे.) गिरा हुआ मन, अचेतन्य मन या चेहरा, लुंज–पुंज चेतना।

मुजुनिआन – (विशे.) कुम्हलाया हुआ मन, अप्रसन्न चेहरा, निराश मन।

मुटका – (सं.पु.) मुष्टिका, मुष्टिका का प्रहार।

मुटुरूआ – (सं.पु.) छोटे कद का आदमी।

मुटकिआउब – (क्रिया) मुष्टिका से किसी को मारना–पीटना।

मुठिया – (सं.स्त्री..) हल की मूठ, लोहे के औजार में लगा लकड़ी का हत्था।

मुठिआउब – (क्रिया) अपनी मूठी में बन्द कर लेना, सबकुछ छिपाकर अपने आधिपत्य में कर लेना।

मुठीहा – (सं.पु.) भीख मांगने वाला, भिखारी, मूठ्ठी भर अनाज में जीने वाला।

मुड़उस – (सं.पु.) सिरहना, तकिया, सिर वाला चारपाई का हिस्सा।

मुड़हर – (सं.पु.) सबसे अन्दर वाला कमरा, जिस कक्ष में रसोई बनती हो।

मुड़पोक्का – (सं.पु.) जिसके सिर में बाल न हों, छोटा बालों वाला, चिकना सिर वाला।

मुड़फोरिया – (सं.स्त्री..) प्रतिस्पर्धा पूर्ण प्राप्त करने का प्रयास।

मुड़िया – (सं.स्त्री..) चिकने सिर वाला कोई भी आदमी।

मुड़पेल – (अव्य.) आँख मीचकर आगे बढ़ना, सिर नीचे किए हुए पूरी ताकत के साथ भागना।

मुड़ेर – (सं.पु.) घर का सर्वोच्च भाग, कच्चे घर का मस्तक।

मुड़पिरबाह – सिर दर्द, बिना मतलब की बहस।

मुड़ाउब – (क्रिया) मुंडन कराना, सिर के बाल घोटवाना, विवश होकर कहीं से कोई वस्तु महँगी कीमत पर ही क्रय करना।

मुड़बइया – (सं.पु.) सिर के बालों की घोटाई या सफाई करने वाला।

मुड़हा – (सं.पु.) मिट्टी डालने का काम करने वाली जाति।

मुड़उसे – (अव्य.) सिरहाने, सिर की ओर।

मुड़ेला – (सं.पु.) किसी खेत का उच्च वाला भाग।

मुड़बाई – (अव्य.) खेत का दूसरा छोर, खेत का उच्च भाग वाला छोर।

मुण्डी – (सं.स्त्री..) वह स्त्री.जिसका सिर घुट गया हो, विधवा, राँड, एक प्रकार जूती।

मुताउब – (क्रिया) पेशाब करवा लेना, पेशाब करवा लेना।

मुतररब – (क्रिया) पेशाब छूट जाना, मूत्र क्रिया हो जाना।

मुतहा – (सं.पु) जिस कपड़े में पेशाब लगी हो।

मुतबइया – (सं.पु.) पेशाब निकलवा लेने वाला, पेशाब करने वाला।

मुतर्रा – (सं.पु.) जो सोते समय बिस्तर में पेशाब कर देता हो।

मुतउरा – (सं.स्त्री..) प्रजनन के पश्चात् मूत्र एवं प्ररस भरी छिल्लीदार थैली।

मुतास – (सं.स्त्री..) पेशाब करने की इच्छा, मूत्र क्रिया की अनुभूति होना।

मुतासा – (सं.पु.) जो पेशाब करने की इच्छा से ग्रसित हो।

मुदउब – (क्रिया) मूँदना, ढकना, छिपाना, बन्द करना।

मुदाउब – (क्रिया) ढकना, छिपाना, बन्द करना।

मुदबाउब – (क्रिया) किसी से ढकवाना, छिपवाना।

मुदइया – (सं.पु.) ढकने वाला, तोपने वाला, मूंदने वाला।

मुदान – (विशे.) मूंदा हुआ, ढका हुआ, बन्द हुआ।

मुदबइया – (सं.पु.) किसी से मूंदने एवं ढकवाने का कार्य करा लेने वाला।

मुदरी – (सं.स्त्री..) मुद्रिका, अँगूठी या छल्ला, हल के फाल में लगने वाला लोहे का छल्ला,पूजा के समय प्रयुक्त होने वाली घास की अँगूठी।

मुदरिहा – (सं.पु.) मुंदरी पहने रहने वाला आदमी।

मुनमुनाब – (क्रिया) मच्छरों की तरह बोली निकालना।

मुनमुनिहा – (सं.पु.) मच्छरों की भाँति स्वर निकालने वाला।

मुन्नाब – (क्रिया) मुन्न–मुन्न की आवाज में बोलना।

मुनुन मुनुन – (अव्य.) मुरझाया हुआ चेहरा, नाक के बल शब्दों का निकलना।

मुनू–मुनू – (सं.पु.) बिल्ली को बुलाने वाला एक निश्चित शब्द।

मुन्डा – (सं.पु.) चाँदी का पुराना सिक्का, उथल एड़ियों वाला जूता, बिना बाल के सिर वाला आदमी।

मुन्डी – (सं.स्त्री..) ऐसी नारी जिसका सिर घुटा हो, विधवा नारी।

मुनगा – (सं.पु.) सब्जी का एक पेड़, औषधि वाला एक फल।

मुराउब – (क्रिया) दाँतों से चबाना, दाँत से कुचलना, चबा–चबाकर खाना।

मुरबइया – (सं.पु.) चबा–चबाकर, दाँत से कुचलकर खाने वाला।

मुरबाती – (सं.स्त्री..) मूली के पत्ते की सलाद, मूली के पत्तों की बनाई गई साग।

मुरकब – (क्रिया) कहीं जाकर वापस आना, रास्ते पर लौट आना।

मुरकाउब – (क्रिया) जाते हुए को लौटाना, वापस अपनी तरफ बुला लेना।

मुरकइया – (सं.पु.) बहोरने वाला, लौटा लेने वाला, वापस बुलाने वाला।

मुरहर – (सं.पु.) घर के अन्दर का महत्वपूर्ण कक्ष जहाँ भोजन बनाने की सामग्री होती है।

मुरेरब – (क्रिया) मरोड़ देना, मोड़–मोड़कर मरोड़ना, गला या गर्दन तोड़ देना, कान ऐंठ देना, मूँछ में ताव देना।

मुरेरबाउब – (क्रि.) किसी से मरोड़वा लेना, मरोड़ देना।

मुरेरबइया – (सं.पु.) मड़ोरने वाला, मड़ोर देने वाला व्यक्ति।

मुरेठी – (सं.स्त्री..) सिर बँधी पगड़ी, सिर पर लपेटा हुआ गमछा।

मुरेउब – (क्रिया) दीवाल की ऊपरी दीवाल को गोलनुमा बनाना।

मुरिहाउब – (क्रिया) झकझोर देना, घुमा–घुमाकर मरोड़ना, मशल देना।

मुरिहान – (विशे.) मरोड़ने से सूखा हुआ, जो मुरझा गया हो।

मुरीहा – (सं.पु.) वह बगिया जहाँ मूली के पौधे लगे हों।

मुरूरब – (क्रिया) रुष्ट हो जाना, नाराज होकर दूसरी ओर मुड़ जाना, मुँह पीछे फेर लेना।

मुरघेटब – (क्रिया) तोड़कर हाथ से मसल देना, मरोड़कर तोड़ना।

मुरकेटब – (क्रिया) पेट में मरोड़ होना, पेट में ऐंठननुमा दर्द होना।

मुरमुरिहा – (विशे.) देखने में दुबला–पतला, शरीर से अति कमजोर।

मुरधरिया – (सं.पु.) घर का मुखिया, परिवार का जानकार व्यक्ति, कर्ता–धर्ता।

मुरिहाई – (सं.स्त्री..) मरोड़ी गई पत्तियों की अवस्था, मूली लगी बगिया।

मुर्री – (सं.स्त्री..) गाँठ रहित बन्धन, बिना गाँठ के रस्सी को मोड़ने की विधि।

मुरेला – (सं.पु.) घास मिश्रित धान के हरे पौध, पशुओं के खाने लायक फसल घास।

मुरहा – (सं.पु.) बिना बाप महतारी के अनाथ बालक।

मुरछिआब – (क्रिया) मूर्छित हो जाना, मूर्छा आना, बेहोश होना।

मुरकटिया – (सं.पु.) सिर काट लेने या सिर कटवा देने जैसा व्यक्ति।

मुरकटना – (सं.पु.) हमेशा हाथ काटने वाला व्यक्ति, एहशान न मानने वाली प्रवृत्ति का व्यक्ति।

मुलुर–मुलुर – (अव्य.) चुपचाप,विस्मय बोधक दृष्टि से देखना, एकटक देखते रह जाना।

मुलम्मा – (सं.पु.) काँच के दानों का माला, लड़ी मनका वाला नारियों का मन का।

मुसबा – (सं.पु.) मूँस, चूहा।

मुसुटिया – (सं.स्त्री..) चूहा का छोटा बच्चा, मादा चूहा, आकार में अति छोटा।

मुसमन्ना – (सं.पु.) मूँस को मारने वाली दवा या पावडर।

मुसमुसाउब – (क्रि.वि.) भीतर ही भीतर मुँह चलाकर खा लेने की क्रिया।

मुसका – (सं.पु.) पशुओं के मुख पर लगाया जाने वाला जालीदार टोप।

मुसेल – (सं.पु.) लम्बी–लम्बी आरक्षित एवं सघन घास।

मुसेसब – (क्रिया) किसी का मुँह दबा लेना, किसी की सम्पत्ति छुड़ा लेना।

मुसुर मुसुर – (अव्य.) बड़े चाव से चबाना, खाद्य पदार्थ चबाते समय मुँह की आवाज न सुनाई पड़ना।

मुसकी – (सं.स्त्री..) मुस्कान, मुस्कुराहट।

मुसकियाब – (क्रिया) मुस्कुराना, अधरों पर प्रसन्नता का बिम्ब दिखना।

मुसरिहा – (विशे.) मूर्ख एवं जड़ प्रकृति का आदमी,मूसल की तरह सीधा सपाट।

मुसकुर – (सं.पु.) चूहों द्वारा बिल से निकाली गई मिट्टी, अनाज एवं मिट्टी मिश्रित की भाँति।

मुँहजरी – (विशे.) अप्रत्याशित अपमान, बदनामी, देखना।

मुँहसखिया – (सं.पु.) बोले–बताने का सहारा, बातचीत के लिए साथी संगी।

मुँहेन–मुहेन – (अव्य.) एकदम सामने, एकदम समक्ष, मुँह पर ही।

मुँहूफोंक – (अव्य.) किसी बर्तन के मुहाड़े तक, भरी हुई स्थिति, भरपूर।

मुँहसिये – (विशे.) मुँह से कुछ न बोलना, मुँह का बन्द रखना।

मुँहमूँदे – (विशे.) चुपचाप अवाक रहना, सबकुछ सुनकर सह लेना।

मुँहुभरा – (ब.मु.) मुँह के बल,ठोकर खाकर इसप्रकारगिरनाकि चोट लग जाय।

मुँहधउसब – (ब.मु.) किसी को अपमानित करना, नीचा दिखाना।

मुँहमीठ – (विशे.) मिश्री घुली वाणी बोलने वाला, मृदुवाणी।

मुँहफट्ट – (विशे.) जब जैसा मुँह में आया बोल देने वाला, मुँह में लगाम न लगाने वाला।

मुँहमुदा – (विशे.) गुपचुप रहने वाला, चुप्पा बदमाश।

मुहक्खर – (सं.पु.) मौखिक, मुँह जवानी, कण्ठस्थ, अलिखित।

मुहदेखी – (सं.पु.) पक्षपात पूर्ण व्यवहार, प्रथम बार दुल्हन का मुख देखने की रस्म।

मुँह पिरबाउब– (क्रिया) व्यर्थ की बकवास करना, बिना अर्थ की वार्ता करना।

मुँह फरगाये – (ब.मु.) अनाप–शनाप, अश्लील एवं अपमान जन्य शब्द निकालना।

मुँहफोरिके – (ब.मु.) खुले शब्दों में, स्पष्ट रूप से।

मुँहफेरब – (ब.मु.) इधर–उधर मुँह घुमाने का अवसर, मुख मोड़ लेना।

मू

मूठी मागब – (क्रिया) भीख मांगना, भिक्षाटन करना।

मूठ – (सं.पु.) तांत्रिक द्वारा किया गया जादू–टोना, औजार का मूठ।

मूड़ – (सं.पु.) सिर, नग, मूड़ मारब, ब.मु.।

मूड़ मारब – (ब.मु.) बढ़ते हुए कुकृत्य पर रोक लगाना, दबा देना।

मूड़ा – (विशे.) मात्रा, नग, संख्या, इतने पशु।

मूड़ब – (क्रिया) समूल नष्ट करना, जड़ से उखाड़ फेंकना।

मूड़न – (क्रिया) मुण्डन संस्कार।

मूड़ा फोरी – (ब.मु.) होड़ सा लगा लेना, प्रतिस्पर्धात्मक पहल।

मूड़ी का मूड़ा– (क्रि.वि.) एक नग के पशु के बदले एक ही पशु लेना–देना।

मूतब – (क्रिया) पेशाब करना, लघु शंका करना, एक ब.मु.।

मूँदब – (क्रिया) वस्तु को ढकना, आँख मूदब, ब.मु.।

मूर – (सं.पु.) मूलधन, लिया गया धन, दिया गया धन।

मूरी – (सं.स्त्री..) मूली।

मूरी भाजी – (ब.मु.) एकदम सस्ता, मूली–भाजी की तरह उपलब्ध।

मूसर – (सं.पु.) मूसल, जड़ प्रवृत्ति का मूर्ख, अक्ल से हीन।

मूसब – (क्रिया) किसी की सम्पत्ति लूट लेना, हड़प लेना।

मूसरचंद – (ब.मु.) मूसल की भाँति जड़ एवं न लटकने वाला।

मेकब – (क्रि.) फेंकना, बिखरा देना, फैला देना, अदृष्य एवं दूर हटा देना।

मे / मै

मेकबाउब – (क्रि.) किसी से फेंकवा देना, फेंकने को प्रेरित करना।

मेकबइया – (सं.पु.) फेंकने वाला, फेंक देने वाला, बिखेरने वाला।

मेकान – (विशे.) फेंका हुआ, फैलाया हुआ, बिखराया हुआ।

मेकँउआ – (विशे.) फेकते हुए शैली में, विखेरते हुए।

मेखइला – (सं.पु.) लकड़ी का नुकीला खूँटा, लकड़ी का मेख।

मेखइया – (सं.पु.) नुकीली मुँहवाला, जिसका मुँह पतला एवं लम्बा हो।

मेंख – (सं.पु.) लकड़ी की मजबूत एवं नुकीली कील, मेख ठोकब, ब.मु.।

मेखिआउब – (क्रिया) मेख की तरह कील को पैनी बनाना।

मेघास – (विशे.) एकदम बादल की तरह काला।

मेछराब – (क्रि.वि.) उछल–कूद मचाना, कूदते हुए दौड़ना।
मेछरइया – (सं.पु.) इधर–उधर कूदने–फांदने वाला व्यक्ति।
मेछाड़ा – (सं.पु.) बड़ी–बड़ी मूँछों वाला व्यक्ति।
मेजा – (ब.मु.) मन मिलना, ताल–मेल बैठना।
मेझरी – (सं.स्त्री..) खरीफ की एक मोटी फसल वाला अनाज।
मेटब – (क्रिया) लिखकर अक्षर मिटाना नुकसान करना, क्षतिग्रस्त कर देना।
मेंट – (सं.पु.) मजदूरों का मुखिया, प्रमुख मजदूर।
मेंटानन्दन – (ब.मु.) सब चौपट करने वाला, बिगाड़कर रख देने वाला।
मेटाउब – (क्रिया) लखावट को मिटा देना, नष्ट या साफ करना।
मेटिया – (सं.स्त्री..) मिट्टी की मटकी, घी दूध रखने वाली मिट्टी के घड़े।
मेटका – (सं.पु.) मटका बड़ा सा, मिट्टी का घड़ा।
मेंड़ – (सं.पु.) खेत के चारों ओर मिट्टी से बनी सीमा रेखा।
मेड़राब – (क्रिया) सिर के ऊपर उड़ना, बादलों का उड़ना–घुमड़ना।
मेड़रा – (सं.पु.) बाँस के बर्तनों में बंधी हुई मजबूत पट्टी, पत्थर की देशी चक्की के चारों ओर चढ़ा हुआ आटा।
मेड़उर – (सं.) आसपास के लगे हुए गाँव, टोला–मुहल्ला की बस्ती।
मेढ़ – (सं.पु.) खेत या बाँध में बनाई गई ऊँची मिट्टी की सीमा।
मेढ़ा – (सं.पु.) सुअर का बच्चा, किसी लड़के के लिए एक गाली।
मेढ़ी – (सं.स्त्री..) खेत की ऊँची मेढ़, खेत की सीमा।
मेना – (सं.पु.) पालकी, डोली।
मेमिआब – (क्रिया) परास्त कर हारी मान लेना, बकरी की चिल्लाहट।
मेमिआउब – (ब.मु.) किसी को बकरी जैसा स्वर निकालने को विवश कर देना, बकरी बना देना।
मेमिबइया – (सं.पु.) में–में की आवाज निकलवा लेने वाला।
में–में – बकरी की आवाज, दबे स्वर में बोलना।
मेरउब – (क्रिया) उबलते पानी के पात्र में चावल डालना, पशुओं के समूह में पशु ले जाकर मिलाना, एकाकार करना।
मेरबाउब – (क्रिया) उबले हुए पानी में पकने हेतु चावल डालना।
मेरमन – (सं.पु.) कड़ाह में उबलता हुआ घी या तेल, घी–तेल में पकाया जाने वाला पदार्थ।
मेरबइया – (सं.पु.) बर्तन में पकने के लिए चावल डालने वाला।
मेराब – (क्रिया) मेल खाना, मिलान होना, बर्तन के पानी में चावल डाल देना।
मेर–मेर – (विशे.) भाँति–भाँति, रंग–बिरंगा, अलग–अलग।
मेरखुआ – (सं.स्त्री..) पिसायी के समय टूटे हुए अनाज के कण, रूखा–सूखा भोजन।
मेर – (सं.पु.) अनुरूपता, सामन्जस्य, अनुकूलता,प्रकार, समता।

मेर–मार – (ब.मु.) रंग–बिरंगे, अनेक प्रकार के, भाँति–भाँति के।

मेरमनिया – (सं.स्त्री.) सामान्य रूप से मिलाने की प्रक्रिया।

मेल्हब – (क्रिया) टहलते हुए चलना, धीरे–धीरे चलकर आना।

मेलहा – (सं.पु.) मेला करने हेतु सामूहिक रूप में आया जनसमूह।

मेली जोरी – (विशे.) हमउम्र का आदमी बराबरी का व्यक्ति।

मेलान – (विशे.) मेला में लोगों का संचित समूह, भीड़।

मेहराब – (क्रि.वि.) पुरुषों द्वारा औरतों जैसी बोली–भाषा बोलना।

मेहरा – (सं.पु.) औरतों की तरह बातें करने वाला, औरतों के बीच में रहने वाला पुरुष।

मेहेरिया – (सं.स्त्री..) स्त्री., पत्नी, औरत।

मेहरँऊ – (विशे.) औरतों की तरह मेहराते हुए बोलना।

मेहरारू – (सं.स्त्री..) औरत या पत्नी, नारी जाति।

मैनहाई – (ब.मु.) मांगलिक अवसर के पूर्व की रात्रि का जागरण।

मैनहर – (सं.पु.) फोड़ेके दबानेके लिए लगाई जाने वाली एक फलीय औषधि।

मो

मोउब – (क्रिया) दाल में तेल का लेपन, भूसा में पानी या खली मिलाना।

मोका – (अव्य.) मौका, अवसर, समय, मुझे।

मोकलाब – (क्रि.) खाने के कारण चर्बी चढ़ जाना, मस्ती चढ़ जाना।

मोकलान – (विशे.) खाकर मस्ती में डूबा हुआ।

मोखा – (सर्व.) मुझको, मुझे, मेरो को।

मोखब – (क्रिया) किसी लकड़ी का एक सिरा गढ़ना, छोलना, लकड़ी को नोकदार बनाना।

मोखबाउब – (क्रिया) किसी लकड़ी के सिरे को गढ़कर कटवाना।

मोखइया – (सं.पु.) लकड़ी को काटकर सिरा चिकना बनाने वाला।

मोगब – (क्रि.वि.) रोते बच्चे का चुप होना, रोते बच्चे का शांत हो जाना।

मोगरा – (सं.पु.) जमीन पर सिर के बल खड़ा मोटी लकड़ी का भारी टुकड़ा।

मोगरी – (सं.स्त्री..) पतली लकड़ी की छोटी सी टुकड़ी, हल में लगी हुई।

मोगदर – (सं.पु.) पतली और चपटी पटरी।

मोगराउब – (क्रिया) जुते खेत के ढीलों को समतल करवाना।

मोगरिहाब – (सं.पु.) मोगरी से मार होना, मोगरी चलना।

मोगरियाउब – (क्रिया) खेत को हल से समतल करना कि मोगरी से पिटाई करना।

मोघा – (सं.पु.) बाँध की मेड़ का कटा–फटा होना, पानी निकास का द्वार।

मोघिया – (सं.स्त्री..) खेत की मेड़ में पानी निकास हेतु बनी जगह या छिद्र।

मोजान – (अव्य.) शायद, संभवतः, लगता है, जान पड़ता है, कदाचित्।

मोजराउब – (क्रिया) भरकत की पूर्ति करवाना, अभाव पूर्ति कर लेना।

मोजरब – (क्रिया) किसी क्षति की पूर्ति उपलब्ध मात्रा द्वारा कर लेना।

मोजरबइया – (सं.पु.) क्षतिपूर्ति कर लेने वाला व्यक्ति।

मोटाई – (सं.स्त्री..) मोटापा, घमंड बढ़ जाना, स्थूलता।

मोटाढ़ा – (सं.पु.) मोटा–तगड़ा आदमी, एक गाली।

मोटन्घा – (विशे.) जो बहुत ही मोटा हो और माँसपेशी नीचे झूलती हो।

मोटधम्मा – (विशे.) मोटामली आदमी, माँस या चर्बी से लदा व्यक्ति।

मोटदर – (विशे.) हृष्ट–पुष्ट एवं मजबूत, संपन्न व्यक्ति, सुदृढ़।

मोटमरदी – (ब.मु.) दिखावापन युक्त घमंड करना, आँखों में नशा छा जाना।

मोटाढ़ी – (सं.स्त्री..) मोटी–तगड़ी नारी,नारी के लिए एक गाली, यौवन चढ़ जाना।

मोटियार – (सं.पु.) मोटी–तगड़ी, मजबूत, मोटाई युक्त वस्तु।

मोटामली – (सं.पु.) शरीर से मोटा–तगड़ा, भारी–भरकम आदमी।

मोटबम्हना – (सं.पु.) ब्राह्मण प्रजाति का मोटिया या निम्न श्रेणी का ब्राह्मण।

मोढ़स – (सं.पु.) धैर्य धारण करना, हिम्मत बाँधना, सहनशीलता रखना।

मोड़ा – (सं.पु.) लड़का, बच्चा, स्त्री.लिंग 'मोड़ी'।

मोदरा – (ब.मु.) बड़ी सी मुदरी, स्वर्ण मुंदरी हेतु, ब.मु.।

मोबाउब – (क्रिया) भूसे में हल्का पानी मिश्रित कराने की क्रिया।

मोबइया – (सं.पु.) भूसे में पानी मिलाकर मिश्रित करने वाले।

मोबान – (विशे.) मोया हुआ, आटे में घी का मोवन युक्त।

मोबाई – (क्रि.) मोने के कार्य का होना, पारिश्रमिक।

मोमन – (सं.पु.) वस्तु या पदार्थ में मिलाया जाने वाला तरल।

मोर – (सर्व.) मेरा, हमारा।

मोरे – (अन्य.) मेरे यहाँ, मेरे पास, मेरे।

मोरइला – (सं.पु.) मोर पक्षी।

मोरबप्पा – (अन्य.) अरे बाप रे, आश्चर्य बोधक शब्द।

मोरेबल्हा – (अन्य.) आश्चर्य बोधक शब्द, मेरे भगवान रे।

मोरदादा – (अन्य.) मेरे बाप रे, अरे बाप रे, आश्चर्य बोधक शब्द।

मोलबाउब – (क्रिया) मोल–भाव करना, कीमत जानना।

मोलहा – (विशे.) ऐसी वस्तु जो क्रय की गई हो।

मोलमन – (सं.पु.) मोलभाव, आकलन, मूल्य व कीमत।

मोलवइया – (सं.पु.) किसी वस्तु की कीमत आँकने वाला।

मोसे – (सर्व.) मुझसे, हमसे, मेरे से।

मोहासिल – (विशे.) बहुत अधिक मोह ज्ञापित करने वाला, वात्सल्य करने वाला व्यक्ति।

मोहलत – (सं.पु.) समय देना, अवसर की मांग।

मोहाब – (क्रिया) मोह करना, ममता होना, वात्सल्य करना।

मोहरा – (सं.पु.) शतरंज की एक गोटी (पैदल)।

मोहर – (सं.पु.) एक तोले का सोने का सिक्का, नारियों का एक आभूषण।

मोहड़ा – (सं.पु.) किसी वस्तु का मुखौटा, किसी बर्तन का मुख द्वार।

मोंहूँका – (सर्व.) मुझे भी, मुझको भी, मेरे लिए भी।

मोही – (सर्व.) मुझे, मुझको, मेरे को।

र

रइता – (सं.पु.) रायता, 'रइता कस मिरचा', ब.मु.।

रइनी – (सं.स्त्री..) विवाहोत्सव में रंगे–चगे गये मिट्टी के लोटे–घड़े।

रइहा – (क्रिया) रहोगे, रहना होगा, रहोगी?

रइहौं – (क्रिया) रहूँगी, रहूँगा।

रउताइन – (सं.स्त्री..) समधी की पत्नी, बेटे–बेटी की सास, पुलिंग 'राउत'।

रकरा – (स.पु.) गाय या भैंस का छोटा बच्चा।

रक्का – (सं.पु.) अचार, 'रक्का धरब' ब.मु.।

रकत – (सं.पु.) रक्त, खून, लहू।

रकती – (क्रि.वि.) आँख में खून का दाग बनना, आँख में खून का उतर आना।

रकतान – (विशे.) लहू–लुहान, खून से लथ–पथ या ओतप्रोत।

रकतोहिल – (विशे.) मवाद के साथ रक्त का घाव से स्राव, हल्की लाल आँख।

रकतचिखा – (स.पु.) हिंसक, खून पीने का आदी जो हो गया हो।

रखड़ब – (क्रिया) पशुओं का आराम के लिए बैठना–पड़ना।

रखड़ाउब – (क्रिया) पशुओं को रखड़वाना, बैठाने का कार्य करना।

रखड़उनी – (सं.स्त्री..) वह स्थल जहाँ पशुओं को समूह रूप में बैठाया जाता हो।

रखिना – (सं.पु.) रसोई घर में रात को खींची जाने वाली राख की लकीर।

रखाउब – (क्रिया) रखवाना, किसी को किसी के अधीनस्थ संलग्न कराना।

रखबइया – (सं.पु.) जिसने रख लिया हो, जिसने रखवाया हो।

रखिआउब – (क्रिया) राख लगाकर बर्तन को साफ–सुथरा करना।

रगदब – (क्रिया) दौड़कर पीछा करना, भगाना या हटाना, खदेड़ना।

रगदबाउब – (क्रिया) खदेड़ने में सहयोग करना, भगाने व हटाने में मदद करना।

रगदबइया – (सं.पु.) खदेड़ने वाला, पीछा करने वाला, भगाने वाला।

रगबाउब – (क्रिया) पुचकार कर रोते हुए को चुप कराना, सान्त्वना देना।

रगाब – (क्रिया) रोते हुए का चुप होना।

रगान – (विशे.) रो कर चुप हुआ व्यक्ति, शान्त एवं चुपचाप।

रगड़ब – (क्रिया) घिसना, रगड़ करना, परेशान करना, मेहनत लेना।

रगड़बाउब – (क्रिया) स्वयं घिसवाना, मैथुन कराना, मैल छुड़वाना।

रगदा – (स.पु.) धूल एवं कूड़ा–कर्कट, कचड़ा के महीन कण।

रगदाउब – (क्रिया) घर से दूर भगाना, 'घींच रगदाउब', ब.मु.।

रगबग – (विशे.) वर्षा के बाद बादलों का छंट जाना, सामान्य शुष्क वातावरण।

रगी – (विशे.) खुला आसमान, धूप खिला मौसम व माहौल।

रँगब – (क्रिया) रम जाना, लीन होना, मोहित करना, रंग से रंगना।

रधिन्ना – (सं.स्त्री..) राख से बनी सीमा रेखा, कील से बनी लकड़ी पर चिन्ह।

रचका – (विशे.) थोड़ा सा, नाम मात्र का, अल्प मात्रा।

रचब – (क्रिया) रचना करना, निर्माण करना, बहाना बनाना, रंगाई करना।

रछरछाब – (क्रिया) पाँव पटक–पटक कर चलना, दौड़ दौड़कर आना–जाना।

रजई – (सं.स्त्री..) शासन काल, प्रशासन अवधि,राज्य–काल, मालिकाना।

रजइया – (सं.स्त्री..) रजाई, रूई भरी ओढ़ने की खोल।

रजंसी – (विशे.) राजसी ठाट–बाट, सुख– सुविधा, राजसी कार्य।

रटब – (क्रिया) याद करना, कंठस्थ करना, एकदम रट लगाना।

रटबाउब – (क्रिया) कंठस्थ करवाना, याद करवाना।

रटवइया – (सं.पु.) रटने वाला आदमी, याद कर लेने वाला।

रट्टू – (विशे.) रट लगाने वाला, कंठस्थ करने वाला, रटने में निपुण।

रड़कट – (विशे.) बदचलन औरत, औरत के लिए एक गाली।

रड़िअऊ – (सं.स्त्री..) सम्बोधन युक्त नारी के लिए गाली, कुमार्या।

रड़ीबा – (सं.स्त्री..) जो प्रवृत्ति से नारी दुष्ट एवं बुरी हो।

रड़ापा – (सं.पु.) वैधव्य, वैधव्य जीवन।

रड़बिजउर – (सं.पु.) अण्डी बिरादरी का एक पौधा।

रड़ुआ – (सं.पु.) बिधुर, जिसकी पत्नी मर चुकी हो, अनव्याहा।

रड़चउरा – (सं.पु.) औरतों की अनाप–सनाप वार्ता युक्त बैठक।

रतउँधी – (सं.स्त्री..) रात में न दिखने वाला एक रोग, रतौंधी।

रतिभरा – (अव्य.) सुबह की बेला जब अंधेरा हो, भोर के पूर्व।

रती – (विशे.) चेहरे की चमक, मुख का तेज, एक रत्ती मात्रा, 'रती उतरब', ब.मु.।

रतुआ – (सं.पु.) लाल मुँह का एक विशेष बन्दर, स्त्री.लिंग 'रतुई'।

रदबद – (विशे.) अव्यवस्थित, अनियोजित, गड़बड़, तितिर–बितिर।

रधाँउब – (क्रिया) पकवाना, चुरवाना, बनवाना।

रधान – (सं.पु.) चावल, दलिया, खीर आदि भोजन जो पानी से पके।

रनउब – (क्रिया) खर पक्का कर लेना, लेन–देन का तय हो जाना।

रनडीबा – (सं.स्त्री..) जो विधवा हो चुकी हो, वेश्यावृत्ति में लीन नारी, एक गाली।

रपटब – (क्रिया) भरपूर प्रयोग, झड़प लगाना, उलाहना भरी डाँट लगाना।

रपटाउब – (क्रिया) किसी को कहकर डँटवाना, झड़प लगवाना।

रपटा – (सं.पु.) नदी या नाला पर बना काम चलाऊ पुल मार्ग।

रँपिआउब – (क्रिया) राँपी से कटवाना, माँस पर राँपी चलवाना।

रबान – (विशे.) रवेदार वस्तु, दानेदार वस्तु।

रबा – (सं.पु.) एक कण, थोड़ा सा, छोटा सा, 'एक रबा', ब.मु.।

रम्भस – (सं.पु.) मनोरंजन का साधन, समय काटने का सहारा।

रमदा – (सं.पु.) लकड़ी चिकनी करने वाला बढ़ई का औजार।

रमदब – (क्रिया) रमदा चलाना, रमदे से लकड़ी चिकनी करना।

रमना – (सं.पु.) पत्थरों से बनी जंगल की सीमा, छोटे–छोटे नाले।

रमब – (क्रिया) ठहर जाना, मन का लग जाना, बस जाना।

रमन्ना – (सं.पु.) वन विभाग द्वारा अनुमति रसीद।

रमतिला – (सं.पु.) तिली प्रजाति का एक तिलहन।

रमन – (सं.पु.) बहकर आयी हुई सड़ी गली–पत्ती एवं गोबर।

रमरमाउब – (क्रिया) ठहरकर मेहमानी करना, डेरा डाल देना।

रमरगड़ा – (सं.पु.) राम भजन, कीर्तन, अपने धुन में डटे रहना।

रयामन – (विशे.) मन में बसने योग्य, लालित्यपूर्ण, मनमोहक, कर्ण प्रिय।

रसाजि – (सं.स्त्री..) बेसन से बना ग्राम्य व्यंजन।

रसरी – (सं.स्त्री..) रस्सी।

रसिआव – (सं.पु.) गन्ने, महुआ या गुड़ के रस से बनी खीर।

रसील – (विशे.) जिसमें रस भरा हो, रस से भरी हुई।

रसे–रसे – (अव्य.) धीरे–धीरे, शनैः–शनैः, आराम से, क्रमशः।

रसकट्टी – (ब.मु.) मजा–मौज एवं मस्ती, 'रसकट्टी काटब', ब.मु.।

रहब – (क्रिया) रहना, ठहरना, रूकना, किसी के घर रह जाना।

रहल – (सं.पु.) काष्ठ का बना एक्स आकार का पात्र।

रहइया – (सं.पु.) रहने वाला, निवासी, रहने वाले लोग।

रहइ देय – (क्रिया) रहने दो, रहने दीजिए, मत कीजिए, छोड़ दीजिए।

रहौं – (क्रिया) रह जाऊँ, रूक जाऊँ, रहें, रूकें।

रहपट – (क्रि.वि.) खड़ी फसल रौंदना, कुचलकर फसल मिट्टी में मिलाना।

रहाई – (सं.स्त्री..) चैन, रहने की मानसिकता, 'रहाई न परब', ब.मु.।

रहिकला – (सं.स्त्री..) चरित्रहीन अवारा नारी, मुँह चमकाकर बात करने वाली नारी के लिए एक गाली।

रहिगै – (क्रिया) रखैल रूप में रह गई, गर्भ ठहर गया, शेष बच गई।

रहिगें – (क्रिया) रह गये, रह गया, रूक गया, ठहर गया।

रहिहा – (क्रिया) रहोगे, ठहरोगे, क्या रूकोगे?

रहिला – (सं.पु.) चना, चना का पौध व फल।

रहँठा – (सं.पु.) फल एवं पत्ता बिहीन अरहर का सूखा डंठल।

रहठ – (सं.पु.) एक प्रकार का झूला, कुँए से पानी खींचने वाला काष्ठ का औजार।

रहतूति – (सं.स्त्री..) पौरुष युक्त उपलब्धि, करनी, करतूत।
रहिहौं – (क्रिया) रहूँगा, रहूँगी।
रहाइस – (सं.पु.) निवास–प्रवास, जहाँ रहते हो वह गाँव।
रहाउब – (क्रिया) बीच में कार्य को रोक देना, थोड़े समय को थम जाना।
रहपटिआउब– (क्रिया) तमाचे से किसी को मारना–पीटना।
रहपटा – (सं.पु.) तमाचा, हथेली या गदेली।
रहबू – (क्रिया) रहोगी ?, ठहरोगी ?, रूकोगी ?
राई रेवा – (अव्य.) छोटे–छोटे बच्चे, अबोध बच्चे, नन्हे–मुन्ने।
राई – (सं.स्त्री..) सरसों के दानें।
राउत – (सं.पु.) स्वयं या बहन का श्वसुर, स्त्री.लिंग 'रउताइन'।
राख–फूल – (सं.पु.) मृतक का जला हुआ अवशेष, चिता की राख एवं हड्डियाँ।
राग – (सं.पु.) जंघा एवं कमर के बीच का प्रक्षेत्र।
राँगब – (क्रिया) आकृष्ट करना, अपने पक्ष में करना, खुश करना।
राड़ – (सं.स्त्री..) विधवा, चरित्रहीन नारी, खतरनाक लड़की।
रातिम – (सं.स्त्री..) एक साग विशेष का नाम, एक तिलहन।

रा

राँधब – (क्रिया) खौलाकर खाद्य पदार्थ पकाना।
रापड़ – (सं.पु.) पड़ती–पथरीली भूमि, धान की फसल के अपुष्ट दानें।
राँपी – (सं.स्त्री..) चमड़ा छीलने वाला चर्मकार का औजार।
रामदोही के – (सं.पु.) राम की सौगन्ध, सत्यापन विश्वास दिलाने का शब्द।
रामरज – (सं.पु.) पीले रंग की मिट्टी, पीले रंग का चंदन।
रामराजि – (ष.मु.) राम–राज्य की सुख शान्ति।
रामरमउहल – (सं.पु.) अभिवादन, दुआ–सलामी, प्रणाम–सलाम।
रार – (सं.पु.) वाद–विवाद, झगड़ा–लड़ाई, अनुचित कार्य।
राल – (सं.पु.) कत्थे की एक गोंद, बिन्दी लगाने की गोंद।
रास–भास – (अव्य.) दम्म–दड़ाका, परिपक्वता एवं सामर्थ्य, अच्छी संभावना।
रासि – (सं.स्त्री..) खेत से उत्पन्न अनाज का ढेर।
राहा – (सं.पु.) खलिहान, फसल संचयन स्थल।

रि/री

रिकमच – (सं.स्त्री..) गाँव का एक प्रसिद्ध व्यंजननुमा मसालेदार तरकारी।
रिता – (संस्त्री..) मौसम, ऋतु, समय, सीजन।
रिताउब – (क्रिया) खाली करना, भरे पात्र को रिक्त करना, मार डालना।
रिताब – (क्रिया) कार्य से खाली हो जाना, मुक्त होना, मर जाना, भैंस–गाय का गर्भविहीन होना।
रिन – (सं.पु.) कर्ज, ऋण, ऋण का चिन्ह (–), नकारात्मक संकेत।
रिनिहा – (विशे.) ऋण लेने वाला, कर्जदार, ऋणी व्यक्ति।
रिम्म – (सं.स्त्री..) सायकल का वह भाग जिसके उदर में स्पोक व वाह्य में टायर लगा रहता है।

रिमहा – (सं.पु.) रीवा रियासत का निवासी, रीवा में रहने वाला।

रिसि – (सं.स्त्री..) गुस्सा, आक्रोश, नाराजगी का भाव।

रिसाब – (क्रिया) नाराज होना, बिगड़ जाना, नाखुश होना।

रिसबाउब – (क्रिया) किसी को नाराज करा देना, नाराज करवाना।

रिसिआन – (विशे.) नाराजगी से ओत–प्रोत, आवेशित एवं अप्रसन्न।

रीत – (विशे.) बिना बच्चे की गाय–भैंस, खाली एवं रिक्त।

रीरी – (सं.स्त्री..) बच्चों की रूदन–ध्वनि, रोने की विशेष आवाज।

रीलब – (क्रिया) एक छोर से दूसरे छोर तक आर–पार फाड़ना।

रू

रूआ – (सं.पु.) कपास, रूई के फल, रेशे।

रूइनी – (सं.स्त्री..) एक सब्जी का फल, कन्दमूल।

रूइया – (सं.स्त्री..) रोयेदार एक सब्जी का कन्दमूल या फल।

रूइहाई – (सं.स्त्री..) कपास भरा हुआ वस्त्र, रूई से निर्मित वस्त्र।

रूक्का – (सं.पु.) हाथ से लिखी हुई रसीद, हस्ताक्षरित चिट।

रूकब – (क्रिया) रूकना, ठहरना, गर्भधारण हो जाना।

रूकाउब – (क्रिया) रोक रखना, रोक लेना।

रूखना – (सं.पु.) लकड़ी में छिद्र करने वाला बढ़ई का औजार।

रूखहा – (सं.पु.) वह खेत जहाँ गन्ने के पौध हों, गन्ने का खेत।

रूख – (सं.पु.) गन्ना, कोई वृक्ष।

रूघट – (सं.पु.) शक्ल सूरत, चेहरे की बनावट, शरीर का ढाँचा।

रूज्जुक – (सं.पु.) जीवन निर्वाह का साधन, रोजी–रोटी, रोजगार–धंधा।

रूढ़ान – (विशे.) अधिक पुराना, रूढ़ या कठोर, उम्र से परे जर्जर।

रूदाइन – (सं.पु.) शुक्ल ब्राम्हण का एक गोत्र।

रूँधना – (सं.पु.) जिन कटीली झाड़ियों से बारी बनाई गई हो।

रूँधब – (क्रिया) मार्ग अवरूद्ध करना, सुरक्षा करना, जमीन में टहनियाँ गाड़ना।

रूपब – (क्रिया) रूक जाना, ठहर जाना, आरोपित होना, गर्भवती होना।

रे

रेउँजा – (सं.पु.) एक कटीलेदार वृक्ष का नाम।

रेउँथी – (सं.स्त्री..) लकड़ी में घुमाकर छिद्र करने वाला बढ़ई का औजार।

रेउरी – (सं.स्त्री..) चने के आकार की शक्करनुमा गोली, रेवड़ी, ब.मु.।

रेकबा – (सं.पु.) किसी क्षेत्र या खेत का क्षेत्रफल, एक जमीन का पैमाना।

रेंगब – (क्रिया) पैदल चलना, पाँव के सहारे चलना।

रेगनई – (क्रि.वि.) चाल का तौर–तरीका, चलने की शैली।

रेंच – (विशे.) चारों कोनों में से एक कोना बड़ा या छोटा होना।

रेज – (सं.पु.) दाने रहित सूखे धान के डंठल व घास।

रेढ़ा – (सं.पु.) दो पहाड़ियों के बीच का स्थल।

रेढ़ब – (वि.) किसी बात की लगातार रट लगाये रहना।

रेड़ी – (सं.स्त्री..) अरण्य तिलहन का पौध, पुलिंग 'रेंड़ा'।

रेतब – (क्रिया) घिसना, गला काटना, लूट लेना, घर्षण करना।

रेंद – (सं.पु.) वयस्क एवं हृष्ट–पुष्ट, नौजवान एवं तन्दरुस्त।

रेंदाई – (क्रि.वि.) ताकत दिखाने की हरकत, अक्खड़पना, तरुणाई का प्रदर्शन।

रेर – (सं.पु.) झगड़ा, अश्लील वार्तायुक्त वाक युद्ध, जोर की आवाज।

रेरा – (सं.पु.) आँधी या तूफान, 'रेरा खींचब', ब.मु.।

रेरी – (अव्य.) रे कहकर बोलना या बुलाना, अनादर सूचक।

रेरुआ – (सं.पु.) एक बरसाती हरी सब्जी विशेष।

रेला – (सं.पु.) बहते पानी की मोटी धार, बहुतायत रूप में पानी का बहाव।

रेलवाई – (सं.स्त्री..) रेल, रेलगाड़ी।

रेहन – (सं.स्त्री..) विवाह के समय बनाया गया मिट्टी का पात्र विशेष।

रो

रोइहेय – (क्रिया) रोओगे, रोओगी।

रोइहौं – (क्रिया) रोऊँगा, रोऊँगी।

रोउब – (क्रि.) रोना, आँसू बहाना।

रोउना – (सं.पु.) बात–बात में रोने वाला, स्त्री.लिंग 'रोउनी'।

रोउनई – (विशे.) किसी का कार्य बिना मन एवं लगन से करना।

रोउनी ढिटिरिया– (ब.मु.) कार्य करते समय आँसू बहा देना, दुखेमा व अशांति।

रोक – (सं.पु.) नकद, रूपया–पैसा।

रोकब – (क्रिया) रोकना, कार्य करने से मना करना, रोक देना।

रोकाउब – (क्रिया) किसी की मदद लेकर रोकवाना।

रोकइया – (सं.पु.) रोकने वाला, रोक लगाने वाला व्यक्ति।

रोखरोखाब – (क्रि.वि.) लड़ने–झगड़ने के लिए उद्यत होना।

रोखिआब – (क्रि.) आवेशित होकर अकड़ना, रोसवस उत्तेजित होना।

रोगिहा – (स.पु.) रोगी, बीमार व्यक्ति, मरीज।

रोगहा – (सं.पु.) जिसके रोग हों ऐसा, रोग से ग्रसित व्यक्ति।

रोगा–जोगा – (ब.मु.) समय संयोग, लाग–बाग, जुगाड़ बन जाना।

रोघट – (सं.पुं.) शरीर की मैल, स्वरूप एवं आकार–प्रकार।

रोघटहा – (सं.पु.) जिसके मैल लगी रहती हो गन्दा, गन्दा व्यक्ति।

रोचब – (क्रिया) संरचना की क्रिया, गड्ढे में गोली पिलाना।

रोचना – (सं.पु.) हलदी रंगा चावल, शुभ संकेत का संदेश।

रोचबाउब – (क्रिया) कार्य की नींव रखवाना।

रोज्ज – (अव्य) रोजाना, प्रतिदिन, रोज।

रोजनदारी – (सं.पु.) ऐसा कार्य जिसकी मजदूरी रोज ली जाय, अमानी कार्य।

रोझ – (सं.पु.) काँटेदार हिंसक जंगली जन्तु।

रोटमसक – (सं.पु.) काम में कोर कसर करने वाला, 'रोटमसक', ब.मु.।

रोटिकरा – (सं.स्त्री..) रसोइयाँ, रोटी देने वाली पत्नी।

रोट लेबाला – (सं.पु.) देवी–देवताओं को चढ़ाने वाला प्रसाद विशेष।

रोंठा – (सं.पु.) बिल्कुल कच्चा फल, स्त्री.लिंग 'रोंठी' 'रोंठी कस मुहू', ब.मु.।

रोंड़ा – (विशे.) ऐसा कच्चा शिशुफल जो बिल्कुल न खाने योग्य हो।

रोंदन – (सं.पु.) ढोलक या तबले में लगाया गया मशाला।

रोपब – (क्रिया) प्रहार आड़ना, आरोपित करना, बचाव करना, रोप लेना।

रोपइया – (सं.पु.) सहारा देने वाला, सहारा लगाने वाला, नीचे हाथ लगाकर थामने वाला व्यक्ति।

रोपाउब – (क्रिया) नीचे से हाथ अड़ाना, हाथ लगाना।

रोबाई – (क्रिया) रूलाई आना, रोदनयुक्त माहौल।

रोबाउब – (क्रिया) रूलाना, किसी को रूला लेना, नाको दम कर देना।

रोबइया – (सं.पु.) रोने वाला व्यक्ति, जो रो रहा हो।

रोबासा – (विशे.) रूदन करने की मनःस्थिति, जो रोने ही वाला हो।

रोमन – (विशे.) रो–रोकर कार्य करने वाला, जो हमेशा रोता रहता हो, चिढ़ने वाला, रोमन कस मुहु, ब.मु.।

रोमहा – (सं.पु.) जिसके शरीर में बहुत अधिक रोंये हों।

रोमा झारब – (ब.मु.) स्वस्थ्य एवं चैतन्य, तन्दुरुस्त एवं सुडौल।

रोमा उखारब– (ब.मु.) बाल बांका करना, रोम टेढ़ा करना।

रोमा – (सं.पु.) रोंये, रोम, बाल।

रोयेंवतै – (क्रिया) रोयी थी, रोया था, रोया तो था।

रोर – (सं.पु.) अरहर का अपुष्ट व तुचका दाना, कंकड़।

रोरहा – (सं.पु.) रोग युक्त अरहर, स्त्री.लिंग 'रोरही', ककड़ीला खेत।

रोरी – (सं.स्त्री..) रोली, कंकड़ के कण, गुड़–नमक की डिगली।

रोहतम – (सं.पु.) तीस मार खाँ, सबसे जीत जाने वाला, ओस्ताज।

ल

लइमर – (विशे.) जो कार्य करने में सुस्त हो, जिसे गाली–मार की परवाह न हो।

लइलेय – (क्रिया) ले लो, ले लीजिए।

लइलिहे – (क्रिया) ले लेना, ले ही लेना।

लइलेहे – (क्रिया) ले लेओगे, ले लेओगी।

लइलिहिन – (क्रिया) ले लिया, ले ली, ले चुका, ले चुकी।

लइहेय – (क्रिया) लाओगे, ले आओगे, लाओगी, ले आओगी।

लइलेई – (क्रिया) ले लीजिए, आदर सूचक।

लउधर – (विशे.) जो सदैव गंदा रहता हो, आलसी एवं गैरजिम्मेदार।

लउआ – (सं.पु.) लौकी, बड़े आकार का लौकी–फल।

लउअरा – (सं.पु.) लौकी के गबूझे व बेसन से बना पकौड़ा।

लउलीन – (विशे.) मिलनसार, मृदु स्वभाव वाला, नेमी–प्रेमी।

लउची – (सं.स्त्री..) पत्तेयुक्त पतली टहनियाँ, 'लउच'।

लउरबक्क – (विशे.) ना समझ, मन्दबुद्धि, बुद्धिहीन।

लउरिआब – (क्रिया) लालचवस मुँह ताकना, प्रलोभनवस आशा रखना।

लउरिआन – (विशे.) लालच के वशीभूत होकर किसी का मुँह ताके रहना।

लउरिआउब – (क्रि.) ललचाना, दिखाकर ललचाना।

लउलितिया – (सं.स्त्री..) लालच, प्रलोभन, ललक भरी आकांक्षा।

लउड़ झउड़ – (अव्य.) फँसने–फँसाने वाला कार्य, अनाप–सनाप कार्य।

लउकबाटार – (ब.मु.) इधर का उधर करना, कानाफूसी करना।

लउ – (सं.पु.) लौ, लगन, लगाव, प्रेम, लउलागब, ब.मु.।

लउँग – (सं.स्त्री..) लौंग, लवांग।

लउँद – (सं.पु.) तिथि के अनुसार बढ़ा हुआ महीना या दिवस।

लउँगलता – (सं.पु.) शक्कर पाग से युक्त एक बेसन की मिठाई।

लउबै – (क्रिया) लाऊँगा, लाऊँगी, लायेंगे ?

लउबे – (क्रिया) लायेगा, लायेगी, लायेंगी ?

लँउका – (सं.पु.) लू, गर्म हवा, गर्मी के दिनों की बयार।

लउका – (सं.पु.) लौआ फल का बना पात्र,स्त्री.लिंग 'लउकी', 'लउका लेब', ब.मु.।

लक्क तुक्क – (ब.मु.) डेरा–साज, घर का सामान, गृहस्थी की वस्तुएँ।

लकसर – (अव्य.) लगातार, बिना क्रम तोड़े, प्रायः, अविरल।

लकलकान – (विशे.) लोहे का एकदम लाल सुर्ख होना, पराकाष्ठा पर पहुँची भूख।

लकालक्क – (विशे.) एकदम श्वेत, दूध जैसा धवल, बिलकुल साफ।

लकउड़ा – (सं.पु.) नगाड़ा बजाने वाली एक फिट की लकड़ी।

लकड़बग्घा – (सं.पु.) एक हिंशक वन्य प्राणी।

लकड़िआब – (क्रिया) शरीर तोड़ते हुए लड़ने को अकड़ना।

लक्क लक्क – (अव्य.) पके घाव में कम्पन होना, कटे अंग में दर्द

लक्का – (सं.पु.) स्मरण, सुधि, ध्यान बना रहना, अचानक याद आ जाना।

लकड़टोर – (विशे.) एकदम जड़ प्रवृत्ति, मिठास व लोच रहित बोलने वाला।

लकठिआब – (क्रिया) आग में पककर वस्तुओं का आपस में जुड़ जाना।

लकुड़ी – (सं.स्त्री..) पतली लकड़ी की डंडी, 'लकुड़ी करब', ब.मु.।

लकीर – (सं.स्त्री..) रेखा, लाइन, सीमा।

लकटकिया – (सं.पु.) जोकड़, छोटे कद का विदूषक।

लक्कड़ – (सं.पु.) लकड़ी, बुरी चीज, लक्कड़ वालों का लक्कड़ ब.मु.।

लकटन्ट – (ब.मु.) अपने आपको मानने वाला, गौरवशाली समझने वाला।

लखउरी – (सं.स्त्री..) लाख की बनी हुई वस्तु या आभूषण।

लखही – (सं.स्त्री..) लाख से बना हुआ नारी गहना, लाख की चूड़ी।

लखब – (क्रिया) समझना, जान लेना, बूझना, अध्ययन करना।

लखइया – (सं.पु.) समझने वाला व्यक्ति, पारखी, रहस्य जानने वाला।

लखेसुर – (ब.मु.) अतिसुन्दर, नामजादी, सर्वोत्कृष्ट, तत्काल जान लेने वाला।

लखनउरा – (सं.पु.) शुक्ल ब्राम्हण की उपजाति या गोत्र।

लखबइया – (सं.पु.) रहस्यवादी, तुरन्त समझ लेने वाला, पारखी।

लखेय – (क्रिया) समझ लिये, जान गये, मालूम कर लिये।

लग्गी – (सं.स्त्री..) चुगुलखोरी, कान भरना, लग्गी लगाउब, ब.मु.।

लगड़ी – (सं.स्त्री) विकलांग नारी, अंधी आँधी, बहुत जोर का तूफान, एक खेल।

लगड़ाब – (क्रिया) असामान्य तरीके से चलना, विकलांग चाल।

लगउरा – (सं.पु.) साथ का एक और व्यक्ति, सहायक व्यक्ति।

लगनी – (सं.स्त्री..) वक्राकार लकड़ी जिसमें फल फँसाकर तोड़ा जाय, प्रश्नवाची आकार का लम्बा बाँस।

लग्गा – (सं.पु.) चुगुलखोरी, तास के खेल में सहायक दाँव, शिकायत।

लग्गर – (अव्य.) निरन्तर, लगातार, नियमित, अविरल।

लगतहा – (विशे.) कर्जदार व्यक्ति, जो गाय–भैंस दूध देती हो।

लगता – (विशे.) ऐसी गाय–भैंस जिसे दुहा जाता हो।

लगाउब – (क्रिया) लगाना, लेपन करना, दूध दुहना, कार्य में संलग्न करना।

लगुआ – (संपु.) पुराना हलवाहा, स्थायी मजदूर, मवेशी चराने वाला मजदूर।

लगबाउब – (क्रिया) चोट लगवा लेना, दूध दुहवाना, गन्दगी लपेटवाना।

लगबइया – (सं.पु.) दूध दुहने वाला, लेपन करने वाला।

लगनहा – (सं.पु.) ऐसा लड़का जिसका व्याह होने वाला हो।

लगा सगा – (सं.पु.) नजदीकी, परिवार का सदस्य, रिश्तेदार।

लगेठुआ – (सं.पु.) परमप्रिय शिशु, अंग लगा हुआ छोटा बच्चा।

लगार – (सं.पु.) बँधुआ व्यापारी, जो रोज लेकर आता हो।

लगानी – (सं.स्त्री..) कार्य प्रारम्भ करने का समय,मजदूर को कार्य में लेने का समय।

लगाय – (कारक) कारण, समेत, वजह।

लगोदा – (सं.पु.) गीली लकड़ी का टुकड़ा, फेंककर वृक्ष से फल तोड़ने वाली लकड़ी।

लँगोटी – (सं.स्त्री..) गुप्तांग ढकने की पतली कपड़े की पट्टी, कोपी।

लघे – (अव्य.) पास में , समीप में, नजदीक में।

लच्छ छूटव – (व.मु.) शौक पूरी होना, कुँवरगह उतरना।

लचकब – (क्रिया) लटक जाना, झुकना, मुड़ना, लोचदार होना।

लचकाउब – (क्रिया) अपनी ओर झुकाना, झुकाकर नीचे करना।

लचर पचर – (विशे.) बहुत ढीला–ढाला, अनियमित एवं अपरिपक्व।

लचकबइया – (सं.पु.) डाल को झुकाने वाला, लटकाने या मोड़ने वाला।

लचकाये – (क्रिया) झुका लिये, डाली को ऊपर से नीचे कर लिये।

लचकबे – (क्रिया) लटकोगे, झुकोगे, मुड़ोगे, लोचदार बनोगे।

लच्छी – (सं.स्त्री..) रस्सी या धागे की पिण्डी, पुलिंग 'लच्छा'।

लच्छिआउब – (क्रिया) रस्सी या धागे की पिण्डी बनाना, धागा को गोलदार बनाना।

लजुरी – (सं.स्त्री..) पानी भरने वाली रस्सी।

लजर विजिर – (अव्य.) लोचदार, ढीला–ढाला, सुस्त।

लजाब – (क्रिया) शर्म करना, संकोच करना।

लजबाउब – (क्रिया) किसी को लजवाना, शर्म युक्त कर देना।

लजबामन कूढ़ा–(ब.मु.) ऐसी वस्तु जिसके कारण शर्म उत्पन्न हो, हास्यास्पद वस्तु।

लटकन – (सं.स्त्री..) नारियों द्वारा कान में धारित सोने का गहना।

लटिआब – (क्रिया) बालों का चिपचिपा होना, बालों का आपस में चिपक जाना।

लटब – (क्रिया) बीमार पड़ जाना, पौरुष घट जाना, दयनीय परिस्थिति बनना।

लट – (सं.पु.) लड़ी, बाल, लम्बे–लम्बे केश।

लटर पटर – (अव्य.) ऐन–केन प्रकारेण, अस्पष्ट, किसी तरह से।

लटियाछोर – (विशे.) लट छोरकर कूदना–फाँदना, बिना डर भय के स्वतंत्र।

लटा – (अव्य.) ओर, तरफ, दिशा, पहलू, बड़े–बड़े बाल।

लटी – (सं.स्त्री..) लट, बाल का एक अंश, बालों की लड़ी।

लटका – (सं.पु.) झटका व झाँसा, मूर्ख बनाने वाली बातें।

लटकब – (क्रिया) झूलना, लटक पड़ना, लटकना, बदल जाना, वापस होना।

लटकाउब – (क्रिया) मोड़ना, बदल देना, लटकाना, झुलाना।

लटकइया – (सं.पु.) लटक जाने वाला व्यक्ति विशेष।

लटोरब – (क्रिया) जमीन में घसीटकर गन्दा कर देना, घसीटना।

लट्ठा – (सं.पु.) मोटे सूत का सफेद कपड़ा।

लट्ठमार – (विशे.) जड़ एवं गँवार प्रवृत्ति का, लाठी चलाने में पारंगत।

लटे पटे – (अव्य.) किसी तरह से, ऐन–केन प्रकारेण, लटे–पटे, ब.मु.।

लट्ठबाज – (विशे.) जो लाठी चलाने में निपुण हो।

लठिया – (सं.स्त्री..) पतली एवं छोटी लाठी, पुलिंग 'लाठी'।

लठीहा – (सं.पु.) लाठी चलाने वाला, लाठी चलाने में निपुण।

लठइत – (सं.पु.) लाठी चलाने के लिए आये हुए आमंत्रित लोग।

लढ़ब – (क्रिया) अनुभव करना, समझना–बूझना, करके ज्ञान प्राप्त करना।

लढ़े लढ़ाये – (ब.मु.) पढ़े–पढ़ाये, बिलकुल पारंगत, सबकुछ जानने वाले।

लड़ब – (क्रिया) लड़ना, झगड़ना, भिड़ना, बातचीत व गाली–गलौज करना।

लड़बाउब – (क्रिया) किसी से किसी को लड़वाना, भिड़वाना।

लड़इया – (सं.पु.) लड़ने वाला, लड़ाई करने वाला व्यक्ति।

लड़बहेर – (विशे.) मन्द अक्ल का, कम हित–अनहित समझने वाला, एक गाली।

लड़निपोर – (विशे.) एक गाली, बुद्धिहीन, मूर्ख, खुले मूत्रांग वाला।

लड़बहेरी – (सं.स्त्री..) मूर्खतापूर्ण कार्य, नासमझी की हरकत, अनर्थ की क्रिया।

लड़िकई – (विशे.) बचपना, नादानी, लड़कपन।

लड़न्का – (सं.पु.) लड़ाकू, झगड़ेलू, लड़ने–झगड़ते रहने वाला व्यक्ति।

लड़कदहेरी – (क्रि.वि.) बच्चों जैसी क्रिया–कलाप, नादानीनुमा कार्य।

लड़ऊछाप – (व.मु.) अस्तित्व विहीन, नगण्य व्यक्ति।

लड़िकबा – (विशे.) जो अभी नौजवान हो, चलता– फिरता जो हृष्ट– पुष्ट हो।

लड़कुड्डी – (सं.पु.) छोटे–छोटे बच्चों का समूह।

लड़कोर – (विशे.) जिस नारी की गोद में दुधपीमा बच्चा हो।

लड़िअमफूस – (ब.मु.) ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई कीमत न हो।

लड़िहौं – (क्रिया) लड़ूँगा, लड़ूँगी–भिड़ूँगी, भिड़ूँगा।

लड़बेय – (क्रिया) लड़ोगे, लड़ोगी–भिड़ोगे, भिड़ोगी।

लड्डुआ – (सं.पु.) लड्डू, गुड़–घी का बना विशेष लड्डू।

लड़किहाई – (विशे.) बचपना, बचकानी हरकत, गर्भवती।

लड़ेसब – (क्रिया) मैथुन क्रिया करना, किसी पर दबाव बनाना।

लतरा – (सं.पु.) ढीला पुराना टूटा जूता, स्त्री.लिंग 'लतरी'।

लतमार – (सं.पु.) मार खाते रहने वाला,जो मार खाने के बाद पुनः वहीं आता हो।

लतखोर – (विशे.) जो मार खाकर भी शर्म न माने, हमेशा लात खाने वाला।

लत्ता – (सं.पु.) पुराने वस्त्र का टुकड़ा, चिथड़े युक्त कपड़ा।

लत्ती – (सं.स्त्री..) पीछे से पैर में पैर अड़ाना, 'लत्ती मारब', ब.मु.।

लतिआउब – (क्रिया) किसी को लात से मारना, लात से हटाना, तिरस्कृत करना।

लदर फदर – (विशे.) अस्त–व्यस्त, तितर–बितर, अव्यवस्थित।

लदकब – (क्रिया) किसी के ऊपर चिपकना, सटना, ऊपर चढ़ना।

लदकाउब – (क्रिया) अपने ऊपर चढ़वाना, किसी को छुपका लेना।

लद्धर – (विशे.) लपोचड़ा, कमजोर, अयोग्य, मन्दबुद्धि वाला।

लदाउब – (क्रिया) किसी पर लदवाना, लाद का कार्य करवाना।

लद्लद् – (अव्य.) ऊपर से गीली मिट्टी गिरने से उत्पन्न आवाज।

लदेरब – (क्रि.वि.) गीली मिट्टी के ऊपर क्रमशः गीले लोदे रखते जाना, गीली मिट्टी से छापना।

लन्घन – (सं.पु.) लम्बी बीमारी के कारण दाना–पानी का छूटना।

लन्गाब – (क्रिया) लंगड़ाना, लंगड़ाकर चलना।

लन्कलाठ – (सं.पु.) सफेद कपड़ा, एक श्वेत कपड़े की किस्म।

लन्ठ – (विशे.) जड़, मूर्ख, अपढ़, अँगूठा छाप।

लन्ठऊँ – (विशे.) मूर्खों की तरह, अनपढ़ की भाँति, जैसे जड़ बोलते हैं।

लप्पड़ – (सं.पु.) तमाचा, हथेली या गदेली।

लप्पड़िआउब– (क्रि.वि.) तमाचा मारना, झापड़ लगा देना, पीटना।

लपकब – (क्रिया) चमकना, स्पष्ट दिखना, चमकीला होना।

लपकाउब – (क्रिया) चमकाना, चमक दिखाना, थोड़ा सा दिखाकर बंद कर लेना।

लपर्री – (विशे.) बड़े–बड़े चौड़े पत्ते, लप–लप बीच में बोलने वाली, पु. लपर्रा।

लपलपाब – (क्रिया) जीभ लिपलिपाना, चमकना, सजा–धजा दिखना।

लपर लपर – (अव्य.) जल्दी–जल्दी बोलना, जो मन में आये वही बोलना।

लपसी – (सं.स्त्री..) सिघाड़े या कद्दू की खीर, 'लपसी कस चाटब', ब.मु.।

लपकहा – (सं.पु.) जो आदी हो गया हो, जिसे लपक लग गई हो।

लपकउरी – (ब.मु.) बिना लागत व मेहनत के मिलने वाली उपलब्धि, ब.मु।

लपरचिपिर – (अव्य.) अविश्वसनीय एवं अपुष्ट बातें, ठकुरसोहाती, चापलूसी।

लपक झपक – (विशे.) चमक–दमक, ताम–झाम, दिखावा, जंका–मंका।

लपकई – (विशे.) लपक लेने वाली प्रवृत्ति, वस्तु छिपा देने की आदत।

लपलपाउब – (क्रिया) लिपलिपाना,हल्की ज्योति दिखाना।

लपटउआ – (सं.पु.) कपड़े या शरीर पर लिपट जाने वाली घास विशेष।

लपोचर – (विशे.) ढीला–ढाला, सुस्त एवं अलाल, चैतन्यता रहित, लपोचड़ा।

लपटाउब – (क्रिया) चिपकाना, लिपटवाना, लगा देना, भिड़ने हेतु प्रेरित करना।

लँपहा – (सं.पु.) लापा वाला खेत, वह मेड़ जहाँ लापा घास उगी हो।

लपटा – (सं.पु.) बिना मठा की मसालेदार ग्राम्य कढ़ी।

लपेटब – (क्रिया) लपेटना, लेपन करना, गन्दगी लगाना, लपेट में ले लेना।

लपटब – (क्रिया) लिपटना, चिपकना, भिड़ना, झगड़ना, मन मिलना।

लफब – (क्रिया) भार के कारण झुकना, मुड़ जाना या लटक जाना।

लफाउब – (क्रिया) वस्तु को झुकाना, ऊँची डाल को नीचे करना।

लबरी – (विशे.) झूठ, पूर्ण असत्य, बिल्कुल गलत।

लबरा – (विशे.) झूठ बोलने वाला, सदा अपुष्ट बात करने वाला, गप्पी।

लबराउब – (क्रिया) झूठ बोलकर ललचाना, झुठलाना।

लंबरी – (सं.स्त्री..) सौ की नोट, नम्बर वन का, चतुर चालाक (विशे.)।

लबेद्धा – (सं.पु.) लकड़ी या बाँस का टुकड़ा, पेड़ से फल तोड़ने वाली डंडी।

लबन्डा – (सं.पु.) नये उम्र का लड़का, नादान एवं नासमझ बालक।

लभेर – (सं.पु.) एक औषधीय वनस्पति।

लभक – (सं.पु.) प्रलोभन भरी आदत, पड़ी हुई आदत।

लमहर – (विशे.) लम्बे ढाचे की, लम्बी या लम्बाई में अधिक।

लमेरा – (सं.पु.) ऐसे पौध जो बिना बीज बोये अपने आप उग आये हों।

लमतुतुरा – (विशे.) लम्बे मुँह वाला, जिसके मुँह का आकार लम्बा हो।

लमछर – (विशे.) लम्बे कद का, पतला किन्तु लम्बा, कुछ दूर तक।

लमडोर – (विशे.) बहुत दूर, बहुत लम्बा, लम्बी डोरी।

लम्पट – (विशे.) अंकुशबिहीन, अवारा, तोड़–फोड़ करने वाला, लोफड़।

लमढेका – (विशे.) जो मोटा कम लम्बा अधिक हो, पतला और काफी लम्बा कद।

लमधी – (सं.पु.) समधी का पिता, समधी का भाई।

लरबहना – (सं.पु.) जिसके लार अधिक बहती हो, बात करने में लार टपकाने वाला व्यक्ति।

लर – (सं.स्त्री..) लड़ी, धागे की एक परत।

लरम – (विशे.) कमजोर, दुबला–पतला, मुलायम, नाजुक, दुर्बल।

लरिआउब – (क्रिया) मुँह के अन्दर निवाला को लार से गीला करना।

ललछर – (विशे.) हल्का लाल रंग का, लालिमायुक्त।

ललतहा – (सं.पु.) जिसके लिये दुर्लभ रहा हो, जो पाने के लिए तरसता रहा हो, जो लालायित रहा हो।

ललोतर – (विशे.) हल्का गुलाबी, नाम मात्र की लालिमा।

ललमुहा – (सं.पु.) लाल मुँह का बन्दर, लाल चेहरे वाला व्यक्ति।

ललुआ – (सं.पु.) बन्दर के लिए सम्बोधन, किसी व्यक्ति का नाम।

ललई – (सं.स्त्री..) लड़की या बेटी, किसी लड़की का नाम।

ललकबा – (विशे.) लाल रंग वाला, जो लाल–लाल हो।

ललईआब – (क्रिया) बेटी–बेटी चिल्लाना, बेटी के लिए ललकना।

ललाब – (क्रिया) ललकना, लाल होना, क्रोधित होना, खून से लथपथ होना।

ललबाउब – (क्रिया) ललचवाना, रंग से लाल कर देना, सिर फोड़वाना।

ललान – (विशे.) जो पककर लाल हो गया हो,लालिमायुक्त,गुस्से में भरा हुआ।

ललकब – (क्रिया) ललचना, ललकते रहना, देखने के लिए व्याकुल रहना।

ललमटिया – (सं.स्त्री..) लाल रंग की मिट्टी, लाल–लाल मिट्टी की कंकड़ी।

ललबा – (सं.पु.) परम प्रिय एवं प्यारा, लाड़ प्यार में पला लड़का।

ललइया – (सं.पु.) प्राणप्रिय शिशु, छोटे बच्चे के लिए स्नेहिल सम्बोधन।

लसकब – (क्रि.वि.) रस जाना, कमर हिलाकर हिलना–डुलना।

लसर भसर – (विशे.) अव्यवस्थित, असज्जित, बिना सजे–संवरे।

लसफोसड़ – (विशे.) जो ढीला–ढाला व असफल हो, लुंज–पुंज, शिथिल व अचैतन्य।

लसरघंटिहा – (ब.मु.) छोटा–मोटा व्यक्ति, ऐरा–गैरा व्यक्ति, प्रतिष्ठा रहित।

लसगर – (सं.पु.) सजे हुए हाथी–घोड़े, सजी हुई तैयार सेना।

लसिआब – (क्रिया) लासी से युक्त होना, बालों का अकड़ जाना, बालों का चिपचिपा होना।

लसिआन – (विशे.) पत्तों में प्ररस का चिपका होना, तेल से बालों का चिपचिपा बन जाना।

लसेटब – (क्रिया) अचार या फल में तेल तथा मशाला मिलाना।

लसलसाउब – (क्रिया) लहा पटाकर प्राप्त कर लेना, मिलाकर कार्य सिद्ध करना।

लहकब – (क्रिया) पके घाव में कम्पन होना, दर्द होना।

लहत्तर बहत्तर– (अव्य.) लाग लगना, समय सापेक्ष होना, ब.मु.।

लहँदरा – (सं.पु.) जल वृष्टि का एक दौर, अच्छी खासी वर्षा।

लहकउर – (सं.स्त्री..) द्वारचार के समय साले द्वारा खिलायी जाने वाली परम्परागत पूड़ी।

लहाउब – (क्रिया) मिलाना–पटाना, आकर्षित करना, अपने अनुरूप करना, मैथुन क्रिया।

लहबाउब – (क्रिया) दूसरे से मैथुन करवाना, व्यवस्था बनवाना।

लहरपटोर – (सं.पु.) पुराने चाल का लहरियादार रेशमी कपड़ा विशेष।

लहरिआब – (क्रिया) थककर लस्त हो जाना, बेचैन होकर सुस्त पड़ जाना।

लहिला – (सं.पु.) चना का पौध, चना।

लहिलहा – (सं.पु.) चना का खेत, जहाँ चना के पौध उगे हों।

लहँगिया – (सं.स्त्री..) बच्चों के छोटे–छोटे लहँगा, पुलिंग 'लहँगा'।

लहटब – (क्रिया) आदतन बार–बार वही करना, आदत में शुमार हो जाना।

लहटीरी – (सं.स्त्री..) इशारा व संकेत से उत्प्रेरित, रास्ता बताना, चुभा देना।

लहलेंदबा – (सं.पु.) फाग लोकगीत की एक किस्म, बिना रूकावट व अवरोध के।

लहाउर – (सं.पु.) ससुराल, समधी का गाँव, गाँव से बहुत दूर।

लहास – (सं.स्त्री..) मृत शरीर, मुर्दा, पार्थिव शरीर।

लहउबेय – (क्रिया) व्यवस्था बनाओगे, करोगे।

लहुर – (विशे.) उम्र में छोटा, कनिष्ठ, लघु, बाद में जन्मा।

लहुरबा – (विशे.) सबसे छोटा वाला, अन्तिम वाला भाई, चाचा आदि, स्त्री.लिंग 'लहुरिया'।

लहर–तहर – (ब.मु.) जी का ललचना, तरसने के कारण धैर्य सा टूटना।

ला

लाई – (सं.स्त्री..) धान का फूटा, चबेना, चुगुली, 'लाई लगाउब', ब.मु.।

लाईदुआ – (ब.मु.) भिड़ने–भिड़ाने वाली बातें, शिकायत एवं कानाफूंसी।

लाँक – (सं.स्त्री..) बाल एवं डंठल सहित कटी हुई रबी की फसल।

लाखब – (क्रिया) लाख पदार्थ को गरम कर जोड़ना।

लागब – (क्रिया) दुधारू पशु का दूध देना, कर्ज की उधारी, लगना या संलग्न होना।

लाग बाग – (अव्य.) हिसाब–किताब, जुगाड़ बैठना, समय संयोग बनना।

लाघन – (सं.पु.) उल्लंघन करना, लम्बी बीमारी, लम्बा उपवास।

लाँच – (सं.स्त्री..) घूँस, उत्कोच, कार्य कराने के बदले प्रदत्त प्रलोभन।

लाजा–ढीठी – (ब.मु.) लज्जावश मन न होते हुए भी किसी कार्य को करना।

लाटा – (सं.पु.) महुए का लड्डू, अत्यधिक तालमेल, 'लाटा कटब', ब.मु।

लाठ – (सं.स्त्री..) तालाब उद्घाटन में गाड़ी जाने वाली मोटी एवं बड़ी लकड़ी विशेष।

लात – (सं.पु.) पैर, पाँव, तलबा।

लानत – (सं.स्त्री..) धिक्कार, भर्त्सना।

लाने – (अव्य.) वास्ते, लिए, हेतु।

लॉपा – (सं.पु.) काँटेदार एक घास विशेष।

लाफ – (सं.पु.) सूर्य की किरण की ज्योति आँख पर पड़ना।

लाबा – (सं.पु.) एक पक्षी,धान का फूटा, लाओ, मण्डप के नीचे की एक परम्परा।

लाम – (विशे.) लम्बा, लम्बे ढाँचे का, लम्बवत आकार।

लाये जोरे – (ब.मु.) बनाया हुआ रिश्ता, जोड़–तगोड़, कृत्रिम, ब.मु.।

लाह – (सं.पु.) गोंद की तरह पेड़ का एक पदार्थ, चिढ़ाकर परेशान करना।

लाहन – (सं.पु.) लादकर लाई गई वस्तु, पर्याप्त मात्रा में सामग्री का होना।

लाहालूट – (ब.मु.) सदावर्त, बिना श्रम व मूल्य के वस्तु की प्राप्ति।

लि / ली

लिखिया – (सं.स्त्री..) जूँ के श्वेत अण्डाणु।

लिखइया – (सं.पु.) लिखने वाला, लेखक, लेखनकर्ता।

लिजिर्रा – (विशे.) लम्बा एवं लोचदार, एक छोर पकड़ने से नीचे झुक जाने वाला।

लिजुरी – (सं.स्त्री..) पानी खींचने वाली रस्सी।

लिपिर्रा – (सं.पु.) निरर्थक बातें करने वाला, चापलूसी करने वाला।

लिपाउब – (क्रिया) लिपवाना, सफाई करवाना।

लिरबिट – (विशे.) चिपचिपा, गोंद जैसा चिपकने वाला पदार्थ।

लिलार – (सं.पु.) मस्तक, ललाट, माथा, भाग्य।

लिल्लाम – (सं.पु.) नीलाम, 'लिल्लाम होब', ब.मु.।

लिलिया – (सं.स्त्री..) शिशुओं का नीले रंग वाला वस्त्र विशेष।

लिल्ली – (विशे.) नीले रंग वाली, लिल्ली घोड़ी, ब.मु.।

लीचड़ – (विशे.) अति ढीला, लापरवाह, सुस्त व कामचोर।

लीझी – (विशे.) लुंज–पुंज हो जाना, ताकत रहित, प्राण बिहीन।

लीदी – (सं.स्त्री..) हाथी या घोड़े की टट्टी 'लीद निकारब' ब.मु.।

लीपब – (क्रिया) लिपाई या पुताई करना, नष्ट कर देना।

लील – (विशे.) नीला, नील, नीला रंग, चोंट लगने से नीला हो जाना।

लीलब – (क्रिया) निगलना, निगल लेना।

लु/लू

लुआठी – (सं.स्त्री..) जलती लकड़ी का अंगार, अँगरिया, पुलिंग लुआठा।

लुकब – (क्रिया) छिपना, अदृश्य होना, छुप जाना।

लुकबाउब – (क्रिया) छिपवाना, छुपा लेना, गुप्त रखना।

लुका लुकउहल–(क्रि.) लुका–छिपी का बच्चों वाला एक खेल विशेष।

लुगरी – (सं.स्त्री..) फटी–पुरानी साड़ी, एकदम जीर्ण–शीर्ण धोती।

लुटुरा – (विशे.) छल्लेदार बाल, मुड़े हुए बालों वाला।

लुटुरियाब – (क्रिया) छल्लेदार बालों का होना, मुड़ जाना।

लुटुरपुटुर – (अव्य.) खाने के लिए जीभ का आतुर होना, जीभ की बेचैनी।

लुढ़ी – (सं.स्त्री..) पेट की माँसपेशी की परतदार स्थिति।

लुढ़ियाब – (क्रिया) लुढ़ी पड़ जाना, आटा में कीड़े पड़ना।

लुडुँइया – (सं.स्त्री..) धान के भुने हुए फूटे एवं गुड़ का पाग, फूटे का लड्डू।

लुड़िआउब – (क्रिया) खराब करना, बनाते–बनाते और बिगाड़ देना।

लुड़ियाब – (क्रिया) बिगड़ जाना, गड़बड़ हो जाना, विकृत होना।

लुड़खुड़िया – (सं.पु.) छोटे कद–काठी का शिशु।

लुलआब – (क्रिया) लालच बस इसके–उसके पीछे घूमना, लालच के कारण फिरना।

लुलबा – (विशे.) जो लूला हो, एक हाथ से अपंग।

लुलूलुलू – (ब.मु.) चापलूसी करना, लुलू–लुलू करब, ब.मु.।

लुसिया – (सं.पु.) शिकायत, कानाफूसी, खोपिया।

लुसिआब – (क्रिया) लूट लेना, छुड़ा लेना, धता पढ़ाकर ले लेना।

लुसुर लुसुर – (विशे.) दौड़–दौड़कर चलना, दौड़–दौड़कर कार्य करना, ब.मु.।

लुसकँइया – (विशे.) दौड़ते हुए चलने की शैली, कुत्ते की भाँति चाल।

लूकब – (क्रिया) जलती आग से दागना, आग लगाना।

लूकी – (सं.स्त्री..) लकड़ी में जली आग, 'लूकी लगाउब', ब.मु.।

लूमर – (विशे.) कम उम्र वाला, नौजवान, नवयुवक।

लूल – (विशे.) हाथ से विकलांग, एक हाथ से अपंग।

लूसी – (क्रि.वि.) 'लूसी लगाउब' (ब.मु.), शिकायत, कानाफूंसी।

ले

लेउ – (सं.पु.) गीली मिट्टी का खेत, पानी भरा हुआ खेत।

लेचरा – (विशे.) लंगड़ाकर चलने वाला, जो सीधे न चल पाता हो।

लेचराब – (क्रिया) लंगड़ाकर चलना, असामान्य क्रिया।

लेझर – (सं.पु.) गाय–भैंस के योनि से उत्सर्जित श्वेत एवं रेशेदार पदार्थ।

लेझराब – (क्रिया) मादा पशु के मूत्रांग से श्वेत रेसेदार पदार्थ निकलना।

लेटब – (क्रिया) अचार के फल में मशाला मिलाना, मशाले में फल डुबाना।

लेड़ी – (सं.स्त्री..) बकरी की टट्टी, गोटीदार टट्टी, पुलिंग 'लेंड़ा'।

लेड़िआब – (क्रिया) झेंप जाना, अक्ल का मन्द हो जाना।

लेड़ीहा – (सं.स्त्री..) लेड़ी से आच्छादित खेत या जगह।

लेदा – (सं.पु.) लेद, पेट का मांसल भाग, स्त्री.लिंग 'लेदी'।

लेब – (क्रिया) लेना, ले लेना, ग्रहण करना।

लेबउआ – (सं.पु.) बुलाने के लिए आया हुआ मेहमान, बुलाने वाला।

लेबाला – (सं.पु.) देवी–देवताओं को चढ़ाने वाला प्रसाद विशेष।

लेमाड़ी – (सं.स्त्री..) गर्दन, पुलिंग, 'लेमड़'।

लेसब – (क्रिया) प्रज्जवलित करना, जलाना, ज्योति युक्त करना।

लेंहड़ – (स.पु.) समूह, अधिक संख्या में समुदाय।

लेहेचुआ – (सं.पु.) काष्ठ का बना ग्रामीण झूला।

लेहलेह – (ब.मु.) किसी की हँसी उड़ाना, 'लेह लेह लेब', ब.मु.।

लो

लोई – (सं.स्त्री..) रोटी बनाने के लिए बनाया गया गोल आकार।

लोइआउब – (क्रि.वि.) गोली टिकिया आटे की बनाना।

लोकब – (क्रिया) कैच करना, पहले ही ऊपर से पकड़ लेना।

लोकइया – (सं.पु.) कैच करने वाला, 'लोकइया कस घोड़ी बागब', ब.मु.।

लोकाचार – (सं.पु.) लोक रीति, लोक परम्परा, लोक रिवाज, प्रचलित व्यवहार।

लोकाउब – (क्रिया) पकड़वाना, उछालकर कैच करवाना।

लोकबे – (क्रिया) लोकोगे, पकड़ोगे, कैच लोगे, लोकेंगे क्या ?

लोखरी – (सं.स्त्री..) लोमड़ी, एक जंगली जानवर।

लोखरफंद – (ब.मु.) मूर्ख बनाना, झटका मारना, दगाबाजी करना, पाठ पढ़ाना।

लोगाई – (सं.स्त्री..) पत्नी, विवाहिता नारी।

लोगबा – (सं.पु.) पुरुष, किसी का मर्द, पति।

लोगबाग – (सं.पु.) आम लोग, आवाम्, जनमानस, आम जनता।

लोचई – (सं.स्त्री.) एक प्रकार की अच्छी धान की किस्म।

लोचा – (सं.पु.) पाँच उगुलियों से निकला मक्खन, घी का पिण्ड।

लोटब – (क्रिया) जमीन पर लोटना, पड़ना, आराम करना।

लोटरब – (क्रिया) धूल–धूसरित होना, कचड़े में सन जाना।

लोटारब – (क्रिया) कीचड़ में घसीटना, धूल में कपड़े का सन जाना।

लोटइया – (सं.पु.) लोटने वाला व्यक्ति, छोटे आकार की लोटिया (सं.स्त्री.)।

लोटिया – (सं.स्त्री..) छोटे मुख का लोटा, पुलिंग 'लोटबा'।

लोठ – (सं.पु.) जली लकड़ी का अंगार, आग का जला अंगार।

लोठँगरा – (सं.पु.) मोटी लकड़ी का अंगार, स्त्री.लिंग 'लोठँगरी'।

सइना (सं.स्त्री.) सेना, कार्यकर्तागण, घर के छोटे बच्चे।
सइना मइना(ब.मु.) घर के छोटे–बड़े सयानों का समूह।

लोठिआउब – (क्रिया) कुछ न देना, तिरस्कृत कर देना, अँगूठा दिखा देना।
लोढ़ – (सं.पु.) बड़ी शिला, बेलनाकार पत्थर।
लोढ़बा – (सं.पु.) मशाला महीन करने वाला पत्थर, स्त्री.लिंग 'लोढ़िया'।
लोढ़ाढार – (सं.पु.) एक ग्राम्य देवता का नाम।
लोढ़ामा – (सं.पु.) बड़े–बड़े आम, आम विशेष का नाम।
लोथ – (सं.स्त्री..) लाश, शव, मृत शरीर, 'लोथ डारब', ब.मु.।
लोथरा – (सं.पु.) खून का कतरा, माँस के टुकड़े।
लोंदर – (सं.पु.) अच्छा–अच्छा पाने की इच्छा वाला, 'बड़े लोदर हैं', ब.मु.।
लोंदा – (सं.पु.) गीली मिट्टी का पिण्ड, मक्खन का पिण्ड।
लोनगी – (सं.स्त्री..) एक धान विशेष का नाम।
लोनिया – (सं.पु.) मिट्टी डालने वाली एक जाति, एक भाजी विशेष (सं.स्त्री..)।
लोन – (सं.पु.) नमक, दाना पानी का कद्र।
लोनखर – (विशे.) खारापन, नमकीन स्वाद, नमक सा खारापन।
लोनचा – (सं.पु.) नमक से लपेटा गया अचार, नमक लपेटकर सुखाया गया अचार।
लोरा – (सं.पु.) पिण्डली, पाँव की माँसपेशी वाला भाग।
लोरब – (क्रि.) तैरना, पैरना, जल पर उतराना।
लोलराब – (क्रिया) दुलार करना, वात्सल्य सना व्यवहार करना।
लोलार – (सं.पु.) अति प्राण प्रिय, सबसे छोटा पुत्र।
लोलबटइया – (सं.पु.) अति प्रसन्नता प्रदर्शित करने वाला पुलक भरा शब्द।
लोलोकमनिया– (ब.मु.) जो सराहने पर बिगड़ जाय, जो हँसने पर रोने लगे।
लोलरी – (सं.स्त्री..) परम प्रिय बिटिया, किसी की अन्तिम बिटिया, लाड़ली।
लोहुआन – (विशे.) खून से लथपथ, लहूलुहान।
लोहकउर – (सं.पु.) द्वारपूजा के समय वर को साले द्वारा खिलाने की एक रस्म।
लोहहाइन – (सं.पु.) लोहे जैसी गन्ध, पानी में लोहे का स्वाद।
लोहखड़ – (सं.पु.) वयस्क व्यक्ति का पुरुष मूत्रांग।
लोहवान – (सं.पु.) सवारी आने पर हवन किये जाने वाला एक पदार्थ विशेष।

स

सइका – (सं.पु.) खलिहान में संचित फसल का ढेर, स्त्री.लिंग 'सइकी'।
सइगर – (विशे.) चावल का पकने पर अधिक दिखना या होना।
सइगराब – (क्रिया) कार्य निपटाने में शीघ्रता का होना,पके पदार्थ का अधिक होना।
सइघ – – (सं.पु.) पूरा–पूरा, अखण्ड, एक इकाई, सम्पूर्ण।
सइतान – (सं.पु.) शैतान, शरारती, उपद्रवी।
सइतानी – (क्रि.वि.) शैतानी, शरारत, ऊधम, उपद्रव करना।

सइँथब – (क्रिया) सँजोकर व्यवस्थित रखना, बचाकर रख रखाव करना, उठाकर जमीन पर पटक देना।

सइथबाउब – (क्रिया) हिफाजत के साथ रखवाना, संचित कराकर धराना।

सइना – (सं.स्त्री..) सेना, कार्यकर्तागण, घर के छोटे बच्चे।

सइना मइना – (ब.मु.) घर के छोटे–बड़े सयानों का समूह।

सइरब – (क्रिया) गोबर को उठा–उठाकर एक जगह एकत्र करना।

सइराब – (क्रिया) कार्य की तीव्र क्षमता होना, काम करने में जल्दी होना।

सइरी – (सं.स्त्री..) अँगीठी, आग जलाने का मिट्टी–पात्र।

सइला – (सं.पु.) कंधारी का मेख, शैला गीत, हल के जुए की लकड़ी।

सउखि – (सं.स्त्री..) शौक, शौक–शान।

सउखिआब – (क्रिया) शौक करना, शौक दिखाना, शौक का प्रदर्शन करना।

सउखिआन – (विशे.) जिसे शौक चढ़ी हो, शौक–शान का जिसे जुनून हो।

सउखी – (सं.पु.) शौकीन, जो टीम–टाम बनाये रहता हो।

सउँजि – (सं.स्त्री..) नकल, बराबरी, अनुकरण।

सउदा – (सं.पु.) सौदा, सामान, वस्तु, चीज।

सउदहा – (सं.पु.) ऐसा क्षेत्र जहाँ साग–सब्जी लगाई गई हो।

सउम्ह – (विशे.) सीधा, सीधा–साधा, सही, सरोतल, सपाट।

सउम्हट – (विशे.) बिल्कुल सीधे–साधे, बिना लेपन एवं लाग लपेट के।

सउम्हाब – (क्रिया) उन्मुख होना, सीधा होना, तत्पर होना, मन बनाना।

सउम्हाउब – (क्रिया) सीधा करना, सीधा अर्थ ग्रहण करना।

सउँचब – (क्रिया) शौच करना, मल त्याग के बाद पानी लेने की क्रिया।

सउँचाउब – (क्रिया) किसी को शौच कराना, शौच क्रिया करवाना।

सउँचबाउब – (क्रिया) किसी से शौच क्रिया करवाना, मलद्वार साफ करवाना।

सउँपब – (क्रिया) सौंपना, किसी के हवाले करना, समर्पित करना।

सउँपाउब – (क्रिया) सौंपवाना, सौंपने में सहयोग करना।

सउँपबे – (क्रिया) सौंपोगे, सौंपोगी, क्या समर्पित करोगे।

सउँपी – (क्रिया) सौंपिए, सौंपे? समर्पित करें?

सउँपइया – (सं.पु.) समर्पित करने वाला, सौंपने वाला व्यक्ति।

सउँथारब – (क्रिया) किसी निमित्त संजोकर रखे रहना।

सउरि – (सं.स्त्री..) वृक्ष की जमीन के भीतर फैली पतली जड़ें।

सउँ–विसौं – (ब.मु.) कम अधिक, छोटा–बड़ा, उन्नीस–बीस का होना।

सउँफ – (सं.स्त्री..) सौंफ, जीरा की भाँति मसाला।

सकबन्ध – (विशे.) असमंजस्य, संदेह, दबावपूर्ण अवस्था।

सँकरिआब – (क्रिया) सँकरा होना, संकट व संकोच में पड़कर सिमटना, मजबूरी महसूस करना।

सकरिआउब – (क्रि.) संकरा करना, कार्य कराने के लिए संकट में डाल देना, किसी को मजबूर करना।

सकरिआन – (विशे.) मजबूरी में फँसा हुआ, दबाव ग्रस्त।

सकब – (क्रिया) शंका करना, विश्वास न करना, संदेह करना।

सकहा – (सं.पु.) श्वास का रोगी, शंकालु व्यक्ति।

सकार – (सं.पु.) समय से पूर्व का समय, प्रातःकाल, सूर्योदय।

सकरभर – (अव्य.) समय से पहले, सुबह से पूर्व, सुबह से।

सकारे – (सं.पु.) सुबह ही, समय से पहले ही, सुबह–सुबह, प्रातः काल।

सकेत – (विशे.) सँकरा, मजबूरी, गरीबी, संकीर्ण या छोटा।

सकपकाब – (क्रिया) घबड़ाना, आशंकित होना, विचलित हो जाना।

सकर–पकर – (अव्य.) धौं–विधौं की स्थिति, डरी हुई स्थिति।

सकला – (सं.पु.) शकरकन्द, कन्दमूल, हवन सामग्री।

सकिलब – (क्रिया) सिकुड़ना, संकोच करना, संकुचन होना।

सकोलब – (क्रिया) वस्तु को सिकोड़ना, फैली वस्तु को समेटना।

सकिलबाउब – (क्रिया) फैले सामान को समेटने में सहयोग करना।

सकत – (सं.पु.) यथा संभव, भरसक, हिम्मत भर।

सकाब – (क्रिया) भीतर घुसना, अन्दर हो जाना, प्रवेश होना।

सकबाउब – (क्रिया) अन्दर घुसवाना, घुसेड़ना, जबरिया डालना।

सकोनत – (अव्य.) एकदम तिरछा, दो दिशा के बीच का कोंण।

सँकरी – (सं.स्त्री..) साँकल, करधन, पतली या संकीर्ण।

सखार – (विशे.) नमकीन, अधिक खाना, आवश्यकता से अधिक नमक का होना।

सगुनउती – (सं.स्त्री..) सगुण, शुभ–मुहूर्त, शुभ– लग्न, सुई उठाना।,

सगुड़ई – (सं.पु.) छोटे–छोटे बच्चों का समूह, बच्चों की अधिकता, बच्चे।

सगुनब – (क्रिया) कपड़े में साबुन लगाना, साबुन से कपड़ा साफ करना।

सगमन – (सं.पु.) सागौन, सागौन का वृक्ष।

सगमनिहा – (सं.पु.) जहाँ सागौन के वृक्ष लगे हों वह प्रक्षेत्र।

सग – (सं.पु.) सगा, नजदीकी।

सगला – (सं.पु.) सम्पूर्ण, पूरा।

सँघरब – (क्रिया) सँटकर बैठना, नजदीक आना, पास होना।

सँधारब – (क्रिया) रस्सी से पैर बाँधना, बाँधकर वस में करना।

सँधरबाउब – (क्रिया) रस्सी से बँधवाना, बाँधने में मदद करना।

सजाब – (क्रिया) अचार का गलकर स्वादिष्ट होना।

सजबाउब – (क्रिया) बहुत दिनों तक रखकर खाने योग्य बनाना।

सजान – (विशे.) पुराना एवं स्वादिष्ट अचार, खाने योग्य अचार।
सजनी – (सं.स्त्री..) सजावट, तैयारी, साज– सज्जा।
सजब – (क्रिया) सजना–सँवरना, पोषाक धारण करना, सजना–धजना।
सजाउब – (क्रिया) किसी को सजाना, साज–सजावट कराना।
सजबइया – (सं.पु.) साज–सज्जा करने वाला, सजावट कर्ता।
सजबेय – (क्रिया) सजोगे, सजाओगे, सजावट करोगे।
सँझबाती – (क्रिया) संध्या की पूजा, सायंकालीन दीप जलाना।
सझउरा – (सं.पु.) साझेदारी, दो के आधिपत्य वाली, भागीदारी।
सझीहा – (सं.पु.) साझेदार, हिस्सेदार, भागीदार।
सटकब – (क्रिया) भाग जाना, गायब होना, निकल जाना, फिसल जाना।
सटकाउब – (क्रिया) मुक्त करवाना, भगाना, गायब करा देना।
सटकबइया – (सं.पु.) छुटक कर भागने वाला, छुटकारा दिलाने वाला, भगाने वाला।
सटाका – (सं.पु.) लचीली छड़ी, तीव्रता के साथ।
सट्ट सट्ट – (अव्य.) लचीली छड़ी शरीर पर मारने से उत्पन्न ध्वनि।
सटर सिटिल – (अव्य.) एकदम ढीला–ढाला, ढीली चप्पल से उत्पन्न आवाज।
सटासट्ट – (विशे.) बिना रूके–थमे, एक बारगी, तुरत–फुरत।
सँटबाउब – (क्रिया) अपने आपसे किसी को चिपकवाना, संलग्न करवाना।
सँटबा गोटबा – (ब.मु.) मिली भगत, पूर्व से सुनियोजित।
सटल – (सं.स्त्री..) एक ट्रेन का नाम, व्यवस्था या जुगाड़।
सटिल्ल सटिल्ल – (विशे.) ढीली चप्पल पहनकर चलने में होने वाली आवाज।
सँटई – (सं.स्त्री..) पतली छड़ी, लचीली हरी छड़ी।
सटब – (क्रिया) किसी से साथ चिपकना, संलग्न होना, अपने अनुरूप कर लेना।
सँटबइया – (सं.पु.) संलग्न करने वाला, साँटने वाला व्यक्ति।
सठिआब – (क्रि.वि.) बूढ़ा होना, अक्ल काम न करना, बुद्धि नष्ट होना।
सठ – (सं.पु. / वि.) जड़, दुर्जन, मूर्ख, नासमझ।
सडीलन – (सं.पु.) स्वयं, सशरीर, खुद।
सढ़ करब – (क्रिया) पानी–पानी करना, सीधा कर देना, भाव उतार देना, सही रास्ते में ला देना, ब.मु।
सढुआन – (सं.पु.) साढ़ू का घर, साली की ससुराल, 'सढुआउर'।
सढुआइन – (सं.स्त्री..) साढ़ू की पत्नी, पत्नी की बहन।
सड़ा–गला – (ब.मु.) ताल–मेल, मेल–मिलाप, राय बैठना।
सड़ासड़ – (विशे.) एकदम, खुलेआम।
सड़किआउब – (क्रिया) छड़ी से पीटना, छड़ी से मार लगाना।
सड़उब – (क्रिया) सड़ाना, किसी पदार्थ को बदबूदार बनाना, गलाना।

सड़बाउब – (क्रिया) सड़ाने–गलाने में योगदान करना, सड़वाना–गलवाना।
सड़ाका – (सं.पु.) साँटी या छड़ी, सपाट व सीधा।
सतमेर्रा – (सं.पु.) कई प्रकार के अनाजों का मिश्रित रूप।
सतावरि – (सं.स्त्री..) एक वनौषधि का फल।
सतनहा – (सं.पु.) सतना का रहने वाला व्यक्ति, जो सतना में जन्मा हो।
सतउरी – (सं.स्त्री..) गुदा द्वार, मल द्वार, 'सतउरी फराउब', ब.मु.।
सतमासा – (सं.पु.) सात महीने में ही जन्मा शिशु।
सतइसा – (विशे.) शिशु जन्म के समय के अशुभ नक्षत्र, सत्ताइस दिन में होने वाला बरहौं संस्कार।
सतइसहा – (सं.पु.) वह शिशु जो अशुभ नक्षत्रों में जन्मा हो, स्त्री.लिंग 'सतइसही'।
सताउब – (क्रिया) सताना, दुख देना, कष्ट पहुँचाना।
सत्तिहा – (सं.पु.) सभी जाति धर्म एवं वर्ण के लोगों का समूह।
सतभतरी – (सं.स्त्री..) बदचलन एवं कुभार्या, वेश्या प्रवृत्ति वाली नारी।
सत्तिहौ – (विशे.) सभी, सैकड़ो, प्रत्येक, अगिनत, सभी जाति।
सथरी – (सं.स्त्री..) पुआल का विस्तर।
सथउरा – (सं.पु.) कष्टदायी साथ, साथ होने के लिए वक्रोक्ति शब्द।
सथिआउब – (क्रि.) संचित करके रखना, हिफाजत के साथ वस्तु को रखना।
सथिबइया – (सं.पु.) फैली वस्तु को संचित करने वाला व्यक्ति।
सदर – (सं.पु.) चलन, रीति, रिवाज, परम्परा, शैली।
सदँउ – (विशे.) हमेशा, सदा, सर्वदा, सदैव।
सधबइया – (सं.पु.) जो देखने को लालायित हो।
सधबाउब – (क्रिया) ललचाना, आकृष्ट कराकर लालायित करवाना।
सधाब – (क्रि.) चाहत होना, करने या पाने के लिये लालायित होना।
सधब – (क्रिया) काम का बन जाना।
सधान – (विशे.) ललकपूर्ण चाहत की स्थिति, लालायित।
सधउरी – (सं.स्त्री..) कार्य के प्रति लालसा, आतुरता युक्त आकांक्षा।
सन्न – (विशे.) शान्त, सन्नाटा, चुपचाप, एकदम मौन।
सनई – (सं.स्त्री..) सुतली, निकाली हुई लकड़ी या डंठल, एकदम सफेद।
सन्नाब – (क्रिया) चुप हो जाना, मौन साध लेना, शांत हो जाना।
सन्नासी – (सं.पु.) संन्यासी, जिसने घर गृहस्थी से संन्यास ले लिया हो।
सन्नसिहा – (सं.पु.) वह प्रक्षेत्र जहाँ संन्यासी का चबूतरा बना हो।
सन्चाब – (क्रिया) बोलते हुए चुप हो जाना, शान्त हो जाना।
सन्चाउब – (क्रिया) शान्त करवाना, चुप करवाना।
सनसनाब – (क्रि.वि.) अकड़ जाना, एकदम खड़ा एवं सीधा होना।
सनसनान – (विशे.) एकदम खड़ा एवं अकड़ी हुई स्थिति।

सनफनाब – (क्रिया) अस्वस्थ्यता से ग्रसित होना।

सनकी – (सं.स्त्री..) इशारा, आँख से एक संकेत।

सनकिआउब – (क्रि.) ईशारा करना, आँखों से संकेत करना।

सनकब – (क्रिया) रोते हुए का चुप होना, रोना बन्द करना।

सन्च – (विशे.) शान्त, साधारण, चुप, सीधी।

सन्चेन – (विशे.) चुपचाप, सीधे, धीरे से।

सनधि – (सं.स्त्री..) पोल, संधि, जगह, गुंजाइस, क्षिद्र।

सनानना – (सं.पु.) बोलने की एक टेक।

सनकटइया – (सं.स्त्री..) छिलका निकली हुई अमारी की लकड़ी, अति पतला (विशे.)।

सनाका – (विशे.) सन्नाटा, शांत वातावरण, आहट रहित, शून्य।

सन्गाता – (सं.पु.) साथ, कष्टदायी संगति।

सन्गतिहा – (सं.पु.) साथी या संगति करने वाला व्यक्ति।

सन्केत – (विशे.) संकीर्ण व संकरा, गरीबी या मजदूरी।

सन्केतिआउब – (क्रि.) किसी को दबाव देकर संकोच में डाल देना।

सँपोलबा – (सं.पु.) सर्प का बच्चा, सपोलबा, ब.मु.।

सफा – (विशे.) साफ, स्वच्छ, खाली, निर्जन, स्पष्ट।

सफरब – (क्रिया) साबुन लगाकर नहाना, साबुन से साफ करना।

सफइत – (विशे.) जो हमेशा साफ–सुथरा रहता हो, निर्दाग।

सफाचट्ट – (विशे.) एकदम साफ, दोनों आँखों से अंध, समूल नष्ट।

सबरस – (सं.पु.) सारा का सारा, सम्पूर्ण, सबकुछ, सर्वस्त्र।

सबुनब – (क्रिया) साबुन लगाना, साबुन से कपड़ा साफ करना।

सबुनिआउब – (क्रिया) साबुन लगाकर सफाई करना।

सबकोउ – (विशे.) सभी लोग, सभी जन, सामूहिक।

सबत्तर – (सं.पु.) सर्वत्र, हर जगह, सभी स्थान।

सबै – (विशे.) सभी, सब लोग, सबके सब।

सबाव – (विशे.) एक और एक के चौथाई भाग का योग।

सवा सोरा – (ब.मु.) एकदम ठीक, पूर्णतः उचित।

सबर – (सं.पु.) सब्र, धैर्य, जुआ का एक खेल, सबर करब, ब..मु.।

सबरी – (सं.स्त्री..) लोहे की नुकीली छड़ी, सब्बल, पुलिंग 'सब्बर'।

सबरिआउब – (क्रिया) सब्बल से मार–पीट करना, सब्बल से प्रहार करना।

सबेरे – (अव्य.) सुबह के समय, प्रातःकालीन बेला।

सबथ्था – (सं.पु.) धन–दौलत, सम्पत्ति, डेरा–साज, घर–गृहस्थी।

सबिहार – (विशे.) सम्पूर्ण, सबका सब, सबकुछ।

सबइया – (सं.पु.) साहित्य की एक विधा, सांप्रदायिक समारोह विशेष।

सम्हेर – (सं.पु.) समूह में, साथ में, सम्मिलित रूप में।

सम्मार – (सं.पु.) सोमवार, किसी बछड़े का नाम, भौहवार।

सम्मारी – (सं.स्त्री..) सोमवार के दिन पड़ी हुई तिथि, सोमवार को जन्मी का नाम।

समधिन – (सं.स्त्री..) पुत्र या बेटी की सास, एक नदी, पुलिंग 'समधी'।

समधिआउर – (सं.पु.) समधी का गाँव–घर।

समधिआन – (सं.पु.) समधी की एक मुख्य जन्म भूमि।

समोखब – (क्रिया) सहन करना, धैर्य धारण करना, समझौता करना।

सम्हारब – (क्रिया) संभालना, सुडौल बनाना, वश में रखना।

समाह – (क्रि.वि.) बैलों का दक्षता परीक्षण, कार्य क्षमता की जाँच।

समई – (सं.स्त्री..) एक घास विशेष, किसी व्यक्ति का नाम।

समइया – (सं.स्त्री..) शामा नामक अनाज, सुकाल, संत संप्रदाय का वार्षिक सम्मेलन।

समौं – (सं.पु.) सही समय, सुकाल, अनुकूल दिनचर्या।

समेंटा – (सं.पु.) सबके सहित, सामूहिक रूप से, इकट्ठा।

समेटब – (क्रिया) फैली वस्तु को एकत्र करना,इकट्ठा करना,एक सूत्र में पिरोना।

समेटबाउब – (क्रिया) इकट्ठा करवाना, फैली वस्तु को व्यवस्थित करवाना।

समिटब – (क्रिया) संगठित होना, एक मत होना, एकत्र होना।

समिहाँय – (विशे.) पूरा, पूरा का पूरा, सबका सब, अशेष।

सम्हरउक – (विशे.) संभलने लायक, बढ़ने योग्य, प्रगतिशील।

समाब – (क्रिया) किसी वस्तु का किसी वस्तु में प्रवेश होना।

समबाउब – (क्रिया) किसी पात्र में कोई वस्तु प्रवेश करवाना।

सम्हरब – (क्रिया) संभलना, चेत जाना, सतर्क होना, मजबूत बनना।

सम्हारब – (क्रिया) संभालना, बिगड़ी को सुधारना, थाम लेना।

समाइत – (सं.स्त्री..) व्यवस्था, सामर्थ्य, प्रबन्ध, गुंजाइश।

समरई – (विशे.) साँवलापन, श्यामल पन, श्यामवर्ण।

समरकबा – (सं.पु.) साँवले रंग वाला व्यक्ति विशेष।

समरिआब – (क्रिया) साँवला हो जाना, काला रंग बदलकर हो जाना।

सम्हरिके – (क्रि.बि.) संभलकर, सोच विचार करके।

सम्हारिके – (क्रि.बि.) संभालकर, संभाल करके।

सम्हरिहे – (क्रिया) संभलोगे, संभालोगे, चेतोगे, हृष्ट–पुष्ट होओगे।

समौ – (अव्य.) अच्छे दिन, अनुरूप एवं अनुकूल समय।

सरग – (सं.पु.) स्वर्ग, बहुत दूर, आकाश, बहुत ऊँचा।

सरगहा – (सं.पु.) दुर्भाग्यशाली के अर्थ से आरोपित एक गाली।

सरम – (सं.स्त्री..) शर्म, लज्जा, संकोच।

सरमाब – (क्रिया) लज्जा करना, संकोच मानना, शर्मिंदा होना।

सरमाउब – (क्रिया) किसी को लजवाना, शर्मिन्दगी पैदा कराना।

सरबद – (सं.पु.) शर्बत, शक्कर पानी का घोल, पेय पदार्थ।

सरब – (क्रिया) सड़ जाना, खराब हो जाना।

सरबरिया – (विशे.) जाति की उत्कृष्टता एवं उत्तम किस्म।

सराउब – (क्रिया) सड़ाना–गलाना, जेल में बन्द रखवाये रहना।

सराप – (सं.पु.) श्राप, बद्दुआ, अमंगल कामना।

सरापब – (क्रिया) श्राप देना, बद्दुआ देना, अनभल मनाना।

सरजो – (सं.पु.) सरयू नदी, किसी व्यक्ति का नाम।

सरहज – (सं.स्त्री..) साले की पत्नी, पत्नी की भाभी।

सरबस – (विशे.) सबकुछ, सर्वस्व, मान–मर्यादा सब।

सर्रा – (विशे.) बिना शाखा का सीधा सपाट पेड़, जो एकदम सीधा–ऊँचा हो।

सरकब – (क्रिया) फिसलना, अग्रसर होना, काम निकलना, फूट लेना।

सरकाउब – (क्रिया) आगे–पीछे करना,पास से दूर हटाना,चुपके से निकाल लेना।

सरकँउआ – (विशे.) सरकते हुए, सरकाते हुए ढंग से।

सरका – (सं.पु.) आगे खिसको या बढ़ो, पुरुष मूत्रांग की चमड़ी को आगे–पीछे करना।

सरकबइया – (सं.पु.) खिसकाने वाला, आगे–पीछे हटाने वाला व्यक्ति।

सरझाउब – (क्रिया) सलाह देकर उत्प्रेरित करना, समझा बुझाकर किसी को उकसाना।

सरफुन्दी – (सं.स्त्री..) बिना गांठ का बंधन जो आसानी से खुल सके।

सरसबा – (सं.पु.) सरसों, पीले रंग का बड़ा सरसों।

सरइनी – (सं.स्त्री..) खलिहान से दिया गया अन्न–दान, फसलों का दान–पुण्य।

सरा – (विशे.) सड़ा हुआ, गंध देती वस्तु, जो गल गई हो।

सरमन – (सं.पु.) श्रवण कुमार, सौम्य शालीन, पुरुषार्थ से ओत–पोत, बघेली मुहावरा।

सरगनसेनी – (सं.स्त्री..) असंभव को संभव बनाने का प्रयास, आकाश छूने की सीढ़ी।

सराध – (सं.स्त्री..) पितृ–पक्ष का पर्व, पितर के श्रद्धा विषयक कार्य।

सरउती – (सं.स्त्री..) छोटे आकार की सरौती, पुलिंग 'सरौता'।

सरंगी – (सं.स्त्री.) सारंगी,एकदम दुबली–पतली व लम्बी, सरंगी कस मनई ब.मु.।

सरपेटब – (क्रिया) झपटना, डाँटना–फटकारना, एक तरफ से।

सरपेटउँहा – (विशे.) एक तरफ से सामूहिक रूप से सबको समेटते हुए।

सरपोटब – (क्रि.) तरल पदार्थ को बिना चबाये निगलना।

सरसराब – (क्रिया) सुगबुगाहट होना, सरकने की आवाज का होना।

सरारारा – (सं.पु.) कबीर बोलने का एक शब्द, एकजाई।

सरतार – (विशे.) जवाबदारी से मुक्त, काम से खाली, काम बिहीन, फुरसत।

सरतरहा – (सं.पु.) जो एकदम कार्य से स्वतंत्र हो, एकदम खाली एवं निश्चिन्त व्यक्ति।

सराहब – (क्रिया) सराहना करना, किसी की तारीफ करना।

सरगुदहा – (सं.पु.) सड़ी–गली सी वस्तु, फटे–पुराने वस्त्र।

सरकट – (विशे.) एकदम सड़ा हुआ, अति जीर्ण–शीर्ण एवं वृद्ध।

सराई – (सं.स्त्री..) सलाई, छत्ते की काड़ी, माचिस की तीली।

सरकटहा – (सं.पु.) एकदम सड़ा हुआ व्यक्ति, सड़ी–गली वस्तु।

सरपट – (सं.पु.) रूँआ वाली एक घाँस विशेष का नाम, सत्यानाश।

सरासर – (विशे.) सरेआम, खुलेआम, दिखाकर व बताकर, पूर्णरूपेण।

सरपट स्वाहा– (ब.मु.) समूल नष्ट होना, सत्यानाश, कार्य का चौपट होना।

सरठ्ठा – (सं.पु.) जीर्ण–शीर्ण पुरुष, सड़ा–गला पदार्थ, स्त्री.लिंग 'सरट्ठी'।

सरबभक्षी – (सं.पु.) सब कुछ भक्षण करने वाला, बिना परहेज किये खा लेने वाला।

सरपेटा – (सं.पु.) सामूहिक रूप से, बिना विवरण के, एक तरफ से समेट कर, सबको।

सरसेंटब – (क्रिया) आँख दिखाकर डाँटना, क्रोधित होकर फटकारना, आँख दिखाना।

सरसेटबाउब – (क्रिया) आँख दिखाकर डँटवाना, डाँट–फटकार लगवाना।

सरसेटबइया – (सं.पु.) डाँटने–फटकारने वाला, आँख दिखाने वाला।

सलसल – (विशे.) नमी युक्त, तरलीय स्थिति, ढीली स्थिति।

सल्लाह – (सं.स्त्री..) सलाह, मशविरा, राय, परामर्श।

सल्लाही – (सं.पु) सलाह देने वाला, सुझावदाता।

सलीमा – (सं.पु.) शनीमा, पिक्चर।

सलूखा – (सं.पु.) बगल में जेब लगा पुराने चलन की कमीच।

सलगा – (विशे.) सब कुछ, सर्वांश, पूरा का पूरा।

ससकब – (क्रिया) हवा से पानी सूख जाना, अपने आप गीली स्थिति से पानी का शोषण हो जाना।

ससुरे – (सं.पु.) नारी की ससुराल, पत्नी के पति की जन्मभूमि।

ससुइया – (सं.स्त्री..) सास, पति की माँ, पत्नी की माँ।

ससुर – (सं.पु.) श्वसुर, पति का पिता, एक गाली, एक तकिया कलाम।

ससुरारि – (सं.पु.) ससुराल, पत्नी का मायका वाला घर।

ससुरी – (सं.स्त्री..) एक गाली, एक तकिया कलाम, पुलिंग 'ससुरा'।

सहनाव – (सं.पु.) अपने ही नाम का एक दूसरा व्यक्ति।

सहब – (क्रिया) सहना, धैर्य धारण करना, बर्दाश्त कर लेना।

सहकर – (सं.पु.) सहनशील, धैर्यवान, गंभीर एवं सुनकर पचाने वाला व्यक्ति।

सहबइया – (सं.पु.) बर्दाश्त कर लेने वाला व्यक्ति, सहनशील आदमी।

सहराब – (क्रिया) सहलाने की स्थिति का उत्पन्न होना, खुजुली होना।

सहेजब – (क्रिया) व्यवस्थित करना, एकत्र करके रखना, जिम्मेवारी सौंपना।

सहिरब – (क्रिया) गीला गोबर एक स्थान व ढेर पर संचित करना।

सहराउब – (क्रिया) सहलाना, किसी के शरीर पर हाथ फेरना, खुशामदी करना।

सहोल – (विशे.) सस्ता एवं सुगम, अरामदायी एवं सुविधाजन्य, उपयुक्त एवं उत्तम।

सहो – (सं.पु.) सही, स्वीकार, बर्दाश्त योग्य।

सहा–बहा – (अव्य.) जाना–बूझा एवं समझा हुआ, बर्दाश्त किया हुआ।

सहाँसुल – (सं.पु.) सबकुछ सुन एवं सह लेने वाले प्रवृत्ति का व्यक्ति।

सहइया – (सं.पु.) धैर्य धारण करने वाला, बर्दाश्त करने की प्रवृत्ति वाला।

सहिया – (सं.पु.) सह, सहमति, सम्मति, सम्बल, साथ, सलाह, सहिया चोरी, ब.मु.।

सहूर – (सं.पु.) अक्ल, बुद्धि, शहूर, ज्ञान।

सहरहा – (सं.पु.) शहरी, शहर में रहने वाला।

सहनइया – (सं.स्त्री..) शहनाई नामक एक सुरीला वाद्य यंत्र।

सहिजन – (सं.पु.) एक प्रकार की तरकारी वाला कन्द, शलजम।

सा

साइत – (सं.स्त्री..) समय, सगुन, संयोग, शुभ लग्न, छड़।

साई – (सं.स्त्री..) घाव की महीन मक्खी, देव, महापुरुष।

साँकर – (सं. / विशे.) संकीर्ण, सँकरा, साकल, गरीबी, निर्धनता।

साख – (सं.पु.) महाजनी, सत्य, सौगंध, साक्षी।

साँगा – (सं.पु.) वजन उठाने वाला लट्ठा, बरछी की भाँति औजार।

सागा – (सं.पु.) धना की हरी पत्ती, गाँठ सहित हरा प्याज का पौधा।

साग – (सं.स्त्री..) भाजी, पत्ते की तरकारी।

सागूदाना – (सं.पु.) साबूदाना, अहार।

साजब – (क्रिया) संलग्न करना, लगाना, सजाना–संवारना।

साज–वाज – (अव्य.) वाद्य संगति की सहायक सामग्री, वाद्य उपकरण।

साँटब – (क्रिया) साथ कर लेना,कपड़े में कपड़ा ओढ़ाना,अपने मन का बनाना।

साँटी – (सं.स्त्री..) पतली छड़ी, पतली साड़ी।

साडीलन – (सं.पु.) सशरीर, स्वयं।

साढ़ू – (सं.पु.) साली का पति।

साढ़ी – (सं.स्त्री..) दूध की मलाई, असली तत्व।

साँदब – (क्रिया) दोनों पाँव रस्सी से बाँधना, प्रतिबंधित करना।

साध – (सं.स्त्री..) अभिलाषा, चाहत, पसंदगी, शौक लगना।

साधब – (क्रिया) काम साँटना, सिद्ध कर लेना, काम बना लेना।

सानब – (क्रिया) पदार्थ में पानी मिलाना, आटा गूंथना, मिश्रित करना।

सानी – (सं.स्त्री..) पानी से भूसा खली मिलाना, पशुओं का आहार।

साफा – (सं.पु.) सिर का पगड़ा, बड़ा बँधा गमछा।

साफी – (सं.स्त्री..) छोटी सी तौलिया, रुमाल।

साम्हू – (विशे.) सीधा–सीधा, बिना घुमाव का, सहज एवं साधारण।

सामी – (सं.स्त्री..) मूसल के पेंदा में लगा लोहे का छल्ला।

सामतूल – (विशे.) सहज–सरल, साधारण एवं स्थिर।

सामर – (सं.पु.) बारासिंघा जंगली जानवर, श्यामल व सावला (विशे.)।

सामिल सरीख– (विशे.) संयुक्त, एक साथ, मिला जुला।

सामा – (सं.पु.) कोदौ ग्रुप का एक मोटा अनाज।

सारी – (सं.स्त्री..) साली, साड़ी।

सार – (सं.पु.) पत्नी का भाई, साला, पशु रखने का कक्ष।

सारन्स – (सं.पु.) आपस में, संक्षिप्त एवं यथार्थ, शान्त ढंग से।

सालन – (सं.पु.) व्यंजन व पकवान का मसाला, साल का वृक्ष।

सालीना – (अव्य.) वार्षिक, प्रतिवर्ष, हर शाल।

साँसत – (सं.स्त्री..) दुविधा, झंझट, अनिर्णय की स्थिति।

साहबी – (सं.स्त्री..) कृत्रिम बड़प्पन, कद से ऊपर बड़ाई, ठाट–बाट।

साहुल – (सं.पु.) दीवाल की शुद्धता नापने जानने का उपकरण।

साहुति – (सं.पु.) ताल–मेल, एकता, मेल–मिलाप।

साह – (सं.पु.) पका हुआ आम्रफल, चूसने वाला आम।

साही – (सं.स्त्री..) जंगली जानवर, तरह, जैसा।

सि / सी

सिअना – (सं.पु.) सिलाई के लिए रखे वस्त्र, सिलाई की मजदूरी।

सिअब – (क्रिया) सिलना, सिलाई करना।

सिआउब – (क्रिया) सिलवाना, सिलाई करवाना।

सिबइया – (सं.पु.) दर्जी, सिलाई करने वाला।

सिआर – (सं.पु.) सियार, श्याल, स्याही, वन्य प्राणी।

सिआरी – (सं.स्त्री..) खरीफ की फसलें एवं अनाज।

सिआही – (सं.स्त्री..) स्याही, एक जंगली पक्षी।

सिअउबेय – (क्रि.) सिलवाओगे, सिलाओगे, सिलाओगी।

सिकनाध – (सं.पु.) शौक–शान, शौक दिखाना।

सिकदार – (सं.पु.) किसी का नाम, मजदूर, कार्यकर्ता।

सिकसिकाब – (क्रि.वि.) नमी युक्त, पदार्थ में पानी का अंश झलकना।

सिकहरे – (सं.पु.) सीकर, ऊपर चढ़ाकर टंगी, वस्तु।

सिकरी सीं – (विशे.) अति कमजोर, बहुत दुबला– पतला।

सिकाइन – (सं.स्त्री..) सिकाई, पतली सीक, सलाई, 'सिकाइन डोलाउब', ब.मु.।

सिकुलब – (क्रिया) सिकुड़ना, शर्मिन्दा होना, संकोच करना।

सिकन्द – (सं.पु.) अँगूठा, निरंकता का प्रतीक, सिकन्द, ब.मु.।

सिकोलब – (क्रिया) समेटना, सिकोड़ना, संकुचन की क्रिया।

सिखब – (क्रिया) सीखना, जानना, समझना, प्रशिक्षित होना।

सिखाउब – (क्रिया) सिखलाना, शिक्षा देना, ज्ञान देना।

सिखबाउब – (क्रिया) किसी को सिखाना, जानकारी देना।

सिखपन – (सं.पु.) सीख, शिक्षा, उपदेश एवं ज्ञान।

सिखइया – (सं.पु.) शिक्षा देने वाला, प्रशिक्षक।

सिखबाई – (सं.स्त्री..) सिखलाई हुई, सिखाने की मजदूरी।

सिगट्टा – (सं.पु.) ठेंग दिखाना, कुछ नहीं के अर्थ में, ब.मु.।

सिगउटी – (सं.स्त्री..) बैल की सींग की रस्सी, सींग का श्रृँगार।

सिगटा – (सं.पु.) जंगली जानवर, सीगट, श्याल।

सिंगरहा – (सं.पु.) सिंघाड़ा लगाने वाला, एक जाति का नाम।

सिगोहब – (क्रिया) फैली वस्तु को एकत्र करना, धोती को चुनीदार बनाना।

सिंगार – (सं.पु.) श्रृँगार, सजावट, साज–सज्जा।

सिघारा – (सं.पु.) सिंघाड़ा फल, जलाशय का एक फल।

सिंचाउब – (क्रिया) सिंचाई कराना, किसी से सिंचित कराना।

सिचबाउब – (क्रिया) सिंचवाना, फसल की सिंचवाई करवाना।

सिचुँआ – (विशे.) सिंचित फसल, सीच कर बोया गया बीज।

सिंचबइया – (सं.पु.) सींचने वाला, सिंचाई का कार्य करने वाला।

सिंचान – (विशे.) सींचा हुआ, जो सिंचित हो चुका हो।

सिझउब – (क्रिया) आग में पकाना, धूप से सेंकना, परिपक्व करना।

सिझब – (क्रिया) परिपक्व होना, कार्य में पारंगत होना, तप जाना।

सिझाउब – (क्रिया) परिपक्व बनाना, ताप में तपाना, तबे में पकाना।

सिट्टी पिट्टी – (ब.मु.) अक्ल गुम होना, भौचक्का रह जाना, ब.मु.।

सिटिल्ल सिटिल्ल–(अव्य.) ढीली वस्तु से उत्पन्न ध्वनि, चलने पर चप्पल की आवाज।

सिटकिन्नी – (सं.स्त्री..) किवाड़ व खिड़की में लगी साँकल।

सिढ्ढी – (सं.स्त्री..) सीढ़ी, क्रमवार पावदान।

सिताप – (विशे.) शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, तत्काल, बहुत जल्दी।

सितान – (विशे.) पानी के कारण सूखी वस्तु का गीला हो जाना, नम।

सितन्गी – (विशे.) नमी से आर्द्र हो जाना, पानी के अंश का प्रभाव।

सिंदुरिया – (सं.पु.) एक आम विशेष का नाम, सिन्दूरी रंग का फल (विशे.)

सिन्नी – (सं.स्त्री..) देवी–देवताओं का प्रसाद, गुड़ नारियल, 'सिन्नी बाँटब', ब.मु.।

सिनाब – (क्रिया) सुस्त पड़ना, मन्द होना, शिथिल हो जाना, शांत होना।

सिपहिआना – (सं.पु.) चौकीदारी, तकवारी, रखवाली।

सिरमिंट – (सं.स्त्री..) सीमेण्ट, मजबूत।

सिरखिन – (सं.स्त्री..) दातून करने की एक वनस्पति विशेष।

सिरी – (सं.स्त्री..) श्री, माथा, मस्तक की आभा, लाल चंदन।

सिरिहिरी – (सं.स्त्री..) चिन्ता की रेख, चिन्ता का प्रभाव।

सिरबा – (सं.पु.) सिरहाने की ओर लगी चारपाई की लकड़ी।

सिलपोंका – (सं.पु.) एक फलदार वनस्पति विशेष।

सिलमन्ट – (सं.पु.) मोटा–तगड़ा, चौपट–नष्ट, एक बड़ी शिला।

सिलबर – (सं.पु.) आल्मोनियन की धातु।

सिलमिली – (सं.स्त्री..) एक प्रकार की वनस्पति पौध।

सिलबट्टा – (सं.पु.) सिल पर बांटने वाला लोढ़ा व पत्थर का पटरा।

सिलउँटी – (सं.स्त्री..) सिल, मशाला पीसने का पत्थर पात्र।

सिल्ली – (सं.स्त्री..) लकड़ी की पटिया, छूरा पैना करने का पत्थर।

सिसिआब – (क्रि.बि.) तिक्त के कारण सी–सी करना, दर्द होने व ठंड लगने पर सी–सी की आवाज निकलना।

सिहिलाब – (क्रिया) नमीयुक्त होना, पदार्थ में शीलन आना।

सिहिल सिहिल – (विशे.) चमक युक्त शरीर, सुन्दर–सुडौल शरीर।

सीगट – (सं.पु.) वन्य श्याल, एक जंगली जानवर।

सीठी – (क्रि.वि.) चटनी सा होना, भिगोयी दाल की पीठी, कुचलकर विकृत हो जाना।

सीझब – (क्रिया) आग में पक जाना, काम फुर्ती के साथ होना।

सीन – (विशे.) मन्द, निष्क्रिय, शिथिल, सुस्त।

सु

सुआ सटइला – (सं.पु.) विवाहोत्सव में मगरोहन पर रखे काष्ठ पात्र।

सुआसा – (सं.पु.) जिसके घर में वैवाहिक कार्य सम्पन्न हो रहा हो, स्त्री.लिंग 'सुआसिन'।

सुकतरिया – (सं.स्त्री..) जूते में पड़ी रबड़ की दफ्ती, देशी चमड़े की चप्पल।

सुकबार – (विशे.) सुकुमार, जिसके अंग कोमल हों, आराम तलब।

सुकसा – (सं.पु.) सुखाई गई चना की भाजी, सुखाये हुए फल, सूखी रोटी।

सुखउब – (क्रिया) सुखाना, शुष्क करना, धूप की सेंक कराना।

सुखाब – (क्रिया) सूखना, सूखकर दुबला हो जाना, सूख जाना।

सुखबाउब – (क्रिया) गीले को सुखवाना, सुखवाने में सहयोग करना।

सुखान – (विशे.) सूखा हुआ, सुखी हुई वस्तु।

सुखमन – (सं.पु.) सुखाने से कम हुई वस्तु की मात्रा।

सुखई – (सं.पु.) दुबला–पतला, किसी का नाम।

सुगाब – (क्रिया) संदेह करना, अंदाज लगाना, संदेह होना, संदेह करना।

सुगबुगाब – (क्रिया) हरकत करना, चलना–फिरना, चुलबुलाना।

सुगबुगी – (सं.स्त्री..) आहट, शिनाख्त होना,गुमशुदा का पता चलना, सुराख मिलना।

सुघाँउब – (क्रिया) गन्ध से अवगत करवाना, सुँघवाने की क्रिया।

सुचब – (क्रिया) एक दूसरे पर ऊचा करके रखते जाना, ढेर लगाना।

सुचबाउब – (क्रिया) इकट्ठा करवाना, ढेर लगवाना।

सुचइया – (संपु) संचित करने वाला, एकत्रकर्ता।

सुजनखा – (सं.स्त्री..) सूचना, जानकारी, शिनाख्त, खोज–खबर।

सुटुरपुटुर – (अव्य.) संदेह, सशंकित, घबड़ाहट, भयभीत।

सुटुर्रा – (विशे.) एकदम दुबला–पतला एवं ऊँचा, गाँव का एक खेल।

सुटुकब – (क्रिया) पकड़ से बाहर होना, छिटक जाना।

सुटकाउब – (क्रिया) बंधन मुक्त करना, ढीला करना, छुटकवाना।

सुड़उर – (विशे.) सुंदर एवं सुपुष्ट, सुडौल एवं सुगठित, अच्छा–मजबूत।

सुड़िआब – (क्रिया) आटे में कीड़े पड़ जाना।

सुड़िआन – (विशे.) पदार्थ जिसमें कीड़े पड़ गये हों, श्वेत कृमियुक्त वस्तु।

सुतरी – (सं.स्त्री..) पतली रस्सी।

सुतारी – (सं.स्त्री..) चमड़ा सिलने की एक सूजी।

सुतबा – (सं.पु.) सीने के ऊपर की गोल पसली, हड्डी।

सुतिया – (सं.स्त्री..) गले में धारित नारियों का गहना विशेष।

सुतिआब – (क्रिया) एक सूत में बंध जाना, एकता व एकमत होना, तत्पर एवं सुसंगठित होना।

सुतार – (सं.पु.) व्यवस्था, समय मिलना, अच्छा कारोबार।

सुथन्ना – (सं.पु.) पाजामा, ढीला–ढाला पैण्ट।

सुदकहा – (सं.पु.) सूदक–सोबर से ग्रसित व्यक्ति, जिस घर में मृत्यु हुई हो, अशुद्धयुक्त परम्परागत व्यक्ति।

सुदिन – (सं.पु.) द्विरागवन, गवना, विवाह का द्वितीय दौर।

शुद्ध मुद्ध – (अव्य.) हू–बहू, समतुल्य, अनुरूप, दो में अन्तर न होना।

सुधि – (सं.स्त्री..) याद, स्मरण, पुलिंग 'सुध'।

सुधकटना – (ब.मु.) एकदम सीधा शान्त के लिए व्यंग्यार्थ, ब.मु.।

सुधबाउब – (क्रिया) बैल बधिया कराना, बैल अण्डकोष का मर्दन कराना।

सुधबलिया – (सं.पु.) सदैव याद रखने वाला, कभी न भूलने वाला व्यक्ति।

सुन्न – (विशे.) शून्य, एकदम खाली, 'सुन्न परब', ब.मु.।

सुनहर – (सं.पु.) सूनापन, निर्जन, जन विहीन, खाली।

सुनब – (क्रिया) श्रवण करना, सुनकर मानना।

सुनाउब – (क्रिया) सुनाना, समझाना, उलाहना देना।

सुनइया – (सं.पु.) पढ़कर सुनाने वाला, वाचक, व्यास, सुनने वाला व्यक्ति।

सुपलइया – (सं.स्त्री..) सूप के आकार की वैवाहिक छोटी सूप।

सुपेत – (विशे.) सफेद, श्वेत, साफ–उज्जवल।

सुपास – (विशे.) आराम, मजेदार व्यवस्था, सुदृढ़ स्थिति।

सुपनखा – (सं.स्त्री..) सूर्णपखा, एक अनैऐतिहासिक नारी।

सुभराब – (क्रिया) दुलार करना, वात्सल्ययुक्त क्रीड़ा, ठुनकना।

सुमरा – (सं.पु.) सुअर, बच्चों के लिए एक गाली।

सुमिरब – (क्रिया) याद करना, स्मरण करना, आवाज लगाना।

सुमिरन – (क्रिया) स्मरण, वन्दन, प्रार्थना, किसी का नाम।

सुमलेहड़ा – (सं.पु.) सुअर के रहने वाला घर, गंदा व छोटा घर।

सुमेड़ी – (सं.स्त्री..) रस्सी की पिण्डी, काँस घास की रस्सी।

सुमिरनी – (सं.स्त्री..) माला फेरने वाली झोली, वन्दना गीत।

सुरझब – (क्रिया) सुलझना, उलझन से मुक्त होना, समझौता करना।

सुरसुरी – (सं.स्त्री..) शीतल मन्द समीर, सुबह की ठंड हवा।

सुरसुराब – (क्रिया) मन्दगति की आहट होना, हवा चलने की आवाज होना।

सुर्रा – (सं.पु.) बहती हुई ठंडी हवा, कच्ची सिलाई, पौध की सीधी वृद्धि।

सुर्रिआब – (क्रिया) एकधुन में होना, जो सोचा वही करना।

सुरकब – (क्रिया) श्वसन करना, श्वसन के साथ नाक प्ररस चढ़ाना।

सुरकाउब – (क्रिया) सुंघाकर नाक में सांस के साथ ऊपर चढ़ाना।

सुरकँउआ – (अव्य.) साँस चढ़ाते हुए, सुरकते हुए शैली में।

सुरूआ – (सं.पु.) सब्जी या माँस का रसा, व्रतवंध की एक रस्म।

सुरूहुरी – (सं.स्त्री..) माघ, पूस माह की ठंडी–ठंडी हवा।

सुरिज – (सं.पु.) सूर्य, सूर्य भगवान।

सुरिजबेध – (सं.पु.) पूर्व–पश्चिम की ओर लम्बवत घर की स्थिति।

सुलुआर – (सं.पु.) सेवासुश्रुषा, तैयार करना, देखरेख व्यवस्था।

सुलगब – (क्रिया) सुलगना, अन्दर–अन्दर ईर्ष्या में जलना।

सुलगाउब – (क्रिया) आग सुलगाना, सुलगाने में सहयोग करना।

सुलगबइया – (सं.पु.) आग सुलगाने वाला।

सुसका – (संपु.) सूखा हुआ, सूखी चना की पत्ती।

सुसुकब – (क्रिया) सिसकना, रूदन करके अश्रु निकालना, सिसकी भरना।

सुहुराब – (क्रिया) खुजली होना।

सुहुराउब – (क्रिया) सहलाना, मक्खन पालिस करना।

सुहुरबइया – (सं.पु.) सहलाने वाला, मक्खन पालिस करने वाला।

सू

सूख–पाख – (ब.मु.) रूखा–सूखा, जो बना है वही भोजन।

सूखब – (क्रिया) सूखना, सूखते जाना, दुबला होना।

सूँघब – (क्रिया) सूँघना, गन्ध की अनुभूति करना, पता लगाना।

सूजब – (क्रिया) फूल आना, सूजन होना।

सूझब – (क्रिया) निदान निकल आना, उपाय सूझना, सूझ होना।

सूत – (सं.पु.) धागा, डोरा, एकता, संगठन।

सूती – (विशे.) धागे से बना हुआ वस्त्र, समुद्र की बड़ी सीप।

सूदक – (सं.पु.) घर में किसी की मृत्यु हो जाना, किसी बच्चे का जन्मना।

सूध – (विशे.) सीधा सादा, एकदम शांत, भोला भाला।

सून – (विशे.) खाली, रिक्त, निर्जन, सूना।

सूपा – (सं.पु.) बाँस का बना घरेलू उपयोग का पात्र, सूप।

सूमा – (सं.पु.) घास की बनी रस्सी, चारपाई में बुना धागा या नेवार।

सूरन – (सं.पु.) सब्जी व अचार वाला एक कन्दमूल।

सूरी फाँसी – (अव्य.) सूली–फाँसी, बहुत बड़ी सजा, ब.मु.।

सूल करब – (क्रिया) वसूल करना, लागत धन वापस लेना, श्रम सार्थक करना।

से

सेंकब – (क्रिया) सेंकना, पकाना, तापयुक्त होना।

सेकबाउब – (क्रिया) सेंकवाना, ताप से युक्त कराना, सेंकने में मदद करना।

सेकबइया – (सं.पु.) सेंकने वाला, आग तापने वाला।

सेकुरा – (सं.पु.) गेहूँ एवं जौ के बाल में उगे रोंये विशेष।

सेकुरहा – (सं.पु.) जिस फसल की बाल में सेकुरा हो वह।

सेखी – (सं.पु.) शौक, दिखावटी शान, कृत्रिम बड़प्पन, 'सेखी बघारब', बघेली मुहावरा।

सेंगर मोगर – (ब.मु.) हृष्ट–पुष्ट, मोटा–तगड़ा, एकदम जवान।

सेझा – (सं.पु.) व्यवस्था, लाग–बाग, हिसाब–किताब।

सेट – (सं.पु.) दुधारू पशु या आदमी के स्तन का श्रोत।

सेटी – (सं.स्त्री..) सीटी, सेटी मारब, बघेली मुहावरा।

सेतैं – (सं.पु.) व्यर्थ में, बिना प्रयोजन के, निरर्थक को, बेकार में।

सेतउहल – (विशे.) बिना कीमत की, बिना मेहनत की।

सेतुआ – (सं.पु.) सत्तू, भुने चने का आटा।

सेतुआ सातैं – (सं.पु.) चैतमास की सप्तमी, सत्तू वाला त्यौहार।

सेतमेत – (अव्य.) अकारण, बिना श्रम मूल्य के, वैसे ही।

सेंदुर – (सं.पु.) सिन्दूर।

सेंदुरहाई – (सं.स्त्री..) सिन्दूरदान, सिन्दूर रखने का पात्र।

सेंधव नोन – (सं.पु.) काला नमक, व्रत में प्रयुक्त होने वाला नमक।

सेंधान – (सं.पु.) तेलनुमा खड़े आम का टिकाऊ अचार।

सेधा – (सं.पु.) मजबूत ईमारती लकड़ी की किस्म।

सेधउरा – (सं.पु.) विवाह के समय प्रयुक्त काष्ठ का खिलौना, स्त्री.लिंग 'सेधउरी'।

सेबाद – (सं.पु.) स्वाद, रसानुभूति, आनन्द।
सेबादी – (सं.पु.) स्वादिष्ट खाने का आदी, स्वाद प्रेमी, स्वाद का पारखी।
सेबर – (विशे.) कुछ कम पका हुआ व्यंजन, अपरिपक्व, कम खरा।
सेमर – (सं.पु.) सेमर नामक एक लम्बा वृक्ष।
सेमी – (सं.स्त्री..) सेम का फल, एक सब्जी का नाम।
सेमई – (सं.स्त्री..) सेवइयाँ, एक घास के खरीफ दानें।
सेल्हा – (सं.पु.) पुरानी मेढ़ पर पीछे से चढ़ाई गई मिट्टी।
सेला–भेला – (अव्य.) उत्सव के पूर्व सामग्री का संचयन, व्यवस्था।
सेर – (सं.पु.) धन–धान्य, खाना–दाना, एक किलो का पुराना पैमाना।
सेराउब – (क्रिया) तेल या घी में व्यंजन छानना, जल में विसर्जित करना।
सेसर – (सं.पु.) लकड़ी का बीच में सड़ा–गला अपुष्ट पोलदार का होना।
सेंहुआ – (सं.पु.) शरीर पर श्वेत चकत्ते, एक चर्म रोग।
सेहुँड़ा – (सं.पु.) एक कटीला पौध, वनौषधि।
सेहेरूआ – (सं.पु.) एक मजबूत किस्म का वन वृक्ष।
सेहुताब – (क्रिया) विश्राम करना, थकावट दूर करना।
सेहुतबाउब – (क्रिया) थकावट दूर करवाना, आराम करवाना,किसी को विश्राम कराना।
सेहरी – (सं.स्त्री..) अनाज ढोने वाली कामर, कृषि उपकरण।
सेहेरिआब – (क्रिया) थककर लस्त होना, अचेत हो जाना, बेहोश सा होना।
सेहीं – (अव्य.) से, लिए, कारण, वजह।

सो

सोइहौं – (क्रिया) सोऊँगा, सोऊँगी, सोयेंगे।
सोइहेय – (क्रिया) सोओगे, सोओगी।
सोउब – (क्रिया) सोना, आराम फरमाना।
सोउनधहा – (विशे.) अर्द्ध सुप्तावस्था,नींद से ग्रसित, सोते–सोते अचानक जग पड़ना, अचेतावस्था।
सोखब – (क्रिया) शोषित करना, अपने आप जल का सूख जाना।
सोखरब – (क्रिया) अवशोषित हो जाना, जल का सूख जाना, पूँजी का नष्ट होना।
सोगत – (सं.पु.) स्वागत, अतिथि सम्मान, सत्कार, अभिनंदन।
सोंचर – (सं.पु.) उपवास वाला काले रंग का विशेष नमक।
सोचब – (क्रिया) सोच करना, चिन्ता करना, सोचना–विचारना।
सोचान – (विशे.) सोच–विचार में लीन, चिन्ता ग्रसित, चिन्तित।
सोचइया – (सं.पु.) सोचने वाले, सोच–विचार करने वाले लोग।
सोझ – (विशे.) सीधे–सीधे, सीधा–सपाट, सही–सही, ज्यों का त्यों।
सोझाउब – (क्रिया) अपने अनुकूल अर्थ ग्रहण कर लेना, सीधा कर लेना।
सोटब – (क्रिया) कोड़े या सोटे से पिटाई करना।

सोटबाउब – (क्रिया) किसी से किसी को पिटवा देना, मैथुन करवाना।
सोटा – (सं.पु.) लोचदार चपका या छड़ी।
सोटन्ना – (क्रिया) मार–पिटाई, मरम्मत करना।
सोटबइया – (सं.पु.) मारने–पीटने वाला व्यक्ति।
सोटरब – (क्रिया) समाप्त हो जाना, चुक जाना, मार खा जाना।
सोठउरा – (सं.पु.) शिशु जन्म के समय बने सोंठ एवं गुड़ के लड्डू।
सोढ़ा – (सं.पु.) वृक्ष की डाली से प्रस्फुटित नवीन कोपलें।
सोथा – (सं.पु.) चाह, इच्छा, मनोकामना, मन की शांति–संतुष्टि, 'सोथा पूजब', ब.मु.।
सोंध – (विशे.) स्वादिष्ट सलोनी, सुगंध, भुने पापड़ का स्वाद।
सोंधउब – (क्रिया) दूध की दोहनी को आग में खूब गरम करना।
सोंधबाउब – (क्रिया) दोहनी को गरम करवाना।
सोधब – (क्रिया) सगुन विचार करना, शुभ–मुहूर्त देखना, धातु को पकाना।
सोधाउब – (क्रिया) सगुन का विचार करवाना, लग्न–मुहूर्त निकलवाना।
सोधो – (सं.पु.) अनिष्टकारी जादू–टोना, एक मंत्र विशेष।
सोधबइया – (सं.पु.) सोधन करने वाला, विचारने वाला ज्ञानी।
सोनहा – (विशे.) सोने से बना हुआ, सुनहला, एक जंगली जानवर।
सोनरा – (सं.पु.) सोनार, स्वर्णकार, सराफ, स्त्री.लिंग 'सोनारिन'।
सोन – (सं.पु.) सुवर्ण, सोन नदी, सोना।
सोबर – (सं.स्त्री..) शिशु के जन्मने से अपवित्रता की मान्यता।
सोबाउब – (क्रिया) सुलाना, अचेतकर देना, निद्रा में लीन करना।
सोबइया – (सं.पु.) सोने वाला, निद्रा में मस्त व्यक्ति, सुलाने वाला।
सोबउबेय – (क्रिया) सुलाओगे, सुलाओगी।
सोबनहाई जून– (सं.पु.) सोने के समय, विश्राम या शयन का समय।
सोये – (क्रिया) सो लिये, सो चुके।
सोयेवतै – (क्रिया) सोया था, सो ली थी, सोयी थी।
सोर – (सं.पु.) वृक्षों या पौधों की प्रमुख जड़ें।
सोरउब – (क्रिया) सोडा से कपड़ा साफ करना, सोडा के घोल में कपड़ा डालना।
सोरा – (सं.पु.) सोडा, साबुन।
सोरह – (विशे.) सोलह।
सोरही – (सं.स्त्री..) सोलह कौड़ियों का एक खेल।
सोरहा – (सं.पु.) सोलह नाखूनों का कुत्ता, एक असगुन गाली।
सोरथ – (सं.पु.) स्वार्थ, मतलब, हित।
सोहब – (क्रिया) सुशोभित होना, यथोचित होना, शोभा देना।
सोहाब – (क्रिया) मन के मुताबिक होना, अच्छा लगना, सुन्दर व सुखदायी होना।
सोहगबा – (सं.पु.) विवाह के समय का प्रिय लोकगीत।

सोहवत – (सं.पु.) भाईचारा, परोपकार, सहयोग, परमार्थ।

सोहगउरा – (सं.पु.) ब्राम्हण का एक गोत्र, एक उपजाति।

सोहारी – (सं.स्त्री..) पूड़ी, सोहारी परसी, बघेली मुहा.।

सोहरि – (सं.स्त्री..) शिशु जन्मोत्सव का प्रिय लोकगीत, बधाई गीत।

सोहाग – (सं.स्त्री..) सौभाग्यवती नारी का श्रृँगार, सोहाग लोकगीत।

सोहासिल – (विशे.) चाटुकारिता पूर्ण प्रेम, मुँह के सामने दिखावा।

सोहा – (सं.पु.) स्वाहा, सब कुछ सर्वनाश, जलकर भस्म।

ह

हओ – (अव्य.) हाँ, ठीक है।

हइ – (सहा.क्रिया) है, स्त्री.लिंग हेतु अनादर सूचक।

हँई – (सहा.क्रिया) हैं, स्त्री.लिंग आदर सूचक।

हइकल – (विशे.)जोरदार, मोटा तगड़ा, दबंग, ताकतवर, मजबूत, संपन्न।

हउदा – (सं.पु.) बड़ा सा घाव, बैल के पुट्ठे का घाव, हाथी के सिर का घाव।

हउकब – (क्रिया) जोर से मारना, जोर–जोर से दहाड़ना, इज्जत लूटना।

हउकाउब – (क्रिया) जोर से मरवाना, किसी से मैथुन करवाना।

हऊ – (सं.पु.) भैंस, भैंस के लिए प्रतीक शब्द।

हउली – (सं.स्त्री..) शराब खाना, मधुशाला, दारू की दुकान।

हउहा – (सं.स्त्री..) असंतोषी, दोनों हाथ से खाने का आदी, स्त्री.लिंग 'हउही'।

हउहाब – (क्रिया) असत्यपन करना, सीमा से अधिक खानें की चेष्टा करना।

हक्का – (सं.पु.) लम्बी हँसी, अशिष्ट हँसी, कर्णकटु हँसी।

हकरा – (सं.पु.) अंतिम श्वाँस, लम्बी सांस, मरणासन्न का श्वसन।

हँकाउब – (क्रिया) मवेशियों को गतिशील करना, घर से बाहर पशु भेजवाना।

हकँइया – (सं.पु.) मवेशी को गतिशील करने वाला व्यक्ति।

हक्क–डक्क – (ब.मु.) घबड़ाहटपूर्ण, भयभीत, धौं–विधौं की स्थिति।

हकलब – (क्रिया) जोर से प्रहार करना, खूब खा लेना।

हकलिके – (क्रि.वि.) जमकर, पूरी ताकत से, अथक परिश्रम से।

हक्क नजरि – (ब.मु.) सामर्थ्य के भीतर का कार्य, हल्का व सामान्य कार्य।

हकबकाब – (क्रिया) भयभीत होकर न बोलना, भौचक्का होना।

हँकना – (सं.पु.) जिस लाठी से मवेशी को गतिमान किया जा रहा हो।

हकाई – (क्रि.वि.) दमनी करने का कार्य, गतिमान करने की क्रिया।

हक्क हिसाब – (सं.पु.) हिस्सा, अंश, हक, हक्क हिसाब लेना (ब.मु.)।

हगबाउब – (क्रिया) टट्टी निकलवा लेना, टट्टी निकाल लेना।

हगब – (क्रिया) टट्टी होना, लिखावट को गन्दा करना, ब.मु.।

हगंडा – (विशे.) बार–बार टट्टी करने वाला, नगण्य व्यक्ति।

हगइया–पदइया– (ब.मु.) यैरे–गैरे लोग, छोटे–छोटे बच्चे।

हगासा – (सं.पु.) उत्सर्जन की इच्छा, हगासा लड़िका के भौंह चिन्हाय, ब.मु.।

हचहचाब – (क्रिया) ढीला होने के कारण चारपाई का हिलना– डुलना।

हचर–पचर – (अव्य.) अनिश्चित एवं ढीला, इधर–उधर हिलना–डुलना।

हचकब – (क्रिया) ताकत लगाकर हिलाना–डुलाना, भरपेट खा लेना।

हचकबाउब – (क्रिया) किसी से संभोग कार्य करवाना, पेटभर किसी को खिलवाना।

हटर–हटर – (अव्य.) नंगे पाव भागते चले आना, ब.मु.।

हट्ट – (क्रिया) हटो, नहीं, हट जाओ, नकारात्मक प्रतिउत्तर।

हटब – (क्रिया) टल जाना, हट जाना, दूर होना।

हटाउब – (क्रिया) भगा देना, दूर कर देना, टाल देना।

हटकब – (क्रिया) रोकना, मना करना, रोक देना।

हटकील – (विशे.) जो किसी का कहना–सुनना न मानें, दृढ़ संकल्प।

हटका – (सं.पु.) किवाड़े में लगा अन्दर से काष्ठ का सांकल।

हटबइया – (सं.पु.) भगाने वाला, हटाने वाला व्यक्ति।

हटकबइया – (सं.पु.) रोक लगाने वाला, मना करने वाला व्यक्ति।

हटापिट्ट – (सं.पु.) लाख कोशिश, हर तरह से प्रयास, पुरजोर कोशिश।

हठब – (क्रिया) हठ करना, जिद कर देना, कहकर बदल जाना।

हड़फूटन – (सं.स्त्री..) हड्डियों में असहनीय दर्द, पैरों का फटना।

हड़उरे – (सं.पु.) वह खेत जहाँ हल बैल से जुताई हो रही हो।

हड़हा – (सं.पु.) पितृपक्ष के दिन, जिस समय मांगलिक कार्य की मनाही हो।

हड़िल्ला – (विशे.) जिसके शरीर में हड्डियाँ ही हड्डियाँ अधिक माँस कम हो।

हड़पब – (क्रिया) हड़प लेना, जबरिया लूट लेना, कब्जा जमा लेना।

हड़कब – (क्रिया) भयभीत करने के लिए जमकर डाँटना–फटकारना।

हड़कइया – (सं.पु.) हड़क दिखाने वाला व्यक्ति।

हड़पइया – (सं.पु.) जबरिया हड़प लेने वाला व्यक्ति।

हड़र हड़र – (अव्य.) बिनाप्रयोजनपीछे–पीछे दौड़ना, दौड़ते हुए लोभ वस आना–जाना।

हड़ील – (विशे.) जिसमें माँस कम हड्डी अधिक हो।

हँड़िया – (सं.स्त्री..) हण्डी, मिट्टी का पात्र जिसमें चावल पकता हो।

हड़िआ – (सं.पु.) कौआ, हंडी।

हड़हड़ाब – (क्रिया) खाली एवं पुराने ट्रक के चलने की आवाज का होना।

हतब – (क्रिया) हत्या करना, प्राण से मार डालना।

हत्तियार – (सं.पु.) हत्यारा, प्राणघाती, निर्दयी।

हथँउती – (सं.पु.) हाथ का असर, यश मिलना, हाथ लगा देने से आराम पाना।
हथपोई – (सं.स्त्री..) हाथ से पानी लगाकर प्रसारित रोटी।
हथँउरा – (सं.पु.) हथौड़ा, लोहे का घन, स्त्री.लिंग 'हथौरी'।
हथिया – (सं.पु.) हस्त नक्षत्र।
हथिआउब – (क्रिया) हाथ में करना, अधिकार लेना, लूट लेना।
हॅथुधरा – (सं.पु.) हाथोंहाथ उधार लिया हुआ, तुरन्त वापस करने वाली उधारी।
हथ्था – (सं.पु.) हाथ का निशान, कुर्सी की पटरी, गाँव का नाम।
हदा – (अव्य.) यह, ये देखो, आश्चर्य बोधक।
हदरहुदुर – (अव्य.) अव्यवस्थित, बिना योजना तैयारी के, जल्दीबाजी में।
हदहदाउब – (क्रिया) जमीन पर पानी उड़ेलना, घड़े से मोटी धार में पानी गिराना।
हनब – (क्रिया) किसी को मारना, प्रहार करना, चोट पहुँचाना।
हनबाउब – (क्रिया) किसी पर प्रहार कराना, स्वेच्छा से मैथुन कराना।
हनइया – (सं.पु.) मारने वाला या प्रहार करने वाला व्यक्ति।
हन्ना – (सं.पु.) नष्ट करने वाला, सम्पत्ति उजाड़ करने वाला, आकाश का एक तारा, स्त्री.लिंग 'हन्नी'।
हप्प – (क्रि.वि.) स्थगित करना, बन्द कर देना।
हपचब – (क्रिया) डाँट–डपट के साथ डाँटना, उलाहना सुनाकर दबाव बनाना।
हपचइया – (सं.पु.) जमकर डाँट–फटकार सुनाने वाला व्यक्ति।
हपस हपस – (अव्य.) दौड़–दौड़कर ईमानदारी से मेहनत करना।
हँफरब – (क्रिया) हाफ देना, थककर हाँफना।
हफँउआ – (विशे.) हाँफते हुए शैली में, थके–मादे शैली में।
हँफरा – (सं.पु.) थकान के कारण निष्कासित होने वाली श्वाँस।
हबइ – (स.क्रि.) है स्त्री.लिंग।
हबेली – (सं.स्त्री..) सुन्दर कोठी, विशाल भवन।
हबै – (स.क्रि.) है, पुलिंग।
हमका – (सर्व.) हमको, हमें, मुझे, मुझको।
हमिन – (सर्व.) हम ही, हमे ही, मैं ही।
हमहीं – (सं.पु.) हमको, हमे ही, मुझे, मुझको।
हमू – (सं.पु.) हम भी, मैं भी।
हमैं – (स.क्रि.) हैं।
हमरे – (सर्व.) हमारे, अपने, मेरे।
हमपंचे – (सर्व.) हम लोग, हम सब।
हमारिउ – (सर्व.) हमारी भी, मेरी भी।
हमी – (सर्व.) हमको, मुझको।
हये – (स.क्रि.) हो? हैं, क्या हो ?
हरकट – (सं.स्त्री..) हरजाई, कुमार्गा स्त्री. बदचलन नारी।
,
हरबाह – (सं.पु.) हलवाहा, हल चलाने वाला मजदूर।
हरब – (क्रिया) हरण करना, नष्ट कर देना, मार डालना।

हरबी – (विशे.) जल्दी, शीघ्र, तत्काल, अविलम्ब।

हरबिआब – (क्रिया.) जल्दीबाजी करना, समय से पूर्व तत्पर होना।

हरिबिआउब – (क्रिया) जल्दी करने की उत्प्रेरणा देना।

हरबर–तरबर– (अव्य.) जल्दी, जल्दीबाजी मचाना, बिना तैयारी के।

हरबरिहा – (विशे.) जल्दीबाजी में, जल्दीबाजी करने की प्रवृत्ति, उतावलापन।

हरबरी – (सं.स्त्री..) जल्दीबाजी, उतावली, आतुरता।

हरउ–गुनौ – (ब.मु.) अगुन–छगुन करना, आगे–पीछे मन का होना।

हर – (सं.पु.) हल, प्रत्येक।

हरइली – (सं.स्त्री..) जुए में लगने वाली हल की लकड़ी।

हराई – (सं.स्त्री..) जोतने के लिए एक चरण में प्रयुक्त खेत का हिस्सा।

हरछट – (सं.स्त्री..) हलछट, आषाढ़ मास की षष्टी तिथि।

हरामकेर – (ब.मु.) निःशुल्क का, बिना लागत का।

हर्रंय – (सं.पु.) हर्र का फल या पेड़, एक औषधि।

हर्र–हर्र – (सं.पु.) भैंस के लिए एक प्रतीक सम्बोधन।

हरपटा – (सं.पु.) समतल किया गया जुता हुआ खेत।

हरबी–हरबी – (अव्य.) जल्दी–जल्दी, उतावली के साथ।

हरहा – (सं.पु.) हैरान करने वाला पशु, अवारा पशु, स्त्री.लिंग 'हरही'।

हरहाई – (सं.स्त्री..) जूठा खाने की आदत, पराये का भोग।

हरास – (सं.पु.) मन्द ज्वर, सुस्ती।

हरिस – (सं.स्त्री..) हल का लम्बा हिस्सा जो जुए से संलग्न रहता है।

हरदो – (सं.पु.) पीले रंग वाली एक लकड़ी।

हरजोर – (सं.पु.) टूटी हड्डी जोड़ने वाली वनौषधि।

हरिआब – (क्रिया) हरा–भरा होना, पुष्पित–पल्लवित होना।

हरसेंड़ा – (सं.पु.) हल का एक हिस्सा, लकड़ी का बड़ा लट्ठा।

हरबाही – (सं.स्त्री..) बंधुआ मजदूरी, हलवाही।

हरउनी – (क्रि.वि.) मजबूर करने वाली शर्त, हराने वाली बात।

हरिअर – (विशे.) हरा, हरियालीयुक्त, हरा–भरा।

हरूहन – (विशे.) जल्दी पकने वाली फसल।

हलियाहउस – (विशे.) खूब मोटा ताजा, हाथी जैसा मोटा आदमी।

हलब – (क्रिया) हिलना, विचलित होना, स्थान से हट जाना।

हलबाउब – (क्रिया) हिलवाना, हिलाने में किसी का सहयोग करना।

हलाउब – (क्रिया) हिलाना, मन लेना, तौलना, अस्थिर करना।

हला – (सं.पु.) हाँ, घोड़ा, भला, हैना।

हलकोरब – (क्रिया) पानी की लहरों का झटका लगना।

हलपंक – (सं.पु.) गोहार, दीर्घनाद, तहस–नहस, हल्ला, उपद्रव।

हलसब – (क्रिया) अस्त्र से प्रहार करना, जमकर मारना–पीटना।
हलोरब – (क्रिया) बिलोरना, हिलाकर साफ करना।
हलुक – (विशे.) हलका, कम वजनी, कम मूल्य का, फुर्तीला, कम उम्र।
हलुकवार – (विशे.) जो हलका हो, कम उम्र का, ओछी सोच।
हलुकँइया – (विशे.) फुर्ती के साथ, आसानी के साथ, आराम से।
हलुकँई – (सं.स्त्री..) बचपनानुमा, ओछापन, छोटपन, फुर्तीलापन।
हलाकानि – (सं.स्त्री..) उलझन, परेशानी, दुर्गति, दिक्कत, आफत।
हल्ला – (सं.पु.) शोरगुल, प्रचार–प्रसार, पोल खुलना, सार्वजनिक हो जाना।
हला–भला – (ब.मु.) काम चलाऊ, औपचारिक ढंग से, बिना मन का।
हँसउआ – (सं.पु.) मजाकिया, हास्ययुक्त, विनोदी बातें।
हँसब – (क्रिया) हँसना, मजाक उड़ाना, हँसी करना।
हँसबाउब – (क्रिया) ठहाका लगवाना, किसी को हँसा देना।
हँसइया – (सं.पु.) हँसने वाला, हँसी उड़ाने वाला।
हँसरास – (सं.पु.) हँसी, दिल्लगी, मजाक, हँसने के लिए बातें।
हँसबै – (क्रिया) हसूँगा, हसूँगी।
हँसबे – (क्रिया) हँसोंगे ? हँसोगी ?
हँसबू – (क्रिया) हँसोगी ?
हँसिहौं – (क्रिया) हँसूगी, हँसूगा।
हँसेउ तै – (क्रिया) हँसा था, हँसी थी।
हँसइहौ – (क्रिया) हँसाऊँगा, हँसाऊँगी।
हँसोड – (विशे.) मनोविनोदी, विदूषक, मजाक करने वाला, हँसमुख।
हसर–हसर – (अव्य.) दौड़ते–दौड़ते आना–जाना, जल्दीबाजी में।
हँसिया – (सं.स्त्री..) फसल या सब्जी काटने का कृषि औजार, छोटे आकार वाली हँसुलइया।

हा

हाँकब – (क्रिया) गतिमान करना, चुनौती देना।
हाँक – (सं.पु.) सवारी चढ़ने पर निकलने वाले स्वर शब्द।
हाँका – (सं.पु.) आखेट, शिकार खेलने की एक शैली।
हाड़ा – (सं.पु.) हड्डी, विषैले बर्र।
हाँड़ा – (सं.पु.) हुण्डी, धन–दौलत, भोजन पकाने का बड़ा पात्र।
हाँथा – (सं.पु.) हाथ का प्रतिचिन्ह, कुर्सी का हथ्था।
हाँथापाई – (सं.स्त्री..) मारपीट, मुठभेड़, लड़ाई– झगड़ा।
हाँथ देब – (क्रिया) झाड़–फूँक करना, सहारा करना, हाथ लगाना।
हाँफब – (क्रिया) हांफना, थक जाना, जल्दी–जल्दी लम्बी श्वांस लेना।
हाँमी – (सं.पु.) स्वीकारोक्ति, हाँ कर लेना, हामी भरना, ब.मु.।
हारब – (क्रिया) हार जाना, पराजय होना।
हारू – (सं.पु.) निराशा, चिन्ता, हार मानना, हताश होना।
हारिल – (सं.स्त्री..) एक पक्षी विशेष का नाम।

हाली – (विशे.) जल्दी, अविलम्ब, तुरन्त, तत्काल, शीघ्रता से।

हास–हूस – (सं.पु.) बिना मन के कार्य करना, टालमटोल, अला–भला ब.मु.।

हॉहू – (सं.पु.) पशु के गले की बीमारी, लोभ का जागृत होना।

हि / ही

हिआउ – (सं.पु.) युक्ति, उपाय, सूझ–बूझ, सूझा हुआ तरीका।

हिंआ – (अव्य.) यहाँ, इस जगह, यहाँ पर।

हिउ – (सं.पु.) भैंस के रुकने या थमने के लिए विशेष संकेत–शब्द।

हिकमत – (सं.पु.) उपाय, युक्ति, बुद्धिमानी, चतुराई।

हिंगहा – (सं.पु.) हींग बेचने वाला।

हिगहाई – (सं.स्त्री..) हींग रखने वाली डिबिया विशेष।

हिचब – (क्रिया) खाकर पूर्ण संतुष्ट हो जाना, ऊब जाना, प्रयास करके थक जाना।

हिचउब – (क्रिया) खिलाकर थका देना, परेशान कर डालना, थका डालना।

हिचकब – (क्रिया) हिचकना, हिम्मत न जुटा पाना, हिचकी आना।

हिंचउआ – (विशे.) खींचते हुए शैली में।

हिचकी – (सं.स्त्री..) रूक–रूककर श्वांस का चलना, पेट से बाहर गैस निकलना, हिचकी आना।

हिटराब – (क्रि.वि.) हिटिर–हिटिर करके हँसना।

हिटिर हिटिर– (अव्य.) बेमतलब की हँसी, हँसने की बुरी शैली।

हिंठाउब – (क्रिया) पैदल चलाना, परेशान करना, बार–बार बुलाना।

हिंठबइया – (सं.पु.) पैदल चलने वाला, राही, पथिक।

हिंठाई – (सं.स्त्री..) चलने का तौर तरीका, चलने की शैली।

हितुआ – (सं.पु.) हित चाहने वाला, मित्र, दोस्त, स्नेही, स्त्री.लिंग 'हितुइन'।

हितुआरथ – (सं.पु.) दोस्ती, मित्रता, अपनत्वता, ब.मु.।

हितुआब – (क्रिया) नजदीक होना, किसी से दोस्ती के लिए चिपकना।

हित्त – (सं.पु.) हित, भलाई, कल्याण।

हिना – (अव्य.) यहाँ, यहाँ पर, यहीं, इसी जगह में।

हिनहिनाब – (क्रिया) घोड़े का हिनहिनाना, घोड़े की एक आवाज विशेष होना।

हिनिन हिनिन – (ब.मु.) हमेशा बच्चों की तरह रोते रहना, घोड़े की भाँति हिनहिनाना।

हिबै – (सं.क्रि.) है।

हिरउब – (क्रिया) परेशान करना, चिढ़ाना, चिढ़ाकर अपमानित करना।

हिरदँय – (सं.पु.) हृदय, दिल।

हिरकब – (क्रिया) पास आना, आना, करीब होना।

हिरकाउब – (क्रिया) आग लगाना, बात खोदकर अशांतिमय कर देना।

हिरकइया – (सं.पु.) आग लगा देने वाला व्यक्ति।

हिलब – (क्रिया) जलाशय में प्रवेश करना, हिलना–डुलना।

हिलाउब – (क्रिया) जलाशय में या खेत में प्रवेश कराना।

हिलगब – (क्रिया) अड़ जाना, रूक जाना, अटक जाना।

हिलगाउब – (क्रिया) फँसा देना, लटका देना, आफत खड़ी कर देना।

हिलोरब – (क्रिया) पानी को हिलोरना, पानी में कपड़ा डालकर हिलकोरना।

हिलकोरब – (क्रिया) पानी हिलाकर गंदा करना, पानी द्वारा तट का स्पर्श होना।

हिसहारी – (सं.पु.) हिस्सेदार, साझेदार, हिस्सा बंटाने वाला।

हिहिराब – (क्रिया) बिना मतलब के हँसना, 'हिहिराब', ब.मु.।

हिही हिही – (अव्य.) ही–ही की आवाज करके हँसना।

हीं – (अव्य.) परमित, निश्चय, स्वीकृति।

हीकब – (क्रिया) अधिकाधिक उपभोग करना, जोर से प्रहार करना।

हीका – (सं.पु.) तीव्रगति से चलने वाली असहनीय ठंडी हवा।

हीक – (सं.स्त्री..) हल्की दुर्गन्ध, मचली या हिचकी।

हींचव – (क्रिया) आँख बचाकर चुरा लेना, निकाल लेना।

हींठब – (क्रिया) पैदल चलना, बिना वाहन के आना–जाना।

हीला – (सं.पु.) कीचड़, फर्श पर फैला हुआ पानी।

हींसा – (सं.पु.) हिस्सा, बंटवारा, हक या अधिकार।

हीला–हवाली– (ब.मु.) लेट लतीफ करना, कार्य में आना–कानी करना।

हु

हुँआ – (सर्व.) वहाँ, वहाँ पर, उस स्थान में, उस जगह पर।

हुआ – (सं.पु.) स्याल की आवाज, जंगली जानवर की बोली।

हुँ – (अव्य.) हाँ, स्वीकारोक्ति सूचक शब्द।

हुकब – (क्रिया) चूक जाना, घाटा खा जाना, धोखा होना, निराशा हाथ लगना।

हुकउब – (क्रिया) किसी से चुक्का कर देना, घाटा दिलवा देना।

हुकइया – (सं.पु.) चूका हुआ व्यक्ति, चूक जाने वाला, धोखा खाया हुआ व्यक्ति।

हुकुरब – (क्रिया) गाय की स्नेहिल हुंकार, गाय की बोली।

हुक्का – (सं.पु.) धूम्र पानी, चिलम चोंगी।

हुचकब – (क्रिया) दूध पीते समय बछड़े का दुग्ध में मुँह मारना।

हुटुर हुटुर – (अव्य.) पीछे–पीछे किसी का पहुँच जाना, दौड़ते हुए नंगे पाँव आना, ब.मु.।

हुडुडुआ – (सं.पु.) कबड्डी खेलना, जमीन पर वस्तु लुढ़काना।

हुड्डुक – (सं.पु.) चोट लगने से फोड़ा जैसा सूज आना।

हुड़दंगी – (सं.पु.) बचकानापन, अशोभनीय कार्य, हरकत, लोफड़गीरी।

हुतबिता – (सं.पु.) होनी, जो होना होता है, अप्रत्याशित घटना।

हुदुर बुदुर – (अव्य.) जल्दी, जल्दीबाजी में, अव्यवस्थित एवं अनियोजित ढंग से।

हुन्न – (सं.पु.) दिल में चिन्ता समा जाना, दिल में सोच बैठ जाना।

हुमकब – (क्रिया) घमण्ड पूर्ण बातें करना, अहम युक्त बातें कहना।

हुम्मी – (सं.पु.) सौगन्ध, दृढ़ संकल्प, प्रतिज्ञा, हुम्मी बाँधब, ब.मु.।

हुरब – (क्रिया) लाठी से प्रहार करना, ठूंस–ठूंस कर खाना।

हुरहुर – (सं.पु.) एक औषधीय पौध।

हुरपेटब – (क्रिया) पशुओं की झपट, सींग व सिर से प्रहार करना।

हुर्र हुर्र – (सं.पु.) सुअर को कहा जाने वाला विशेष सांकेतिक शब्द।

हुरिआउब – (क्रिया) लाठी के गुच्चे से किसी की मार करना।

हुलकी – (सं.पु.) हैजा, विथूचिका, हुलकी परब, ब.मु.।

हुलकिहा – (सं.पु.) सर्वनासी, मरने योग्य, एक अशुभ गाली।

हुलेसब – (क्रिया) नुकीली चीज चुभाना, तंग करना, सुई चुभाना।

हूक – (सं.पु.) शरीर में मोच, असहनीय दर्द, किसी नश का चढ़ जाना।

हूँट हल्ला – (अव्य.) रखवाली करने की विधि, प्रचार–प्रसार।

हूँत – (विशे.) मवेशी को बुलाने के लिए प्रयुक्त स्वर, शब्द।

हूरा – (सं.पु.) लाठी का अग्रभाग, लाठी का प्रहार।

हे

हेइन – (सर्व.) यहीं, इसी जगह, यहीं पर।

हेऊँ – (सर्व.) यहाँ भी, यहाँ पर भी, इस जगह में भी।

हेबाल – (सं.स्त्री..) नारी धारित गले का स्वर्ण हार।

हेमार – (विशे.) अति ठंड, बर्फ जैसा ठंडा।

हेरब – (क्रिया) खोजना, किसी की ओर देखना, गुमशुदा की तलाश।

हेराब – (क्रिया) गुम जाना, गायब होना, खो जाना।

हेरबाउब – (क्रिया) खोजवाना, तलाश करवाना।

हेरान – (विशे.) गुम हुआ, लापता।

हेरि–हेरि – (अव्य.) खोज–खोज करके, सघन अन्वेषण।

हेल–मेल – (अव्य.) ताल–मेल, मेल–मिलाप, अच्छा सम्बन्ध।

हेरूहा – (सं.पु.) सर्प, विष रहित एक सर्प का नाम।

हेहो – (अव्य.) अला–भला, औपचारिकतापूर्ण।

हो

होइगा – (क्रि.वि.) हो गया, मतलब निकल गया, ठीक होना, फिट बैठना।

होंइन – (सर्व.) वहीं, उसी जगह पर।

होईं – (सर्व.) वहीं, वहीं पर।

होंऊँ – (सर्व.) वहाँ भी, वहाँ पर भी।

होकलब – (क्रिया) जोर–जोर से दहाड़ना, दपकाना।

होक्कल – (सं.पु.) जोर–जोर से दहाड़ने वाला व्यक्ति।

होक्क – (सं.पु.) खाँसी से प्रतिध्वनित शब्द।

होका – (सं.पु.) शोर–शराबा, हल्ला–गुल्ला।

होका होकी – (अव्य.) दो पक्षों के बीच होने वाला आवेशित वाक् युद्ध।

होड़सा – (सं.पु.) चन्दन घिसने वाली पत्थर की गोल चौकी।

होती – (क्रि.वि.) पैदावार, उपज या उत्पादन, सामर्थ्य या सम्पन्नता।

होतलग – (विशे.) होनहार, उन्नतिशील, परिश्रमी, विकासशील।

होतविता – (सं.स्त्री..) होतव्यता, अप्रत्याशित घटना।

होती कै धोती– (ब.मु.) होने के कारण, यश लूटने पर केन्द्रित, ब.मु.।

होदा – (अव्य.) वह है, वह देखो, वस्तु की ओर ईशारा का शब्द।

होन – (सर्व.) वहाँ, वहाँ पर, उस जगह।

होबा – (सं.पु.) मरने की कामना, एक गाली।

होब – (क्रिया) होना, जन्मना, पैदा लेना, फिट बैठ जाना।

होबउआ – (विशे.) होने लायक, जो हो सकता हो, पैदा होने की स्थिति।

होबाउब – (क्रिया) पैदा कराना, बच्चे को सहयोग करके गर्भाशय से बाहर निकालना।

होब जाब – (ब.मु.) मरणासन्न स्थिति, ब.मु.।

होंम – (सं.पु.) हवन, आहुति, कुर्बानी।

होंमा – (सं.पु.) देवी गीत का एक तर्ज, लोकगीत की यति।

होमब – (क्रिया) हवन करना, होमना।

होमाउब – (क्रिया) हवन करवाना, होम करवाना।

होरा – (सं.पु.) हरे चने की भूनी हुई फली।

होरी – (सं.स्त्री..) होली, होली का त्यौहार, होलिका।

होरीहा – (सं.पु.) होली जलाने वाले, होली गीत गाने वाले लोग।

होरहा – (सं.पु.) हरे चने की फली भूनकर खाने वाले।

होर्र होर्र – (सं.पु.) सुअर की आवाज, सुअर को बुलाने का सांकेतिक शब्द।

होहा – (सं.पु.) शोरगुल, कई लोगों का एक साथ बोलना।

होहो – (सं.पु.) ठहरो, रूको, पशुओं को पुचकारने का शब्द।

बघेली–हिन्दी शब्दकोश 305